अध्यात्म पूजाञ्जलि

पाँचों परमेष्ठी जिनमंदिर, जिनप्रतिमा जिनश्रुत जिनधर्म।
नवदेवों को वन्दन करके, हे प्रभु! हो जाऊँ निष्कर्म।।

Scanned with CamScanner

अध्यात्म पूजाञ्जलि

संकलन-संपादन :
डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री, विदिशा (म.प्र.)

प्रकाशक :
श्रीमती सुशीलाबेन-सेवंतीलाल गाँधी
हस्ते-श्रीमती नेहा-निखिल गाँधी
चि. पूजन-वीर गाँधी, अहमदाबाद (गुज.)

Scanned with CamScanner

मंगल-भावना

''अहो! देव-गुरु-धर्म तो सर्वोत्कृष्ट पदार्थ हैं, इनके आधार से धर्म है। इनमें शिथिलता रखने से अन्य धर्म किस प्रकार होगा ?'' अत: सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का सम्यक् स्वरूप समझकर उनकी अर्चना/उपासना/आराधना पूर्वक तत्त्वाभ्यास के बल से सम्यग्दर्शन प्रगट कर आत्मकल्याण का प्रमुख प्रयोजन सिद्ध करना चाहिये।

पूज्य गुरुदेव **श्री कानजी स्वामी** के प्रभावना योग से आज सम्पूर्ण देश-विदेश में आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान की अद्भुत क्रान्ति हुई है और सभी आत्मार्थीजन कल्याण के मार्ग में अग्रसर हुए है, इसी भावना को ऊर्ध्व रखते हुये अध्यात्म के उत्कृष्ट काव्य प्रसून स्वरूप '**अध्यात्म पूजाञ्जलि**' में समाहित स्तुति, पूजन, विधान आदि रचनाओं में चैतन्य का चमत्कार उजागर हुआ है।

प्राचीन व नवीन आध्यात्मिक स्तुति,पूजन विधान के साथ-साथ आदरणीय **ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्'** अमायन द्वारा रचित आध्यात्मिक स्तुति, पूजन, विधान आदि आत्मकल्याणकारी रचनाओं को स्वतंत्र रूप से द्वितीय खण्ड में समाहित किया गया है, जिसको पढ़कर, गुन-गुनाकर, चिंतन-मनन कर, आत्मसात् कर आत्मार्थी भव्य जीव निश्चित ही अतीन्द्रिय आनंद से तृप्त होंगे।

अध्यात्म रस से सरावोर '**अध्यात्म पूजाञ्जलि**' के प्रकाशन में प्रारम्भ से ही 'जैनरत्न' **वाणीभूषण पं. ज्ञानचन्दजी विदिशा** की मंगल प्रेरणा व मार्गदर्शन सदैव मिलता रहा है और मिलता रहेगा।

प्रतिदिन पठनीय अत्यंत उपयोगी '**अध्यात्म पूजाञ्जलि**' के प्रकाशन में **श्री सेवंतीलाल निखिलभाई गांधी, अहमदाबाद** एवं जिन आत्मार्थी भाईयों ने प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में सुझाव, मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया है, उन सभी के प्रति हम हृदय से आभारी हैं।

पुनश्च प्रतिदिन, प्रतिक्षण '**अध्यात्म पूजाञ्जलि**' में प्रकाशित आध्यात्मिक रचनाओं के माध्यम से शुद्ध आनन्दामृत का पान करें और मनुष्य जन्म सार्थक करें, इसी पवित्र भावना के साथ....

दिनांक : 15 मार्च 2015 (श्री ऋषभदेव जयंती) — **सम्पादक**

Scanned with CamScanner

दर्शन-स्तुति

भटक-भटक भव की गलियों में, दुख ही दुख मैंने पाया।
पा करके कुछ बाह्य वस्तुयें, निकट नहीं तेरे आया।।1।।
कोटि-कोटि सत्कृत्यों से ही, आ पहुँचा जिनमन्दिर में।
देख-देख प्रतिमा प्रभु तेरी, हर्ष उमड़ता अन्दर में।।2।।
आँखों का मिल गया मुझे फल, शान्तमूर्ति दर्शन करके।
रहूँ आपके चरणों में ही, काम-काज तज कर घर के।।3।।
दीर्घ-भ्रमण की लम्बी-चौड़ी, मेरी दुखद कहानी है।
त्रिभुवन नाथ जिनेश्वर तुमसे, नहीं कभी वह छानी है।।4।।
यों तो मैं अनादि से दुखिया, पर अब दुख विसराया है।
मानव भव में मिली तुम्हारे, पद-पंकज की छाया है।।5।।
तेरे दर्शन के प्रभाव से, मोह-ग्रन्थि सारी छूटी।
और मानसिक ममता साँकल, क्षण भर में मेरी टूटी।।6।।
वीतराग प्रभु के दर्शन से, पर-परिणति सत्वर भागी।
सम्प्रति कोई अहो अपरिमित, परमशान्ति मन में जागी।।7।।
तुच्छ इन्द्र-चक्री वैभव को, प्रभु तुम दर्शन के आगे।
अस्थिर जल बुद-बुद सम धन को, कौन मुमुक्षु अब माँगे ?।।8।।
सफल उसी का है नर जीवन, जो तुमको अपनाता है।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, तू ही जग का त्राता है।।9।।
दिव्य आपके स्वच्छ ज्ञान में, लोकालोक झलकता है।
निजस्वरूप में रहे लीन अति, तू न उसे अपनाता है।।10।।
बिन आयुध ही देव आपने, महामोह क्षण में मारा।
त्रिभुवन विजयी कामदेव भी, नाथ आप से ही हारा।।11।।
यद्यपि राग-द्वेष इस जग में, नहीं किसी से तुम करते।
निन्दक जन पाते दुख अतिशय, भव्य भक्ति द्वारा तिरते।।12।।

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

प्रथम खण्ड - भाग-1 : विविध पूजन एवं पाठ

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	मङ्गलाष्टक (संस्कृत)		11
2.	अरहंत भक्ति	–	13
3.	श्री प्रतिमा प्रक्षाल पाठ	पं. अभयकुमारजी	17
4.	प्रक्षाल पाठ	श्री राजमलजी पवैया	21
5.	विनय पाठ	श्री नाथूरामजी	22
6.	पूजा पीठिका(संस्कृत)	पं.द्यानतराय जी	24
7.	श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन-1	श्री बाबू 'युगल' जैन	28
8.	श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन-2	डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल	32
9.	श्री समुच्चय पूजन	ब्र. सरदारमल जी	36
10.	श्री पंच परमेष्ठी पूजन	श्री राजमलजी पवैया	41
11.	श्री सिद्ध पूजन-1	श्री बाबू 'युगल' जैन	44
12.	श्री सिद्ध पूजन-2	डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल	49
13.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन	श्री वृन्दावनदासजी	53
14.	श्री अनन्त तीर्थंकर पूजन	श्री राजमलजी पवैया	56
15.	श्री सीमन्धर पूजन	डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल	63
16.	श्री नन्दीश्वरद्वीप पूजन	पं. द्यानतरायजी	67
17.	श्री पंचमेरु पूजन	पं. द्यानतरायजी	71
18.	श्री सोलहकारण पूजन	पं. द्यानतरायजी	74
19.	श्री दशलक्षण धर्म पूजन	पं. द्यानतरायजी	77
20.	श्री महावीर पूजन	डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल	83
21.	श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्र पूजन	श्री राजमलजी पवैया	86
22.	विविध अर्घ्यावलि		92
23.	श्री समुच्चय महार्घ्य		99
24.	शान्ति पाठ एवं विसर्जन पाठ		100
25.	निर्वाणकाण्ड (भाषा)	भैया भगवतीदासजी	104
26.	स्वयंभू स्त्रोत (भाषा)	पं. द्यानतरायजी	106
27.	श्री बाहुबली स्तुति		108
28.	श्री चन्द्रप्रभ स्तुति	श्री भगवत्‌जी	109
29.	श्री जिनेन्द्र वन्दना	पं. ज्ञानचन्दजी	109
	भाग-2		
30.	श्री शान्ति मण्डल विधान (लघु)	श्री राजमलजी पवैया	110

Scanned with CamScanner

द्वितीय खण्ड

> द्वितीय खण्ड में प्रकाशित समस्त आध्यात्मिक स्तुति, पूजन, विधान आदि रचनायें ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन द्वारा रचित हैं।

भाग-1 : श्री जिनेन्द्र स्तुति

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	जिन भक्ति- घड़ी जिनराज दर्शन की....	133
2.	जिन दर्शन- ऐसा ही प्रभु मैं भी हूँ....	133
3.	जिन दर्शन- कैसा अद्भुत शांत स्वरूप....	134
4.	जिन दर्शन- कैसी सुन्दर जिनप्रतिमा है....	135
5.	दर्शन स्तुति- नाथ तुम्हारे दर्शन से...	135
6.	प्रभु दर्शन- अद्भुत प्रभुता आज निहारी...	136
7.	दर्शन स्तुति-लखी-लखी प्रभु वीतराग छवि	136
8.	जिन दर्शन- आज अद्भुत छवि निज निहारी...	137

भाग-2 : नित्य नियम पूजन

9.	मंगलाष्टक (भाषा)	138
10.	श्री जिनप्रतिमा प्रक्षाल पाठ	139
11.	विनय पाठ	140
12.	पूजा पीठिका (भाषा)	141
13.	श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन	144
14.	श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन	147
15.	अर्घ्यावलि-श्री त्रिकाल चौबीसी एवं कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय	150
16.	श्री सिद्ध पूजन	151
17.	श्री वीतराग देव पूजन	154
18.	श्री शास्त्र पूजन	159
19.	श्री मुनिराज पूजन	162
20.	श्री सीमन्धर पूजन	165
21.	श्री बाहुबली पूजन	168

Scanned with CamScanner

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
22.	श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिन पूजन	171
23.	श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धर पूजन	174
24.	श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वर पूजन	177
25.	श्री पंच-बालयति पूजन-विधान	181
26.	श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजन	186
27.	श्री निर्वाणक्षेत्र पूजन	192
	भाग-3 : नैमित्तिक पूजन	
28.	श्री नन्दीश्वरद्वीप पूजन	195
29.	श्री पंचमेरू पूजन	198
30.	श्री सोलहकारण पूजन	201
31.	श्री दशलक्षण धर्म पूजन	204
32.	श्री रत्नत्रय पूजन	210
33.	श्री क्षमावाणी पर्व पूजन	214
34.	श्री अक्षय तृतीया पूजन	217
35.	श्री श्रुतपंचमी पूजन	220
36.	श्री वीरशासन जयन्ती पूजन	223
37.	श्री रक्षाबंधन पूजन	226
	भाग-4 : श्री चौबीस तीर्थङ्कर पूजन (विधान)	
38.	श्री चौबीस तीर्थङ्कर स्तवन	230
39.	विधान-पीठिका	235
40.	श्री चौबीस तीर्थङ्कर पूजन	236
41.	श्री आदिनाथ पूजन-1	239
42.	श्री अजितनाथ पूजन-2	244
43.	श्री सम्भवनाथ पूजन-3	248
44.	श्री अभिनंदननाथ पूजन-4	252
45.	श्री सुमतिनाथ पूजन-5	256

Scanned with CamScanner

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
46.	श्री पद्मप्रभ पूजन–6	259
47.	श्री सुपार्श्वनाथ पूजन–7	263
48.	श्री चन्द्रप्रभ पूजन–8	267
49.	श्री पुष्पदन्त पूजन–9	271
50.	श्री शीतलनाथ पूजन–10	274
51.	श्री श्रेयांसनाथ पूजन–11	277
52.	श्री वासुपूज्य पूजन–12	281
53.	श्री विमलनाथ पूजन–13	285
54.	श्री अनंतनाथ पूजन–14	289
55.	श्री धर्मनाथ पूजन–15	292
56.	श्री शान्तिनाथ पूजन–16	297
57.	श्री कुन्थुनाथ पूजन–17	301
58.	श्री अरनाथ पूजन–18	305
59.	श्री मल्लिनाथ पूजन–19	309
60.	श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन–20	313
61.	श्री नमिनाथ पूजन–21	316
62.	श्री नेमिनाथ पूजन–22	320
63.	श्री पार्श्वनाथ पूजन–23	324
64.	श्री महावीर पूजन–24	327
65.	समुच्चय जयमाला	331
	भाग–5 : विविध अर्घ्यावलि, शांति पाठ व विसर्जन	
66.	श्री चौबीस तीर्थङ्करों के अर्घ्य	333
67.	विविध अर्घ्यावलि	336
68.	श्री समुच्चय महार्घ्य	336
69.	शान्ति पाठ	337
70.	विसर्जन पाठ	338

Scanned with CamScanner

भाग-6 : श्री चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
71.	श्री आदिनाथ स्तुति-1	339
72.	श्री अजितनाथ स्तुति-2	339
73.	श्री सम्भवनाथ स्तुति-3	340
74.	श्री अभिनंदननाथ स्तुति-4	340
75.	श्री सुमतिनाथ स्तुति-5	341
76.	श्री पद्मप्रभ स्तुति-6	342
77.	श्री सुपार्श्वनाथ स्तुति-7	342
79.	श्री चन्द्रप्रभ स्तुति-8	343
80.	श्री पुष्पदंत स्तुति-9	343
81.	श्री शीतलनाथ स्तुति-10	343
82.	श्री श्रेयांसनाथ स्तुति-11	344
83.	श्री वासुपूज्य स्तुति-12	344
84.	श्री विमलनाथ स्तुति-13	345
85.	श्री अनंतनाथ स्तुति-14	346
86.	श्री धर्मनाथ स्तुति-15	346
87.	श्री शान्तिनाथ स्तुति-16	347
88.	श्री कुन्थुनाथ स्तुति-17	348
89.	श्री अरनाथ स्तुति-18	348
90.	श्री मल्लिनाथ स्तुति-19	349
91.	श्री मुनिसुव्रतनाथ स्तुति-20	350
92.	श्री नमिनाथ स्तुति-21	350
93.	श्री नेमिनाथ स्तुति-22	351
94.	श्री पार्श्वनाथ स्तुति-23	351
95.	श्री महावीर स्तुति-24	352
96.	श्री वीर जिनेश्वर	352
97.	श्री वीर शासन दशक	353
98.	श्री चन्द्रप्रभ स्तुति	354
99.	श्री शान्तिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ स्तुति	355
100.	श्री सीमन्धर स्तुति	356
101.	श्री बाहुबलि स्तुति	357
102.	जिनवाणी वन्दना	358
103.	गुरु भक्ति	360
104.	मेरा सहज जीवन	364
105.	निर्ग्रंथ भावना	365
106.	श्री तीर्थ वंदना	366

Scanned with CamScanner

देव-स्तुति

अहो जगतगुरु देव, सुनिये अरज हमारी।
तुम प्रभु दीनदयाल, मैं दुखिया संसारी।।
इस भव-वन के माहिं, काल अनादि गमायो।
भ्रम्यो चहुँ गति माहिं, सुख नहिं दुख बहु पायो।।
कर्म महारिपु जोर, एक न काम करै जी।
मनमाने दुख देहिं, काहूसों नाहिं डरैं जी।।
कबहूँ इतर निगोद, कबहूँ नरक दिखावै।
सुर-नर-पशु-गति माहिं, बहुविध नाच नचावैं।।
प्रभु! इनको परसंग, भव-भव माहिं बुरोजी।
जो दुख देखे देव, तुम सों नाहिं दुरोजी।।
एक जनम की बात, कहि न सकौं सुनि स्वामी।
तुम अनंत परजाय, जानहु अंतरजामी।।
मैं तो एक अनाथ, ये मिल दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनिये साहिब मेरे।।
ज्ञान महानिधि लूट, रंक निबल करि डार्यो।
इनही तुम मुझ माहिं, हे जिन! अंतर पार्यो।।
पाप पुन्य मिल दोय, पायनि बेड़ी डारी।
तन कारागृह माहिं, मोहि दियो दुख भारी।।
इनको नेक बिगार, मैं कछु नाहिं कियो जी।
बिन कारन जगबन्धु! बहुविध बैर लियो जी।।
अब आयो तुम पास, सुनि जिन! सुजस तिहारौ।
नीति निपुन जगराय, कीजै न्याय हमारौ।।
दुष्टन देहु निकार, साधुन कौं रखि लीजै।
विनवै, 'भूधरदास', हे प्रभु! ढील न कीजै।।

Scanned with CamScanner

प्रथम खण्ड

भाग-1 : विविध पूजन-पाठ

मङ्गलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।1।।

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा,
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्च गुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।2।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।3।।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतु-र्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादशः।
ये विष्णु प्रतिविष्णु- लाङ्गलधरा सप्तोत्तराविंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।4।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग महानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपिबलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।5।।

Scanned with CamScanner

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।6।।
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौस्थिता,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रौप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।7।।
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।8।।
इत्थं श्री जिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणां मुखात्।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।9।।

निरखत जिनचन्द्र-वदन

निरखत जिनचन्द्र-वदन स्व-पद सुरुचि आई।।टेक।।
प्रकटी निज आन की पिछान, ज्ञान-भान की।
कला उद्योत होत काम-जामनी पलाई।।निरखत.।।
शाश्वत आनन्द स्वाद पायो विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई।।निरखत.।।
साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की।
उपाधि को विराधि-कैं आराधना सुहाई।।निरखत.।।
धन-दिन-छिन आज सुगुनि चिन्तैं जिनराज अबै।
सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई।।निरखत.।।

Scanned with CamScanner

अरहंत भक्ति

चल चेतन प्यारे, बीस विदेह मँझार।
बीस विदेहों में बीस जिनेश्वर समवशरण विस्तार।।टेक।।
नित्य प्रति वहाँ पै वाणी खिरती, एक दिन में तीन बार।
समवशरण की शोभा वहाँ पै, अद्भुत रूप निहार।।1।।
मानस्तम्भ वहाँ पर राजे, मान सभी गल जाय।
बारह सभा वहाँ पै लग रहीं, भविजन जायें अपार।।2।।
श्री जिनवर को अतिशय ऐसो, बैर भाव मिट जाय।
सिंहासन पर जिनवर सोहे, भामण्डल पिछवार।।3।।
तीन छत्र सिर ऊपर राजे, चौंसठ चमर ढुराय।
विदेह क्षेत्र में जीव अभी भी, हो रहे भव से पार।।4।।

चाह जगी जिन-दर्शन की

चाह जगी जिन दर्शन की, वीर-चरण स्पर्शन की।।टेक।।
वीतराग छवि प्यारी है, जग जन को मनहारी है।
मूरत मेरे भगवान की, चाह जगी जिन-दर्शन की।।1।।
कुछ भी नहीं श्रृंगार किये, हाथ नहीं हथियार लिए।
फौज भगाई करमन की, चाह जगी जिन-दर्शन की।।2।।
हाथ पै हाथ धरैं ऐसे, करना कुछ न रहा जैसे।
नासादृष्टि लखो इनकी, चाह जगी जिन-दर्शन की।।3।।
समता पाठ पढ़ाती है, निज की याद दिलाती है।
देख दशा पद्मासन की, चाह जगी जिन-दर्शन की।।4।।
जो शिव-आनन्द चाहो तुम, प्रभु-सा ध्यान लगाओ तुम।
विपद कटे भव-बन्धन कीं, चाह जगी जिन-दर्शन की।।5।।

Scanned with CamScanner

आराधना पाठ

मैं देव नित अरहंत चाहूँ, सिद्ध का सुमिरन करौं।
मैं सूर गुरु मुनि तीन पद ये, साधुपद हिरदय धरौं।।
मैं धर्म करुणामयी चाहूँ, जहाँ हिंसा रंच ना।
मैं शास्त्र ज्ञान विराग चाहूँ, जासु में परपंच ना ।।1।।
चौबीस श्री जिनदेव चाहूँ, और देव न मन बसैं।
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूँ, वंदितैं पातक नसैं।।
गिरनार शिखर समेद चाहूँ, चम्पापुर पावापुरी।
कैलाश श्री जिनधाम चाहूँ, भजत भाजैं भ्रम जुरी।।2।।
नव तत्त्व का सरधान चाहूँ, और तत्त्व न मन धरौं।
षट् द्रव्य गुण परजाय चाहूँ, ठीक तासों भय हरों।।
पूजा परम जिनराज चाहूँ, और देव नहीं कदा।
तिहुँकाल की मैं जाप चाहूँ, पाप नहिं लागे कदा।।3।।
सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित, सदा चाहूँ भाव सों।
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूँ, महा हर्ष उछाव सों।।
सोलह जु कारण दुख निवारण, सदा चाहूँ प्रीति सों।
मैं नित अठाई पर्व चाहूँ, महामंगल रीति सों।।4।।
मैं वेद चारों सदा चाहूँ, आदि अन्त निवाह सों।
पाये धरम के चार चाहूँ, अधिक चित्त उछाह सों।।
मैं दान चारों सदा चाहूँ, भुवनवश लाहो लहूँ।
आराधना मैं चार चाहूँ, अन्त में ये ही गहूँ।।5।।
भावना बारह जु भाऊँ, भाव निरमल होत हैं।
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूँ, त्याग भाव उद्योत हैं।।

Scanned with CamScanner

प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूँ, ध्यान आसन सोहना
वसुकर्म तैं मैं छुटा चाहूँ, शिव लहूँ जहँ मोह ना।।6।।
मैं साधुजन को संग चाहूँ, प्रीति तिनही सों करूँ।
मैं पर्व के उपवास चाहूँ, सर्व आरंभ परिहरूँ ।।
इस दुखद पंचमकाल माहीं, कुल श्रावक मैं लह्यौ।
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं, निबल तन मैंने गह्यौ।।7।।
आराधना उत्तम सदा चाहूँ, सुनो जिनराय जी।
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना नाथ जी।।
वसुकर्म नाश विकास, ज्ञान प्रकाश मुझको दीजिये।
करि सुगति गमन समाधिमरण , सुभक्ति चरनन दीजिये।।8।।

जिन भक्ति

जिन पूजन कर लो, ये ही जगत में सार।।टेक।।

बड़ा पुण्य यह अवसर आया, श्री जिनवर का दर्शन पाया।
जिन भक्ति कर लो, ये ही जगत में सार।।1।।

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, जिनगुरु का उपदेश सुहाया।
उपदेश सु-सुनलो, ये ही जगत में सार।।2।।

बड़ा पुण्य यह अवसर आया, स्वस्थ मनुज तन उत्तम पाया।
व्रत संयम धर लो, ये ही जगत में सार।।3।।

बड़ा पुण्य यह अवसर आया, साधर्मी जन मेला पाया।
तत्त्वचर्चा कर लो, ये ही जगत में सार।।4।।

बड़ा पुण्य यह अवसर आया, श्री दशलक्षण पर्व सु आया।
निज धर्म समझ लो, ये ही जगत में सार।।5।।

Scanned with CamScanner

दर्शन पाठ

दर्शन श्री देवाधिदेव का, दर्शन पाप विनाशन है।
दर्शन है सोपान स्वर्ग का, और मोक्ष का साधन है।।1।।
श्री जिनेन्द्र के दर्शन औ, निर्ग्रन्थ साधु के वन्दन से।
अधिक देर अघ नहीं रहैं, जल छिद्र सहित कर में जैसे।।2।।
वीतराग-मुख के दर्शन की, पद्मराग-सम शांत प्रभा।
जन्म-जन्म के पातक क्षण में, दर्शन से हों शांत विदा।।3।।
दर्शन श्री जिनदेव सूर्य, संसार-तिमिर का करता नाश।
बोधि-प्रदाता चित्त पद्म को, सकल अर्थ का करे प्रकाश।।4।।
दर्शन श्री जिनेन्द्र-चन्द्र का, सद्धर्मामृत बरसाता।
जन्मदाह को करे शांत औ, सुख वारिधि को विकसाता।।5।।
सकल तत्त्व के प्रतिपादक, सम्यक्त्व आदि गुण के सागर।
शांत दिगम्बररूप नमूँ, देवाधिदेव तुमको जिनवर।।6।।
चिदानन्दमय एकरूप, वन्दन जिनेन्द्र परमात्मा को।
हो प्रकाश परमात्म नित्य, मम नमस्कार सिद्धात्मा को।।7।।
अन्य शरण कोई न जगत में तुम्ही शरण मुझको स्वामी।
करुण भाव से रक्षा करिये, हे जिनेश अन्तर्यामी।।8।।
रक्षक नहीं शरण कोई नहिं, तीन जगत में दुखत्राता।
वीतराग प्रभु सा न देव है, हुआ न होगा सुखदाता।।9।।
दिन-दिन पाऊँ जिनवर भक्ति, जिनवर भक्ति, जिनवर भक्ति।
सदा मिले वह सदा मिले, जब तक न मिले मुझको मुक्ति।।10।।
नहीं चाहता जैनधर्म के बिना, चक्रवर्ती होना।
नहीं अखरता जैनधर्म से सहित, दरिद्री भी होना।।11।।
जन्म-मृत्यु के किये पाप औ बन्धन कोटि-कोटि भव के।
जन्म-मृत्यु औ जरा रोग, सब कट जाते जिन दर्शन से।।12।।
आज 'युगल' दृग हुए सफल, तुम चरण कमल से हे प्रभुवर।
हे त्रिलोक के तिलक, आज लगता भव सागर चुल्लूभर।।13।।

Scanned with CamScanner

श्री प्रतिमा प्रक्षाल पाठ

(दोहा)

परिणामों की स्वच्छता के निमित्त जिनबिम्ब।
इसीलिए मैं निरखता, इनमें निज प्रतिबिम्ब।।
पंच प्रभु के चरण में, वंदन करूँ त्रिकाल।
निर्मल जल से कर रहा, प्रतिमा का प्रक्षाल।।

अथ पौर्वाह्निक देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तवनवन्दना-समेतं श्री पंचमहागुरुभक्तिपूर्वककायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें!)

(छप्पय)

तीन लोक के कृत्रिम और अकृत्रिम सारे।
जिनबिम्बों को नित प्रति अगणित नमन हमारे।।
श्री जिनवर की अन्तर्मुख छवि उर में धारूँ।
जिन में निज का, निज में जिन-प्रतिबिम्ब निहारूँ।।
मैं करूँ आज संकल्प शुभ, जिन प्रतिमा प्रक्षाल का।
यह भाव सुमन अर्पण करूँ, फल चाहूँ गुणमाल का।।

ॐ ह्रीं प्रक्षालप्रतिज्ञायै पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(प्रक्षाल की प्रतिज्ञा हेतु पुष्प क्षेपण करें)

(रोला)

अन्तरंग बहिरंग सुलक्ष्मी से जो शोभित।
जिनकी मंगल वाणी पर है त्रिभुवन मोहित।।
श्री जिनवर सेवा से क्षय मोहादि विपत्ति।
हे जिन! श्री लिख पाऊँगा निज-गुण सम्पत्ति।।

(थाली की चौकी पर केशर से श्री लिखें)

Scanned with CamScanner

(दोहा)

अन्तर्मुख मुद्रा सहित शोभित श्री जिनराज।
प्रतिमा प्रक्षालन करूँ, धरूँ पीठ यह आज।।

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि।

(प्रक्षाल हेतु थाली स्थापित करें)

(रोला)

भक्ति रत्न से जड़ित आज मंगल सिंहासन।
भेद-ज्ञान जल से क्षालित भावों का आसन।।
स्वागत है जिनराज तुम्हारा सिंहासन पर।
हे जिनदेव! पधारो श्रद्धा के आसन पर।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथभगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(थाली में जिनबिम्ब विराजमान करें)

क्षीरोदधि के जल से भरे कलश ले आया।
दृग-सुख-वीरज-ज्ञान-स्वरूपी आतम पाया।।
मंगल कलश विराजित करता हूँ जिनराजा।
परिणामों के प्रक्षालन से सुधरें काजा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं कलशस्थापनं करोमि।

(चारो कोनों में निर्मल जल से भरे कलश स्थापित करें)

जल-फल आठों द्रव्य मिलाकर अर्घ्य बनाया।
अष्ट अंग युत मानो सम्यग्दर्शन पाया।।
श्री जिनवर के चरणों में यह अर्घ्य समर्पित।
करूँ आज रागादि विकारी भाव विसर्जित।।

ॐ ह्रीं श्री स्नपनपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पीठ स्थित जिन प्रतिमा को अर्घ्य चढ़ायें)

मैं रागादि विभावों से कलुषित हे जिनवर।
और आप परिपूर्ण वीतरागी हो प्रभुवर।।

Scanned with CamScanner

कैसे हो प्रक्षाल, जगत के अघ-क्षालक का।
क्या दरिद्र होगा पालक ? त्रिभुवन पालक का।।
भक्ति भाव के निर्मल जल से अघ-मल धोता।
है किसका अभिषेक भ्रान्त चित् खाता गोता।।
नाथ! भक्तिवश जिनबिम्बों का करूँ न्हवन मैं।
आज करूँ साक्षात् जिनेश्वर का दर्शन मैं।।

(दोहा)

क्षीरोदधि सम नीर से, करूँ बिम्ब प्रक्षाल।
श्री जिनवर की भक्ति से, जानूँ निज पर चाल।।
तीर्थंकर का न्हवन शुभ, सुरपति करें महान।
पंचमेरु भी हो गये, महातीर्थ सुखदान।।
करता हूँ शुभ भाव से, प्रतिमा का अभिषेक।
बचूँ शुभाशुभ भाव से, यही कामना एक।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादिमहावीरपर्यन्तं चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेव माद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे.... नाम्निनगरे मासानामुत्तमे.... मासे..... पक्षे..... दिने मुन्यार्यिकाश्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं पवित्रतरजलेन। जिनाभिषेचयामि।

(दोहा)

जिन संस्पर्शित नीर यह, गन्धोदक गुणखान।
मस्तक पर धारूँ सदा, बनूँ स्वयं भगवान।।

(मस्तक पर गन्धोदक चढ़ावें। अन्य किसी अंग से गन्धोदक का स्पर्श वर्जित है।)

जल फलादि वसु द्रव्य ले, मैं पूजूँ जिनराज।
हुआ बिम्ब अभिषेक अब, पाऊँ निज पदराज।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री जिनवर का धवल यश, त्रिभुवन में है व्याप्त।
शान्ति करें मम चित्त में, हे परमेश्वर आप्त।।

(पुष्प क्षेपण करें)

(रोला)

जिन प्रतिमा पर अमृत-सम जल, कण अति शोभित।
आत्म-गगन में गुण अनन्त तारे भवि मोहित।।
हो अभेद का लक्ष्य भेद का करता वर्जन।
शुद्ध वस्त्र से जल कण का करता परिमार्जन।।

(प्रतिमा को शुद्ध वस्त्र से पोंछें)

(दोहा)

श्री जिनवर की भक्ति से, दूर होय भव-भार।
उर-सिंहासन थापिये, प्रिय चैतन्यकुमार।।

(जिन-प्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान करें तथा निम्न छन्द बोलकर अर्घ्य चढ़ायें)

जल गन्धादिक द्रव्य से, पूजूँ श्री जिनराज।
पूर्ण अर्घ्य अर्पित करूँ, पाऊँ चेतनराज।

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थितजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान दीजिए....

1. *जिन बिम्ब का प्रक्षाल मात्र शुद्ध जल से, शुद्ध वस्त्र पहन कर किया जाए।*
2. *प्रक्षाल मात्र पुरुषों द्वारा ही किया जाए। महिलायें जिनबिम्ब को स्पर्श भी न करें।*
3. *जिनबिम्ब का प्रक्षाल प्रतिदिन एक बार हो जाने के पश्चात् बार-बार न करें।*
4. *श्री अर्हन्त भगवान का अभिषेक नहीं होता, जिनबिम्ब का प्रक्षाल किया जाता है, जो अभिषेक के नाम से प्रचलित है।*

Scanned with CamScanner

प्रक्षाल पाठ

मैं परम पूज्य जिनेन्द्र प्रभु को, भाव से वन्दन करूँ।
मन-वचन-काय त्रियोग पूर्वक, शीश चरणों में धरूँ ।।1।।
सर्वज्ञ केवलज्ञानधारी, की सुछवि उर में धरूँ।
निर्ग्रन्थ पावन वीतराग, महान की जय उच्चरूँ।।2।।
उज्ज्वल दिगम्बर वेश दर्शन, कर हृदय आनन्द भरूँ।
अतिविनय पूर्वक नमन करके, सफल यह नरभव करूँ।।3।।
मैं शुद्ध जल के कलश प्रभु के, पूज्य मस्तक पर करूँ।
जल धार देकर हर्ष से, अभिषेक प्रभु जी का करूँ।।4।।
मैं न्हवन प्रभु का भाव से, कर सकल भवपातक हरूँ।
प्रभु चरण कमल पखारकर, सम्यक्त्व की सम्पति वरूँ।।5।।

जिनेन्द्र स्तुति

मैंने प्रभुजी के चरण पखारे।टेक।
जनम-जनम के संचित पातक, तत्क्षण ही निरवारे।।1।।
प्रासुक जल के कलश श्री जिनप्रतिमा ऊपर ढारे।
वीतराग अरिहंत देव के, गूँजे जय-जयकारे।।2।।
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही, छाये हर्ष अपारे।
पावन तन-मन-नयन भये सब, दूर भये अंधियारे।।3।।

भव के भय का भेदन करने वाले इन भगवान के प्रति क्या तुझे भक्ति नहीं है ? तो तू भवसमुद्र में रहने वाले मगर के मुख में है। *-श्री नियमसार कलश-15*

Scanned with CamScanner

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।2।।
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि-शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव-सुख के करतार।।3।।
हरता अघ अँधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास।।4।।
धर्मामृत उर जलधि सौं, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग भूप।।5।।
मैं वन्दौं जिनदेव को, करि अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव।।6।।
भविजन कौं भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भंडार।।7।।
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल।।8।।
तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।।9।।
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आप तैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।।12।।
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।13।।

Scanned with CamScanner

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यौ अबै, मेटो राग कुटेव।।14।।
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अजान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति, नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव-सिन्धु में, खेव लगाओ पार।।17।।
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजै आप समान।।18।।
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार।।19।।
जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर झार।
मेरी तो तोसौं बनी, यातैं करौं पुकार।।20।।
वन्दौं पाँचों परमगुरु सुर-गुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।21।।
चौबीसौं जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यौ पाठ सुखदाय।।22।।

मंगल पाठ

मंगल मूरति परमपद, पंच धरों नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।1।।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दौं स्वयमेव।।2।।
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन-वच-काय।।3।।
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म।।4।।
या विध मंगल करनतैं, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत।।5।।

Scanned with CamScanner

पूजा पीठिका (संस्कृत)

ॐ जय जय जय! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि–अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।
अपराजित–मंत्रोऽयं सर्व–विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः।।3।।
एसो पंच–णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।
कर्माष्टक–विनिर्मुक्तं मोक्ष–लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि–गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी–भूत–पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीभगज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिनकल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन-गृहे परमेष्ठिमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहन्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद- नायकमनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ- सुदृशां सुकृतैकहेतु,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुङ्गवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।

Scanned with CamScanner

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोधसुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोकविततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।4।।

अर्हत् पुराणपुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन्ज्वलद्विमल - केवल - बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं यज्ञविधिप्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्रीऋषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान्सः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवललौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।4।।

जंघानल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्निदक्षाः कुशलामहिम्नि लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि,
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाँश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।8।।

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं - विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।10।।

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानम्, पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन-1

केवल-रवि किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अंतर।
उस श्री जिन-वाणी में होता, तत्त्वों का सुन्दरतम दर्शन।।
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण।
उन देव परम-आगम, गुरु को, शत-शत वंदन, शत-शत वंदन।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव -शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

इन्द्रिय के भोग मधुर-विष-सम, लावण्यमयी कंचन काया।
यह सब कुछ जड़ की क्रीड़ा है, मैं अब तक जान नहीं पाया।।
मैं भूल स्वयं निज वैभव को, पर ममता में अटकाया हूँ।
अब निर्मल सम्यक्-नीर लिये, मिथ्या-मल धोने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़-चेतन की सब परिणति प्रभु! अपने-अपने में होती है।
अनुकूल कहें, प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ति है।।
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाया है।
सन्तप्त हृदय प्रभु! चन्दन सम, शीतलता पाने आया है।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल हूँ कुन्द-धवल हूँ प्रभु! पर से न लगा हूँ किंचित् भी।
फिर भी अनुकूल लगें उन पर, करता अभिमान निरंतर ही।।
जड़ पर झुक-झुक जाता चेतन, की मार्दव की खण्डित काया।
निज शाश्वत अक्षय-निधि पाने, अब दास चरण-रज में आया।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नहीं।
निज अंतर का प्रभु! भेद कहूँ, उसमें ऋजुता का लेश नहीं।।

Scanned with CamScanner

चिंतन कुछ फिर संभाषण कुछ, वृत्ति कुछ की कुछ होती है।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ, जो अन्तर का कालुष धोती है।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से, प्रभु! भूख न मेरी शान्त हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही।।
युग-युग से इच्छा सागर में, प्रभु! गोते खाता आया हूँ।
चरणों में व्यंजन अर्पित कर, अनुपम रस पीने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे चैतन्य सदन में प्रभु! चिर व्याप्त भयंकर अंधियारा।
श्रुत-दीप बुझा हे करुणानिधि! बीती नहिं कष्टों की कारा।
अतएव प्रभो! यह ज्ञान-प्रतीक, समर्पित करने आया हूँ।
तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर, दीप जलाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ कर्म घुमाता है मुझको, यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी।
मैं रागी-द्वेषी हो लेता, जब परिणति होती है जड़ की।।
यों भाव-करम या भाव-मरण, सदियों से करता आया हूँ।
निज अनुपम-गंध-अनल से प्रभु, पर-गंध जलाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता है।
मैं आकुल-व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है।।
मैं शान्त निराकुल चेतन हूँ, है मुक्ति-रमा सहचर मेरी।
यह मोह तड़क कर टूट पड़े, प्रभु! सार्थक फल पूजा तेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भर निज-रस को पी चेतन, मिथ्या-मल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है।।

Scanned with CamScanner

अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल-रवि जगमग करता है।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह ही अर्हन्त अवस्था है।।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु! निज गुण का अर्घ्य बनाऊँगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अर्हन्त अवस्था पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

भव वन में जी भर घूम चुका, कण-कण को जी भर-भर देखा।
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा।।1।।

(बारह भावना)

झूठे जग के सपने सारे, झूठी मन की सब आशायें।
तन-जीवन-यौवन अस्थिर हैं, क्षण-भंगुर पल में मुरझायें।।2।।
सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या?
अशरण मृत काया में हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या?।।3।।
संसार महा दुःख सागर के, प्रभु दुःखमय सुख-आभासों में।
मुझको न मिला सुख क्षण भर भी, कंचन-कामिनि प्रासादों में।।4।।
मैं एकाकी एकत्व लिये, एकत्व लिये सब ही आते।
तन-धन को साथी समझा था, पर ये भी छोड़ चले जाते।।5।।
मेरे न हुए ये, मैं इन से, अति भिन्न अखण्ड निराला हूँ।
निज में पर से अन्यत्व लिये, निज सम रस पीने वाला हूँ।।6।।
जिसके श्रृंगारों में मेरा, यह मँहगा जीवन घुल जाता।
अत्यन्त अशुचि जड़-काया से, इस चेतन का कैसा नाता।।7।।
दिन-रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता।
मानस, वाणी और काया से, आस्रव का द्वार खुला रहता।।8।।

Scanned with CamScanner

शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्तल।
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल।।9।।
फिर तप की शोधक वह्नि जगे, कर्मों की कड़ियाँ टूट पड़ें।
सर्वांग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़ें।।10।।
हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकान्त विराजें क्षण में जा।
निज लोक हमारा वासा हो, शोकान्त बनें फिर हमको क्या।।11।।
जागे मम-दुर्लभ बोधि प्रभु! दुर्नय-तम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता-दृष्टा रह जाऊँ, मद-मत्सर-मोह विनश जावे।।12।।
चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी।।13।।

(देव-स्तवन)

चरणों में आया हूँ प्रभुवर! शीतलता मुझको मिल जावे।
मुरझाई ज्ञान-लता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जावे।।14।।
सोचा करता हूँ भोगों से, बुझ जावेगी इच्छा-ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानो पावक में घी डाला।।15।।
तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु! सच्चे सुख की भी परिभाषा।।16।।
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर! जग में रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणों में, जग के माणिक मोती सारे।।17।।

(शास्त्र-स्तवन)

स्याद्वादमयी तेरी वाणी, शुभनय के झरने झरते हैं।
उस पावन नौका पर लाखों, प्राणी भव-वारिधि तिरते हैं।।18।।

(गुरु-स्तवन)

हे गुरुवर! शाश्वत सुख दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करने वाला है।।19।।

Scanned with CamScanner

जब जग विषयों में रच-पच कर, गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक, पथ में विषकंटक बोता हो।।20।।
हो अर्द्ध-निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों।
तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्त्वों का चिंतन करते हो।।21।।
करते तप शैल-नदी-तट पर, तरु-तल वर्षा की झड़ियों में।
समता-रस पान किया करते, सुख-दुःख दोनों की घड़ियों में।।22।।
अन्तर्ज्वाला हरती वाणी, मानों झड़ती हों फुलझड़ियाँ।
भव-बन्धन तड़-तड़ टूट पड़ें खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।23।।
तुम-सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दीं जग की निधियाँ।
दिन-रात लुटाया करते हो, सम-शम की अविनश्वर मणियाँ।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे निर्मल देव! तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान-दीप आगम! प्रणाम।
हे शान्ति-त्याग के मूर्तिमान, शिव-पथ-पंथी गुरुवर! प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन-2

दोहा- शुद्धब्रह्म परमात्मा, शब्दब्रह्म जिनवाणि।
शुद्धातम साधकदशा, नमों जोड़ जुगपाणि।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव -शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

आशा की प्यास बुझाने को, अब तक मृग तृष्णा में भटका।
जल समझ विषय-विष भोगों को, उनकी ममता में था अटका।।
लख सौम्य दृष्टि तेरी प्रभुवर, समता रस पीने आया हूँ।
इस जल ने प्यास बुझाई ना, इस को लौटाने लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

क्रोधानल से जब जला हृदय, चन्दन ने कोई न काम किया।
तन को तो शान्त किया इसने, मन को न मगर आराम दिया।।
संसार ताप से तप्त हृदय, संताप मिटाने आया हूँ।
चरणों में चन्दन अर्पण कर, शीतलता पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिमान किया अब तक जड़ पर, अक्षयनिधि को ना पहिचाना।
'मैं जड़ का हूँ' 'जड़ मेरा है' यह, सोच बना था मस्ताना।।
क्षत में विश्वास किया अब तक, अक्षत को प्रभुवर ना जाना।
अभिमान की आन मिटाने को, अक्षयनिधि तुमको पहिचाना।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

दिन-रात वासना में रहकर, मेरे मन ने प्रभु सुख माना।
पुरुषत्व गमाया पर प्रभुवर, उसके छल को ना पहिचाना।।
माया ने डाला जाल प्रथम, कामुकता ने फिर बाँध लिया।
उसका प्रमाण यह पुष्प-बाण, लाकर के प्रभुवर भेंट किया।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो काम-बाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पुद्गल का भक्षण करके, यह भूख मिटाना चाही थी।
इस नागिन से बचने को प्रभु, हर चीज बनाकर खाई थी।।
मिष्टान्न अनेक बनाये थे, दिन-रात भखे न मिटी प्रभुवर।
अब संयम-भाव जगाने को, लाया हूँ ये सब थाली भर।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधा-रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहिले अज्ञान मिटाने को, दीपक था जग में उजियाला।
उससे न हुआ कुछ तब युग ने, बिजली का बल्ब जला डाला।।
प्रभु भेद-ज्ञान की आँख न थी, क्या कर सकती थी यह ज्वाला।
यह ज्ञान है कि अज्ञान कहो, तुमको भी दीप दिखा डाला।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

शुभ-कर्म कमाऊँ सुख होगा, अब तक मैंने यह माना था।
पाप-कर्म को त्याग पुण्य को, चाह रहा अपनाना था।।
किन्तु समझकर शत्रु कर्म को, आज जलाने आया हूँ।
लेकर दशांग यह धूप, कर्म की धूम उड़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों को अमृत फल जाना, विषयों में निश-दिन मस्त रहा।
उनके संग्रह में हे प्रभुवर! मैं व्यस्त-त्रस्त-अभ्यस्त रहा।।
शुद्धात्मप्रभा जो अनुपम फल, मैं उसे खोजने आया हूँ।
प्रभु सरस सुवासित ये जड़ फल, मैं तुम्हें चढ़ाने लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्ष-फलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बहूमूल्य जगत का वैभव यह, क्या हमको सुखी बना सकता।
अरे पूर्णता पाने में, इसकी क्या है आवश्यकता।।
मैं स्वयं पूर्ण हूँ अपने में, प्रभु है अनर्घ्य मेरी माया।
बहुमूल्य द्रव्यमय अर्घ्य लिये, अर्पण के हेतु चला आया।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- समयसार जिनदेव हैं, जिन-प्रवचन जिनवाणि।
नियमसार निर्ग्रन्थ गुरु, करें कर्म की हानि।।

(वीरछन्द)

हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, तुमको ना अब तक पहिचाना।
अतएव पड़ रहे हैं प्रभुवर, चौरासी के चक्कर खाना।।
करुणानिधि तुमको समझ नाथ, भगवान भरोसे पड़ा रहा।
भरपूर सुखी कर दोगे तुम, यह सोचे सन्मुख खड़ा रहा।।
तुम वीतराग हो लीन स्वयं में, कभी न मैंने यह जाना।
तुम हो निरीह जग से कृत-कृत, इतना ना मैंने पहिचाना।।

Scanned with CamScanner

प्रभु वीतराग की वाणी में, जैसा जो तत्त्व दिखाया है।
जो होना है सो निश्चित है, केवलज्ञानी ने गाया है।।
उस पर तो श्रद्धा ला न सका, परिवर्तन का अभिमान किया।
बनकर पर का कर्ता अब तक, सत् का न प्रभो सम्मान किया।।
भगवान तुम्हारी वाणी में, जैसा जो तत्त्व दिखाया है।
स्याद्वाद-नय, अनेकान्त-मय, समयसार समझाया है।।
उस पर तो ध्यान दिया न प्रभो, विकथा में समय गँवाया है।
शुद्धात्म रुचि न हुई मन में, ना मन को उधर लगाया है।।
मैं समझ न पाया था अब तक, जिनवाणी किसको कहते हैं।
प्रभु वीतराग की वाणी में, कैसे क्या तत्त्व निकलते हैं।।
राग धर्ममय धर्म रागमय, अब तक ऐसा जाना था।
शुभ-कर्म कमाते सुख होगा, बस अब तक ऐसा माना था।।
पर आज समझ में आया है, कि वीतरागता धर्म अहा।
राग-भाव में धर्म मानना, जिनमत में मिथ्यात्व कहा।।
वीतरागता की पोषक ही, जिनवाणी कहलाती है।
यह है मुक्ति का मार्ग निरन्तर, हमको जो दिखलाती है।।
उस वाणी के अन्तर्तम को, जिन गुरुओं ने पहिचाना है।
उन गुरुवर्यों के चरणों में, मस्तक बस हमें झुकाना है।।
दिन-रात आत्मा का चिन्तन, मृदु-सम्भाषण में वही कथन।
निर्वस्त्र दिगम्बर काया से भी, प्रगट हो रहा अन्तर्मन ।।
निर्ग्रन्थ दिगम्बर सद्ज्ञानी, स्वातम में सदा विचरते जो।
ज्ञानी ध्यानी समरससानी, द्वादश विधि तप नित करते जो।।

Scanned with CamScanner

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु, चरणों में शीश झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, नित यही भावना भाते हैं।।
हो नमस्कार शुद्धातम को, हो नमस्कार जिनवर-वाणी।
हो नमस्कार उन गुरुओं को, जिनकी चर्या समरससानी।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

दर्शन दाता देव हैं, आगम सम्यग्ज्ञान।
गुरु चारित्र की खानि हैं, मैं वंदौ धरि ध्यान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री समुच्चय पूजन

(श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान बीस तीर्थंकर एवं श्री सिद्ध पूजन)

देव-शास्त्र-गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित्त हुलसाय।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्करानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(वीरछन्द)

अनादिकाल से जग में स्वामिन् जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक्, रत्नत्रय निधि को नहिं पहचाना।।
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

भव-आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने में अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है।।
चन्दन-सम शीतलता पाने, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद बिन फिरा जगत की, लख चौरासी योनि में।
अष्टकर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं।।
अक्षयनिधि निज की पाने अब, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से विंध करके, चहुँगति दुख उपजाया है।।
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शांत हुई।
आतमरस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई।।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जड़दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
निजगुण दरशायक ज्ञानदीप से, मिटा मोह का अंधियारा।।
यह दीप समर्पित करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग-द्वेष नशायेगी।।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता बादाम, श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया।
आतमरस भीने निज गुण फल, मम मन अब उनमें ललचाया।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये।।
ये अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिसमूहाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु भगवान।
अब वरणूँ जयमालिका, करूँ स्तवन गुणगान।।

(छन्द-भुजंगप्रयात)

नसे घातिया कर्म जु अर्हन्त देवा,
करें सुर-असुर-नर मुनि नित्य सेवा।
दरश-ज्ञान-सुख-बल-अनन्त के स्वामी,
छियालीस गुण युत महा-ईश नामी।।
तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी,
महा-मोह विध्वंसिनी मोक्ष दानी।
अनेकांतमय द्वादशांगी बखानी,
नमो लोक माता श्री जैनवाणी।।
विरागी अचारज उवज्झाय साधु,
दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी,
निजानन्द मण्डित मुकति पथ प्रचारी।।
विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें,
विहरमान वंदूँ सभी पाप भाजें।
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी,
अनाकुल समाधान सहजाभिरामी।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु-विद्यमानविंशतितीर्थङ्कर-अनन्तानन्तसिद्ध परमेष्ठि-समूहायानर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला महाऽर्घ्यं नि. स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धर ले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तर ले रे।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

अर्घ्यावली

भूत भविष्यत् वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीत्रिकालसम्बन्धित्रिंशत्चतुर्विंशतिभ्यः त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यचैत्यालयेभ्यश्चार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुकोटि छप्पन लाख ऊपर, सहस्र सत्याणवें मानिये।
शतच्यार पै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये।।
तिहुँलोक भीतर राजते, सुर-असुर नर पूजा करें।
तिन भवन को हम अर्घ्य लेकै, पूजि हैं जग दुख हरैं।।

ॐ ह्रीं श्रीत्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुश्शतैकाशीति (८, ५६, ९७, ४८१) अकृत्रिम-जिन-चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्य भक्ति आलोचन चाहूँ, कायोत्सर्ग अघ नासन हेत।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिनबिंब अनेक।।
चतुर्निकाय के देव जजैं, ले अष्ट द्रव्य निजभक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिवखेत।।

ॐ ह्रीं श्रीकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसंबंधिजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वन्दना करूँ भाव से, सकल कर्म की नाशनहार।।
पंच महागुरु सुमिरन करके, कायोत्सर्ग करूँ सुखकार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा मैं अब भव पार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(नौ बार णमोकार मंत्र पढ़कर कायोत्सर्ग करें)

देवदर्शन के बिना बाह्य जैन नहीं और
आत्मदर्शन के बिना भाव जैन नहीं।

Scanned with CamScanner

श्री पंच परमेष्ठी पूजन

(छन्द-वीर)

अर्हन्त सिद्ध आचार्य नमन, हे उपाध्याय हे साधु नमन।
जय पंच परम परमेष्ठी जय, भवसागर तारणहार नमन।।
मन-वच-काया पूर्वक करता हूँ, शुद्ध हृदय से आह्वानन।
मम हृदय विराजो तिष्ठ तिष्ठ, सन्निकट होहु मेरे भगवन।।
निज आत्मतत्त्व की प्राप्ति हेतु, ले अष्ट द्रव्य करता पूजन।
तुम चरणों की पूजन से प्रभु, निज सिद्धरूप का हो दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

मैं तो अनादि से रोगी हूँ, उपचार कराने आया हूँ।
तुम सम उज्ज्वलता पाने को, उज्ज्वल जल भरकर लाया हूँ।।
मैं जन्म-जरा-मृत, नाश करूँ, ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार-ताप में जल-जल कर, मैंने अगणित दुःख पाए हैं।
निज शान्त स्वभाव नहीं भाया, पर के ही गीत सुहाए हैं।।
शीतल चंदन हैं भेंट तुम्हें, संसार-ताप नाशो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःखमय अथाह भवसागर में, मेरी यह नौका भटक रही।
शुभ-अशुभ भाव की भँवरों में, चैतन्य शक्ति निज अटक रही।।

Scanned with CamScanner

तन्दुल है धवल तुम्हें अर्पित, अक्षयपद प्राप्त करूँ स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दु:ख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्य: अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं काम व्यथा से घायल हूँ, सुख की न मिली किंचित् छाया।
चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ, तुमको पाकर मन हर्षाया।।
मैं कामभाव विध्वंस करूँ, ऐसा दो शील हृदय स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव दु:ख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं क्षुधा रोग से व्याकुल हूँ,चारों गति में भरमाया हूँ।
जग के सारे पदार्थ पाकर भी, तृप्त नहीं हो पाया हूँ।।
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, यह क्षुधा रोग मेटो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दु:ख मेटो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्ध महा-अज्ञानी मैं, निज को पर का कर्ता माना।
मिथ्यातम के कारण मैंने, निज आत्मस्वरूप न पहिचाना।।
मैं दीप समर्पण करता हूँ, मोहान्धकार क्षय हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु , भव दु:ख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्य: मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला धधक रही, संसार बढ़ रहा है प्रतिफल।
संवर से आस्रव को रोकूँ , निर्जरा सुरभि महके पल-पल।।
मैं धूप चढ़ाकर अब आठों, कर्मों का हनन करूँ स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु , भव-दु:ख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज-आत्मतत्त्व का मनन करूँ , चिंतवन करूँ निज चेतन का।
दो श्रद्धा-ज्ञान-चरित्र श्रेष्ठ, सच्चा पथ मोक्ष निकेतन का।।

Scanned with CamScanner

उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ, निर्वाण महा फल हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु , भव-दु:ख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ।
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ।।
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ्य पद हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु , भव-दु:ख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छन्द-पद्धरि)

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, निज ध्यानलीन गुणमय अपार।
अष्टादश दोष रहित जिनवर, अर्हन्त देव को नमस्कार।।1।।
अविकल अविकारी अविनाशी, निजरूप निरंजन निराकार।
जय अजर अमर हे मुक्तिकंत, भगवंत सिद्ध को नमस्कार।।2।।
छत्तीस सुगुण से तुम मण्डित, निश्चय रत्नत्रय हृदय धार।
हे मुक्ति वधू के अनुरागी, आचार्य सुगुरु को नमस्कार।।3।।
एकादश अंग पूर्व चौदह के, पाठी गुण पच्चीस धार।
बाह्यान्तर मुनि मुद्रा महान, श्री उपाध्याय को नमस्कार।।4।।
व्रत समिति गुप्ति चारित्र धर्म, वैराग्य भावना हृदय धार।
हे द्रव्य-भाव संयममय मुनिवर, सर्व साधु को नमस्कार।।5।।
बहु पुण्य संयोग मिला नरतन, जिनश्रुत जिनदेव चरणदर्शन।
हो सम्यग्दर्शन प्राप्त मुझे, तो सफल बने मानव जीवन।।6।।
निज-पर का भेद जानकर मैं, निज को ही निज में लीन करूँ।
अब भेद ज्ञान के द्वारा मैं, निज आत्म स्वयं स्वाधीन करूँ।।7।।

Scanned with CamScanner

निज में रत्नत्रय धारण कर, निज परिणति को ही पहचानूँ।
पर-परिणति से हो विमुख सदा, निज ज्ञानतत्व को ही जानूँ।।8।।

जब ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता विकल्प तज, शुक्लध्यान मैं ध्याऊँगा।
तब चार घातिया क्षय करके, अर्हन्त महापद पाऊँगा।।9।।

है निश्चित सिद्ध स्वपद मेरा, हे प्रभु कब इसको पाऊँगा।
सम्यक् पूजा फल पाने को, अब निजस्वभाव में आऊँगा।।10।।

अपने स्वरूप की प्राप्ति हेतु, हे प्रभु मैंने की है पूजन।
तब तक चरणों में ध्यान रहे, जब तक न प्राप्त हो मुक्ति सदन।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मंगल रूप अमंगल हर, मंगलमय मंगल गान करूँ।
मंगल में प्रथम श्रेष्ठ मंगल, नवकार मन्त्र का ध्यान करूँ।।12।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री सिद्ध पूजन-1

(हरिगीतिका)

निज वज्र पौरुष से प्रभो! अन्तर-कलुष सब हर लिये।
प्रांजल[1] प्रदेश-प्रदेश में, पीयूष निर्झर झर गये।।
सर्वोच्च हो अतएव बसते लोक के उस शिखर रे।
तुम को हृदय में स्थाप, मणि-मुक्ता चरण को चूमते।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

1. शुद्ध

Scanned with CamScanner

(वीरछन्द)

शुद्धातम-सा परिशुद्ध प्रभो! यह निर्मल नीर चरण लाया।
मैं पीड़ित निर्मम ममता से, अब इसका अन्तिम दिन आया।।
तुम तो प्रभु अंतर्लीन हुए, तोड़े कृत्रिम सम्बन्ध सभी।
मेरे जीवन-धन तुमको पा, मेरी पहली अनुभूति जगी।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे चैतन्य-सदन में प्रभु! धू-धू क्रोधानल जलता है।
अज्ञान-अमा[1] के अंचल में, जो छिपकर पल-पल पलता है।।
प्रभु! जहाँ क्रोध का स्पर्श नहीं, तुम बसो मलय की महकों में।
मैं इसीलिये मलयज लाया क्रोधासुर भागे पलकों में।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अधिपति प्रभु! धवल भवन[2] के हो, और धवल तुम्हारा अन्तस्तल।
अन्तर के क्षत सब विक्षत कर, उभरा स्वर्णिम सौंदर्य विमल।।
मैं महामान से क्षत-विक्षत, हूँ खण्ड-खण्ड लोकांत-विभो।
मेरे मिट्टी के जीवन में, प्रभु! अक्षत की गरिमा भर दो।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य-सुरभि की पुष्प वाटिका, में विहार नित करते हो।
माया की छाया रंच नहीं, हर बिन्दु सुधा की पीते हो।।
निष्काम प्रवाहित हर हिलोर, क्या काम काम की ज्वाला से।
प्रत्येक प्रदेश प्रमत्त हुआ, पाताल-मधु-मधुशाला[3] से।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा देह का धर्म प्रभो! इसकी पहिचान कभी न हुई।
हर पल तन में तन्मयता, क्षुत-तृष्णा अविरल पीन[4] हुई।।

---

1. अमावस्या 2. सिद्धशिला, निर्मल चैतन्य-भवन 3. शुद्ध अन्तस्तत्त्व का आनन्द भवन 4. पुष्ट

Scanned with CamScanner

आक्रमण क्षुधा का सह्य नहीं, अतएव लिये हैं व्यंजन ये।
सत्वर[1]तृष्णा को तोड़ प्रभो! लो, हम आनंद-भवन पहुँचे।।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

विज्ञान नगर के वैज्ञानिक, तेरी प्रयोगशाला विस्मय।
कैवल्य-कला में उमड़ पड़ा, सम्पूर्ण विश्व का ही वैभव।।
पर तुम तो उससे अति विरक्त, नित निरखा करते निज निधियाँ।
अतएव प्रतीक प्रदीप लिये, मैं मना रहा दीपावलियाँ[2]।।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

तेरा प्रासाद महकता प्रभु! अति दिव्य दशांगी[3] धूपों से।
अतएव निकट नहिं आ पाते, कर्मों के कीट-पतंग अरे।।
यह धूप सुरभि-निर्झरणी, मेरा पर्यावरण[4] विशुद्ध हुआ।
छक गया योग-निद्रा[5] में प्रभु! सर्वांग अमी[6] है बरस रहा।।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

निज लीन परम स्वाधीन बसो, प्रभु! तुम सुरम्य शिव-नगरी में।
प्रति पल बरसात गगन[7] से हो, रसपान करो शिव-गगरी में।।
ये सुरतरूओं के फल साक्षी, यह भव-संतति का अंतिम क्षण।
प्रभु! मेरे मंडप में आओ, है आज मुक्ति का उद्घाटन।।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरे विकीर्ण[8] गुण सारे प्रभु! मुक्ता-मोदक से सघन हुए।
अतएव रसास्वादन करते, रे! घनीभूति अनुभूति लिये।।
हे नाथ! मुझे भी अब प्रतिक्षण, निज अंतर-वैभव की मस्ती।
है आज अर्घ्य की सार्थकता, तेरी अस्ति मेरी बस्ती।।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति.. ।

---

1. अविलम्ब 2. महोत्सव 3. दशधर्मों की 4. अन्तरंग प्रदूषण 5. आनन्द समाधि
6. अमृत 7. शून्य चैतन्य 8. बिखरे हुये

Scanned with CamScanner

जयमाला

दोहा- चिन्मय हो, चिद्रूप प्रभु!, ज्ञाता मात्र चिदेश।
शोध-प्रबन्ध चिदात्म के,[1] सृष्टा तुम ही एक।।1।।

(छन्द-रेखता)

जगाया तुमने कितनी बार! हुआ नहिं चिर-निद्रा का अन्त।
मदिर[2] सम्मोहन ममता का, अरे! बेचेत पड़ा मैं सन्त।।2।।

घोर तम छाया चारों ओर, नहीं निज सत्ता की पहिचान।
निखिल जड़ता दिखती सप्राण, चेतना अपने से अनजान।।3।।

ज्ञान की प्रतिफल उठे तरंग, झाँकता उसमें आतमराम।
अरे! आबाल सभी गोपाल, सुलभ सबको चिन्मय अभिराम।।4।।

किंतु पर सत्ता में प्रतिबद्ध, कीर-मर्कट-सी[3] गहल अनन्त।
अरे! पाकर खोया भगवान, न देखा मैंने कभी बसन्त।।5।।

नहीं देखा निज शाश्वत देव, रही क्षणिका पर्यय की प्रीति।
क्षम्य कैसे हों ये अपराध? प्रकृति की यही सनातन रीति।।6।।

अतः जड़ कर्मों की जंजीर, पड़ी मेरे सर्वात्म प्रदेश।
और फिर नरक निगोदों बीच, हुए सब निर्णय हे सर्वेश।।7।।

घटा घन विपदा की बरसी, कि टूटी शंपा[4] मेरे शीश।
नरक में पारद-सा तन टूक, निगोदों मध्य अनंती मीच[5]।।8।।

करें क्या स्वर्ग सुखों की बात, वहाँ की कैसी अद्‌भुत टेव।
अन्त में बिलखे छह-छह मास, कहें हम कैसे उसको देव।।9।।

---

1. आत्मा के शुद्धि-विधान की शोध 2. मादक 3. तोता और बन्दर जैसी
4. बिजली 5. मृत्यु

Scanned with CamScanner

दशा चारों गति की दयनीय, दया का किन्तु न यहाँ विधान।
शरण जो अपराधी को दे, अरे! अपराधी वह भगवान।।10।।

"अरे! मिट्टी की काया बीच, महकता चिन्मय भिन्न अतीव।
शुभाशुभ की जड़ता तो दूर, पराया ज्ञान वहाँ परकीय।।11।।

अहो! 'चित्' परम अकर्तानाथ, अरे! वह निष्क्रिय तत्त्व विशेष।
अपरिमित अक्षय वैभव-कोष", सभी ज्ञानी का यह परिवेश[1]।।12।।

बताये मर्म अरे! यह कौन, तुम्हारे बिन वैदेही नाथ?
विधाता शिव-पथ के तुम एक, पड़ा मैं तस्कर दल के हाथ।।13।।

किया तुमने जीवन का शिल्प[2], खिरे सब मोह, कर्म और गात[3]।
तुम्हारा पौरुष झंझावात[4], झड़ गये पीले-पीले पात।।14।।

नहीं प्रज्ञा-आवर्त्तन[5] शेष, हुए सब आवागमन अशेष।
अरे प्रभु! चिर-समाधि में लीन, एक में बसते आप अनेक।।15।।

तुम्हारा चित्-प्रकाश कैवल्य, कहें तुम ज्ञायक लोकालोक।
अहो! बस ज्ञान जहाँ हो लीन, वही है ज्ञेय, वही है भोग।।16।।

योग चांचल्य[6] हुआ अवरुद्ध, सकल चैतन्य निकल निष्कंप।
अरे! ओ योग रहित योगीश! रहो यों काल अनन्तानन्त।।17।।

जीव कारण-परमात्म त्रिकाल, वही है अंतस्तत्त्व अखण्ड।
तुम्हें प्रभु! रहा वही अवलम्ब, कार्य परमात्म हुए निर्बन्ध।।18।।

अहो! निखरा कांचन चैतन्य, खिले सब आठों कमल[7] पुनीत।
अतीन्द्रिय सौख्य चिरंतन भोग, करो तुम धवल-महल के बीच।।19।।

उछलता मेरा पौरुष आज, त्वरित टूटेंगे बंधन नाथ।
अरे! तेरी सुख-शैय्या बीच, होगा मेरा प्रथम प्रभात।।20।।

---

1. अनुभूति 2. सुन्दर रचना 3. शरीर 4. तूफान
5. ज्ञप्ति-परिवर्तन 6. आत्म प्रदेशों का कम्पन 7. आठों गुण

Scanned with CamScanner

प्रभो! बीती विभावरी[1] आज, हुआ अरुणोदय शीतल छाँव।
झूमते शांति-लता के कुंज, चलें प्रभु! अब अपने उस गाँव।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(दोहा)

चिर-विलास चिद्ब्रह्म में, चिर-निमग्न भगवंत।
द्रव्य[2]-भाव[3] स्तुति से प्रभो! वंदन तुम्हें अनंत।।22।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री सिद्ध पूजन-2

दोहा- चिदानन्द स्वातमरसी, सत् शिव सुन्दर जान।
ज्ञाता-दृष्टा लोक के, परम सिद्ध भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

ज्यों-ज्यों प्रभुवर जल पान किया, त्यों-त्यों तृष्णा की आग जली।
थी आश कि प्यास बुझेगी अब, पर यह सब मृगतृष्णा निकली।।
आशा-तृष्णा से जला हृदय, जल लेकर चरणों में आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

तन का उपचार किया अब तक, उस पर चंदन का लेप किया।
मल-मलकर खूब नहा करके, तन के मल का विक्षेप किया।।
अब आतम के उपचार हेतु, तुमको चन्दन सम है पाया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

1. रात 2. उत्कृष्ट भक्ति परिणाम 3. निज शुद्धात्म-संवेदन

Scanned with CamScanner

सचमुच तुम अक्षत हो प्रभुवर, तुम ही अखण्ड अविनाशी हो।
तुम निराकार अविचल निर्मल, स्वाधीन सफल सन्यासी हो।।
ले शालिकणों का अवलम्बन, अक्षयपद! तुमको अपनाया।।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जो शत्रु जगत का प्रबल काम, तुमने प्रभुवर उसको जीता।
हो हार जगत के वैरी की, क्यों नहिं आनन्द बढ़े सबका।।
प्रमुदित मन विकसित सुमन नाथ, मनसिज को ठुकराने आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं समझ रहा था अब तक प्रभु, भोजन से जीवन चलता है।
भोजन बिन नरकों में जीवन, भरपेट मनुज क्यों मरता है।।
तुम भोजन बिन अक्षय सुखमय, यह समझ त्यागने हूँ आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलोक ज्ञान का कारण है, इन्द्रिय से ज्ञान उपजता है।
यह मान रहा था पर क्यों कर, जड़-चेतन-सर्जन करता है।।
मेरा स्वभाव है ज्ञानमयी, यह भेदज्ञान पा हरषाया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरा स्वभाव चेतनमय है, इसमें जड़ की कुछ गंध नहीं।
मैं हूँ अखण्ड चिद्पिण्ड चण्ड, पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।
यह धूप नहीं, जड़-कर्मों की रज आज उड़ाने मैं आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

Scanned with CamScanner

शुभ कर्मों का फल विषय-भोग, भोगों में मानस रमा रहा।
नित नई लालसायें जागीं, तन्मय हो उनमें समा रहा।।
रागादि विभाव किये जितने, आकुलता उनका फल पाया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल पिया और चन्दन चरचा, मालायें सुरभित सुमनों की।
पहनीं तन्दुल सेये व्यंजन, दीपावलियाँ की रत्नों की।।
सुरभी धूपायन की फैली, शुभ-कर्मों का सब फल पाया।
आकुलता फिर भी बनी रही, क्या कारण जान नहीं पाया।।
जब दृष्टि पड़ी प्रभुजी तुम पर, मुझको स्वभाव का भान हुआ।
सुख नहीं विषय-भोगों में है, तुमको लख यह सद्ज्ञान हुआ।।
जल से फल तक का वैभव यह, मैं आज त्यागने हूँ आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- आलोकित हो लोक में, प्रभु परमात्म-प्रकाश।
आनन्दामृत पानकर, मिटे सभी की प्यास।।

(छन्द-पद्धरि)

जय ज्ञानमात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनन्त चैतन्य रूप।
तुम हो अखण्ड आनन्द पिण्ड, मोहारि दलन को तुम प्रचण्ड।।
रागादि विकारी भाव जार, तुम हुए निरामय निर्विकार।
निर्द्वन्द्व निराकुल निराधार, निर्मम निर्मल हो निराकार।।
नित करत रहत आनन्द रास, स्वाभाविक परिणति में विलास।
प्रभु-शिव-रमणी के हृदय हार, नित करत रहत निज में विहार।।

Scanned with CamScanner

प्रभु भवदधि यह गहरो अपार, बहते जाते सब निराधार।
निज परिणति का सत्यार्थ भान, शिवपद दाता जो तत्त्वज्ञान।।
पाया नहीं मैं उसको पिछान, उल्टा ही मैंने लिया मान।
चेतन को जड़मय लिया जान, तन में अपनापा लिया मान।।
शुभ-अशुभ राग जो दुःखखान, उसमें माना आनन्द महान।
प्रभु अशुभ कर्म को मान हेय, माना पर शुभ को उपादेय।।
जो धर्म-ध्यान आनन्द रूप, उसको माना मैं दुःख स्वरूप।
मनवांछित चाहे नित्य भोग, उनको ही माना है मनोग।।
इच्छा-निरोध की नहीं चाह, कैसे मिटता भव-विषय-दाह।
आकुलतामय संसार सुःख, जो निश्चय से है महा-दुःख।।
उसकी ही निश-दिन करी आश, कैसे कटता संसार पाश।
भव-दुख का पर को हेतु जान, पर से ही सुख को लिया मान।।
मैं दान दिया अभिमान ठान, उसके फल पर नहिं दिया ध्यान।
पूजा कीनी वरदान माँग, कैसे मिटता संसार स्वाँग।।
तेरा स्वरूप लख प्रभु आज, हो गये सफल सम्पूर्ण काज।
मो उर प्रगट्यो प्रभु भेदज्ञान, मैंने तुमको लीना पिछान।।
तुम पर के कर्त्ता नहीं नाथ, ज्ञाता हो सबके एक साथ।
तुम भक्तों को कुछ नहीं देत, अपने समान बस बना लेत।।
यह मैंने तेरी सुनी आन, जो लेवे तुम को बस पिछान।
वह पाता है कैवल्यज्ञान, होता परिपूर्ण कला-निधान।।
विपदामय परपद है निकाम, निजपद ही है आनन्द धाम।
मेरे मन में बस यही चाह, निजपद को पाऊँ हे जिनाह।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(दोहा)

पर का कुछ नहिं चाहता, चाहूँ अपना भाव।
निज-स्वभाव में थिर रहूँ, मेटो सकल विभाव।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन

(वीरछन्द)

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजित सुरराय।।
विमल अनन्त धर्म जस-उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(छन्द-अवतार)

मुनि-मन-सम उज्जवल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक-कटोरी धीर, दीनी धार धरा।।
चौबीसौं श्री जिनचन्द्र, आनन्द-कन्द सही।
पद-जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिन-चरनन देत चढ़ाय, भव-आताप हरी।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल सितसोम-समान, सुन्दर अनियारे।
मुक्ताफल की उनमान पुञ्ज धरौं प्यारे।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

वर-कंज कदंब कुरण्ड, सुमन सुगन्ध भरे।
जिन-अग्र धरौं गुन-मण्ड, काम-कलंक हरे।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

मन-मोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रस-पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने।।
चौबीसौं श्री जिनचन्द्र, आनन्द-कन्द सही।
पद-जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम-खण्डन दीप जगाय, धारों तुम आगै।
सब तिमिर मोहक्षय जाय, ज्ञान-कला जागै।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगन्ध हुताशन माहिं, हे प्रभु! खेवत हों।
मिस-धूम करम जर जाहिं, तुम पद सेवत हों।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग-मन को प्यार, पूजत सुख पायो।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।
चौबीसौं श्री जिनचन्द्र, आनन्द-कन्द सही।
पद-जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- श्रीमत तीरथनाथ-पद, माथ नाय हित हेत।
गाऊँ गुणमाला अबै, अजर-अमर पद देत।।

(छन्द-धत्ता)

जय भव-तम भंजन, जन-मन-कंजन, रंजन दिन-मनि, स्वच्छ करा।
शिव-मग-परकाशक, अरिगन-नाशक, चौबीसों जिनराज वरा।।

Scanned with CamScanner

(छन्द-पद्धरि)

जय ऋषभदेव ऋषि-गन नमन्त, जय अजित जीत वसु अरि तुरन्त।
जय सम्भव भव-भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्द पूर।।

जय सुमति सुमति-दायक दयाल, जय पद्म पद्म दुति तन रसाल।
जय जय सुपार्श्व भव-पासनाश, जय चन्द्र, चन्द्र-तन दुति प्रकाश।।

जय पुष्पदन्त द्युति-दन्त-सेत, जय शीतल शीतल-गुननिकेत।
जय श्रेयनाथ नुत-सहस भुज्ज, जय वासव-पूजित वासुपूज्य।।

जय विमल विमल-पद देनहार, जय जय अनन्त गुन-गण अपार।
जय धर्म धर्म शिव-शर्म देत, जय शान्ति शान्ति-पुष्टी करेत।।

जय कुन्थु कुन्थु-आदिक रखेय, जय अरजिन वसु-अरि छय करेय।
जय मल्लि मल्ल हत मोह-मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत-शल्ल-दल्ल।।

जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेमिनाथ वृष-चक्र नेम।
जय पारसनाथ अनाथ-नाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ।।

(छन्द-त्रिभंगी)

चौबीस जिनन्दा, आनन्द कन्दा, पाप निकन्दा, सुखकारी।
तिन पद-जुगचन्दा, उदय अमन्दा, वासव-वन्दा हितकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भुक्ति-मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर।
तिन-पद मन-वच-धार, जो पूजै सो शिव लहै।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री अनंत तीर्थंकर पूजन

ढाई द्वीप के भूतकाल में हुए अनंतों तीर्थंकर।
वर्तमान में भी होते हैं ढाई द्वीप में तीर्थंकर।।
अरु भविष्य में भी अनंत तीर्थंकर होंगे मंगलकर।
इन सबको वन्दन करता हूँ विनयभाव उर में धर कर।।
भक्तिभाव से अनन्त तीर्थंकर की करता हूँ पूजन।
सकल तीर्थंकर वन्दन कर पाऊँ प्रभु सम्यक् दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीरछंद)

रत्नत्रय रूपी सम्यक् जल की धारा उर लाऊँ आज।
जन्म जरा मरणादि रोग हर मैं भी पाऊँ निज पदराज।।
भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

रत्नत्रय रूपी सम्यक् चंदन का तिलक लगाऊँ आज।
भवाताप ज्वर पूर्ण नाश कर मैं भी पाऊँ निज पद राज।।
भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय रूपी सम्यक् अक्षत् प्रभु चरण चढ़ाऊँ आज।
अक्षयपद की प्राप्ति करूँ प्रभु मैं भी पाऊँ निज पदराज।।

Scanned with CamScanner

भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयरूपी गुण पुष्पों से निज हृदय सजाऊँ आज।
कामबाण की व्यथा विनाशूँ मैं भी पाऊँ निज पदराज।।
भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयरूपी अनुभव रसमय चरू चरण चढ़ाऊँ आज।
अनाहार सुख प्राप्त करूँ प्रभु मैं भी पाऊँ निज पदराज।।
भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयरूपी दीपक की जग मग ज्योति जगाऊँ आज।
मोह तिमिर मिथ्यात्व नष्ट कर मैं भी पाऊँ निज पदराज।।
भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयरूपी स्व ध्यानमय धूप हृदय में लाऊँ आज।
अष्टकर्म सम्पूर्ण नष्ट कर मैं भी पाऊँ निज पदराज।।
भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयरूपी तरु के फल ज्ञान शक्ति से लाऊँ आज।
पूर्ण मोक्षफल प्राप्त करूँ प्रभु मैं भी पाऊँ निज पदराज।।

Scanned with CamScanner

भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो [illegible]

रत्नत्रयरूपी गुण अर्घ्य बनाऊँ प्रभु निज हित के काज।
पद अनर्घ्य प्रगटाऊँ शाश्वत मैं भी पाऊँ सिद्ध स्वराज।
भूत विद्य भावी कालों के तीर्थंकर भगवन्त अनन्त।
विनय भक्ति से वन्दन करता दुखदायी भव का हो अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकर[illegible]

जयमाला

[illegible]

तीन लोक में मध्य लोक है मध्य लोक में जम्बू द्वीप।
द्वितीय धातकीखंड द्वीप है जो भव्यों के सदा समीप।।
तीजे पुष्कर का है आधा पुष्करार्ध नाम विख्यात।
ये ही ढ़ाई द्वीप कहाते पंचमेरु इनमें प्रख्यात।।
मेरु सुदर्शन, विजय, अचल, मंदर, विद्युन्माली क्रमक्रम।
इनके दक्षिण भरत तथा उत्तर में ऐरावत अनुपम।।
इन पाँचों के पूरब पश्चिम नाम विदेह क्षेत्र विख्यात।
इन सबमें तीर्थंकर होते कर्म भूमि हैं ये प्रख्यात।।
इन सब में पाँचों कल्याणक वाले तीर्थंकर होते।
गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याण ये पाँचों होते।।
पर विदेह में तीन कल्याणक वाले भी प्रभु होते हैं।
तप अरु ज्ञान, मोक्ष कल्याणक वाले जिनवर होते हैं।।
दो कल्याणक वाले तीर्थंकर भी इनमें होते हैं।
ज्ञान और मोक्ष कल्याणक पवित्र इनके होते हैं।।

अरु भविष्य में भी अनंत तीर्थंकर होंगे इसी प्रकार।
स्वयं तिरेंगे अन्यों को भी तारेंगे ले जा भव पार।।
त्रिकालवर्ती अनंत तीर्थंकर प्रभुओं को है विनय प्रणाम।
नाम अनंतानंत आपके कैसे जपूँ आपके नाम।।
तीन लोक के सकल तीर्थंकर पूजन का जागा भाव।
पूजन का फल यही चाहता मैं भी दुख का करूँ अभाव।।

(दोहा)

महा अर्घ्य अर्पण करूँ, तीर्थंकर जिनराज।
नमूँ अनंतानंत प्रभु, त्रिकालवर्ती आज।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाजयमाला

(छंद-दिग्वधू)

रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।
अतएव अनंते दुख सहते आये हो तुम।।

मिथ्या भ्रम मद पीकर चहुँगति में भ्रमण किया।
भव पीड़ा हरने को निज ज्ञान न हृदय लिया।।
भवदुख धारा में ही बहते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

सुख पाना चाहो तो सत्पथ पर आ जाओ।
तत्त्वाभ्यास करके निज निर्णय उर लाओ।।
भव ज्वाला के भीतर जलते आये हो तुम ।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

पहिले समकित धन लो उर भेद ज्ञान करके।
मिथ्यात्व मोह नाशो अज्ञान सर्व हर के।।

Scanned with CamScanner

शुभ अशुभ जाल में ही जलते आए हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

फिर अविरति जय करके अणुव्रत धारण करना।
फिर तीन चौकड़ी हर संयम निज उर धरना।।
बिन व्रत खोटी गति में जाते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

अब दुष्ट प्रमाद नहीं आयेगा जीवन भर।
मिल जायेगा तुमको अनुभव रस का सागर।।
निज अनुभव बिन जग में थमते आए हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

झट धर्म ध्यान उर धर आगे बढ़ते जाना।
उर शुक्ल ध्यान लेकर श्रेणी पर चढ़ जाना ।।
कर भाव मरण प्रतिपल मरते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

फिर यथाख्यात लेकर घातिया नाश करना।
कैवल्य ज्ञान रवि पा सर्वज्ञ स्वपद वरना।।
निज ज्ञान बिना सुध बुध खोते आए हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

फिर अघातिया क्षय हित योगों को विनशाना।
कर शेष कर्म सब क्षय सिद्धत्व स्वगुण पाना।।
ध्रुवध्यान बिना भव में भ्रमते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

इस विधि से ही चेतन निज शिव सुख पाओगे।
शिव पथ खुलते ही झट शिवपुर में जाओगे।।

Scanned with CamScanner

पर घर में रह बहुदुख पाते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

निज मुक्ति वधु के संग परिणय होगा पावन।
पाओगे सौख्य अतुल तुम मोक्ष मध्य प्रतिक्षण।।
शिवसुख भी भव जल में धोते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

लौटोगे फिर न कभी ध्रुव सिद्ध शिला पाकर।
ध्रुवधाम राज्य पाकर हो जाओगे शिवकर।।
अपने अनंत गुण बिन रोते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

आनन्द अतीन्द्रिय की धारा है महामनोज्ञ।
सिद्धों समान सब ही प्राणी हैं पूरे योग्य।।
अपना स्वरूप भूले क्यों बौराये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

निज ज्ञान क्रिया से ही मिलता है सिद्ध स्वपद।
सब ही त्रिकालवर्ती जिन तजते सकल अपद।।
निज पद तज पर पद ही भजते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

जितने तीर्थेश हुए सबने पर पद त्यागे।
अपने स्वभाव में ही प्रतिपल-प्रतिक्षण लागे।।
अब तक आस्रव को ही ध्याते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

Scanned with CamScanner

अवसर अपूर्व पाया निज का चिन्तन करलो।
तीर्थंकर दर्शन कर सारे बन्धन हरलो।।
जब भी अवसर आया खोते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

मैं बार-बार वन्दूँ तीर्थेश अनंतानंत।
चहुँगति दुख हर पाऊँ पंचमगति सुख भगवंत।।
पर के ही गीत सदा गाते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

सदगुरु की सीख सुनो फिर कभी न उलझोगे।
बोलो कब चेतोगे कब तक तुम सुलझोगे।।
कब से कल कल कल कल कहते आये हो तुम।
रागों की हवेली में रहते आये हो तुम।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्त्यनन्ततीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

(वीरछंद)

ढाईद्वीप के मध्य हुए हो रहे तथा होंगे जिनराज।
भूत विद्य भावी अनंत तीर्थंकर मैंने पूजे आज।।
तीर्थंकर प्रभु के चरणों में प्रभु पाऊँ सम्यक् दर्शन।
रत्नत्रय को धारण करके नाश करूँ भव के बंधन।।

(इत्याशीर्वादः)

आध्यात्मिक लोरी

अर्हंत बनो, तुम सिद्ध बनो, निर्ग्रन्थ दिगम्बर संत बनो।
चिर मंगल-मुक्ति विधान करो, चैतन्य सुधारस पान करो।।

Scanned with CamScanner

श्री सीमन्धर पूजन

(कुण्डलिया)

भव-समुद्र सीमित कियो, सीमन्धर भगवान।
कर सीमित निजज्ञान को, प्रगट्यो पूरण ज्ञान।।
प्रगट्यो पूरण ज्ञान-वीर्य-दर्शन सुखधारी।
समयसार अविकार विमल चैतन्य-विहारी।।
अंतर्बल से किया प्रबल रिपु-मोह पराभव।
अरे भवान्तक! करो अभय हर लो मेरा भव।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

प्रभुवर तुम जल से शीतल हो, जल से निर्मल अविकारी हो।
मिथ्यामल धोने को जिनवर, तुम ही तो मल-परिहारी हो।।
तुम सम्यग्ज्ञान जलोदधि हो, जलधर अमृत बरसाते हो।
भविजन मनमीन प्राणदायक,भविजन मन जलज खिलाते हो।।
हे ज्ञानपयोनिधि सीमन्धर! यह ज्ञानप्रतीक समर्पित है।
हो शान्त ज्ञेय निष्ठा मेरी, जल से चरणाम्बुज चर्चित है।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन-सम चन्द्रवदन जिनवर, तुम चन्द्रकिरण से सुखकर हो।
भव-ताप निकंदन हे प्रभुवर! सचमुच तुम ही भव-दुख-हर हो।।
जल रहा हमारा अन्तःस्तल, प्रभु इच्छाओं की ज्वाला से।
यह शान्त न होगा हे जिनवर, रे विषयों की मधुशाला से।।
चिर-अंतर्दाह मिटाने को, तुम ही मलयागिरि चंदन हो।
चंदन से चरचूँ चरणाम्बुज, भव-तप-हर! शत-शत वंदन हो।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु! अक्षतपुर के वासी हो, मैं भी तेरा विश्वासी हूँ।
क्षत-विक्षत में विश्वास नहीं, तेरे पद का प्रत्याशी हूँ।।
अक्षत का अक्षत-सम्बल ले, अक्षत-साम्राज्य लिया तुमने।
अक्षत विज्ञान दिया जग को, अक्षत-ब्रह्माण्ड किया तुमने।।
मैं केवल अक्षत-अभिलाषी, अक्षत अतएव चरण लाया।
निर्वाण-शिला के संगम-सा, धवलाक्षत मेरे मन भाया।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सुरभित ज्ञान-सुमन हो प्रभु, नहिं राग-द्वेष दुर्गन्धि कहीं।
सर्वांग सुकोमल चिन्मय तन, जग से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।
निज अन्तर्वास सुवासित हो, शून्यान्तर पर की माया से।
चैतन्य विपिन के चितरंजन हो दूर जगत की छाया से।।
सुमनों से मन को राह मिली, प्रभु कल्पबेल से यह लाया।
इनको पा चहक उठा मन-खग, भर चोंच चरण में ले आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद रसामृत के द्रह हो, नीरस जड़ता का दान नहीं।
तुम मुक्त-क्षुधा के वेदन से, षट्रस का नाम-निशान नहीं।।
विध-विध व्यंजन के विग्रह से, प्रभु भूख न शांत हुई मेरी।
आनंद-सुधारस-निर्झर तुम, अतएव शरण ली प्रभु तेरी।।
चिर-तृप्ति-प्रदायी व्यंजन से, हो दूर क्षुधा के अंजन ये।
क्षुत्पीड़ा कैसे रह लेगी? जब पाये नाथ निरंजन ये।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय-विज्ञान-भवन अधिपति, तुम लोकालोक-प्रकाशक हो।
कैवल्य किरण से ज्योतित प्रभु! तुम महामोहतम नाशक हो।।

Scanned with CamScanner

तुम हो प्रकाश के पुँज नाथ! आवरणों की परछाँह नहीं।
प्रतिबिंबित पूरी ज्ञेयावलि, पर चिन्मयता को आँच नहीं।।
ले आया दीपक चरणों में, रे! अन्तर आलोकित कर दो।
प्रभु तेरे मेरे अन्तर को, अविलंब निरन्तर से भर दो।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धू-धू जलती दुख की ज्वाला, प्रभु त्रस्त निखिल जगती तल है।
बेचेत पड़े सब देही हैं चलता फिर राग प्रभंजन है।।
यह धूम-घूमरी खा-खाकर, उड़ रहा गगन की गलियों में।
अज्ञान-तमावृत चेतन ज्यों, चौरासी की रंग रलियों में।
संदेश धूप का तात्त्विक प्रभु, तुम हुए ऊर्ध्वगामी जग से।
प्रगटे दशाङ्ग प्रभुवर तुम को, अन्तःदशांग की सौरभ से।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ-अशुभ वृत्ति एकांत दुःख, अत्यन्त मलिन संयोगी है।
अज्ञान विधाता है इनका, निश्चित चैतन्य विरोधी है।।
काँटों-सी पैदा हो जाती, चैतन्य सदन के आँगन में।
चंचल छाया की माया-सी, घटती क्षण में बढ़ती क्षण में।
तेरी फल पूजा का फल प्रभु! हों शांत शुभाशुभ ज्वालायें।
मधुकल्प फलों सी जीवन में, प्रभु! शांति-लतायें छा जावें।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल-सा प्रभु निजस्वरूप, पहिचान उसी में लीन हुए।
भव-ताप उतरने लगा तभी, चंदन-सी उठी हिलोर हिये।।
अभिराम भवन प्रभु अक्षत का, सब शक्ति प्रसून लगे खिलने।
क्षुत् तृषा अठारह दोष क्षीण, कैवल्य प्रदीप लगा जलने।।
मिट चली चपलता योगों की, कर्मों के ईधन ध्वस्त हुए।
फल हुआ प्रभो! ऐसा मधुरिम, तुम धवल निरंजन स्वस्थ हुए।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

(दोहा)

वैदेही हो देह में, अतः विदेही नाथ।
सीमंधर निज सीम में, शाश्वत करो निवास।।
श्री जिन पूर्व विदेह में, विद्यमान अरहंत।
वीतराग सर्वज्ञ श्री, सीमंधर भगवंत।।

(छन्द-पद्धरि)

हे ज्ञान स्वभावी सीमंधर! तुम हो असीम आनन्दरूप।
अपनी सीमा में सीमित हो, फिर भी हो तुम त्रैलोक्य भूप।।
मोहान्धकार के नाश हेतु, तुम ही हो दिनकर अति प्रचण्ड।
हो स्वयं अखंडित कर्म शत्रु को, किया आपने खंड-खंड।।
गृहवास राग की आग त्याग, धारा तुमने मुनिपद महान।
आतम स्वभाव साधन द्वारा, पाया तुमने परिपूर्ण ज्ञान।।
तुम दर्शन ज्ञान-दिवाकर हो, वीरज मंडित आनंदकन्द।
तुम हुए स्वयं में स्वयं पूर्ण, तुम ही हो सच्चे पूर्णचन्द।।
पूरव विदेह में हे जिनवर! हो आप आज भी विद्यमान।
हो रहा दिव्य उपदेश भव्य, पा रहे नित्य अध्यात्मज्ञान।।
श्री कुन्दकुन्द आचार्यदेव को, मिला आपसे दिव्यज्ञान।
आत्मानुभूति से कर प्रमाण, पाया उनने आनन्द महान।।
पाया था उनने समयसार, अपनाया उनने समयसार।
समझाया उनने समयसार, हो गये स्वयं वे समयसार।।
दे गये हमें वे समयसार, गा रहे आज हम समयसार।
है समयसार बस एक सार, है समयसार बिन सब असार।।

Scanned with CamScanner

मैं हूँ स्वभाव से समयसार, परिणति हो जावे समयसार।
है यही चाह, है यही राह, जीवन हो जावे समयसार।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

समयसार है सार, और सार कुछ है नहीं।
महिमा अपरम्पार, समयसारमय आपकी।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री नन्दीश्वर पूजन

(छन्द-अडिल्ल)

सरब परब में बड़ो अठाई परव है।
नन्दीश्वर सुर जाहिं लेय वसु दरब है।।
हमें सकति सो नाहिं इहाँ करि थापना।
पूजैं जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अवतार)

कंचन-मणि-मय-भृङ्गार, तीरथ-नीर भरा।
तिहुँ धार दई निरवार, जामन मरन जरा।।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुँज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपेपूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

भव-तप-हर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुन कीजै साँच, आयो तुम ठाहीं।।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुँज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत जिनराज, पुँज धरे सोहैं।
सब जीते अक्ष-समाज-तुम सम अरु को हैं।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊँ फूलन सों।
लहूँ शील-लक्ष्मी एव, छूटों शूलन सों।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज इन्द्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिंग सोहै सार, अचरज है पूरा।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति-प्रकाश, तुम तन माहिं लसै।
टूटे करमन की राशि, ज्ञान-कणी दरसे।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु-धूप-सुवास, दश-दिशि नारि वरे।
अति हरष-भाव परकाश, मानों नृत्य करे।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

बहुविधि फल ले तिहुँ काल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जांचत हैं।।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुँज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपतु हों।।नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- कार्तिक फाल्गुन साढ़ के, अन्त आठ दिन माहिं।
नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजें इह ठाहिं।।1।।

(छन्द-लक्ष्मीधरा)

एक सौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा,
लाख चौरसिया एक दिश में लहा।
आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।2।।
चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं,
सहज चौरासिया एक दिश छाजहीं।
ढोल सम गोल ऊपर तले सुन्दरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।3।।
एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी,
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी।
चहुँ दिशि चार वन लाख जोजन वरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।4।।

Scanned with CamScanner

सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं,
सहस दश महा जोजन लखत ही सुखं।
बावरी कौन दो माहि दो रतिकरं।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।5।।

शैल बत्तीस एक सहस जोजन कहे,
चार सोलह मिले सर्व बावन लहे।
एक-इक सीस पर एक जिन मन्दिरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।6।।

बिम्ब अठ एकसौ रतनमयी सोहही,
देव देवी सरव नयन मन मोहही।
पाँचसौ धनुष तन पद्म-आसन परं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।7।।

लाल नख-मुख नयन श्याम अरु स्वेत हैं,
श्याम रंग भौंह सिर-केश छवि देत हैं।
वचन बोलत मनों हँसत कालुष हरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।8।।

कोटि-शशि-भान-दुति-तेज छिप जात है,
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है।
वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यक्धरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

नन्दीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनों नाम, यही भगति शिव-सुख करै।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री पंचमेरु पूजन

(छन्द-गीता)

तीर्थंकरों के न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा,
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंचमेरुन की सदा।
दो जलधि ढाई द्वीप में सब-गगन-मूल विराजहीं,
पूजों असी जिनधाम-प्रतिमा हौहिं सब दुख भाजहीं।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंबन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंबन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।। ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंबन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-चौपाई-आँचलीबद्ध)

शीतल-मिष्ट-सुवास मिलाय, जलसों पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शन-विजय-अचल-मंदर-विद्युन्मालीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिन-चैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्य: जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर करपूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्य: संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्ड सुगन्ध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्योऽक्षयपदप्राप्तायऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

वरन अनेक रहे महकाय, फूलसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

मन-वांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ अगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस सुवर्ण सुगन्ध सुहाय, फलसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यःऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मन्दर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रगट।।

Scanned with CamScanner

(छन्द-बेसरी)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भू पर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
ऊपर पाँच शतक पर सौहै, नन्दन-वन देखत मन मोहै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
ऊँचा जोजन सहस-छत्तीसं, पाण्डुक-वनसोहै गिरि-सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
चारों मेरु समान बखाने, भू पर भद्रसाल चहुँ जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
ऊँचे पाँच शतक पर भाखे, चारों नन्दनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
उच्च अठाइस सहस बताये, पाण्डुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वचन-तन वन्दना हमारी।।
सुर नर चारन वन्दन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पंचमेरु की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभु, तुरत महासुख होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री सोलहकारण पूजन

(छन्द-अडिल्ल)

सोलह कारण भाय तीर्थङ्कर जे भये।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये।।
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहुचाव सौं।
हमहु षोडश कारन भावैं भावसौं।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-चौपाई-आँचलीबद्ध)

कंचन-झारी निरमल नीर, पूजों जिनवर गुण गम्भीर।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर-पद-पाय।।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धि-विनयसंपन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचार-अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-संवेग-शक्तिस्त्याग-तपः-साधुसमाधि-वैयावृत्यकरण-अर्हद्भक्ति-आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-प्रवचनभक्ति-आवश्यकापरिहाणि-मार्गप्रभावना-प्रवचनवात्सल्य इति तीर्थंकरत्वकारणेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पांय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल सुगन्ध अनूप, पूजौं जिनवर तिहुँ जग भूप।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

फूल सुगन्ध मधुप–गुंजार, पूजौं श्री जिनवर जग–आधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर–पद–पाय।।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदनेवज बहुविधि पकवान, पूजौं श्री जिनवर गुणखान।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक–ज्योति तिमिर छयकार, पूजूँ श्री जिन केवलधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूरगन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि बहुत फलसार, पूजौं जिन वांछित–दातार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति–वास।
पाप–पुण्य सब नाशके, ज्ञान–भान परकाश।।

Scanned with CamScanner

(चौपाई)

दरशविशुद्धि धरै जो कोई, ताको आवागमन न होई।
विनय महाधारै जो प्राणी, शिव-वनिता की सखी बखानी।।
शील सदा दृढ़ जो नर पाले, सो औरन की आपद टाले।
ज्ञानाभ्यास करे मनमाहीं, ताके मोह-महातम नाहीं।।
जो संवेग-भाव विस्तारे, सुरग-मुकति-पद आप निहारे।
दान देय मन हरष विशेखे, इह भव जस पर भव सुख देखे।।
जो तप तपे खपे अभिलाषा, चूरे करम-शिखर गुरु भाषा।
साधुसमाधि सदा मन लावे, तिहुँ जग भोग भोगि शिव जावे।।
निश-दिन वैयावृत्त्य करैया, सो निहचै भव-नीर तिरैया।
जो अरहंत भगति मन आने, सो जन विषय कषाय न जाने।।
जो आचारज-भगति करे है, सो निर्मल आचार धरे है।
बहुश्रुतवन्त-भगति जो करई, सो नर संपूरण श्रुत धरई।।
प्रवचन-भगति करे जो ज्ञाता, लहे ज्ञान-परमानन्द-दाता।
षट् आवश्यक काल जो साधे, सो ही रत्नत्रय आराधे।।
धरम-प्रभाव करे जे ज्ञानी, तिन शिव-मारग रीति पिछानी।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावे, सो तीर्थंकर पदवी पावे।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

ये ही सोलह भावना, सहित धरे व्रत जोय।
देव-इन्द्र-नर वंद्य पद, 'द्यानत' शिवपद होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री दशलक्षण धर्म पूजन

(अनुष्टुप) स्थापना (संस्कृत)

उत्तमक्षान्तिकाद्यन्त-ब्रह्मचर्य-सुलक्षणम्।
स्थापय दशधा धर्ममुत्तमं जिनभाषिततम्।।

(अडिल्ल) स्थापना (हिन्दी)

उत्तम क्षमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,
चहुँगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस संजुगत।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्मों के अर्घ्य

(सोरठा, चौपाई एवं हरिगीतिका)

पीडैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजे पीतमा।।
उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहे अयानो।।
कहि है अयानो वस्तु छीने, बाँध मार बहुविधि करै।
घरतैं निकारै तन विदारै, बैर जो न तहाँ धरै।।
तैं करम पूरब किये खोटे सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध अग्नि बुझाय प्रानी, साम्य-जल ले सीयरा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।
उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया।।
रूँकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसैं।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा।।
उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये।।
करिये सरल तिहुँ जोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी।।
नहिं लहै लछमी अधिक, छल करि, करम-बन्ध-विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमार्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज।
साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।
उत्तम सत्य-बरत पालीजे, पर-विश्वासघात नहिं कीजे।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये।।
ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया।
वच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में।।
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुःखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।।
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष स्वभावतैं।।
ऊपर अमल मल भरयो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहैं।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधु लहैं।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल पंचेन्द्रिय मन वश करो।
संजम-रतम सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं।।
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाहीं।।
ठाहीं पृथि जल आग मारुत, रूख त्रस करूना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जम-मुख बीच में।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज संकति सम।।
उत्तम तप सब माँहि बखाना, करम-शैल को व्रज-समाना।
बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशु तन धारा।।
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्री जैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।

Scanned with CamScanner

अति महादुर्लभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं।
नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं।।
ॐ ह्रीं श्रीउत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए।
धन बिजुरी उनहार, नर-भव लाहो लीजिए।।
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय अहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारै।।
दोनों सँभारे कूप-जल सम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाया खोया बह गया।।
धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को।।
ॐ ह्रीं श्रीउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए।।
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता दुख ही मानों।
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुःख भालै।।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरै।
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर-असुर पायनि परैं।।
घर माँहि तिसना जो घटावै, रुचि नहिं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं।।
ॐ ह्रीं श्रीउत्तमाकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा।।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकैं न नैन-बान लखि कूरे।

Scanned with CamScanner

कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहिं, काग ज्यों चोंचैं भरै।।
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैंड़ि चढ़िकैं, शिव-महल में पग धरा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा - दश लच्छन बन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय।।

(छन्द-चौपाई)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावै।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै।।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नर-भव सफल करै ले साता।।
उत्तम तप निरवाँछित पालै, सो नर करम-शत्रु को टालै।
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परम समाधि दशा विसतारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर-सुर सहित मुकति-फल पावै।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येतिदशलक्षण-धर्माय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि।
अजर-अमर पद को लहै, 'द्यानत' सुख की राशि।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री महावीर पूजन

(हरिगीतिका)

जो मोह माया मान मत्सर, मदन मर्दन वीर हैं।
जो विपुल विघ्नों बीच में भी, ध्यान धारण धीर हैं।।
जो तरण-तारण भव-निवारण, भव-जलधि के तीर हैं।
वे वन्दनीय जिनेश, तीर्थंकर स्वयं महावीर हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

जिनके गुणों का स्तवन पावन करन अम्लान है।
मल-हरन निर्मल-करन भागीरथी नीर-समान है।।
संतप्त-मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लिपटे रहें विषधर तदपि-चन्दन विटप निर्विष रहें।
त्यों शान्त शीतल ही रहो-रिपु विघन कितने ही करें।।संतप्त.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-ज्ञान-दर्शन-वीर जिन अक्षत समान अखण्ड हैं।
हैं शान्त यद्यपि तदपि जो दिनकर समान प्रचण्ड हैं।।संतप्त.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवनजयी अविजित कुसुमसर सुभट मारन सूर हैं।
पर-गन्ध से विरहित तदपि निज-गन्ध से भरपूर हैं।।संतप्त.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यदि भूख हो तो विविध व्यंजन मिष्ट इष्ट प्रतीत हों।
तुम क्षुधा-बाधा रहित जिन! क्यों तुम्हें उनसे प्रीति हो?।।संतप्त.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

युगपद्-विशद् सकलार्थ झलकें नित्य केवलज्ञान में।
त्रैलोक्य-दीपक वीर-जिन दीपक चढ़ाऊँ क्या तुम्हें ?
संतप्त-मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्म ईन्धन दहन पावक पुंज पवन समान हैं।
जो हैं अमेय प्रमेय पूरण ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान हैं।।संतप्त.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारा जगत फल भोगता नित पुण्य एवं पाप का।
सब त्याग समरस निरत जिनवर सफल जीवन आपका।।संतप्त.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अर्घ्य का क्या मूल्य है अनर्घ्य पद के सामने ?
उस परम पद को पा लिया हे पतितपावन आपने।।संतप्त.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

सित छठवीं आषाढ़, माँ त्रिशला के गर्भ में।
अन्तिम गर्भावास, यही जान प्रणमूँ प्रभो।।

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस दिन सित चैत, अन्तिम जन्म लियो प्रभु।
नृप सिद्धार्थ निकेत, इन्द्र आय उत्सव कियो।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी मंगसिर कृष्ण, वर्द्धमान दीक्षा धरी।
कर्म कालिमा नष्ट, करने आत्मरथी बने।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

सित दशमी बैशाख, पायो केवलज्ञान जिन।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य, प्रभुपद पूजा करें हम।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक मावस श्याम, पायो प्रभु निर्वाण तुम।
पावा तीरथधाम, दीपावली मनाँय हम।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

यद्यपि युद्ध नहीं कियो, नाहिं रखे असि-तीर।
परम अहिंसक आचरण, तदपि बने महावीर।।

(छन्द-पद्धरि)

हे मोह-महादलदलन वीर, दुद्धर-तप संयम धरण धीर।
तुम हो अनन्त आनन्दकन्द, तुम रहित सर्व जग दंद-फंद।।
अघकरन करन-मन हरन-हार, सुखकरन हरन भवदुख अपार।
सिद्धार्थ तनय तन रहित देव, सुर-नर-किन्नर सब करत सेव।।
मतिज्ञान रहित सन्मति जिनेश, तुम राग-द्वेष जीते अशेष।
शुभ-अशुभ राग की आग त्याग, हो गये स्वयं तुम वीतराग।।
षट् द्रव्य और उनके विशेष, तुम जानत हो प्रभुवर अशेष।
सर्वज्ञ-वीतरागी जिनेश, जो तुम को पहिचाने विशेष।।
वे पहिचानें अपना स्वभाव, वे करें मोह-रिपु का अभाव।
वे प्रगट करें निज-पर विवेक, वे ध्यावें निज शुद्धातम एक।।
निज आतम में ही रहें लीन, चारित्र-मोह को करें क्षीण।
उनका हो जावे क्षीण राग, वे भी हो जावें वीतराग।।
जो हुए आज तक अरीहंत, सबने अपनाया यही पंथ।
उपदेश दिया इस ही प्रकार, हो सबको मेरा नमस्कार।।

Scanned with CamScanner

जो तुमको नहिं जानें जिनेश, वे पावें भव भव-भ्रमण क्लेश।
वे माँगें तुमसे धन-समाज, वैभव पुत्रादिक राज-काज।।
जिनको तुम त्यागे तुच्छ जान, वे उन्हें मानते हैं महान।
उनमें ही निशदिन रहें लीन, वे पुण्य-पाप में ही प्रवीन।।
प्रभु पुण्य-पाप से पार आप, बिन पहिचाने पावें संताप।
संतापहरण सुखकरण सार, शुद्धात्मस्वरूपी समयसार।।
तुम समयसार हम समयसार, सम्पूर्ण आत्मा समयसार।
जो पहिचानें अपना स्वरूप, वे हो जायें परमात्मरूप।।
उनको ना कोई रहे चाह, वे अपना लेवें मोक्ष राह।
वे करें आत्मा को प्रसिद्ध, वे अल्पकाल में होंय सिद्ध।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भूतकाल प्रभु आपका, वह मेरा वर्तमान।
वर्तमान जो आपका, वह भविष्य मम जान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्र पूजन

(छन्द-ताटंक)

जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र के, मध्य देश में अति पावन।
सिद्धक्षेत्र सोनागिर पर्वत, दिव्य मनोहर मनभावन।।
एक शतक जिन मन्दिर शोभित, चन्द्रप्रभ का समवशरण।
वृषभादिक महावीर जिनेश्वर, की प्रतिमाओं को वन्दन।।
नंग-अनंग कुमार मुक्त हो, निजानन्द रस हुए मगन।
साढ़े पाँच कोटि मुनियों ने, तप कर पाया मुक्ति सदन।।
रत्नत्रय केवल से पाया, सिद्ध शिला का सिंहासन।
श्री मुनिचरण कमल नित वन्दूँ, धन्य-धन्य पूजन दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिर-सिद्धक्षेत्र!अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिर-सिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिर-सिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

Scanned with CamScanner

(वीरछन्द)

हिंसादिक पाँचों पापों में, सदा लीन होता आया।
पाप पंक से रहित अवस्था, पाने को प्रभु जल लाया।।
सिद्धक्षेत्र सोनागिर वन्दूँ, वन्दूँ चन्द्रप्रभ जिनराज।
नंग-अनंग कुमार सु पूजूँ, साढ़े पाँच कोटि मुनिराज।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय के पंच विषय का, राग कभी न हटा पाया।
विषय भोग का ताप मिटाने, अति शीतल चंदन लाया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच प्रमादों में फँसकर, भवसागर में गोता खाया।
अप्रमत्त की मिले अवस्था, इसीलिये अक्षत लाया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रायऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध मान माया लोभादिक, भाव किए भव दुख पाया।
सर्व कषायों का अभाव करने को दिव्य पुष्प लाया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तव्यसन का राग न छूटा, भक्ष्य अभक्ष्य सभी खाया।
क्षुधा ज्वाल की अग्नि बुझाने, शुभ नैवेद्य नाथ लाया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अनादि-मिथ्यात्व पाप का, अन्त न अबतक कर पाया।
मोह तिमिर अज्ञान हटाने, ज्ञान दीप पाने आया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म ज्ञानावरणादिक, का न बन्ध कम कर पाया।
घाति-अघाति कर्मक्षय करने, ध्यान धूप पाने आया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रायऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

भव तन भोगों से विरक्ति का, कुछ पुरुषार्थ न कर पाया।
विगत कर्म मल रागद्वेष से रहित, सुफल पाने आया।।
सिद्धक्षेत्र सोनागिर वन्दूँ, वन्दूँ चन्द्रप्रभ जिनराज।
नंग-अनंग कुमार सु पूजूँ, साढ़े पाँच कोटि मुनिराज।।
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत, पंच समिति, त्रय गुप्ति न धारण कर पाया।
निज आत्मानुभूति पाने को, भाव अर्घ्य हे प्रभु लाया।।सिद्धक्षेत्र.।।
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रायऽनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- सोनागिर के क्षेत्र की, महिमा अपरम्पार।
भावसहित वन्दन करूँ, मन-वच-काय सँभार।।

परमपूज्य पावन सोनागिर, पर्वत सिद्धक्षेत्र सुखकार।
साढ़े पाँच कोटि मुनिवर की, गूँज रही है जय जयकार।।
इस पर्वत पर ही आया था, चन्द्रप्रभ का समवशरण।
नंग-अनंग कुमार दीक्षा लेकर निज की हुए शरण।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित, रत्नत्रय का ले अवलम्बन।
पर द्रव्यों का मोह त्यागकर, निज स्वभाव में हुए मगन।।
कोटि-कोटि मुनि निजस्वरूप लख, निज में ही तल्लीन हुए।
ज्ञानानन्दी सिद्ध स्वभावी, शुद्धातम में लीन हुए।।
इस पर्वत पर कठिन तपस्या, करके सिद्धलोक पाया।
जा पहुँचे लोकाग्र शिखर पर, परम अनन्त स्वपद पाया।।
चन्द्रप्रभ के समवशरण की, शोभा पर्वत पर न्यारी।
श्री बाहुबलि का दर्शन कर, हर्षित होते नर नारी।।
चन्द्रप्रभ की भव्य मनोहारी, विशाल प्रतिमा सुखकार।
नंग-अनंग कुमारों की प्रतिमाएँ, शोभित मंगलकार।।

Scanned with CamScanner

साढ़े पाँच कोटि मुनियों के, चरण चिह्न अनुपम मनहार।
भाव सहित दर्शन करने से, होता है आनन्द अपार।।
यहाँ पिसनहारी का मन्दिर, श्रम का पाठ पढ़ाता है।
ऊँचा मानस्तम्भ श्वेत लख, मान गलित हो जाता है।।
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्ववंत।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस प्रभु, वासुपूज्य जिन विमल अनन्त।।
धर्म शांति प्रभु कुंथु अरहजिन, मल्लि मुनिसुव्रत नमि भगवंत।
नेमि पार्श्वप्रभु महावीर का, शासन जग में जय जयवंत।।
तीर्थंकर चौबीस जिनेश्वर, के जिनमन्दिर बने अनेक।
जिनप्रतिमा दर्शन से होता, निकटभव्य को स्व-पर विवेक।।
भव्य दिगम्बर जिनप्रतिमा की, पूजन से होता आनन्द।
पुण्योपार्जन हो जाता है, होती सभी कषायें मन्द।।
श्री शुभचन्द्राचार्य भर्तृहरि की यह तपोभूमि पावन।
ज्ञानार्णव की रचना का सुन्दर स्थान मनोभावन।।
बहु प्राचीन जिनालय पावन उच्च शिखर ध्वजयुत मनहर।
महावीर-जिन-कीर्ति-स्तम्भ धवल शोभायमान सुन्दर।।
सोनागिर टेशन से पाँच किलोमीटर है सोनागिर।
होली पर वार्षिक मेले में होता है आनन्द निर्झर।।
सिंह द्वार पर्वत का सुन्दर अतिविशाल रमणीय प्रधान।
जय-जय कर सब प्रवेश करते गाते चन्द्रप्रभ गुणगान।।
चन्द्रप्रभ का समवशरण बहुबार यहाँ पर आया था।
भव्यजनों ने दिव्यध्वनि सुन शिवगामी पथ पाया था।।
स्वर्णिम पर्वत सरल चढ़ाई दर्शनीय दतिया के पास।
बालक-वृद्ध सभी चढ़ जाते, जाते हर्षित प्रभु के पास।।
नीचे शान्ति कुंथु अर जिन की प्रतिमाएँ हैं अति प्राचीन।
जिनबिम्बों के दर्शमात्र से हो जाते हैं पाप विलीन।।

Scanned with CamScanner

और अन्य अनेक जिनालय सभी धर्मशालाओं युक्त।
मौ वालों का मंदिर भी है एक धर्मशाला संयुक्त।।
चंद्र-नगर में त्रिमूर्ति मंदिर श्रेष्ठ धर्मशाला शोभित।
स्याद्वाद उद्यान जिनालय गोम्मटेश प्रतिमा शोभित।।
परमागम मंदिर विशाल में चन्द्रप्रभ जिन रहे विराज।
स्वाध्याय की श्रेष्ठ व्यवस्था लख प्रमुदित है सकल समाज।।
कुन्दकुन्द है नगर अनूठा बाहुबलि प्रतिमा उद्यान।
पंच-तीर्थ की रचना सुन्दर नित प्रति होते मंगलगान।।
पंचतीर्थ बाहुवली के, सन्मुख मानस्तम्भ महान।
महावीर मानस्तम्भ की, महिमा का हो जाता ज्ञान।।
उच्च गगन में चहुँदिशि जिन प्रतिमाओं को सादर वंदन।
दर्शन करते ही हो जाता, मान भाव का त्वरित शमन।।
निकट श्री सीमंधर प्रभु का, समवशरण मंदिर सुन्दर।
समवशरण में नाथ विराजे, दिव्यध्वनि देते मनहर।।
समवशरण की अष्ट भूमियों का होता अनुपम दर्शन।
भरतक्षेत्र के कुन्दकुन्द आचार्य कर रहे हैं वन्दन।।
द्वादश सभा जुड़ी है सुन्दर, सुनती दिव्यध्वनि संदेश।
झेल रहे हैं गणधर स्वामी, सीमंधर प्रभु का उपदेश।।
कुन्दकुन्द-कहान जिनागम, का नूतन निर्माण महान।
नीचे विद्यमान विशंति तीर्थंकर, प्रतिमाएँ है पूज्य प्रधान।।
ऊपर भरतक्षेत्र की भावी, चौबीसी के हैं तीर्थंकर भगवान।
महापद्म आदि के दर्शन कर, उर जगता वैराग्य महान।।
कुन्दकुन्द विद्या निकेतन, विद्यार्थी शिक्षा पाते।
आत्मज्ञान का वैभव पाकर, शुद्ध आत्मा को ध्याते।।
छात्रावास मनोहर सुन्दर, विद्यार्थी जन का आवास।
दिवस रात्रि अध्ययनरत रहकर, करते आत्मा का विश्वास।।

Scanned with CamScanner

कुन्दकुन्द नगरी की शोभा, द्विगुणित हो गई आज महान।
जो भी यात्री आते यहाँ पर, करते हैं अपना कल्याण।।
नित्य यहाँ यात्री आते हैं दर्शन-पूजन को दिन-रात।
परम सलोना सुन्दर पर्वत भारत भर में है विख्यात।।
हम भी इस पर्वत की यात्रा करके पाएँ परमानन्द।
जीवन सफल बनाएँ अपना सिद्ध समान बने सुख कन्द।।
सोनागिर के वैभव की स्वामिनी दिगम्बर जैन समाज।
भेदभाव है नहीं किसी से सबके चन्द्रप्रभ जिनराज।।
पाप-पुण्य से रहित अवस्था, आत्माश्रय से होती है।
कर्मों की कालुषता धुलती, तब पंचम गति होती है।।
शान्त मौन नासाग्र दृष्टि, जग को सन्देश सुनाती है।
शुद्ध त्रिकाली ध्रुव स्वभाव की, उर में महिमा आती है।।
सिद्धस्वपद पाकर यह चेतन, कृतकृत्य हो जाता है।
वीतराग सर्वज्ञ हिंतकर, परमेश्वर हो जाता है।।
प्रभु समान पद मैं भी पाऊँ, यही भावना भाता हूँ।
निजस्वरूप का दर्शन करने, चरण शरण में आता हूँ।।
वचन अगोचर अनुभव गोचर, आत्मतत्त्व दर्शन पाएँ।
सोनागिरि की पूजन करके, मंगलमय हम हो जाएँ।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रायऽनर्घ्यपद-प्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सोनागिर पर्वत का दर्शन, पूजन महासौख्यदाता।।
श्रीमुनिपद-चिह्नों पर चलने, वाला महामोक्ष पाता।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

विविध-अर्घ्यावली

श्री देव-शास्त्र-गुरु को अर्घ्य

क्षण भर निज-रस को पी चेतन, मिथ्यामल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है।।
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल रवि जगमग करता है।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह ही अर्हन्त अवस्था है।।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु! निज गुण का अर्घ्य बनाऊँगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अर्हन्त अवस्था पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंच-परमेष्ठी को अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ।
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ।।
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ्य पद हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव दुःख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंच-परमेष्ठिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध भगवान को अर्घ्य

तेरे विकीर्ण गुण सारे प्रभु! मुक्ता-मोदक से सघन हुए।
अतएव रसास्वादन करते, रे! घनीभूत अनुभूति लिये।।
हे नाथ! मुझे भी अब प्रतिक्षण निज अन्तरवैभव की मस्ती।
है आज अर्घ्य की सार्थकता, तेरी अस्ति मेरी बस्ती।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतयेसिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चौबीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।
चौबीसौं श्री जिनचन्द्र, आनन्द-कन्द सही।
पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री समुच्चय पूजन का अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये।।
यह अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य: श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यश्च अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदेहक्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

जल फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रनि हूतैं थुति पूरी न करी है।।
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार।
सीमंधर जिन आदि दे (स्वामी) बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज श्री महाराज हो।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री सीमन्धर भगवान को अर्घ्य

निर्मल जल सा प्रभु निज स्वरूप, पहिचान उसी में लीन हुए।
भव-ताप उतरने लगा तभी, चन्दन-सी उठी हिलोर हिये।।
अभिराम-भवन प्रभु अक्षत का, सब शक्ति-प्रसून लगे खिलने।
क्षुत्-तृषा अठारह दोष क्षीण, कैवल्य प्रदीप लगा जलने।।
मिट चली चपलता योगों की, कर्मों के ईंधन ध्वस्त हुए।
फल हुआ प्रभो! ऐसा मधुरिम, तुम धवल निरंजन स्वस्थ हुए।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान को अर्घ्य

शुचि निरमल नीरं गन्ध सु अक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि-बलि जाऊँ मनवचकाय।
हे करुणानिधि-भव दु:ख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पांय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री चन्द्रप्रभ भगवान को अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोरम, हर्षित होकर लाया हूँ।
चिदानन्द चिन्मय पद पाने, प्रभु चरणों में आया हूँ।।
चन्द्र जिनेश्वर चन्द्रनाथ, चन्द्रेश्वर चन्द्रप्रभ स्वामी।
राग-द्वेष परिणति के नाशक, मंगलमय अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान को अर्घ्य

आत्मानुभूति की प्रीति निज में है जागी।
पाऊँ अनर्घ्य पद नाथ मिथ्यामति भागी।।
हे शीतलनाथ जिनेश शीतलता धारी।
हे शील-सिन्धु शीलेश सब संकट हारी।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान को अर्घ्य

जब तक अनर्घ्य पद मिले नहीं, तब तक मैं अर्घ्य चढ़ाऊँगा।
निज पद मिलते ही हे स्वामी, फिर कभी नहीं मैं आऊँगा।।
त्रिभुवनपति वासुपूज्य स्वामी, प्रभु मेरी भव बाधा हरलो।
चारों गतियों के संकट हर हे प्रभु, मुझको निज सम करलो।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान को अर्घ्य

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य से, लाभ न कुछ हो पाता।
जब तक निज स्वभाव में चेतन, मग्न नहीं हो जाता।।
नेमिनाथ स्वामी तुम पद पंकज, की करता हूँ पूजन।
वीतराग तीर्थंकर तुमको, कोटि-कोटि मेरा वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री पार्श्वनाथ भगवान को अर्घ्य

नीर गन्ध अक्षतान्, सु पुष्प चारु लीजिए।
दीप धूप श्री फलादि, अर्घ्य तैं जजीजिए।।
पार्श्वनाथ देव सेव, आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान को अर्घ्य

जल-फल वसु सजि हिम-थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुण धीर, सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंचबालयति भगवान को अर्घ्य

प्रभु सर्व विशुद्ध स्वतत्त्व लखा, अब दृष्टि न पल भी हटती है,
होता उपयोग जभी बाहर, एकाग्र भावना जगती है।
एकाग्र रहे उपयोग सदा, यह ही निश्चय से अर्घ्य कहा,
जिससे अविचल अनर्घ्य पद हो, प्रभु बाह्य अर्घ्य इसलिये तजा।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबलि भगवान को अर्घ्य

सम्यक् अर्घ्य चढ़ाकर स्वामी, पद अनर्घ्य निश्चित पाऊँ।
मेरी यही प्रार्थना है प्रभु, फिर न लौट भव में आऊँ।।
आदिनाथ प्रभु भरत बाहुबलि की, पूजन कर हर्षाऊँ।
निज स्वरूप की प्राप्ति करूँ मैं, नित नूतन मंगल गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-भरत-बाहुबलिजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री बाहुवली भगवान को अर्घ्य

पुण्यभाव से स्वर्गादिक पद, बार-बार पा जाता हूँ।
निज अनर्घ्यपद मिला न अब तक, इससे अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।
श्री बाहुबली स्वामी प्रभुवर, चरणों में शीष झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवाणी को अर्घ्य

जल चंदन अक्षत फूल चरु चत, दीप धूप अतिफल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै।।
तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।.
सो जिनवर-वानी, शिव-सुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूत-सरस्वतीदेव्यै नमोऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सप्त-ऋषि मुनिराजों को अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ्य कीजे पावना।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्व-स्वमन्व-निश्चय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्र-सप्त ऋषिभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्र को अर्घ्य

पंच महाव्रत, पंच समिति, त्रय गुप्ति न धारण कर पाया।
निज आत्मानुभूति पाने को, भाव अर्घ्य हे प्रभु लाया।।
सिद्धक्षेत्र सोनागिर वन्दूँ, वन्दूँ चन्द्रप्रभ जिनराज।
नंग-अनंग कुमार सु पूजूँ, साढ़े पाँच कोटि मुनिराज।।टेक।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री निर्वाण क्षेत्र का अर्घ्य

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगत सौं, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाश कों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नन्दीश्वर द्वीप का अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेतु तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपतु हों।।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुँज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तर-दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंचमेरु जिनालय का अर्घ्य

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय।।
पाँचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाजी को करहुँ प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरु-सम्बन्ध्याशीतिजिन-चैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सोलहकारण का अर्घ्य

जलफल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परमगुरु हो जय-जय नाथ परमगुरु हो।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परमगुरु हो जय-जय नाथ परमगुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री दशलक्षण धर्म का अर्घ्य

आठों दरव संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री रत्नत्रय धर्म का अर्घ्य

आठ दरव निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री तीस चौबीसी भगवान को अर्घ्य

दरब आठों जु लीना है, अर्घ्य कर में नवीना है।
पूजते पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दश ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजता पाप सब भाजे।।

ॐ ह्रीं श्री पञ्चभरतपञ्चैरावतक्षेत्रसम्बन्धि-त्रिंशतचतुर्विंशते: विंशत्यधिकसप्तशत-तीर्थङ्करेभ्यो नम: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अकृत्रिम चैत्यालयों को अर्घ्य

वसुकोटि सुछप्पन लाख ऊपर, सहज सत्याणवे मानिये।
शतचार पै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये।।
तिहुँ लोक भीतर सासते, सुर-असुर नर पूजा करें।
तिन भवन को हम अर्घ्य ले कैं, पूजि हैं जगदुख हरें।।

ॐ ह्रीं श्रीत्रिलोकसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुर्शतैकाशीत्यकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भविष्यकालीन चौबीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

भरतक्षेत्र की भावी चौबीसी को, सविनय है वन्दन।
महापद्म आदि तीर्थंकर चौबीसी को करूँ नमन।।
परम पंचकल्याण विभूषित, तीर्थंकर चौबीस महान।
शुद्धभाव से अर्घ्य चढाऊँ, करूँ आत्मा का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्रीभविष्यकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

समुच्चय महाऽर्घ्य

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशाङ्ग रचि गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ।।
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ शर्मदा।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिवगेह के।।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाव-वन्दना त्रिकालपूजा त्रिकालवन्दना करवी करावी भावना भाववी श्री अरहन्तजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन विशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषै, थल विषै, आकाश विषै, गुफा विषै, पहाड़ विषै, नगर-नगरी विषै, कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र स्थित विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप स्थित बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। श्री सम्मेदशिखर, कैलाशगिरि, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार तीर्थंकर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। पावागढ़, तुंगीगिरी, गजपंथ, मुक्तागिर सिद्धवर कूट, ऊन बड़वानी पावागिरि, कुण्डलपुर, सोनागिर, राजगृही, मन्दारगिरी, द्रोणागिरी, अहारजी आदि समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूडबद्री, मन्दारगिरी, द्रोणगिरी अहारजी आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः श्री समस्त तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री गौतम स्वामी, श्री कुन्दकुन्दाचार्य एवं श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परम ऋषिभ्यो नमः इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

शान्ति पाठ-1

(चौपाई)

शान्तिनाथ मुख शशि-उनहारी शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजै।।
पंचम चक्रवर्ती पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति हित शांति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

(बसन्ततिलका)

पूजैं जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इंद्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।।
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप।।

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों औ यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजै सुखी हे जिन! शांति को दे।।

(स्रग्धरा)

होवे सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहे, व्याधियों का अंदेशा।।
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी।।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

Scanned with CamScanner

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

(आर्या)

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं न पाया मुक्ति-पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव-दुख से।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें)

शान्ति पाठ-2

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपति चक्री करें।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथाविधि पूजा करें।।
धन क्रिया ज्ञान रहित न जानें रीति पूजन नाथ जी।
हम भक्ति-वश तुम चरण आगे जोड़ लीने हाथ जी।।1।।
दुखहरण मंगल-करण आशा-भरन जिन-पूजा सही।
यों चित्त में सरधान मेरे भक्ति है स्वयमेव ही।।
तुम सारिखे दातार पाए काज लघु जाचूँ कहा।
मुझ आप सम कर लेहु स्वामी यही इक वाँछा महा।।2।।
संसार भीषण विपिन में वसुकर्म मिल आतापियो।
तिस दाह तें आकुलित चित है शान्ति-थल कहुँ ना लियो।।

Scanned with CamScanner

तुम मिले शान्तिस्वरूप शान्ति-करण समरथ जगपति।
वसु-कर्म मेरे शान्त कर दो शान्तिमय पंचमगति।।3।।
जबलौं नहीं शिव लहूँ तबलौं देह यह नर पावना।
सत्संग शुद्धाचरण श्रुत-अभ्यास आतम-भावना।।
तुम बिन अनन्तानन्त काल गयौ रुलत जगजाल में।
अब शरण आयो नाथ युग कर जोड़ नावत भाल मैं।।4।।

कर प्रमाण के मान तैं, गगन नपै किहिं भंत।
त्यौं तुम गुण-वर्णन करत, कवि पावे नहिं अंत।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

विसर्जन पाठ

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय।।1।।
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जनहूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।2।।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।
तुम चरणन ढिंग आयके, मैं पूजूँ अति चाव।
आवागमन रहित करो, रमूँ सदा निज भाव।।4।।

स्तुति पाठ

(चौपाई)

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करौं मन लाय।
जनम-जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवा-फल दीजे मोहि।।
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार-बार मैं विनती करूँ, तुम सेवा भव सागर तरूँ।।

Scanned with CamScanner

नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण की सेव।।
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊँ शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावैं मोक्ष निधान।।

जैसी महिमा तुम विषैं, और धरैं नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारागण होय।।

नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिन माँहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाश तैं, अन्धकार विनशाय।।

बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूँ नहीं, शरण राखि भगवान।।

धर्म प्रेम वश भक्तिभाव से कीन्ही विधि यह जान अजान।
तुम प्रसाद से पूर्ण हुई अब, जय जय श्री जिनवर गुण गान।।
हीन मंत्र और क्रिया द्रव्य से, शरण गही अब तेरी आन।
भूल हुई हो जो कुछ मुझसे, क्षमा करो हे श्री भगवान।।

तुम चरणन ढिंग आय के, मैं पूजौं अति चाव।
आवागमन रहित करो, रमूँ सदा निज भाव।।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्द्याद्यार्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारकम्।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम्।।

(समस्त वीतरागी जिनेन्द्र भगवंतों की जय)

Scanned with CamScanner

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

(दोहा)

वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित सिर नाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।

(चौपाई)

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव-भगति उर धार।।
चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखर समेद जिनेसुर बीस, भाव सहित वन्दौं निश-दीस।।
वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोडि, वन्दौं भाव सहित कर जोड़ि।।
श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात।
सम्भु प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूँ तसुपाय।।
रामचन्द्र के सुत द्वय वीर, लाड़नरिन्द आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि वन्दौं निरधार।।
पाण्डव तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजयगिरि के सीष, भाव सहित वन्दौं निश-दीश।।
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्री गजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँकाल।।
राम हणू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौं धरि ध्यान।।
नंग-अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि-शीश, ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईस।।
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास।।

Scanned with CamScanner

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वय चक्री दश काम कुमार, उठ कोड़ि वन्दौं भव पार।।
बड़बानी बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव सागर तर्ण।।
सुवरण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वरशिखर मँझार।
चेलना-नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास।।
फलहोड़ी बड़गाम अनूप पश्चिम दिशा द्रोणगिरी रूप।
गुरुदत्तादि मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वन्दौं नित तहाँ।।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दौं नित सुरत संभार।।
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय।।
वंसस्थल वनके ढिंग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषण दिशिभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।।
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुग पान।।
समवशरण श्री पार्श्व-जिनन्द, रेसिन्दीगिरि नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जिहाज।।
सेठ सुदर्शन पटना जान, मथुरा से जम्बू निर्वाण।
चरम केवली पंचम काल, ते वन्दौं नित दीन दयाल।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।
मन वच काय सहित सिर नाय, वन्दन करहि भविक गुण गाय।।
संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वन्दन करहि त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल।।

Scanned with CamScanner

स्वयंभू स्तोत्र (भाषा)

(चौपाई)

राजविषैं युगलनि सुख कियो, राजत्याग भवि शिवपद लियो।
स्वयंबोध स्वयंभू भगवान, बन्दौं आदिनाथ गुणखान।।
इन्द्र क्षीरसागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय।
मदन विनाशक सुखकरतार, वन्दौं अजित अजितपदकार।।
शुक्ल ध्यानकरि करम विनाशि, घाति अघाति सकल दुखराशि।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार, वन्दौं सम्भव भव-दुःखटार।।
माता पच्छिम रयनि मंझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, वन्दौं अभिनन्दन मनलाय।।
सब कुवादवादी सरदार, जीते स्याद्वाद-धुनि धार।
जैन धरम परकाशक स्वामि, सुमतिदेव-पद करहूँ प्रनाम।।
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमौं पदमप्रभु सुख की रास।।
इन्द्र फनिन्द्र नरिंद्र त्रिकाल, वाणी सुनि-सुनि होहिं खुस्याल।
द्वादश सभा ज्ञान-दातार, नमौं सुपारसनाथ निहार।।
सुगुन छियालिस हैं तुम माहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं।
मोह-महातम-नाशक दीप, नमौं चन्द्रप्रभ राख समीप।।
द्वादशविधि तप करम विनाश, तेरह भेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, वन्दौं पुहुपदंत मन आन।।
भवि-सुखदाय सुरगतैं आय, दशविधि धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुखदेय, वन्दौं शीतल धर्म-सनेह।।
समता सुधा कोप विषनाश करता, द्वादशांग वानी परकाश।
चार संघ-आनन्द-दातार, नमौं श्रेयांस जिनेश्वर सार।।
रत्नत्रय शिर मुकुट विशाल, शोभै कण्ठ सुगुण मणि माल।
मुक्ति-नार-भरता भगवान, वासुपूज्य वन्दौं धरि ध्यान।।

Scanned with CamScanner

परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित-उपदेश।
कर्म नाशि शिव सुख विलसन्त, वन्दौं विमलनाथ भगवन्त।।
अन्तर बाहिर परिग्रह टारि, परम दिगम्बर-व्रत को धारि।
सर्व जीव-हित राह दिखाय, नमौं अनन्त वचन-मन लाय।।
सात तत्त्व पंचास्तिकाय, अरथ नवो छः दरब बहु भाय।
लोक अलोक सकल परकाश, वन्दौं धर्मनाथ अविनाश।।
पंचम चक्रवर्ति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शान्तिकरन सोलम जिनराय, शान्तिनाथ वन्दौं हरषाय।।
बहु थुति करै हरष नहिं होय, निंदे दोष गहैं नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, वन्दौं कुन्थुनाथ शिवभूप।।
द्वादश गण पूजैं सुखदाय, थुति वन्दना करैं अधिकाय।
जाकी निज-थुति कबहुँ न होय, वन्दौं अर जिनवरपद दोय।।
पर-भव रत्नत्रय-अनुराग, इह-भव ब्याह समय वैराग।
बाल-ब्रह्म पूरन व्रत धार, वन्दौं मल्लिनाथ जिनसार।।
बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लोकान्त करैं पग लाग।
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, वन्दौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं।।
श्रावक विद्यावंत निहार, भगति-भाव सों दियो अहार।
बरसी रतन-राशि तत्काल, वन्दौं नमिप्रभु दीनदयाल।।
सब जीवन की बन्दी छोर, राग-द्वेष द्वै बन्धन तोर।
रजमति तजि शिवतिय सों मिले, नेमिनाथ वन्दौं सुख निले।।
दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनिधार।
गयो कमठशठ मुख कर श्याम, नमों मेरु सम पारस स्वामि।।
भव-सागर तैं जीव अपार, धरम पोत में धरे निहार।
डूबत काढ़े दया विचार, वर्द्धमान वन्दौं बहुबार।।

दोहा- चौबीसों पद-कमल जुग, वन्दौं मन-वच-काय।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय।।

Scanned with CamScanner

श्री बाहुबली स्वामी स्तुति

करी तपस्या मन मानी, जे देखो बाहुबली स्वामी।। टेक।।

ऋषभ के पुत्र भरत के भैया, मात सुनन्दा के कुँवर कन्हैया।
पोदनपुर के राज रखैया, मान भरत के भंग करैया।
पर थे अन्तर के ज्ञानी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।1।।

भाई बन्धु वैभव सुख माया, चरम शरीरी सुन्दर काया।
लख नश्वर बिजली जैसी छाया, सब तजकर मुनि पद मन भाया।।
खड़गासन हो गये ध्यानी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।2।।

बारह मास खड़े तप कीना, अन्न, जल त्याग महाव्रत लीना।
बेले लिपटी मोह भयो छीना, अन्तर अनुभव का बल दीना।।
तुरंत भये केवलज्ञानी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।3।।

'गोविन्द' बाहुबली को ध्याओ, इनकी भक्ति कर हर्षाओ।
अपनी ज्ञान ज्योति चमकाओ, तो तुम आत्मबली बन जाओ।।
तारण तरण मुकति गामी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।4।।

श्री जिनेन्द्र स्तवन

तिहारे ध्यान की मूरत, अजब छवि को दिखाती है।
विषय की वासना तजकर, निजातम लौ लगाती है।।

तेरे दर्शन से हे स्वामी, लखा है रूप मैं मेरा।
तजूँ कब राग तन धन का, ये सब मेरे विजाती हैं।।

तुम्हारी छवि निरख स्वामी, निजातम लौ लगी मेरे।
यही लौ पार कर देगी, जो भक्तों को सुहाती है।।

Scanned with CamScanner

श्री चन्द्रप्रभ भगवान की स्तुति

हे चन्द्र जिनवर चन्द्र अंकित, चन्द्र वर्ण सुभा निभम्।
नर 'इन्द्र चन्द्र' मुनीन्द्र वन्दित चन्द्रनाथ जिनेश्वरम्॥
शिवपंथ वेश विकार वर्जित, क्लेश हर मन रंजनम्।
मद मोह मान अज्ञान दुःखनिधि, प्रबल मन्मथ भंजनम्॥
प्रभु पाप पंक कलंक वर्जित, सित मयंक गुणागरम्।
अघरूप वनदव भस्मकर्ता, अक्ष विजयी जिनवरम्॥
विधि मेघश्याम समूह नाशक, तीव्र पवन प्रचण्डनम्।
भवताप हर सुख साजकर, वरदीप नभ मार्तण्डनम्॥
तुम दिव्यज्योति दिनेश कोटिक, दिव्यरूप प्रभाहरम्।
तुम दिव्यवाणी दिव्यज्ञानी, दिव्यमूर्ति निरंजनम्॥
सत्मग प्रकाशक पाप नाशक, श्रेष्ठ शासक वन्दनम्।
फल मुक्तिदायक विश्वनायक, जनसहायक अघहरम्॥
कलमल विमोचन ज्ञान लोचन, दरिद मोचन ईश्वरम्।
कह प्रेमपूर्वक दास 'भगवत्' नित्य वन्दे जिनवरम्॥

श्री जिनेन्द्र वन्दना

हे वीतरागी वीर प्रभु, सम्यक्त्व निधि से पूर हो।
हो कर्म दल के दलनकर्ता, सिद्धपुर के शूर हो॥
शुद्धात्मा को साधकर, सर्वज्ञ पद को पा लिया।
मद मोह मिथ्याज्ञान तजकर, ज्ञान कमल खिला लिया॥
सब आत्मा भगवान हैं, यह दिव्यध्वनि का सार है।
है सार बस शुद्धात्मा, संसार सब निःसार है॥
सबका परम कल्याण हो, दुःख दर्द का अवसान हो।
है भावना उत्तम यही, बस 'ज्ञान' का साम्राज्य हो॥

Scanned with CamScanner

भाग–2

श्री शान्ति मण्डल विधान (लघु)

(श्री नवदेवताओं की पूजन)

समुच्चय पूजन

(हरिगीतिका)

अरहंत सिद्धाचार्य पाठक साधु जिनप्रतिमा महान।
जिनालय जिनध्वनि तथा जिनधर्म है जग में प्रधान।।
यही हैं नवदेव पावन सकल दुखहर्ता सदा।
परम शिवसुख शान्तिदाता करूँ पूजन सर्वदा।।
विनय से वन्दन करूँ नित हृदय से ध्याऊँ प्रभो।
तत्त्वज्ञान महान पाकर शान्ति पाऊँ हे विभो।।
जानकर नवदेव उत्तम चरण इनके उर धरूँ।
मुक्ति के पथ पर चलूँ मैं कर्म के बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवगर्भित–अरहंत–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–साधु–जिनालय–जिनप्रतिमा–जिनवाणी–जिनधर्मसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवगर्भित–अरहंत–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–साधु–जिनालय–जिनप्रतिमा–जिनवाणी–जिनधर्मसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवगर्भित–अरहंत–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–साधु–जिनालय–जिनप्रतिमा–जिनवाणी–जिनधर्मसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीरछंद)

सविनय क्षीरोदधि का प्रासुक, जल चरणाग्र चढ़ाऊँ आज।
जन्म–जरा–मरणादि दोष हर, पाऊँ शाश्वत निज पदराज।।
पाँचों परमेष्ठी जिनमंदिर, जिनप्रतिमा जिनश्रुत जिनधर्म।
नवदेवों को वन्दन करके, हे प्रभु! हो जाऊँ निष्कर्म।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मिथ्यात्वमलविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

मेरु सुदर्शन भद्रशालवन से लाऊँ शीतल चंदन।
भवाताप ज्वर नाश करूँ बनकर सिद्धों का लघुनंदन।।
पाँचों परमेष्ठी जिनमंदिर जिनप्रतिमा जिनश्रुत जिनधर्म।
नवदेवों को वन्दन करके हे प्रभु! हो जाऊँ निष्कर्म।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्य: क्रोधकषायविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु के नंदनवन से अक्षत लाऊँ धवलोज्ज्वल।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु मैं ध्याऊँ निजस्वभाव निर्मल।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मानकषायविनाशनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु-सौमनस सुवन से विविध पुष्प लाऊँ मनहर।
कामबाण विध्वंस हेतु धारूँ उर महाशील शिवकर।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मायाकषायविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरू-पाण्डुकवन जा अनुभव रस चरु निर्मित कर।
क्षुधारोग की पीर मिटाऊँ अनाहार निजपद पाकर।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो लोभकषायविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्मालीमेरु निकट जा दीपक लाऊँ ज्ञानमयी।
महामोह मिथ्यात्व तिमिर हर हो जाऊँ निज ध्यानमयी।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्तर पर्वत पर जा ध्यान धरूँगा धर्ममयी।
निज शुद्धोपयोग केवल से हो जाऊँ वसु कर्मजयी।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो विभावपरिणतिविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु के कुलवृक्षों से रस वाले फल लाऊँ आज।
शाश्वत महामोक्ष फल पाऊँ गुण अनंत प्रगटा जिनराज।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु के वक्षारों पर अर्घ्य बनाऊँ भली प्रकार।
पद अनर्घ्य ध्रुवधामी पाऊँ हो जाऊँ भवसागर पार।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

संचिता भव वासना का अंत करना चाहिए।
अब कषायी भाव को सम्पूर्ण हरना चाहिए।।
जानकर सामान्य छह गुण ध्यान अपना कीजिए।
जो कि चार अभाव हैं उनको हृदय में लीजिए।।
शुद्ध षट्कारक सदा ही प्राप्त करना चाहिए।
संचिता भव वासना का अंत करना चाहिए।।
संग सामग्री यही शिवमार्ग पर लेकर चलो।
ज्ञान की दृढ़ भावना ले कर्म कालुषता दलो।।
अब हमें सिद्धत्व की ही प्राप्ति करना चाहिए।
संचिता भव वासना का अंत करना चाहिए।।

(दोहा)

महा-अर्घ्य अर्पण करूँ, श्री नवदेव महान।
परम शान्ति की प्राप्ति हित, करूँ आपका ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

(छन्द-मानव)

अंतर्मन शुद्ध न हो तो, समकित कैसे पायेंगे।
बिन सम्यग्दर्शन चेतन, सत्पथ पर कब आयेंगे।।
बिन समकित जप-तप-संयम, लेकर अनंतभव धारे।
फिर भी न लाभ कुछ पाया, पाये भव के अँधियारे।।
समकित बिन रत्नत्रय का, पाना है पूर्ण असंभव।
अंतर्मन शुद्ध अगर है, तो समकित पाना संभव।।

Scanned with CamScanner

पहले तत्त्वाभ्यास कर, फिर तत्त्वों का निर्णय कर।
उर भेदज्ञान प्रगटाकर, सम्यग्दर्शन उर में धर।।
आत्मानुभूति बिन निश्चय समकित न कभी मिलता है।
बिन समकित ज्ञान-चरित के उर में ना कभी झिलता है।।
जब मुझको श्रद्धा हो उर निज का हो ज्ञान सुसम्यक्।
चारित्र सहज मिलता है शिवपथ मिलता है सम्यक्।।
ये ही रत्नत्रय पावन है मोक्षमार्ग का दाता।
फिर पूर्ण देशसंयम भी स्वयमेव हृदय में आता।।
संयम का भाव जागते, ही चेतन शुद्ध होता।
चौकड़ी कषाय तीन को, हरकर यह जिनमुनि होता।।
समकित पाते ही सिद्धों का लघुनंदन बन जाता।
रागों के महल गिराता, आगे ही बढ़ता जाता।।
निश्चय संयम पाते ही सिद्धों समान लगता है।
इसका पुरुषार्थ देखकर चारित्रमोह भगता है।।
फिर घाति कर्म क्षय होते केवलरवि उर आता है।
अर्हन्तदशा मिलती है सर्वस्व स्वपद पाता है।।
अतएव आज ही अपना अंतर्मन शुद्ध करें हम।
मिथ्यात्व मोह रागादि भावों को पूर्ण हरें हम।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

(दोहा)

नवदेवों का ध्यान कर, करूँ स्व-पर कल्याण।
रत्नत्रय की भक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

अर्घ्यावली

श्री अरहंत परमेष्ठी को अर्घ्य

(चन्द्रायण)

सकल ज्ञेय के ज्ञायक श्री अरहंत हैं।
छियालीस गुणधारी प्रभु भगवंत हैं।।
दोष अठारह रहित नाथ है सर्वथा।
युगपत् लोकालोक जानते हैं तथा।।
अरहंतो को नमन करूँ मैं भाव से।
राग त्याग जुड़ जाऊँ शुद्ध स्वभाव से।।
दर्शन-ज्ञान-चरित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री षट्चत्वारिंशतुणमण्डितअरहंतपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परमेष्ठी को अर्घ्य

गुण अनंत के स्वामी सिद्धों को नमन।
मुख्य अष्ट गुणधारी प्रभुओं को नमन।।
त्रिलोकाग्र पर सिद्ध शिलापति आप हो।
निजानंद रसलीन स्वज्ञायक आप हो।।
सिद्धचक्र संबंधित सिद्ध महान हो।
तीनलोक में तुम ही श्रेष्ठ प्रधान हो।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टगुणमण्डितसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य परमेष्ठी को अर्घ्य

आचार्यों को भावसहित मेरा नमन।
ऋषि-मुनि-यति-अनगार संघ चउपति नमन।।
हैं छत्तीस गुणों के धारी सर्वदा।
पंचाचार पालते स्वामी सर्वदा।।

Scanned with CamScanner

आचार्यों को विनय सहित वन्दन करूँ।
महामोह मिथ्यात्व तिमिर पूरा हरूँ।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री षट्त्रिंशत्गुणमण्डिताचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय परमेष्ठी को अर्घ्य

उपाध्याय गुरुवर श्रुतज्ञान प्रधान हैं।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह का ज्ञान है।।
हैं पच्चीस गुणों से शोभित सर्वदा।
यति-मुनियों को आप पढ़ाते हैं सदा।।
उपाध्याय गुरुओं को मैं वन्दन करूँ।
जो भी है अज्ञान उसे पूरा हरूँ।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री पंचविंशतिगुणमण्डित-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु परमेष्ठी को अर्घ्य

पंचमहाव्रत पंचसमिति पालक सुमुनि।
षट् आवश्यक पंचेन्द्रिय वश हैं सुमुनि।।
शेष सात गुण से मुनि हैं शोभायमान।
अट्ठाईस मूलगुण हैं मुनि के महान।।
ढाईद्वीप में भावलिंग मुनि हैं सदा।
त्रय कम नौ करोड़ मुनि रहते सर्वदा।।
सर्व साधु मुनियों को नित वन्दन करूँ।
मैं भी मुनि होऊँ यह भाव हृदय धरूँ।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशतिगुणमण्डितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

(चौपाई)

भरतक्षेत्र के वर्तमान प्रभु। चौबीसों तीर्थेश महाविभु।।
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन। सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व वंदन।।
चंद्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन। वासुपूज्य श्री विमल अनंत जिन।।
धर्म शान्ति श्री कुन्थु अरह प्रभु। मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि विभु।।
पार्श्वनाथ श्री महावीर जय। शिव सुखकर्त्ता प्रभु मंगलमय।।
परम शान्ति सुखदाता स्वामी। भवदुख नाशो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री भरतक्षेत्रस्थवर्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक के पंचमेरु जिनालयों को अर्घ्य

(छन्द-वीर)

तीनलोक में मध्यलोक है इसमें ढाईद्वीप महान।
जम्बू-धातकी-पुष्करार्ध में पाँच मेरु हैं शोभावान।।
मेरु सुदर्शन-विजय-अचल-मंदर-विद्युन्माली अभिराम।
सब में चार-चार वन सुन्दर जिनमें चार-चार जिनधाम।।
सब मिल अस्सी जिनगृह इनमें इक् शत वसु प्रतिमा शोभित।
इन्द्रादिक सुर-नर-मुनि जाते दर्शन कर होते मोहित।।
सभी अकृत्रिम चैत्यालय हैं इनमें इक शत वसु जिनबिम्ब।
मैं भी दर्शन इनके करके इनमें देखूँ निज प्रतिबिम्ब।।
इन सबको मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय भाव से भक्ति सहित।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी हो जाऊँ परभाव रहित।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी गजदंत जिनालयों को अर्घ्य

पंचमेरु संबंधी हैं विदिशाओं में गजदंत सु बीस।
एक-एक में चार जिनालय सब मिल विंशति जिनगृह ईश।।

Scanned with CamScanner

सभी अकृत्रिम जिनमंदिर हैं तथा अकृत्रिम जिनप्रतिमा।
जो भी इनको वन्दन करते पाते हैं निजपद महिमा।।
मैं भी भाव सहित गजदंतों के जिनमंदिर करूँ नमन।
परम शान्ति का सिन्धु प्राप्त कर निजस्वरूप में रहूँ मगन।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि-गजदंतजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी वक्षार जिनालयों को अर्घ्य

एक मेरु संबंधी हैं वक्षार सुपर्वत चार महान।
पंचमेरु संबंधी हैं वक्षार बीस अति महिमावान।।
एक-एक पर चार जिनालय स्वर्णमयी बहु सुन्दर हैं।
सब मिल अस्सी जिनगृह इनमें जिन प्रतिमाएँ मनहर हैं।।
इन सबको मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय सहित करके वन्दन।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी पाऊँ शाश्वत मुक्ति सदन।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि-अशीतिवक्षारस्थजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी कुलवृक्ष जिनालयों को अर्घ्य

पंचमेरु संबंधी जम्बू-शाल्मलि-धातकी-पुष्करवृक्ष।
चैत्यवृक्ष जिनगृह मैं वन्दूँ होऊँ आत्मज्ञान में दक्ष।।
पृथ्वीकायिक वृक्ष सभी हैं यही जानकर हर्षाऊँ।
परम शान्ति हित अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय भाव उर में लाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि-कुलवृक्षजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी एक सौ सत्तर विजयार्ध जिनालयों को अर्घ्य

एक मेरु संबंधी गिरि विजयार्ध क्षेत्र बत्तीस विदेह।
भरतैरावत एक-एक है भाव सहित वन्दूँ धर नेह।।
पंचमेरु संबंधी इक शत साठ श्रृंग विजयार्ध महान।
पंचैरावत पंचभरत के दस विजयार्ध सुपर्वत जान।।

Scanned with CamScanner

सब मिल एक शतक सत्तर विजयार्ध रजतगिरि ढाईद्वीप।
इन पर एक-एक चैत्यालय जो भव्यों के हृदय समीप।।
सब मिल एक शतक सत्तर चैत्यालय स्वर्णमयी वन्दूँ।
परम शान्ति पाऊँ हे स्वामी निज स्वभाव को अभिनन्दूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंबंधि-विजयार्धक्षेत्रस्थ-सप्तत्याधिक-एकाशतजिनालयेभ्यो निर्वपामीति स्वाहा।

धातकीखण्ड स्थित पुष्करार्ध संबंधी जिनालयों को अर्घ्य

द्वीप धातकी दक्षिण उत्तर दो हैं ईष्वाकार महान।
पुष्करार्ध में दक्षिण उत्तर दो हैं ईष्वाकार प्रधान।।
एक उदधि से द्वितीय उदधि तक होता है इनका विस्तार।
जिन आगम करणानुयोग का ज्ञान करूँ जो अगम अपार।।
ये सब चार जिनालय ईष्वाकार परम सुन्दर पावन।
विनय भाव से शान्ति प्राप्ति हित वन्दूँ सादर मन भावन।।

ॐ ह्रीं श्री धातकीखण्डद्वीपस्थपुष्करार्धसंबंधि-चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी तीस कुलाचल जिनालयों को अर्घ्य

एक मेरु संबंधी पर्वत नाम कुलाचल षट् अभिराम।
हिमवन-महाहिमवन-निषध अरु नील-रुक्मि-शिखरी है नाम।।
स्वतः व्यवस्थित दक्षिण दिशि से दक्षिण से उत्तर तक तीन।
भरत-हेमवत-हरि सुनाम है इन क्षेत्रों के जो हैं तीन।।
गिरि सुमेरु से उत्तर दिशि में दक्षिण से उत्तर तक तीन।
रम्यक अरु हिरण्यवत अरु ऐरावत क्षेत्र नाम यह तीन।।
इनके मध्य कुलाचल शोभित पंचमेरु संबंधी तीस।
इन पर एक-एक जिनमंदिर जिनमें शोभित हैं जगदीश।।
इन सबको मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय भाव से त्रिभुवन नाथ।
जब तक परम शान्ति नहीं पाऊँ तजूँ न तुम चरणों का साथ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि-त्रिंशतकुलाचलस्थितजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

मानुषोत्तर संबंधी चार जिनालयों को अर्घ्य

ढाईद्वीप की अंतिम सीमा मानुषोत्तर पर्वत ख्यात।
आगे गमन नहीं मनुजों का जिन आगम कथनी विख्यात।।
इन पर चार जिनालय चारों दिशि में शोभित हैं पावन।
परम शान्ति की धारा पाऊँ यही विनय है मनभावन।।

ॐ ह्रीं श्री मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम नंदीश्वरद्वीप के बावन जिनालयों को अर्घ्य

(छंद-ताटंक)

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर चारों दिशि में चार सुवन।
हैं आनन्द ईश्वर इनमें तेरह-तेरह गृह बावन।।
अंजनगिरि में कृष्ण वर्ण के इनके चार जिनालय भव्य।
सोलह दधिमुख श्वेत वर्ण के सोलह चैत्यालय अति दिव्य।।
रतिकर पर्वत लाल वर्ण के हैं बत्तीस जिनालय श्रेष्ठ।
सब मिल बावन जिनगृह वन्दूँ तज संसार भाव सब नेष्ठ।।
अष्टाह्निका पर्व में इन्द्रादिक सुर आ करते पूजन।
नहीं शक्ति जाने की हममें अतः यहीं से है वन्दन।।
नाचें गाएँ अर्घ्य चढ़ाएँ करें भाव से नित्य नमन।
परम शान्ति की धारा पाएँ पाएँ प्रभु सम्यग्दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थद्विपंचाशज्जिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकदशम कुण्डलवरद्वीप के चार जिनालयों को अर्घ्य

(वीरछन्द)

एकादशम द्वीप कुण्डलवर चारों दिशि के जिनगृह चार।
विनय भक्ति से वन्दन करके नाशें सारा राग विकार।।
परम शान्ति का समुद्र पाएँ गुण अनंत पाएँ हे देव।
निज पुरुषार्थ शक्ति से हम भी निज पद पाएँ प्रभु स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलवरद्वीपस्थचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

त्रयोदशम रुचकवरद्वीप के चार जिनालयों को अर्घ्य

त्रयोदशम है द्वीप रुचकवर चारों दिशि में जिनगृह चार।
इन्द्रादिक सुर पूजन करते गाते जिनप्रभु की जयकार।।
द्वीप रुचकवर से आगे जिन चैत्यालय का पूर्ण अभाव।
मध्यलोक में इसी द्वीप तक जिनगृह हैं यह द्रव्य स्वभाव।।
तेरह द्वीपों के जिनमंदिर हमने पूजे भक्ति सहित।
शाश्वत शान्ति सौख्य पाएँ हम हो जाएँ परभाव रहित।।

ॐ ह्रीं श्री रुचकवरद्वीपस्थचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

मध्यलोक में चार शतक अट्ठावन जिनगृह सब पावन।
सर्व अकृत्रिम सादर वन्दूँ परम शान्ति पाऊँ भगवन।।
पूर्ण अर्घ्य मैं करूँ समर्पित अकृत्रिम प्रतिमा वन्दूँ।
निज स्वरूप में ही रम जाऊँ निज स्वभाव ही अभिनन्दूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोकस्थितढ़ाईद्वीपस्थ-अष्टपंचाशत्यधिकचतु:शतकजिनालयेभ्योऽर्घ्यं नि. स्वाहा।

अधोलोक भवनवासी देव संबंधी
सात करोड़ बहत्तर लाख जिनालयों को अर्घ्य

भवनवासियों के भवनों में सात करोड़ बहत्तर लाख।
जिन चैत्यालय सभी अकृत्रिम वन्दूँ नित जिन आगम साख।।
असुरकुमार जाति के देवों के हैं चौंसठ लाख भवन।
नागकुमार जाति के देवों के चौरासी लाख भवन।।
सुपर्णकुमार जाति के देवों के सुबहत्तर लाख भवन।
द्वीपकुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।।
उदधिकुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।
स्तनितकुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।।
विद्युतकुमार जाति के देवों के छियानवे लाख भवन।
दिक्कुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।।

Scanned with CamScanner

अग्निकुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।
वायुकुमार जाति के देवों के छियानवे लाख भवन।।
ये सब सात करोड़ बहत्तर लाख जिनालय मनहर हैं।
इनको अर्घ्य समर्पित करने के परिणाम सुसुन्दर हैं।।
अधोलोक के सर्व जिनालय अकृत्रिम वन्दूँ हे नाथ।
परम शान्ति के हेतु आपके चरणों का न तजूँ प्रभु साथ।।

ॐ ह्रीं श्री अधोलोकभवनवासीदेवसंबंधि-द्विसप्ततिलक्षाधिकसप्तकोटिजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतरकुमार देवों के जिनालयों को अर्घ्य

व्यंतर देवों के भवनों में असंख्यात जिनभवन महान।
भाव सहित वन्दन करके मैं करूँ आतमा का कल्याण।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय भक्ति से सादर सविनय करूँ प्रणाम।
परम शान्ति की महिमा जागी अतः शीघ्र पाऊँ ध्रुवधाम।।

ॐ ह्रीं श्री व्यंतरलोकसंबंधि-असंख्यातजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिषलोक संबंधी जिनालयों को अर्घ्य

चंद-सूर्य नक्षत्र प्रकीर्णक तारे आदि ज्योतिषलोक।
इनमें असंख्यात जिनमंदिर सबको सविनय दूँ नित धोक।।
इन नवग्रह के सर्व जिनालय भक्ति भाव से नमन करूँ।
परम शान्ति का सिन्धु प्राप्त कर मिथ्याभ्रम तम हनन करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषलोकसंबंधि-असंख्यातजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्वलोक स्थित सोलह स्वर्गों के जिनालयों को अर्घ्य

प्रथम स्वर्ग सौधर्म जिनालय हैं बत्तीस लाख सुन्दर।
द्वितीय स्वर्ग ईशान जिनालय अट्ठाईस लाख मनहर।।
तृतीय सनतकुमार स्वर्ग के बारह लाख जिनालय भव्य।
चतुर्थ स्वर्ग माहेन्द्र मनोहर आठ लाख चैत्यालय दिव्य।।

Scanned with CamScanner

पंचम ब्रह्म छठे ब्रह्मोत्तर के हैं चार लाख विमान।
सप्तम लान्तव अष्टम कापिष्ठ हैं सहस्र पचास महान।।
नवम शुक्र महाशुक्र दशम के हैं चालीस हजार प्रधान।
एकादशम शतार द्वादशम सहस्रार छह सहस्र सुजान।।
तेरह आनत चौदह प्राणत पंद्रह आरण भव्य विमान।
सोलह अच्युत इन चारों के सात शतक जिनगृह छविमान।।
सब मिल लाख चौरासी छियानवे हजार सात शतक।
परम शान्ति पाने को स्वामी ध्याऊँ शाश्वत निज आलय।।

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोकसंबंधि-षोडशस्वर्गस्थचतुराशीतिलक्षषट्नवतिसहस्रसप्तशतक-जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव ग्रीवक के जिनालयों को अर्घ्य

नवग्रीवक की प्रथमत्रयी के एक शतक ग्यारह वन्दूँ।
द्वितीयत्रयी के एक शतक अरु सात जिनालय अभिनन्दूँ।।
तृतीयत्रयी के इक्यानवे जिनालय नित प्रति करूँ प्रणाम।
सर्व जिनालय तीन शतक नौ वन्दूँ पाऊँ निज ध्रुवधाम।।

ॐ ह्रीं श्री नवग्रीवकसंबंधि-नवाधिकत्रयशतकजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव अनुदिश के जिनालयों को अर्घ्य

नव अनुदिश का प्रथम जिनालय है आदित्य नाम विख्यात।
द्वितीय जिनालय अर्चि जाति में तृतीय अर्चिमालिनी सुख्यात।।
चौथा वैर पाँचवा वैरोचन षष्टम-सप्तम है सोम प्रसिद्ध।
अष्टम सोम नवम स्फटिक सब मिल नौ जिनगृह सुप्रसिद्ध।।
नव अनुदिश के देव सभी दो भव अवतारी होते हैं।
परम शान्ति वे ही पाते हैं जो जिन ज्ञान सँजोते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नवानुदिशस्थितनवजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पंच अनुत्तर के जिनालयों को अर्घ्य

प्रथम अनुत्तर प्रथम जिनालय विजय जानिये।
द्वितीय अनुत्तर वैजयंत है एक मानिये।।
तृतीय अनुत्तर जयंत में भी एक जानिये।
चतुर्थ अपराजित जिनमंदिर में एक जानिये।।
पंचम एक भवन सर्वार्थसिद्धि मानिये।
पंचोत्तर के पाँच जिनालय श्रेष्ठ मानिये।।
देव यहाँ के इक भव अवतारी सुजानिये।
तैंतीस सागर आयु सदा ही भव्य जानिए।।

ॐ ह्रीं श्री पंच-अनुत्तरसंबंधि-पंचजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(छंद-ताटंक)

स्वर्गादिक ग्रीवक अनुदिशि पंचोत्तर के जिन चैत्यालय।
लाख चौरासी संतानवे सहस्र तेईस स्व सौख्यालय।।
ये सब ऊर्ध्वलोक जिनमंदिर तीनों लोकों में विख्यात।
भाव भक्ति से पूजन करते पाऊँ स्वामी समकित प्रात।।

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोकसंबंधि-त्रयविंशत्याधिकसप्तसहस्त्रचतु-अशीतिलक्षजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं को अर्घ्य

तीनलोक के सर्व अकृत्रिम जिनभवनों को वन्दन कर।
निज स्वभाव की ओर लक्ष्य दूँ सारे ही प्रभु बंधन हर।।
सर्व जिनालय आठ कोटि अरु छप्पन लाख महा हितकर।
संतानवे सहस्र चार सौ इक्यासी पूजूँ सुखकर।।

Scanned with CamScanner

सुखद शान्ति पाऊँ हे स्वामी यही भावना है निशदिन।
अष्ट कर्म से मुक्त बनूँ मैं राग-द्वेष नाशूँ गिन-गिन।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकसम्बन्ध्येकाशीत्याधिकसप्तनवतिसहस्रषट्पंचाशल्लक्ष-अष्टकोटि-जिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम जिनालयों को अर्घ्य

जम्बूधातकी-पुष्करार्ध के कृत्रिम जिनालय मैं वन्दूँ।
देवों मनुजों द्वारा निर्मित अनगिनती गृह अभिनन्दूँ।।
मनुजलोक में ही होते हैं इनको सादर करूँ प्रणाम।
परम शान्ति रसपान करूँ मैं पाऊँ शाश्वत निज ध्रुवधाम।।

ॐ ह्रीं श्री सार्धद्विदीपस्थकृत्रिमजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी को अर्घ्य

द्वादश अंग पूर्व चौदह से शोभित है श्री जिनवाणी।
सूत्र चूलिका प्रकीर्णक परिकर्म विभूषित कल्याणी।।
है प्रथमानुयोग अति मनहर पाप-पुण्य फल कथा प्रधान।
त्रेसठ महाशलाका पुरुषों का चारित्र जु श्रेष्ठ महान।।
है करुणानुयोग अति पावन तीनलोक का सत्य स्वरूप।
जीवों के परिणाम मार्गणा गुणस्थान का ज्ञान अनूप।।
है चरणानुयोग में श्रावक मुनियों का आचरण महान।
अंतरंग भावों के ही अनुसार बाह्य आचरण प्रधान।।
है द्रव्यानुयोग में सच्चा उत्तम वस्तु स्वरूप कथन।
छह द्रव्यों अरु सात तत्त्व अरु नवपदार्थ का है वर्णन।।
सबके भेद-प्रभेद अनेकों जिनश्रुत महिमा अपरम्पार।
माता जिनवाणी को वन्दन नमन करूँ मैं बारम्बार।।
सतत शान्ति की प्राप्ति हेतु मैं स्वाध्याय का नियम करूँ।
वीतराग-विज्ञान किरण पा मिथ्याभ्रम का वमन करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनवाणीद्वादशांगाय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जिनधर्म को अर्घ्य

(दोहा)

वस्तु स्वभाव स्वधर्म है, जिनवाणी उपदेश।
आत्मधर्म सर्वोत्तम, यही धर्म संदेश।।

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्माय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण भावनाओं का अर्घ्य

(छंद-वीर)

षोडशकारण भव्य भावनाएँ मैं प्रभु भाऊँ तत्काल।
त्रिभुवन में सर्वोत्कृष्ट तीर्थंकर पद दाता सुविशाल।।
दरशविशुद्धि भावना के बिन शेष भावनाएँ हैं व्यर्थ।
पहली दर्शन विशुद्धि है भव रोगों की औषधि अव्यर्थ।।
दूजी विनय भावना तीजी शील भावना सुखकारी।
है अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग संवेग भाव है हितकारी।।
शक्ति पूर्वक त्याग जानिए शक्ति पूर्वक तप करिए।
साधु समाधि भावना सुखमय वैय्यावृत्ति करण धरिए।।
अर्हद् भक्ति करूँ मंगलमय आचार्यों की भक्ति सदैव करूँ।
बहुश्रुत भक्ति हृदय में धारूँ प्रवचन भक्ति सदैव करूँ।।
आवश्यक परिहारिणी भावना मार्ग प्रभाव जिनेश्वर हो।
वात्सल्य भावना हृदय दो सोलह कारण जिनवर हो।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्तिभाव से परम शान्ति पाऊँ स्वामी।
तीर्थंकर पद लक्ष्य छोड़कर आत्मलक्ष्य पाऊँ नामी।।

ॐ ह्रीं श्री षोडशकारणभावनायै-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण धर्म का अर्घ्य

(छन्द-जोगीरासा)

उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ और कषाय निवारूँ।
उत्तम मार्दव धर्म ग्रहण कर विनय स्वरूप निहारूँ।।

Scanned with CamScanner

उत्तम आर्जव धर्म धार उर माया कषाय संहारूँ।
उत्तम सत्य स्वरूप स्वयं का सत्य धर्म उर धारूँ।।
उत्तम शौच धर्म उर धरकर लोभ कषाय निवारूँ।
उत्तम संयम षट्कायिक जीवों पर करुणा धारूँ।।
उत्तम तप धर शुक्ल ध्यान से अष्टकर्म सब जारूँ।
उत्तम त्याग पंच पापों को पूर्णतया संहारू।।
उत्तम आकिंचन अपरिग्रह पूर्ण हृदय में लाऊँ।
उत्तम ब्रह्मचर्य उर धारूँ महाशील गुण पाऊँ।।
दश धर्मों का पालन करके मुक्ति भवन में जाऊँ।
सादि अनंत शान्ति सुख सागर अन्तर में लहराऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशधर्माय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय धर्म का अर्घ्य

(छंद-वीर)

जय जय सम्यग्दर्शन पावन मिथ्याभ्रम नाशक श्रद्धान।
जय जय सम्यग्ज्ञान तिमिर हर जय जय वीतराग विज्ञान।।
जय जय सम्यक्चारित्र निर्मल मोह क्षोभ हर महिमावान।
अनुपम रत्नत्रय धारण कर मोक्षमार्ग पर करूँ प्रयाण।।

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रयधर्माय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन का अर्घ्य

आत्मतत्त्व की प्रतीति निश्चय सात तत्त्व श्रद्धा व्यवहार।
सम्यग्दर्शन से हो जाते भव्य जीव भवसागर पार।।
विपरीताभिनिवेश रहित समकित अधिगमज-निसर्गज सार।
औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम होता है यह तीन प्रकार।।
जय जय सम्यग्दर्शन आठों अंग सहित अनुपम सुखकार।
यही धर्म का सुदृढ़ मूल है परम शान्ति दाता शिवकार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

सम्यग्ज्ञान का अर्घ्य

निज अभेद का ज्ञान सुनिश्चय आठ भेद सब हैं व्यवहार।
सम्यग्ज्ञान परम हितकारी शिव सुखदाता मंगलकार।।
जय जय सम्यग्ज्ञान अष्ट अंगों से युक्त मोक्ष सुखकार।
परम शान्ति का मूल यही है शिवसुख दाता अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित्र का अर्घ्य

निज स्वरूप में रमण सुनिश्चय दो प्रकार चारित्र व्यवहार।
श्रावक त्रेपन क्रिया साधु का तेरह विध चारित्राधार।।
श्रेष्ठ धर्म है श्रेष्ठ मार्ग है श्रेष्ठ सुमुनि पद शिवसुखकार।
सम्यक्चारित्र बिना न कोई पा सकता है शान्ति अपार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम महाऽर्घ्य

(छंद-मानव)

जीवत्व शक्ति के स्वामी ध्रुव ज्ञायक ज्ञाता ज्ञानी।
श्री महावीर स्वामी की तुमने ना एक भी मानी।।
हे मेरे चेतन बोलो कानों में अमृत घोलो।
तुम कौन कहाँ से आए अब तक ही क्यों अज्ञानी।।
अब शिवपथ पर ही चलना आठों कर्मों को दलना।
निज की छाया में पलना जो है प्रसिद्ध लासानी।।
विज्ञान ज्ञान के द्वारा कट जाती भव दुखकारा।
कर्मों के बन्धन काटो बन वीतराग विज्ञानी।।
तुम स्वपर प्रकाशक नामी तुम ही हो अन्तर्यामी।
सारे विभाव तुम नाशो तुम करो न अब नादानी।।
रागादि भाव को तजकर पर के ममत्व को जीतो।
शुद्धात्म तत्त्व निज ध्यालो बन जाओ केवलज्ञानी।।
है शुक्ल ध्यान की बेला है गुण अनन्त का मेला।
तुम भूल न जाना शिवपथ तुम तो हो ज्ञानी ध्यानी।।

Scanned with CamScanner

अंतिम अपूर्व अवसर है तुम चूक न जाना चेतन।
चैतन्य भावना भाना मत बनना तुम अभिमानी।।
नवदेवों की पूजन कर जागा सौभाग्य तुम्हारा।
पर्यायदृष्टि को तजकर समकित की महिमा जानी।।
अब द्रव्यदृष्टि बन जाओ तो परम शान्ति पाओगे।
लो लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का कहती है श्री जिनवाणी।।

दोहा- महाअर्घ्य अर्पण करूँ, श्री नवदेव महान।
सम्यग्दर्शन प्राप्त कर, करूँ कर्म अवसान।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाजयमाला

(समान सवैया)

शिवद्वारे अरहंत खड़े हैं सिद्ध बुलाते भीतर आओ।
सकुचाहट अघाति की नाशो अपने पावन चरण बढ़ाओ।।
मुक्ति वधू वरमाला लिए है वन्दनवारे सजी सिद्धि की।
पूर्ण शुद्धता तुम्हें मिली है दर्शन-ज्ञानमयी विशुद्धि की।।
नि:संकोच बढ़े यह सुनकर श्री अरहंत त्रिलोकाग्र पर।
सिद्ध शिला सिंहासन पाया हुए सदा को ही स्वमुक्ति वर।।
सप्त स्वरों में इन्द्र सुरों ने गाए गीत सहज अवनी पर।
नाच उठा गगनांगन सर-सर नीचे सागर निर्झर झर-झर।।
भव्य जीव पुलकित हैं उर में मुक्तिमार्ग भी सरल हो गया।
जो स्वभाव से दूर बसे हैं उनको शिवपथ विरल हो गया।।
सर्व ज्ञेय-ज्ञाता होकर भी निजानन्द रस लीन हो गए।
गुण अनन्त प्रगटाकर अपने ज्ञानोदधि तल्लीन हो गए।।
विरुदावली विश्व गाता है चौंसठ यक्ष ढोरते चामर।
शत इन्द्रों से वन्दित हैं प्रभु चिदानन्द चेतन नट नागर।।
समवशरण वैभव ठुकराया दिव्यध्वनि की भाषा छोड़ी।
कर्म प्रकृतियाँ सगरी तोड़ीं नित्य निरंजन चादर ओढ़ी।।

Scanned with CamScanner

अब तो शिवसुख ही शिवसुख है दुख का नाम निशान नहीं है।
शिवसुख सागरमयी हो गए कहीं दुखों का नाम नहीं है।।
अखिल विश्व में नमः सिद्ध का गूँजा जय जय नाद मनोहर।
निज पुरुषार्थ शक्ति से पायी अपनी पावन शुद्ध धरोहर।।
परम शान्ति की गंगा प्रभु के चरण पखार रही है पावन।
परम शान्ति का सागर प्रभु अभिषेक कर रहा है मनभावन।।
भव्यों का सौभाग्य जगा है जिनगुण संपत्ति निकट आ गई।
विपदाओं की काली बदली स्वयं विलय हो त्वरित उड़ गई।।

दोहा- नवदेवों को पूजकर, हर्षित सकल समाज।
समकित का धन प्राप्त कर, सफल हुए सब काज।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति पाठ

(दोहा)

मंगलमय परमेष्ठी, पाँचों शान्ति स्वरूप।
अर्हंत सिद्धाचार्य प्रभु, पाठक साधु अनूप।।
मंगलमय जिनमूर्ति है, मंगलमय जिनगेह।
मंगल जिनवाणी परम, मंगल धर्म स्नेह।।
दुखी न हो कोई कभी, सुखी रहें सब जीव।
परम शान्ति पाएँ प्रभो, ध्यायें तुम्हें सदीव।।
पूर्ण शान्ति हो विश्व में, सबका हो कल्याण।
यह भावना है प्रभो, हे नवदेव महान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि) (नौ बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें)

क्षमापना

(चौपाई)

भूलें क्षमा करो भगवान। हम तो सेवक सदा अजान।।
हमें करो प्रभु सुमति प्रदान। हम भी पाएँ सम्यग्ज्ञान।।
सुख सम्पत्ति सौभाग्य मिले। हृदय ज्ञान का कमल खिले।।
शान्ति विधान हुआ सम्पूर्ण। सहज शान्ति पाएँ आपूर्ण।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

क्षमापना

हे भगवान! मैंने बड़ी भूल की, जो कि आपके अमूल्य वचनों को लक्ष में नहीं लिया। मैंने आपके कहे हुए अमूल्य वचनों का विचार भी नहीं किया। मैंने आपके बताये हुए उत्तम-शील स्वभाव का सेवन नहीं किया। मैंने आपके कहे हुए दया, शांति, क्षमा व पवित्रता को पहिचाना ही नहीं।

हे भगवान! मैं भूल गया, मैंने मेरी भूल से ही भ्रमण किया, रुला और अनन्त संसार की विडम्बना में पड़ा हूँ। कर्म-कलंक का संग करने से भावकर्म से मलिन हूँ। हे विरागी भगवान! आपके बतलाये हुए तत्त्व का ग्रहण किये बिना मेरा कल्याण नहीं हो सकता।

प्रभु! मैं निरन्तर प्रपंच में पड़ा हूँ। अज्ञान से अन्ध हो रहा हूँ, मेरे में विवेक-शक्ति नहीं है, मैं मूढ़ हो रहा हूँ। मैं निराश्रित अनाथ हूँ। हे निरागी परमात्मा! अब मैं आपका व आपके बतलाये हुए धर्म का व गुरुओं का शरण ग्रहण करता हूँ। मेरे अपराध क्षय हों। मैं सर्व पापों से मुक्त होऊँ, ऐसी मेरी भावना है, अभिलाषा है। पूर्व में किये हुए पापों का मैं पश्चाताप करता हूँ।

जितना-जितना मैं सूक्ष्म विचारों में गहरा उतरता हूँ, उतना-उतना आपके तत्त्वों के चमत्कार मेरे स्वरूप का प्रकाश करते हैं, आप विरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंद, सहजानन्दी, अनन्तज्ञानी, अनन्तदर्शी और त्रैलोक्य प्रकाशक हो। मैं आपके कहे हुए मार्ग में दिन-रात रहूँ, यही मेरी आकांक्षा तथा वृत्ति रहे-यही भावना है।

हे सर्वज्ञ प्रभु! आपसे मैं विशेष क्या कहूँ? आपसे कोई बात छिपी हुई नहीं है। आपके कहे हुए तत्त्वों में शंका नहीं होवे। आपके बतलाये हुए मार्ग में मैं रहूँ। हे सर्वज्ञ भगवान! आपसे मैं विशेष क्या कहूँ, आप मेरे सर्व दोषों को जानते हो। मात्र पश्चाताप कर मैं कर्मजन्य पापों की क्षमा चाहता हूँ।

ॐ शांति.....! शांति.....!! शांति.....!!!

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें)

Scanned with CamScanner

द्वितीय खण्ड :

प्रस्तुत द्वितीय खण्ड में प्रकाशित
समस्त आध्यात्मिक स्तुति, पूजन, विधान, रचनायें
ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन द्वारा रचित हैं।

Scanned with CamScanner

सच्चा जैन

ज्ञानी जैन उन्हीं को कहते, आतम तत्त्व निहारें जो। .
ज्यों का त्यों जानें तत्त्वों को, ज्ञायक में चित धारें जो।।1।।

सच्चे देव-शास्त्र-गुरुवर की, परम प्रतीति लावें जो।
वीतराग-विज्ञान-परिणति, सुख का मूल विचारें जो।।2।।

नहीं मिथ्यात्व अन्याय अनीति, सप्त व्यसन के त्यागी जो।
पूर्ण प्रमाणिक सहज अहिंसक, निर्मल जीवन धारें जो।।3।।

पापों में तो लिप्त न होवें, पुण्य भलो नहीं मानें जो।
पर्याय को ही स्वभाव न जानें, नहिं ध्रुव दृष्टि विसारें जो।।4।।

भेद-ज्ञान की निर्मल धारा, अन्तर माँहिं बहावें जो।
इष्ट-अनिष्ट न कोई जग में, निज मन माँहिं विचारें जो।।5।।

स्वानुभूति बिन परिणति सूनी, राग जहर सम जानें जो।
निज में ही स्थिरता का, सम्यक् पुरुषार्थ बढ़ावें जो।।6।।

कर्त्ता भोक्ता भाव न मेरे, ज्ञान स्वभाव ही जानें जो।
स्वयं त्रिकाल शुद्ध आनंदमय, निष्क्रिय तत्त्व चितारें जो।।7।।

रहे अलिप्त जलज ज्यों जल में, नित्य निरंजन ध्यावें जो।
'आत्मन्' अल्पकाल में मंगलरूप, परमपद पावें जो।।8।।

सच्चे जैन

प्रभुदर्शन नित करते, रात्रि भोजन तजते।
पियें छानकर पानी, सुनें सदा जिनवाणी।।1।।

कभी अभक्ष्य न खाते, जीव दया चित्त लाते।
सप्त व्यसन के त्यागी, संयम में अनुरागी।।2।।

वस्तुस्वरूप समझते, शुद्धातम को भजते।
जाग्रत प्रज्ञा छैनी, वे ही सच्चे जैनी।।3।।

Scanned with CamScanner

द्वितीय खण्ड

भाग-1 : श्री जिनेन्द्र स्तुति

(1) जिन भक्ति

घड़ी जिनराज दर्शन की, हो आनंदमय हो मंगलमय।
घड़ी यह सत्समागम की, हो आनंदमय हो मंगलमय।।टेक।।
अहो प्रभु भक्ति जिनपूजा, और स्वाध्याय तत्त्व-निर्णय।
भेद-विज्ञान स्वानुभूति, हो आनंदमय हो मंगलमय।।1।।
असंयम भाव का त्यागन, सहज संयम का हो पालन।
अनूपम शान्त जिन-मुद्रा, हो आनंदमय हो मंगलमय।।2।।
क्षमादिक धर्म स्वाश्रय से, सहज वर्ते सदा वर्ते।
परम निर्ग्रन्थ मुनि जीवन, हो आनंदमय हो मंगलमय।।3।।
हो अविचल ध्यान आतम का, कर्म बंधन सहज छूटें।
अचल ध्रुव सिद्ध पद प्रगटे, हो आनंदमय हो मंगलमय।।4।।

(2) जिन दर्शन

ऐसा ही प्रभु मैं भी हूँ, ये प्रतिबिम्ब सु मेरा है।
भली भाँति मैंने पहिचाना, ऐसा रूप सु मेरा है।।टेक।।
ज्ञान शरीरी अशरीरी प्रभु, सब कर्मों से न्यारा है।
निष्क्रिय परम प्रभु ध्रुव ज्ञायक, अहो प्रत्यक्ष निहारा है।।
जैसे प्रभु सिद्धालय राजें, वही स्वरूप सु मेरा है।।1।।
रागादि दोषों से न्यारा, पूर्ण ज्ञानमय राज रहा।
असम्बद्ध सब परभावों से, चेतन वैभव छाज रहा।।
बिन्मूरति चिन्मूरति अनुपम, ज्ञायक भाव सु मेरा है।।2।।
दर्शन-ज्ञान अनन्त विराजे, वीर्य अनन्त उछलता है।
सुख सागर अन्तर लहरावे, ओर-छोर नहिं दिखता है।।
परम पारिणामिक अविकारी, ध्रुव स्वरूप ही मेरा है।।3।।
ध्रुव-दृष्टि प्रगटी अब मेरे, ध्रुव में ही स्थिरता हो।
ज्ञेयों में उपयोग न जावे, ज्ञायक में ही रमता हो।।
परम स्वच्छ स्थिर आनन्दमय, शुद्धस्वरूप ही मेरा है।।4।।

Scanned with CamScanner

(3) जिन दर्शन

(तर्ज-रोम रोम पुलकित हो जाये....)

कैसा अद्भुत शान्त स्वरूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।टेक।।
अहो परम मंगल के काज, हमने पहिचाने जिनराज।
जिन समान ही आत्मस्वरूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।1।।
कर्म कलंक हुए निःशेष, अनन्त चतुष्टय भाव विशेष।
निर्विकल्प चैतन्य स्वरूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।2।।
अद्भुत महिमा-मंडित देव, सब संक्लेश नशें स्वयमेव।
तदपि अकर्ता ज्ञाता रूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।3।।
सर्व कामना सहज नशायें, निज गुण निज में ही प्रगटायें।
विलसे निज आनन्द स्वरूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।4।।
शरण में आये हे जिननाथ, दर्शन पाकर हुए सनाथ।
प्रगट दिखाया ज्ञायक रूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।5।।
बाह्य सुखों की नहीं कामना, शिव सुख की हो रही भावना।
ध्यावें ध्रुव शुद्धात्म स्वरूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।6।।
भक्ति भाव से शीश नवावें, अन्तर्मुख हो प्रभु को पावें।
प्रभु प्रभुता जग माँहि अनूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।7।।
धन्य हुए कृत-कृत्य हुए हैं, सर्व मनोरथ सिद्ध हुए हैं।
मानो हुए अभी शिव रूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।8।।
कैसा सुख अरू कैसा ज्ञान, वचनातीत अहो भगवान।
सहज मुक्त परमात्म स्वरूप, अक्षय मंगलमय जिनरूप।।9।।

Scanned with CamScanner

(4) जिन दर्शन

कैसी सुन्दर जिनप्रतिमा है, कैसा सुन्दर है जिनरूप।
जिसे देखते सहज दीखता, सबसे सुन्दर आत्मस्वरूप।। टेक।।

नग्न दिगम्बर नहीं आडम्बर, स्वाभाविक है शांत स्वरूप।
नहीं आयुध नहीं वस्त्राभूषण, नहीं संग नारी दुखरूप।।1।।

बिन शृंगार सहज ही सोहे, त्रिभुवन माँहीं अतिशय रूप।
कायोत्सर्ग दशा अविकारी, नासादृष्टि आनन्द रूप।।2।।

अर्हत् प्रभु की याद दिलाती, दर्शाती अपना प्रभु रूप।
बिन बोले ही प्रगट कर रही, मुक्तिमार्ग अक्षय सुखरूप।।3।।

जिसे देखते सहज नशावें, भव-भव के दुष्कर्म विरूप।
भावों में निर्मलता आवे, मानो हुये स्वयं जिनरूप।।4।।

महाभाग्य से दर्शन पाया, पाया भेद विज्ञान अनूप।
चरणों में हम शीश नवावें, परिणति होवे साम्यस्वरूप।।5।।

(5) दर्शन स्तुति

नाथ तुम्हारे दर्शन से, निज दर्शन मैंने पाया।
तुम जैसी प्रभुता निज में लख, चित मेरा हुलसाया।।टेक।।

तुम बिन जाने निज से च्युत हो, भव-भव में भटका हूँ।
निज का वैभव निज में शाश्वत, अब मैं समझ सका हूँ।।
निज प्रभुता में मगन होऊँ, मैं भोगूँ निज की माया।।1।।

पर्यय में पामरता तब भी, द्रव्य सुखमयी राजे।
लक्ष्य तजूँ पर्यायों का, निजभाव लखूँ सुख काजे।।
पर्यायों में अटक-भटक कर, मैं बहु दुःख उठाया।।2।।

पद्मासन थिर मुद्रा स्थिरता का पाठ पढ़ाती।
निजभाव लखे से सुख होता, नासादृष्टि सिखलाती।।
कर पर कर ने कर्तृत्व रहित, सुखमय शिवपंथ सुझाया।।3।।

यही भावना अब तो भगवन्, निज में ही रम जाऊँ।
आधि-व्याधि-उपाधि रहित, मैं परमसमाधि पाऊँ।।
ज्ञानानन्दमय ध्रुव स्वभाव ही, अब मेरे मन भाया।।4।।

Scanned with CamScanner

(6) प्रभु दर्शन

अद्भुत प्रभुता आज निहारी, आनन्द उर न समाया है।
मानों रंक लही चिन्तामणि, त्यों निज वैभव पाया है।।1।।
ध्रुव चैतन्यमयी जीवन लख, जन्म अरु मरण नशाया है।
दर्शन ज्ञान चक्षु दो शाश्वत, लोकालोक दिखाया है।।2।।
सुख शक्ति देखी क्या मानो, सुख सागर लहराया है।
निज सामर्थ्य अनन्त निहारी, ओर-छोर नहिं पाया है।।3।।
अब स्वाधीन अखण्ड प्रतापी, शोभायुत प्रभु भाया है।
निज के सब भावों में व्यापक, विभु प्रत्यक्ष दिखाया है।।4।।
सदा प्रकाशित परम स्वच्छ, मोहान्धकार विनशाया है।
स्वानुभूति से निज अन्तर में, निजानंद रस पाया है।।5।।
मुक्ति की भी नहिं अभिलाषा, मुक्त स्वरूप दिखाया है।
परमतृप्ति उपजी अब मेरे, निज में सर्वस्व पाया है।।6।।
हो निस्पृह उपकारी प्रभुवर, निजपद हमें दिखाया है।
भावसहित वन्दन हे जिनवर, ये रहस्य दरशाया है।।7।।

(7) दर्शन स्तुति

लखी-लखी प्रभु वीतराग छवि, आज मैं जिनेन्द्रा।
भूली-भूली निज निधि पाई, आज मैं जिनेन्द्रा।।टेक।।

तुम्हें देखकर अब तो मैंने, निज को निज से जानके।
निज का शाश्वत वैभव पाया, आपा स्वयं पिछान के।।
पर आश्रय के सब दुख विनशे, आज हो जिनेन्द्रा।।1।।

आतम सुखमय सुख का कारण, आज स्वयं ही देखा है।
आतम के आश्रय से जिनवर, मिटे करम की रेखा है।।
अपने में स्थिरता पाऊँ, चाहूँ यही जिनेन्द्रा।।2।।

तुझ सी ही प्रभुता है निज में, नहीं मुझे कुछ करना है।
'है' की मात्र प्रतीति अनुभव, थिरता से शिव होना है।।
सब संकल्प-विकल्परहित हो, निज ध्याऊँ जिनेन्द्रा।।3।।

Scanned with CamScanner

(8) जिन दर्शन

आज अद्‌भुत छवि निज निहारी, भाव दूर भगे सब विकारी।।टेक।।

पूर्ण प्रभुता प्रभु सी लखाई, दीनता आज सारी पलाई।
मैं स्वयं ही सहज सुख सागर, चेतनादिक गुणों का हूँ आगर।।
शक्ति शाश्वत अपरिमित सु धारी, आज अद्‌भुत छवि निज निहारी।।1।।

निज प्रदेशत्व रूपी किला है, जो कभी ना किसी से भिदा है।
कर्म रागादि भी रहते बाहर, पैठ पायें कदापि न अन्दर।।
अन्तरंग में सदा अविकारी, आज अद्‌भुत छवि निज निहारी।।2।।

भूल से हीन मैंने था माना, आज देखा स्वयं का निधाना।
अहा! वैभव अगुरुलघु ही पाया, द्रव्यपन ज्यों का त्यों ही लखाया।।
अब जरूरत सभी की विसारी, आज अद्‌भुत छवि निज निहारी।।3।।

जागी सम्यक्‌ज्ञान कला है, दूर भागी मिथ्यात्व बला है।
मुक्ति मुझको तो मुझमें ही दिखती, दृष्टि बाहर कहीं भी न टिकती।।
होवे थिरता प्रभो सुखकारी, आज अद्‌भुत छवि निज निहारी।।4।।

धन्य अवसर प्रभो आज पाया, मुझे निज का माहात्म्य दिखाया।
निज ही सर्वोत्कृष्ट सही है, कामना अब नहीं कुछ रही है।।
मैं तो मंगलमय चिन्मूर्तिधारी, आज अद्‌भुत छवि निज निहारी।।5।।

अरे...रे... जिसे भगवान की ओर देखकर भी अपनी ओर देखना नहीं आया, वह अभागा है।

Scanned with CamScanner

भाग-2 : नित्य नियम पूजन

मंगलाष्टक (भाषा)

वीतराग-सर्वज्ञ हितंकर, त्रिभुवन स्वामी जो सुखकार।
भक्ति सहित हम करें स्मरण, **श्री अरहंत** हों मंगलकार।।1।।

ज्ञान शरीरी अशरीरी प्रभु, मुक्त स्वरूप नित्य सुखकार।
भक्ति सहित हम करें स्मरण, **सिद्ध प्रभु** हों मंगलकार।।2।।

पंचाचार परायण गुरुवर, सकल संघ नायक सुखकार।
भक्ति सहित हम करें स्मरण, **श्री आचार्य** हों मंगलकार।।3।।

साधु संघ में अधिकारी हो, धर्म ज्ञान देते सुखकार।
भक्ति सहित हम करें स्मरण, **उपाध्याय** हों मंगलकार।।4।।

विषयाशा-आरम्भ रहित हैं, ज्ञानी मुनिवर जो सुखकार।
भक्ति सहित हम करें स्मरण, **साधु सर्व** हों मंगलकार।।5।।

जिनवाणी जिनतीर्थ चैत्य, चैत्यालय जग में जो सुखकार।
भक्ति सहित हम करें स्मरण, हम सबको हों मंगलकार।।6।।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरितमय, **धर्म** अहिंसा शिव सुखकार।
भक्ति सहित हम करें स्मरण, दशलक्षण हों मंगलकार।।7।।

पंचकल्याणक तीर्थेश्वर के, दर्शाये सुरगण सुखकार।
भक्ति सहित हम करें स्मरण, हम सबको हों मंगलकार।।8।।

धर्म महोत्सव आज मनावें, लें जिननाम परम सुखकार।
नित परिणाम पवित्र हमारे, हम सबको हों मंगलकार।।9।।

Scanned with CamScanner

श्री जिन प्रतिमा प्रक्षाल पाठ

दोहा- धन्य दिवस है आज का, धन्य घड़ी है आज।
करें प्रभो प्रक्षाल हम, भाव विशुद्धि काज।।1।।

(तर्ज-तुम्हारे दर्श बिन स्वामी....)

परम पावन अहो जिनवर, जगत की कलुषता हरते।
स्वयं रागादि मल हरने, प्रभो! प्रक्षाल हम करते।।2।।
स्वयं की साधना करके, त्रिजग की पूज्यता पाई।
पूज्यता स्वयं की लखकर, प्रभो पूजा सहज करते।।3।।
निहारें शान्त मुद्रा जब, नेत्र पावन सहज होते।
हाथ होते सहज पावन, चरण-स्पर्श जब करते।।4।।
करें गुणगान भक्ति से, होय रसना तभी पावन।
सहज ही चित्त हो पावन, प्रभु का ध्यान जब धरते।।5।।
जन्म कल्याण में स्वामी, किया अभिषेक इन्द्रों ने।
लगाया था सु गंधोदक, शीश जय-जय ध्वनि करते।।6।।
किन्तु स्नान ही त्यागा, धरी निर्ग्रन्थ दीक्षा जब।
ध्यान धारा सहज वर्ते, प्रभु सब कर्म मल हरते।।7।।
पूर्ण निर्दोष निर्मल हो, तीर्थ प्रभु आप प्रगटाया।
बहायी ज्ञानमय गंगा, भव्य स्नान शुभ करते।।8।।
अहो कैसा समय होगा, लक्ष्य कर हर्ष उमगाता।
महा आनंद से हम भी, अर्चना नाथ की करते।।9।।
धन्य जिनबिम्ब है जग में, अहो चिद्‌बिम्ब दर्शाते।
नीर प्रासुक ही लेकर हम, प्रभो प्रक्षाल शुभ करते।।10।।
यत्न से करते परिमार्जन, प्रभो रोमांच तन में हो।
आत्म प्रभुता दिखाती है, अर्घ्य चरणों में जब धरते।।11।।
संजोए भावना स्वामी, होंय हम भी प्रभु के सम।
लगावें शीश गंधोदक, अहो! जिन-रूप उर धरते।।12।।

दोहा- लोकोत्तम मंगलमयी, अनन्य शरण जिननाथ।
प्रभु चरणों में शीश धर, हम भी हुए सनाथ।।13।।

Scanned with CamScanner

विनय पाठ

(दोहा)

सफल जन्म मेरा हुआ, प्रभु दर्शन से आज।
भव समुद्र नहिं दीखता, पूर्ण हुए सब काज।।1।।
दुर्निवार सब कर्म अरु, मोहादिक परिणाम।
स्वयं दूर मुझसे हुए, देखत तुम्हें ललाम।।2।।
संवर कर्मों का हुआ, शान्त हुए गृह जाल।
हुआ सुखी सम्पन्न मैं, नहिं आये मम काल।।3।।
भव कारण मिथ्यात्व का, नाशक ज्ञान सुभानु।
उदित हुआ मुझमें प्रभो, दीखे आप समान।।4।।
मेरा आत्म स्वरूप जो, ज्ञानादिक गुण-खान।
आज हुआ प्रत्यक्ष सम, दर्शन से भगवान।।5।।
दीन भावना मिट गई, चिन्ता मिटी अशेष।
निज प्रभुता पाई प्रभो, रहा न दुख का लेश।।6।।
शरण रहा था खोजता, इस संसार मँझार।
सीखा जिनवर आपसे, आत्म शरण सुखकार।।7।।
निज स्वरूप में मगन हो, पाऊँ शिव अभिराम।
इसी हेतु मैं आपको, करता कोटि प्रणाम।।8।।
मैं वन्दौं जिनराज को, धर उर समता भाव।
तन-धन-जन जगजाल से, धरि विरागता भाव।।9।।
यही भावना है प्रभो, मेरी परिणति माँहिं।
राग-द्वेष की कल्पना, किंचित् उपजे नाहिं।।10।।

Scanned with CamScanner

पूजा पीठिका (भाषा)

(छन्द-सखी)

अरहन्त सिद्ध सूरि नामा, उपाध्याय साधु गुणधामा।
परमेष्ठी पद सुखकारी, पूजन करिहों दु:खहारी।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नम: पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(छन्द-झूलना)

चार मंगल शरण श्रेष्ठ हैं लोक में,
आप्त अरु सिद्ध साधु दयामय धरम।
अन्य में ढूँढना सुख दुखकार है,
वे स्वयं सुख रहित सुख न उनका मरम।।
हे प्रभो आपको लख, ये निश्चय हुआ,
शरण अपनी से कटते स्वयं सब करम।
बाह्य दृष्टि तजूँ, अब निजातम भजूँ,
लीन निज में हुए से मिले पद परम।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

मंगल विधान भाषा

(छन्द-मत्तसवैया)

हूँ द्रव्यदृष्टि से अति पवित्र, परिणति ही मात्र अपावन है।
चिर से ही पर में भ्रमित रही, शुचिकारी तव आराधन है।।
हे प्रभो! शान्त नासाग्र दृष्टि, थिर मुद्रा हमें बताती है।
शान्ति शुचिता अन्तर में है, बाहर से कभी न आती है।।
है रूप हमारा मंगलमय, आराध्य हमारे मंगलमय।
रागादि विकारी भाव भगें, परिणति भी होवे मंगलमय।।
तुम नाम मंत्र है मंगलमय, हे कर्ममुक्त! तुम मंगलमय।
सम्यक्त्व आदि गुण युक्त सिद्ध, मैं नमन करूँ हे मंगलमय।।
हो दु:ख सभी तत्क्षण विनष्ट, स्मरण किये तुम सम निजरूप।
डाकिनि, भूत पिशाच, नागगद सभी दूर हों हे शिवभूप।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

गुण अनन्त हैं प्रभो आपके, मेरी है सामर्थ्य कहाँ।
सहस्रनाम से अर्चन करके, अर्घ्य चढ़ाऊँ आज यहाँ।।

ॐ ह्रीं भगवज्जिनस्याऽष्टाधिकसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

(तर्ज : दिन-रात मेरे स्वामी....)

जो तीन लोक स्वामी मुक्ति रमापति हैं।
हैं स्याद्वाद नायक, सानन्त चार जो हैं।।
कर वन्दना उन्हीं की, पूजा विधि करूँगा।
जो भव्य प्राणियों को, है पुण्य बन्ध हेतु।।

निज आत्मरूप महिमा, जिनने प्रकट दिखाई।
ऐसे त्रिलोक गुरु, पुंगव स्वस्ति दायक।।
उन पूर्ण ज्ञान-दर्शन-आनन्द-वीर्य वैभव।
दें प्रेरणा सतत, मुक्ति हेतु मुझको।।

आत्मा को द्रव्य से शुद्ध पाकर खुशी से।
पर्याय शुद्धि हेतु, अवलम्ब मैंने लीना।।
बहु युक्तियों से अब तो, रागादि कर विनष्ट।
भूतार्थ यज्ञ द्वारा, मैं भी प्रभु बनूँगा।।

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम, हे जगत हितंकर।
सब वस्तुयें तजूँगा, निज पूर्ण ज्ञान हेतु।।
नित पुण्य-पाप द्वारा परिणति हुई विकारी।
मैं पाप तो तजा है, अब पुण्य भी तजूँगा।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

स्वस्ति मंगल पाठ

(छन्द-मत्तसवैया)

श्री ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति सुमतिप्रदायक हैं।
श्री पद्मप्रभ अरु श्रीसुपार्श्व, चन्द्रप्रभ स्वस्ति दायक हैं।।

श्री पुष्पदंत शीतल श्रेयांस, श्री वासुपूज्य और विमल प्रभु।
श्री अनन्त धर्म और शान्ति कुंथु, मंगलमय मुक्ति विधायक हैं।।

अरनाथ मल्लि मुनिसुव्रतजी, नमिनाथ नेमि अरु पार्श्वप्रभु।
श्री वर्द्धमान जिन सुखवर्द्धक, निज पर विवेक प्रगटायक हैं।।

इन सम ही जड़ वैभव तजकर, सम्यक्त्वी इच्छामुक्त बनें।
निज का पुरुषार्थ मूल कारण, ये ही व्यवहार सहायक हैं।।

हो जिनवाणी अभ्यास सदा, तत्त्वों का सम्यक् निर्णय हो।
रागादि विकारी भाव भगें, जिनवाणी स्वस्ति दायक हो।।

द्रव्यानुयोग चरणानुयोग से, सत् श्रद्धा चारित्र धरें।
प्रथमानुयोग, करणानुयोग, दृग-ज्ञान-वृत्ति दृढ़ स्वच्छ करें।।

हैं बुद्धि ऋद्धियाँ प्रकट जिन्हें, पर लक्ष्य नहीं उन पर जिनका।
तप घोर करें आकाश चलें, है पार नहीं जिनके बल का।।

मन-वाँछित रूप बना सकते, भारी हल्का, लम्बा छोटा।
जो सर्वौषधियों की निधि है, ऋद्धि अक्षीण से ना टोटा।।

पर नहीं प्रयोग करें इनका, निजख्याति लाभ पूजा हेतु।
उन सम जड़ वैभव ठुकराऊँ, तब होवें वे मुक्ति सेतु।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरुवर अहो, मम स्वरूप दर्शाय।
किया परम उपकार मैं, नमन करूँ हर्षाय।।
आऊँ आप समीप जब, निज स्मरण सु आय।
निज प्रभुता निज में प्रभो, प्रत्यक्ष देय दिखाय।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्...।

(वीरछन्द)

जब से स्व सन्मुख दृष्टि हुई, अविनाशी ज्ञायक रूप लखा।
शाश्वत अस्तित्व स्वयं का लखकर, जन्म मरण भय दूर हुआ।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमतत्त्व जब से देखा, अद्भुत शीतलता पाई है।
आकुलतामय संतप्त परिणति, सहज नहीं उपजाई है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अक्षय प्रभु के दर्शन से ही, अक्षय सुख विकसाया है।
क्षत् भावों में एकत्वपने का, सर्व विमोह पलाया है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम परम ज्ञायक प्रभुवर, जब से दृष्टि में आया है।
विभु ब्रह्मचर्य रस प्रकट हुआ, दुर्दान्त काम विनशाया है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ निमग्न तृप्ति सागर में, तृष्णा ज्वाल बुझाई है।
क्षुधा आदि सब दोष नशें, वह सहज तृप्ति उपजाई है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

ज्ञान भानु का उदय हुआ, आलोक सहज ही छाया है।
चिर मोह महातम हे स्वामी, क्षणभर में सहज विलाया है।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य-भाव-नोकर्म शून्य, चैतन्य प्रभु जब से देखा।
शुद्ध परिणति प्रकट हुई, मिटती पर भावों की रेखा।।श्री देव.।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अहो पूर्ण निज वैभव देखा, नहीं कामना शेष रही।
निर्वाञ्छक हो गया सहज मैं, निज में ही अब मुक्ति दिखी।।श्री देव.।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज से उत्तम दिखे न कुछ भी, पाई निज अनर्घ्य माया।
निज में ही अब हुआ समर्पण, ज्ञानानंद प्रकट पाया।।श्री देव.।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - ज्ञान मात्र परमात्मा, परम प्रसिद्ध कराय।
धन्य आज मैं हो गया, निज स्वरूप को पाय।।

(हरिगीतिका)

चैतन्य में ही मग्न हो, चैतन्य दरशाते अहो।
निर्दोष श्री सर्वज्ञ प्रभुवर, जगत्साक्षी हो विभो।।
सच्चे प्रणेता धर्म के, शिवमार्ग प्रकटाया प्रभो।
कल्याण वाँछक भविजनों के, आप ही आदर्श हो।।
शिवमार्ग पाया आप से, भवि पा रहे अरु पायेंगे।
स्वाराधना से आप सम ही, हुए हो रहे होयेंगे।।

Scanned with CamScanner

तव दिव्य ध्वनि में दिव्य-आत्मिक, भाव उद्घोषित हुए।
गणधर गुरू आम्नाय में, शुभ शास्त्र तब निर्मित हुए।।
निर्ग्रन्थ गुरूके ग्रन्थ ये, नित प्रेरणायें दे रहे।
निज भाव अरु पर भाव का, शुभ भेद ज्ञान जगा रहे।।
इस दुषम भीषण काल में, जिनदेव का जब हो विरह।
तब मात सम उपकार करते, शास्त्र ही आधार हैं।।
जग से उदास रहें स्वयं में, वास जो नित ही करें।
स्वानुभवमय सहज जीवन, मूलगुण परिपूर्ण हैं।।
नाम लेते ही जिन्हों का, हर्षमय रोमांच हो।
संसार-भोगों की व्यथा, मिटती परम आनन्द हो।।
परभाव सब निस्सार दिखते, मात्र दर्शन ही किये।
निज भाव की महिमा जगे, जिनके सहज उपदेश से।।
उन देव-शास्त्र-गुरू प्रति, आता सहज बहुमान है।
आराध्य यद्यपि एक, ज्ञायकभाव निश्चय ज्ञान है।।
प्रभु! अर्चना के काल में भी, भावना ये ही रहे।
धन्य होगी वह घड़ी, जब परिणति निज में रहे।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - अहो! कहाँ तक मैं कहूँ, महिमा अपरम्पार।
निज महिमा में मगन हो, पाऊँ पद अविकार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

प्रभु उपकार

आप मिले मानों मिली, मुक्ति ही साक्षात्।
नित्य मुक्त शुद्धात्मा, अन्तर हुआ प्रत्यक्ष।।

Scanned with CamScanner

श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन

(छन्द-अडिल्ल)

ढाई द्वीप में पाँच विदेह हैं शाश्वते।
तीर्थङ्कर जहँ बीस सदा ही राजते।।
भक्ति भाव से करूँ सहज आराधना।
निज पद पाऊँ नाथ यही है भावना।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

स्वयं सिद्ध शुद्धातम ध्याय, जन्म जरा मृत दोष नशाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीष।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधर-युगमन्धर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनन्तवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरषेण-महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्येतिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक दुर्भाव नशाय, क्षमाधार भव ताप मिटाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीष।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय सुख क्षत् विक्षत् रूप, त्याग लहूँ आनन्द अनूप।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीष।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागूँ प्रभु अब्रह्म दुखदाय, निश्चय परम शील प्रगटाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीष।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

क्षुधा वेदनीय उपशम होय, पाऊँ निजानन्द रस सोय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम तुरत नशाय, आत्मज्ञान की ज्योति जगाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलें कर्म भव दुख विनशाय, निर्मल आत्मध्यान प्रगटाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखमय सम्यक्चारित्र धार, महा मोक्षफल पाऊँ सार।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज भावमय अर्घ्य चढ़ाय, निज अविचल अनर्घ्य पद पाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपद प्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अहो विदेहीनाथ के, गुण गाऊँ सुखकार।
देह रहित शुद्धात्मा, ध्याऊँ नित अविकार।।

(वीरछन्द)

श्री सीमंधर श्री युगमंधर, श्री बाहु-सुबाहु सु संजातक।
स्वयंप्रभ ऋषभानन वन्दूँ, अनन्तवीर्य नाशें पातक।।
श्री सूर्यप्रभ विशालकीर्ति जी, जजूँ वज्रधर चन्द्रानन।
भद्रबाहु अरु श्री भुजंगम, ईश्वर जिन भव दुख भानन।।

Scanned with CamScanner

नेमिप्रभ श्री वीरसेन जिन, महाभद्र प्रभु मंगलकार।
श्री देवयश अजितवीर्य को, नमूँ नित्य त्रय योग संभार।।
बीस तीर्थंकर सदा विदेहों, में शोभें आनन्दकारी।
धनुष पाँच सौ काय विराजे, समवशरण महिमा न्यारी।।
सिंहासन पर अन्तरीक्ष प्रभु, तिष्ठे अपने ही आधार।
चौंसठ चमर छत्रत्रय शोभित, भामण्डल द्युति लसे अपार।।
मोह विजय को सूचित करती, दुंदुभि धुनि संदेश सुनाय।
आओ आओ अहो जगत जन, सुनो दिव्यध्वनि शिव सुखदाय।।
धर्मतीर्थ तहँ शाश्वत वर्ते, महिमा मुझसे कही न जाय।
धन्य-धन्य जो प्रत्यक्ष देखें, सुनें दिव्यध्वनि बोधि लहाय।।
हो निर्ग्रन्थ रमें निज माँही, परमातम पद पावें सार।
भाव सहित उनका यश गाऊँ, सहज नमन होवे अविकार।।

(छन्द-घत्ता)

जय जिनगुणसारं मंगलकारं, गाऊँ अति ही हर्षाऊँ।
निज में रम जाऊँ, कर्म नशाऊँ, ऐसे ही गुण प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जो जिन पूजें भाव से, धरें नित्य ही ध्यान।
अल्पकाल में वे लहें, अविनाशी निर्वान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अपना वैभव जिन्होंने नहीं देखा
उन्हें ही बाह्य वैभव की महिमा आती है।

Scanned with CamScanner

अर्घ्यावली

श्री त्रिकाल चौबीसी अर्घ्य

अहो त्रिकाल सम्बन्धी जिनवर, भक्ति भाव से नमन करूँ।
निज त्रैकालिक परम भाव का, मैं भी नित अनुभवन करूँ।।
द्रव्य-भावमय अर्घ्य चढ़ाते, यही भावना भाता हूँ।
साधन-साध्य स्वयं में लखकर, प्रभुवर अति हर्षाता हूँ।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमान-जिनतीर्थंकरेभ्यो-अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालयों को अर्घ्य

तीन लोक में अकृत्रिम चैत्यालय, अरु जिनबिम्ब महा।
जिनके दर्शन से निज दर्शन, होते हैं सुखदाय अहा।।
उन सब अकृत्रिम जिनबिम्बों, को मैं अर्घ्य चढ़ाता हूँ।
निज अकृत्रिम भाव लखूँ, बस यही भावना भाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकसम्बन्ध्यकृत्रिम-चैत्य-चैत्यालयेभ्योअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री कृत्रिम जिनबिम्बों को अर्घ्य

जिस प्रकार पाषाण खण्ड में, शिल्पी बिम्ब प्रगटाता है!
मंत्र विधि से होय प्रतिष्ठा, त्रिजग पूज्य बन जाता है!!
उस प्रकार मैं निज परिणति में, ज्ञायक का प्रतिबिम्ब धरूँ!
रत्नत्रय से होय प्रतिष्ठा, त्रिजग पूज्य पद प्राप्त करूँ!!

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमजिनबिम्बेभ्योअनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालयों को अर्घ्य

तीन लोक में राजते, जिनमंदिर अविकार।
अकृत्रिम-कृत्रिम महा, नमहुँ त्रियोग संभार।।
उनमें जो प्रतिबिम्ब हैं, चित्स्वरूप दर्शाय।
करें परम उपकार नित, पूजूँ चित हर्षाय।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिम-चैत्य-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री सिद्ध पूजन

(दोहा)

सर्व कर्म बन्धन रहित, नित्य निरामय जान।
परम सूक्ष्म सिद्धात्मा, चित्स्वरूप पहिचान।।
पूजूँ भक्ति भाव से, धरूँ भेद विज्ञान।
निश्चय से मैं भी अहो, शाश्वत सिद्ध समान।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(बसन्ततिलका)

भववास दु:खमय तज निज में बसे जो।
निर्मल गुणाकर हुए शिव में बसे जो।।
जल सम पवित्र होकर मैं सिद्ध ध्याऊँ।
जन्मादि दोष क्षण में प्रभु सम नशाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सम्यक्त्व आदि गुण युत जगपूज्य हैं जो।
निरखेद तृप्त निज में अविचल रहें जो।।
चन्दन समान शीतल हो सिद्ध ध्याऊँ।
संताप रूप भव में फिर ना भ्रमाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अन्तिम शरीर से जो कुछ न्यून राजें।
अशरीर ज्ञानमय जो अक्षय विराजें।।
ले भाव अक्षत सहज मैं सिद्ध ध्याऊँ।
क्षत् रूप जग विभव अब किंचित् न चाहूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाधीन मग्न निज में निश्चल हुए जो।
कामादि दोष नाशे सुखमय हुए जो।।

निष्काम भावमय हो मैं सिद्ध ध्याऊँ।
हो ब्रह्मरूप शाश्वत आनन्द पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे आत्मनिष्ठ योगीश्वर! ध्यान गम्य।
प्रभुवर करूँ सुभक्ति वाणी-अगम्य।।
निज में ही तृप्त हो प्रभु पूजा रचाऊँ।
दुखमय क्षुधादि नाशें प्रभुता सु पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे चित्प्रकाशमय परमेश्वर अलौकिक।
निज में निमग्न रहते तिहुँ जग के ज्ञायक।।
निर्मोह ज्ञानमय हो मैं सिद्ध ध्याऊँ।
ज्ञायक स्वरूप सहजहिं ज्ञायक रहाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रुव ध्येय रूप शुद्धातम सुःखकारी।
दर्शाय देव कीना उपकार भारी।।
हो मग्न ध्येय माँही पूजा रचाऊँ।
दुष्टाष्ट कर्म बन्धन सहजहिं नशाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अनंत अविकारी मुक्तिनाथ।
वाँछा न शेष पाया चैतन्य-नाथ।।
आनन्द विभोर हो प्रभु पूजा रचाऊँ।
अनुपम अचल सु शाश्वत गति शीघ्र पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य चूड़ामणि प्रभुवर हुए हैं।
साक्षात् शुद्ध आत्मा विभु आप ही हैं।।
भावार्घ्य लेय सुखमय पूजा रचाऊँ।
अविचल अनर्घ्य अक्षय प्रभुता सु पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

दोहा- अविकल परमानन्दमय, अविनाशी गुणखान।
भक्ति भाव पूरित हृदय, सहज करूँ गुणगान।।

(चौपाई)

स्वयं सिद्ध परमातम ध्याया, कर्म कलंक समूल नशाया।
प्रगटे गुण अनन्त अविकारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
जय जय क्षायिक सम्यक्दर्शन, केवलज्ञान सु केवलदर्शन।
हुए अनन्त सु वीरजधारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
अगुरूलघु सूक्ष्मत्व अवगाहन, अव्याबाध प्रगट भयो पावन।
बिन्मूरति चिन्मूरति धारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
गुणस्थान चौदह के पार, नित्य निरामय ध्रुव अविकार।
परमानन्द दशा विस्तारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
तीर्थङ्कर जब दीक्षा धारें, सिद्ध प्रभु का नाम उचारें।
अचल अनूपम पदवी धारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
आत्माराधन का फल पाया, पंचम भाव प्रत्यक्ष दिखाया।
महिमावंत ध्येय सुखकारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
एक क्षेत्र में प्रभु अनन्त, सत्ता भिन्न-भिन्न विलसन्त।
अहो सु अद्भुत प्रभुता धारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
सिद्धालय ज्यों सिद्ध विराजे, देहमाँहि त्यों आतम राजे।
ज्ञायक रूप परम अविकारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
भेदज्ञान करके पहिचाना, द्रव्यदृष्टि धरि सहज प्रमाना।
होऊँ निश्चय शिवमगचारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।
सहज रहूँ प्रभु जाननहार, परभावों का हो परिहार।
कटें कर्मबन्धन दु:खकारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।

Scanned with CamScanner

अपने में संतुष्ट रहाऊँ, अपने में ही तृप्त रहाऊँ।
हुई निःशेष कामना सारी, जजूँ सिद्ध नित मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

निश्चल सिद्धस्वरूप, ज्ञानस्वभावी आत्मा।
सहज शुद्ध चिद्रूप, अनुभव करि आनन्द भयो।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री वीतराग देव पूजन

(दोहा)

शुद्धातम में मगन हो, परमातम पद पाय।
भविजन को शुद्धात्मा, उपादेय दरशाय।।
जाय बसे शिव लोक में, अहो अहो जिनराज।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, आयो पूजन काज।।

ॐ ह्रीं श्रीवीतरागदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवीतरागदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवीतरागदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-मत्तसवैया)

ज्ञानानुभूति ही परमामृत है, ज्ञानमयी मेरी काया।
है परम पारिणामिक निष्क्रिय, जिसमें कुछ स्वाँग न दिखलाया।।
मैं देख स्वयं के वैभव को, प्रभुवर अति ही हर्षाया हूँ।
अपनी स्वाभाविक निर्मलता, अपने अंतर में पाया हूँ।।
थिर रह न सका उपयोग प्रभो, बहुमान आपका आया है।
समतामय निर्मल जल ही प्रभु, पूजन के योग्य सुहाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय जन्म-जरा-मृत्यु-रोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

है सहज अकर्त्ता ज्ञायक प्रभु, ध्रुव रूप सदा ही रहता है।
सागर की लहरों सम जिसमें, परिणमन निरंतर होता है।।

Scanned with CamScanner

हे शान्ति सिन्धु! अवबोधमयी, अद्भुत तृप्ति उपजाई है।
अब चाह दाह प्रभु शमित हुई, शीतलता निज में पाई है।।
विभु! अशरण जग में शरण मिले, बहुमान आपका आया है।
चैतन्य सुरभिमय चन्दन ही, पूजन के योग्य सुहाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अब भान हुआ अक्षय पद का, क्षत् का अभिमान पलाया है।
प्रभु निष्कलंक निर्मल ज्ञायक, अविचल अखण्ड दिखलाया है।।
जहाँ क्षायिक भाव भी भिन्न दिखे, फिर अन्य भाव की कौन कथा।
अक्षुण्ण आनन्द निज में विलसे, निःशेष हुई अब सर्व व्यथा।।
अक्षय स्वरूप दातार नाथ, बहुमान आपका आया है।
निरपेक्ष भावमय अक्षत ही, पूजन के योग्य सुहाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य ब्रह्म की अनुभूतिमय, ब्रह्मचर्य रस प्रगटाया।
भोगों की अब मिटी वासना, दुर्विकल्प भी नहीं आया।।
भोगों के तो नाम मात्र से, भी कम्पित मन हो जाता।
मानो आयुध से लगते हैं, तब त्राण स्वयं में ही पाता।।
हे कामजयी! निज में रम जाऊँ, यही भावना मन आनी।
श्रद्धा सुमन समर्पित जिनवर, काम बुद्धि सब बिसरानी।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म अतीन्द्रिय रस पीकर, तुम तृप्त हुए त्रिभुवन स्वामी।
निज में ही सम्यक् तृप्ति की विधि, तुमसे सीखी जगनामी।।
अब कर्त्ता भोक्ता बुद्धि छोड़, ज्ञाता रह निज-रस पान करूँ।
इन्द्रिय विषयों की चाह मिटी, सर्वांग सहज आनंदित हूँ।।
निज में ही ज्ञानानन्द मिला, बहुमान आपका आया है।
परम तृप्तिमय अकृत बोध ही, पूजन योग्य सुहाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

मोहान्धकार में भटका था, सम्यक् प्रकाश निज में पाया।
प्रतिभासित होता हुआ स्वज्ञायक, सहज स्वानुभव में आया।।
इन्द्रिय बिन सहज, निरालम्बी प्रभु, सम्यग्ज्ञान ज्योति प्रगटी।
चिर मोह अंधेरी हे जिनवर, अब तुम समीप क्षण में विघटी।।
अस्थिर परिणति में हे भगवन्!, बहुमान आपका आया है।
अविनाशी केवलज्ञान जगे, प्रभु ज्ञान प्रदीप जलाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्क्रिय निष्कर्म परम ज्ञायक, ध्रुव ध्येय स्वरूप अहो पाया।
तब ध्यान अग्नि प्रज्ज्वलित हुई, विघटी पर-परिणति की माया।।
जागी प्रतीति अब स्वयं सिद्ध, भव भ्रमण भ्रांति सब दूर हुई।
असंयुक्त निर्बन्ध सुनिर्मल, धर्म परिणति प्रकट हुई।।
अस्थिरता जन्य विकार मिटे, मैं शरण आपकी हूँ आया।
बहुमानभावमय धूप धरूँ, निष्कर्म तत्त्व मैंने पाया।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

है परिपूर्ण सहज ही आतम, कमी नहीं कुछ दिखलावे।
गुण अनन्त सम्पन्न प्रभु, जिसकी दृष्टि में आ जावे।।
होय अयाची लक्ष्मीपति, फिर वाँछा ही नहीं उपजावे।
स्वात्मोपलब्धिमय मुक्ति दशा का, सत्पुरुषार्थ सु प्रगटावे।।
अफल दृष्टि प्रगटी प्रभुवर, बहुमान आपका आया है।
निष्काम भावमय पूजन का, विभु परमभाव फल पाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अविचल अनर्घ्य पद पाया, सहज प्रमोद हुआ भारी।
ले भावार्घ्य अर्चना करता, निज अनर्घ्य वैभव धारी।।
चक्री इन्द्रादिक के पद भी, नहिं आकर्षित कर सकते।
अखिल विश्व के रम्य भोग भी, मोह नहीं उपजा सकते।।
निजानन्द में तृप्तिमय ही, होवे काल अनन्त प्रभो।
ध्रुव अनुपम शिव पदवी प्रगटे, निश्चय ही भगवन्त अहो।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

(छन्द- भुजंगप्रयात) (तर्ज-मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक...)

प्रभो! आपने एक ज्ञायक बताया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।
यही रूप मेरा, मुझे आज भाया।
महानन्द मैंने, स्वयं में ही पाया।।टेक।।
भव-भव भटकते, बहुत काल बीता।
रहा आज तक मोह-मदिरा ही पीता।।
फिरा ढूँढ़ता सुख विषयों के माहीं।
मिली किन्तु उनमें असह्य वेदना ही।।
महाभाग्य से आपको, देव पाया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।1।।
कहाँ तक कहूँ नाथ, महिमा तुम्हारी।
निधि आत्मा की सु, दिखलाई भारी।।
निधि प्राप्ति की प्रभु, सहज विधि बताई।
अनादि की पामरता, बुद्धि पलाई।।
परम भाव मुझको, सहज ही दिखाया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।2।।
विस्मय से प्रभुवर, था तुमको निरखता।
महामूढ़ दुखिया, स्वयं को समझता।।
स्वयं ही प्रभु हूँ, दिखे आज मुझको।
महाहर्ष मानो, मिला मोक्ष ही हो।।
मैं चिन्मात्र ज्ञायक हूँ, अनुभव में आया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।3।।

Scanned with CamScanner

अस्थिरता जन्य, प्रभो दोष भारी।
खटकती है रागादि परिणति विकारी।।
विश्वास है शीघ्र ये भी मिटेगी।
स्वभाव के सन्मुख यह कैसे टिकेगी?
नित्य-निरंजन का अवलम्ब पाया।
तिहूँ लोक में नाथ अनुपम जताया।।4।।
दृष्टि हुई आप सम, ही प्रभो जब।
परिणति भी होगी, तुम्हारे ही सम तब।।
नहीं मुझको चिन्ता, मैं निर्दोष ज्ञायक।
नहीं पर से सम्बन्ध, मैं ही ज्ञेय ज्ञायक।।
हुआ दुर्विकल्पों का, जिनवर सफाया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।5।।
सर्वांग सुखमय, स्वयं सिद्ध निर्मल।
शक्ति अनन्तमयी, एक अविचल।।
बिन्मूर्ति चिन्मूर्ति, भगवान आत्मा।
तिहूँ जग में नमनीय, शाश्वत चिदात्मा।।
हो अद्वैत वन्दन, प्रभो हर्ष छाया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

आपहि ज्ञायक देव है, आप आपका ज्ञेय।
अखिल विश्व में आप ही, ध्येय ज्ञेय श्रद्धेय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री शास्त्र पूजन

(छन्द-वीर)

अनेकान्तमय तत्त्व बताती, स्याद्वादमय जिनवाणी।
मंगलमय शुद्धात्म दिखाती, नय प्रमाण से जिनवाणी।।
भक्ति भाव से पूजा करते, मन में अति हर्षाता हूँ।
अन्तर्लीन परिणति होवे, यही भावना भाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-रोला)

भेदज्ञानमय जल लेकर मैं पूजा करता।
शाश्वत ज्ञानानन्दमय आतम दृष्टि धरता।।
जन्म-जरा-मृत दोष सहज विनशावनहारी।
जिनवाणी भव्यों की माता सम उपकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभावमय चन्दन लेकर जजूँ सदा ही।
क्रोधादिक मम चित्त माँहि उपजें न कदा ही।।
असहनीय भव ताप सहज विनशावन हारी।।
जिनवाणी भव्यों की माता सम उपकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल सरल भाव अक्षत से पूजा करता।
क्षत्-विक्षत् संयोगी भाव सहज ही तजता।।
अक्षय पद पाऊँ होकर चैतन्य विहारी।। जिनवाणी.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परम शीलमय सुमनों से पूजूँ हर्षाऊँ।
महाक्लेशमय कामादिक दुर्भाव नशाऊँ।।
ब्रह्म भावना सदा सभी को मंगलकारी।। जिनवाणी.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

ज्ञान शरीरी जड़ शरीर से भिन्न निजातम।
आराधन से अहो धन्य होते परमातम।।
चरु से पूजूँ भाऊँ आतम तृप्तिकारी।
जिनवाणी भव्यों की माता सम उपकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानमयी निज शुद्धातम सबको दर्शाती।
जो अनादि का मोह महातम सहज नशाती।।
पूजूँ ज्ञान प्रदीप जलाऊँ मंगलकारी।। जिनवाणी.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मादिक के दोष ज्ञान में नहीं दिखावें।
ध्याते ज्ञान स्वरूप, सहज ही कर्म नशावें।।
पूजूँ जिनवाणी ध्याऊँ आतम अविकारी।। जिनवाणी.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अहो ज्ञानघन सहजमुक्त आतम दर्शाया।
जिनवाणी माँ के प्रसाद से शिवपथ पाया।।
फल से पूजूँ त्यागूँ फल वाँछा दुखकारी।।जिनवाणी.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भावमय अर्घ्य सजा पूजूँ जिनवाणी।
नित्य-बोधनी तरण-तारिणी शिव सुखदानी।।
हो अनर्घ्य निज आतम प्रभुता मंगलकारी।
जिनवाणी भव्यों की माता सम उपकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

दोहा- गाऊँ जयमाला अहो, तत्त्व-प्रकाशनहार।
जिनवाणी अभ्यास से, जानूँ जाननहार।।

(चौपाई)

जिनवाणी शिवमार्ग बतावे, जिनवाणी निजतत्त्व दिखावे।
जिनवाणी दुर्मोह नशावे, जिनवाणी भवफन्द छुड़ावे।।
क्रोध अग्नि को सहज बुझावे, मान महाविष तुरत नशावे।
मृदुता ऋजुता माँ सिखलावे, तोष सुधारस पान करावे।।
जिनवाणी अभ्यास करें जे, निर्भय और निशंक रहें वे।
दोष नशावें गुण प्रगटावें, सहज परम वात्सल्य बढ़ावें।।
निज से अस्ति पर से नास्ति, समझे सो ही पावे स्वस्ति।
हो निष्काम निजातम भावे, हो निर्ग्रन्थ परमपद ध्यावे।।
असत् विभावों की नहिं चिन्ता, निज स्वभाव में सतत रमन्ता।
कर्म कलंक समूल नशावें, ध्रुव अविचल शिवपदवी पावें।।
आदर्शों का ज्ञान कराती, नैमित्तिक व्यवहार सिखाती।
बन्ध-मुक्ति प्रक्रिया बताती, स्वानुभूति की कला सुझाती।।
चार अनुयोगमयी जिनवाणी, माता सम सबको सुखदानी।
भक्तिभाव से करूँ अर्चना, आतमहित की जगी भावना।।
दिव्यतत्त्व दर्शावनहारी, दिव्यज्ञान प्रगटावन हारी।
जयवन्ते जग में जिनवाणी, तत्त्वज्ञान पावें सब प्राणी।।

दोहा- जिनवाणी है द्रव्यश्रुत, ज्ञान भावश्रुतज्ञान।
अभ्यासो नित द्रव्यश्रुत, प्रगटे ज्ञान महान।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

परम प्रीति उरधार, जिनवाणी पूजा रची।
आतम रूप निहार, मोह मिटा आनन्द हुआ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री मुनिराज पूजन

(छन्द-वीर)

विषयाशा आरम्भ रहित जो, ज्ञान ध्यान तप लीन रहें।
सकल परिग्रह शून्य मुनीश्वर, सहज सदा स्वाधीन रहें।।
प्रचुर स्व संवेदनमय परिणति, रत्नत्रय अविकारी हैं।
महाहर्ष से उनको पूजें, नित प्रति ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनीश्वरा:! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अवतार)

मुनिमन सम समता नीर, निज में ही पाया।
नाशें जन्मादिक दोष, शाश्वत पद भाया।।
गुण मूल अठाइस युक्त, मुनिवर को ध्यावें।
अपना निर्ग्रन्थ स्वरूप, हम भी प्रगटावें।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सम धर्म सुगन्ध, जग में फैलावें।
बैरी भी बैर विसारि, चरणन सिर नावें।।गुण मूल.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

लख तुष समान तन भिन्न, अक्षय शुद्धातम।
आराधें निर्मम होय, कारण परमातम।।गुण मूल.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कम्प मेरु सम चित्त, काम विकार न हो।
लहुँ परम शील निर्दोष, गुरू आदर्श रहो।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

निर्दोष सरस आहार, माँहि उदास रहें।
हैं निजानन्द में तृप्त, हम यह वृत्ति लहें।।
गुण मूल अठाइस युक्त, मुनिवर को ध्यावें।
अपना निर्ग्रन्थ स्वरूप, हम भी प्रगटावें।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल निज ज्ञायक भाव, दृष्टि माँहि रहे।
कैसे उपजावे मोह, ज्ञान प्रकाश जगे।। गुण मूल.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तज आर्त्त रौद्र दुर्ध्यान, आतम ध्यान धरें।
उनको पूजें हर्षाय, कर्म कलंक हरें।।गुण मूल.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्योऽष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चल निजपद में लीन, मन नहिं भरमावें।
निष्पृह निर्वांछक होंय, मुक्ति फल पावें।।गुण मूल.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्री चरणन शिर नाय, महिमा प्रगट करें।
लेकर बहुमूल्य सु अर्घ्य, हम भी भक्ति करें।। गुण मूल.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधुमुनिवरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- कामादिक रिपु जीतकर, रहें सदा निर्द्वन्द।
तिनके गुण चिन्तत कटें, सहज कर्म के फन्द।।

(चौपाई)

मुनि गुण गावत चित हुलसाय, जनम-जनम के क्लेश नशाय।
शुद्ध उपयोग धर्म अवधार, होय विरागी परिग्रह डार।।

Scanned with CamScanner

तीन कषाय चौकड़ी नाश, निर्ग्रन्थ रूप सु कियो प्रकाश।
अन्तर आतम अनुभव लीन, पाप परिणति हुई प्रक्षीण।।
पंच महाव्रत सोहें सार, पंच समिति निज पर हितकार।
त्रय गुप्ति हैं मंगलकार, संयम पालें बिन अतिचार।।
पंचेन्द्रिय अरु मन वश करें, षट् आवश्यक पालें खरें।
नग्नरूप स्नान सु त्याग, केशलौंच करते तज राग।।
एकबार लें खड़े आहार, तजें दन्त धोवन अघकार।
भूमिमाँहिं कछु शयन सु करें, निद्रा में भी जाग्रत रहें।।
द्वादश तप दश धर्म सम्हार, निज स्वरूप साधें अविकार।
नहीं भ्रमावें निज उपयोग, धारें निश्चल आतम योग।।
क्रोध नहीं उपसर्गों माँहि, मान न चक्री शीश नवांहिं।
माया शून्य सरल परिणाम, निर्लोभी वृत्ति निष्काम।।
सबके उपकारी वर वीर, आपद माँहि बंधावें धीर।
आत्मधर्म का दें उपदेश, नाशें सर्व जगत के क्लेश।।
जग की नश्वरता दर्शाय, भेदज्ञान की कला बताय।
ज्ञायक की महिमा दिखलाय, भव बन्धन से लेंय छुड़ाय।।
परम जितेन्द्रिय मंगल रूप, लोकोत्तम हैं साधु स्वरूप।
अनन्य शरण भव्यों को आप, मेटें चाह दाह भव ताप।।
धन्य-धन्य वनवासी सन्त, सहज दिखावें भव का अन्त।
अनियत वासी सहज विहार, चन्द्र चाँदनी-सम अविकार।।
रखें नहीं जग से सम्बन्ध, करें नहीं कोई अनुबन्ध।
आतम रूप लखें निर्बन्ध, नशें सहज कर्मों के बन्ध।।
मुनिवर सम मुनिवर ही जान, वचनातीत स्वरूप महान।
ज्ञानमाँहिं मुनिरूप निहार, करें वन्दना मंगलकार।।
पावें उनका ही सत्संग, ध्यावें अपना रूप असंग।
यही भावना उर में धार, निश्चय ही होवें भवपार।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्तिसर्वाचार्योपाध्याय-साधु-मुनिवरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- अहो! सदा हृदय बसें, परम गुरु निर्ग्रन्थ।
जिनके चरण प्रसाद से, भव्य लहें शिवपंथ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री सीमन्धर जिन पूजन

(छन्द-सोरठा)

सीमन्धर जिन नाथ, पूर्व विदेह विराजते।
हृदय विराजो नाथ, भाव सहित पूजा रचों।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्र! अत्र अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-वीर)

जन्म जरा मृत चक्र नाशने, जिन चरणों में आया हूँ।
तुम हो अक्षय अविनाशी प्रभु, यह लख अति हर्षाया हूँ।।
यह जल लख निस्सार जिनेश्वर, सन्मुख आज चढ़ाता हूँ।
विद्यमान सीमंधर स्वामी! आत्म भावना भाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निजानन्द का वेदन करते, भवाताप उत्पन्न न हो।
वर्ते निज में तृप्त परिणति, कर्मोदय से खिन्न न हो।।
चन्दन लख निस्सार जिनेश्वर सन्मुख आज चढ़ाता हूँ।। विद्यमान.।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय तो अपना ही वैभव, अक्षय तो अपना पद है।
अक्षय तो अपनी ही प्रभुता, पर का तो झूठा मद है।।
क्षत् भावों को त्याग जिनेश्वर अक्षत आज चढ़ाता हूँ।। विद्यमान.।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय-अक्षयप्रदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम वेदना का उपाय तो, ब्रह्मचर्य का धारण है।
परम ब्रह्म की सहज साधना, ब्रह्मचर्य का साधन है।।
पुष्पों को निस्सार जान प्रभु सन्मुख आज चढ़ाता हूँ।। विद्यमान.।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा वेदना नहिं उपजावे, ज्ञानामृत से तृप्ति रहे।
भोजन बिन ही अहो जिनेश्वर , सुखमय आप विराज रहे।।

Scanned with CamScanner

ये नैवेद्य असार जानकर, सन्मुख आज चढ़ाता हूँ।
विद्यमान सीमंधर स्वामी! आत्म भावना भाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानोद्योत रहे अन्तर में, वस्तु स्वरूप झलकता है।
सहज प्रवर्ते भेदज्ञान प्रभु, महामोहतम नशता है।।
जड़ दीपक निस्सार जानकर, सन्मुख आज चढ़ाता हूँ।। विद्यमान.।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अहो! अगन्ध आत्मा जाना, धर्म सुगन्धि प्रगट हुई।
घ्राणेन्द्रिय का विषय दुःखमय, बाह्य गन्ध से विरति हुई।।
धूप जान निस्सार जिनेश्वर, सन्मुख आज चढ़ाता हूँ।। विद्यमान.।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म फलों से हुई उदासी, मोक्ष महाफल पाऊँगा।
हे जिन स्वामी! अन्तर्मुख हो, निज पुरुषार्थ बढ़ाऊँगा।।
जड़ फल लख निस्सार जिनेश्वर, सन्मुख आज चढ़ाता हूँ।। विद्यमान.।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे अनर्घ्य पद दाता! ज्ञाता-दृष्टा रह निजपद ध्याऊँ।
निश्चय ही तुम सम हे स्वामी, ध्रुव अनर्घ्य जिनपद पाऊँ।।
द्रव्य भावमय अर्घ्य जिनेश्वर, सन्मुख आज चढ़ाता हूँ।। विद्यमान.।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - गुण अनन्त मंगलमयी, कैसे करूँ बखान।
भक्तिवश वाचाल हो, करूँ अल्प गुणगान।।

(वीरछन्द)

समवशरण में नाथ विराजे, चतुर्मुखी अन्तर्मुख हो।
भक्ति उर में सहज उमड़ती, जब परिणति प्रभु सन्मुख हो।।

Scanned with CamScanner

आगम से प्रभु महिमा सुन, प्रत्यक्ष लखूँ ऐसा मन हो।
जिनवर तुम ही प्राण हमारे, तुम ही तो जीवनधन हो।।
धर्मतीर्थ के परम प्रणेता, धर्म-पिता सर्वज्ञ महान।
अष्टादश दोषों से न्यारे, तिहुँ जगभूषण हे भगवान।।
दिव्यध्वनि से दर्शाते प्रभु, धर्मामृत परमानन्ददाय।
जिसको पीते-पीते स्वामी, जन्म-जरा-मृत रोग नशाय।।
अहो! अलौकिक वस्तु स्वरूप, दिखाया प्रभुवर नित अविकार।
हेय रूप पर-भाव बताये, उपादेय शुद्धातम सार।।
अन्य न कोई दुख का कारण, भूल स्वयं को है हैरान।
इसीलिए प्रभु कहा आपने, श्रेय मूल है सम्यग्ज्ञान।।
निज अक्षय प्रभुता दर्शायी, किया अनन्त परम उपकार।
हो निर्ग्रन्थ आत्मपद साधूँ, निश्चय होऊँ भव से पार।।
रहे देह में फिर भी न्यारा, अन्तर माँहि विदेही नाथ।
सहज स्मरण हो आता है, तुम्हें पूजते हे जिननाथ।।
यद्यपि आप दूरवर्ती हैं, किन्तु भाव में सदा समीप।
ज्ञानमाँहि प्रत्यक्षवत् निरखूँ, जले स्वयं अन्तर का दीप।।
निर्मम हुआ शान्त चित प्रभुवर, परम प्रभू का ध्यान रहे।
निर्मल साम्यभाव की धारा, सहजपने सुखकार बहे।।
हो निर्ग्रन्थ निमग्न रहूँ नित, सर्व विभाव नशाऊँगा।
हुआ सहज विश्वास शीघ्र ही, तुम सम ही हो जाऊँगा।।

(छन्द-त्रिभंगी)

जय-जय सीमंधर, तिहुँजग सुखकर, नृप श्रेयांस सुत अविकारी।
सत्यदेवी नन्दन, करते वन्दन, वृषभ चिह्न मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

सीमंधर भगवान को, जो पूजें चित धार।
निज सीमा पहिचानकर, सहज लहें भवपार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री बाहुबली जिन पूजन

(हरिगीतिका)

हे बाहुबलि! अद्भुत अलौकिक, ध्यानमुद्रा राजती।
प्रत्यक्ष दिखती आत्मप्रभुता, शीलमहिमा जागती।।
तुम भक्तिवश वाचाल हो, गुणगान प्रभुवर मैं करूँ।
निरपेक्ष हो पर से सहज, पूजूँ स्वपद दृष्टि धरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज-पार्श्वनाथ देव सेव....)

स्वयंसिद्ध सुख निधान, आत्मदृष्टि लायके।
जन्म-मरण नाशि हों, मोह को नशायके।।
बाहुबलि जिनेन्द्र भक्ति, से करूँ सु अर्चना।
तृप्त स्वयं में ही रहूँ, अन्य हो विकल्प ना।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पना, अनिष्ट-इष्ट, की तजूँ अज्ञानमय।
परिणति प्रवाहरूप, होय शान्ति ज्ञानमय।। बाहुबलि.।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पराभिमान त्याग के, सु भेदज्ञान भायके।
लहूँ विभव सु अक्षयं, निजात्म में रमाय के।। बाहुबलि.।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

छोड़ भोग रोग सम सु ब्रह्मरूप ध्याऊँगा।
काम हो समूल नष्ट सुख-अनंत पाऊँगा।।बाहुबलि.।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तोष सुधा पान करूँ आशा तृष्णा त्याग के।
मग्न स्वयं में ही रहूँ चित्स्वरूप भाय के।। बाहुबलि.।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

चेतना प्रकाश में चित् स्वरूप अनुभवूँ।
पाऊँगा कैवल्य ज्योति कर्म घातिया दलूँ।।
बाहुबलि जिनेन्द्र भक्ति, से करूँ सु अर्चना।
तृप्त स्वयं में ही रहूँ, अन्य हो विकल्प ना।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ध्यान अग्नि में विभाव सर्व जारिहों।
देव आपके समान सिद्धरूप धारि हों ।। बाहुबलि.।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र चक्रवर्ति के भी पद अपद नहीं चहूँ।
त्रिकालमुक्त पद अराध मुक्ति पद लहूँ लहूँ।। बाहुबलि.।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनर्घ्य प्रभुता आपकी सु आप में निहारिके।
नाथ भावमाँहिं मैं, अनर्घ्य अर्घ्य धारिके।। बाहुबलि.।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - मोहजयी इन्द्रियजयी, कर्मजयी जिनराज।
भावसहित गुण गावहूँ, भाव विशुद्धि काज।।

(छन्द-जोगीरासा)

अहो बाहुबलि स्वामी पाऊँ, सहज आत्मबल ऐसा।
निर्मम होकर साधूँ निजपद, नाथ आप ही जैसा।।
धन्य सुनन्दा के नन्दन प्रभु, स्वाभिमान उर धारा।
चक्री को नहिं शीश झुकाया, यद्यपि अग्रज प्यारा।।
कर्मोदय की अद्भुत लीला, युद्ध प्रसंग पसारा।
युद्ध क्षेत्र में ही विरक्त हो, तुम वैराग्य विचारा।।
कामदेव होकर भी प्रभु, निष्काम तत्त्व आराधा।
प्रचुर विभव, रमणीय भोग भी, कर न सके कुछ बाधा।।

Scanned with CamScanner

विस्मय से सब रहे देखते, क्षमा भाव उर धारे।
जिन दीक्षा ले शिवपद पाने, वन में आप पधारे।।
वस्त्राभूषण त्यागे लख निस्सार, हुए अविकारी।
केशलौंच कर आत्म-मग्न हो, सहज साधुव्रत धारी।
हुए आत्म-योगीश्वर अद्भुत, आसन अचल लगाया।
नहिं आहार-विहार सम्बन्धी, कुछ विकल्प उपजाया।।
चरणों में बन गई वाँमि, चढ़ गई सु तन पर बेलें।
तदपि मुनीश्वर आनन्दित हो, मुक्तिमार्ग में खेलें।।
नित्यमुक्त निर्ग्रन्थ ज्ञान-आनन्दमयी शुद्धातम।
अखिल विश्व में ध्येय एक ही, निज शाश्वत परमातम।।
निजानन्द ही भोग नित्य, अविनाशी वैभव अपना।
सारभूत है, व्यर्थ ही मोही, देखे झूठा सपना।।
यों ही चिन्तन चले हृदय में, आप वर्तते ज्ञाता।
क्षण-क्षण बढ़ती भाव-विशुद्धि, उपशमरस छलकाता।।
एक वर्ष छद्मस्थ रहे प्रभु, हुआ न श्रेणी रोहण।
चक्री शीश नवाया तत्क्षण, हुआ सहज आरोहण।।
नष्ट हुआ अवशेष राग भी, केवल-लक्ष्मी पाई।
अहो अलौकिक प्रभुता निज की, सब जग को दरशाई।।
हुए अयोगी अल्प समय में, शेष कर्म विनशाए।
ऋषभदेव से पहले ही प्रभु, सिद्ध शिला तिष्ठाए।।
आप समान आत्मदृष्टि धर, हम अपना पद पावें।
भाव नमन कर प्रभु चरणों में, आवागमन मिटावें।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

बाहुबली भगवान, दर्शाया जग स्वार्थमय।
जागे आतमज्ञान, शिवानन्द मैं भी लहूँ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिन पूजन

(छन्द-वीर)

हो चक्रवर्ति अरु कामदेव, प्रभु तीर्थंकर पदवी धारी।
हे शांति-कुन्थु-अरनाथ! सदा, मैं करूँ वंदना अविकारी।।
आकर आप समीप जिनेश्वर, आनन्द उर न समाया है।
तव दर्शन पाकर नाथ आज, निजदर्शन मैंने पाया है।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथजिनेन्द्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथजिनेन्द्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथजिनेन्द्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद-अवतार)

मिथ्यामल धोने आज, सम्यक् जल पाया।
प्रभु जन्म-मरण से शून्य, ज्ञायक दिखलाया।।
हे शांति-कुन्थु-अरनाथ, चरणन शिर नाऊँ।
है महामहिम निजभाव, प्रभुता प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप रहित निज भाव, निज में दरशाया।
भव ताप नशावन हेतु, चन्दन सम पाया।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो भवाताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत अक्षत निजभाव, दृष्टि में आया।
क्षत् रागादिक विनशाय, अक्षय पद ध्याया।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्योऽक्षयपद-प्राप्तये-अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

निष्काम रूप लख देव, काम पलाया है।
सम्यक् श्रद्धा का पुष्प, आज चढ़ाया है।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

दर्शन कर निज में नाथ, तृप्ति पायी है।
भव-भव की क्षुधा जिनेश, आज नशायी है।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

Scanned with CamScanner

तिहुँजग का जाननहार, आज जनाया है।
आलोकित है निज लोक, मोह भगाया है।।
हे शांति-कुन्थु-अरनाथ, चरणन शिर नाऊँ।
है महामहिम निजभाव, प्रभुता प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ -जिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

प्रभु आत्म ध्यान की अग्नि, अब सुलगाई है।
पर-परणति की दुर्गन्ध, सर्व जलाई है ।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्योऽष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल की अभिलाषा नाहिं, निज पद पाया है।
पूर्णत्व स्वयं में देख, आनन्द छाया है।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

प्रभु वीतराग विज्ञानमय शुभ अर्घ्य लिया।
निज में अनर्घ्य पद नाथ, निज से प्राप्त किया।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपद-प्राप्तये-अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जग जड़ वैभव त्यागकर, निज वैभव प्रगटाय।
शांति-कुन्थु-अरनाथ की, नित जयमाला गाय।।

(छन्द-जोगीरासा)

शांति जिनेश्वर दर्शन कर, निज शांति स्वरूप लखाया।
धन्य परम उपकारी निज सुख, निज में मुझे दिखाया।। टेक।।

चाह दाह में भटका अब तक, सुख का लेश न पाया।
मंद कषायों द्वारा अंतिम, ग्रैवेयिक तक हो आया।।
काललब्धि जागी प्रभुवर, मैं पास आपके आया।।1।। धन्य...

आत्मा तो स्वभाव से सुखमय, दिव्य रहस्य बताया।
दीन दुखी पामर मैं हूँ, ये भ्रम का रोग मिटाया।।
अन्तर में प्रत्यक्ष देख सुख, अब विश्वास जगाया।।2।। धन्य...

Scanned with CamScanner

निज चैतन्य विभूती देखी, शक्ति अनन्त निहारी।
प्रभु सम प्रभुता लखकर खुद ही भाव हुए अविकारी।।
होना नहीं सदा हूँ सुखमय, सम्यक् ज्ञान उपाया।।
धन्य परम उपकारी निज सुख, निज में मुझे दिखाया।।3।।

अब तो यही भावना प्रभुवर, निज में ही रम जाऊँ।
स्वानुभूतिमय परिणति में ही, काल अनन्त बिताऊँ।।
निज में ही सन्तुष्ट, कामनाओं का हुआ सफाया।।4।। धन्य...

कुन्थुनाथ स्तुति करते, गणधर इन्द्रादिक हारे।
तुम महिमा वर्णन करने में, हम को मंद विचारे।।
निजस्वभाव साधन द्वारा ही, प्रभु मुक्ति पद पाया।।5।। धन्य...

कुन्थु आदि सूक्षम जीवों के, प्रति भी दया सिखाई।
परम अहिंसामयी धर्म की, ध्वजा प्रभो फहराई।।
चलूँ आपके पद चिह्नों पर, आज यही मन भाया।।6।। धन्य...

धर्मचक्र के अर स्वरूप, सार्थक प्रभु नाम तुम्हारा।
प्रभो आपका दर्शन पाकर, जागा भाग्य हमारा।।
भव का फेरा मिटा सहज ही, शिवपथ मैंने पाया।।7।। धन्य...

चक्री का साम्राज्य आपने, तृणवत् क्षण में छोड़ा।
हो निर्ग्रन्थ प्रभो उपयोग सु, निज ज्ञायक में जोड़ा।।
सकलकर्म का नाश किया प्रभु, अविचल शिवपद पाया।।8।। धन्य...

कहूँ कहाँ तक भाव बहुत हैं, अल्प शक्ति पर मेरी।
तुम सम ही प्रभुतामय निस्पृह, परिणति होवे मेरी।।
चाहूँ कुछ नहिं सहजभाव से, सविनय शीश नवाया।।9।। धन्य...

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मंगलमय मंगलकरण, आत्मस्वरूप महान।
शुद्धातम में मग्न हो, प्रगटे पद निर्वाण।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धर पूजन

स्थापना (छन्द रोला)

हे आदीश्वर महावीर, सीमन्धर स्वामी।
महाभाग्य से दर्शन पाया, त्रिभुवननामी।।
करूँ समुच्चय पूजन, जिनवर हृदय विराजो।
ध्याऊँ ध्येय स्वरूप, आप सम ही है प्रभु जो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अवतार)

जल मलहारी पर नाथ, अन्तर्मल न हरे।
तव सम्यक् भक्ति भाव, जन्म जरादि हरे।।
मन में धर ऐसा भाव, पूजूँ आनन्दकर।
प्रभु आदिनाथ महावीर, सीमंधर जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यः जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन की शक्ति सु नाहिं, भव आताप हरे।
तव शान्त रूप का ध्यान, मन को शान्त करे।। मन में...।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

जग में अक्षय कहलाय, उसका क्षय होता।
अक्षय प्रभु ज्ञायक भाव, सहज सदा रहता।। मन में...।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

प्रभु पंचेन्द्रिय के भोग, भोगत व्यर्थ फँसे।
है ब्रह्मचर्य निर्दोष, काम समूल नशे।। मन में...।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नाना विध व्यंजन देव, नहीं क्षुधादि हरें।
समभावमयी रस श्रेष्ठ, शाश्वत् तृप्ति करे।। मन में...।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

Scanned with CamScanner

दीपक वा अन्य प्रकाश, अन्तर्तम न हरे।
निर्मोह ज्ञान शिवरूप, मार्ग प्रकाश करे।।
मन में धर ऐसा भाव, पूजूँ आनन्दकर।
प्रभु आदिनाथ महावीर, सीमंधर जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

नहिं धूप-दहन से नाथ, कर्म कलंक जरे।
निष्कर्म निराकुल होय, प्रभु सम ध्यान धरे।। मन में...।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यो-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मुक्तिपथ में आदर्श, प्रभुवर आपहि हो।
तव धर्मतीर्थ अपनाय, जीव स्वयं प्रभु हो।। मन में...।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ अनर्घ सु नाहिं, भाव अनर्घ धरूँ।
पंचमगति अचल अनूप, विभुवर प्राप्त करूँ।। मन में...।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भक्ति सहित पूजा रची, गाऊँ अब जयमाल।
द्वन्द-फन्द सब तोरिके, होऊँ नाथ निहाल।।

(छन्द-मानव)

मैं महाभाग्य से पाया, जिनदर्शन मंगलकारी।
है यही भावना स्वामिन्, वर्ते समता सुखकारी।।
इस भरत क्षेत्र में जब थी, शुभ कर्मभूमि आने को।
सर्वार्थसिद्धि से आये, मुक्तिपथ दर्शाने को।।
पितु नाभिराय कुलकर थे, रानी मरूदेवी माता।
कल्याणक देव मनाये, पाई सबने सुखसाता।।
राज्यावस्था में तुमने, लौकिक जीवन सिखलाया।
फिर निधन सुरी का लखकर, निर्ग्रन्थ मार्ग अपनाया।।

Scanned with CamScanner

श्रेयांस नृपति के आँगन, इक्षु रस पान कराया।
अक्षय तृतीया के शुभ दिन, प्रभु दान तीर्थ वर्ताया।।
तुम सहस्र वर्ष तप कीना, फिर घाति कलंक नशाया।
प्रगटा था अनन्त चतुष्टय, प्रभु धर्मतीर्थ प्रगटाया।।
कैलाश शिखर शिव पाया, आदीश्वर आनन्दकारी।
है यही भावना स्वामिन् वर्ते समता सुखकारी।।
अन्तिम तीर्थंकर सन्मति हो सबको सन्मति दाता।
वर्धमान वीर अतिवीर महावीर नाम विख्याता।।
पर्याय सिंह की स्वामिन् सम्यग्दर्शन प्रगटाया।
फिर दशवें भव में प्रभुवर रत्नत्रय पूर्ण कराया।।
हो बालयती हे विभुवर भव भोगों को ठुकराया।
हे शासननायक! सुखमय निर्ग्रन्थ मार्ग अपनाया।।
पावापुर से शिव पाया हम नमन करें अविकारी।
है यही भावना स्वामिन् वर्ते समता सुखकारी।।
हो विद्यमान तीर्थंकर पूरव विदेह के स्वामी।
मैं भरतक्षेत्र में पूजूँ तुमको हे अन्तर्यामी।।
हैं यहाँ नहीं तीर्थंकर चौबीसों मुक्ति पधारे।
स्मरण तुम्हारा आया प्रभुवर हो नाथ हमारे।।
सीमंधर जिन को पूजूँ अपनी सीमा में आऊँ।
दुःखमय परिग्रह को त्यागूँ निर्ग्रन्थ मार्ग अपनाऊँ।।
वैभाविक कर्म नशावें होऊँ अक्षय गुणधारी।
है यही भावना स्वामिन् वर्ते समता सुखकारी।।

(छन्द-घत्ता)

जय जय सुखसागर सुगुण उजागर, चरण शरण सब दुःखहारी।
मैं निजपद ध्याऊँ, शिवपद पाऊँ, सफल भावना हो म्हारी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-महावीर-सीमन्धरजिनेन्द्रेभ्यो-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- तीर्थंकर त्रय पूज, सहजानंद उर में भयो।
वांछा और न दूज, हो भविष्य प्रभु आप सम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वर पूजन

स्थापना (छन्द-वीर)

भरतक्षेत्र के वर्तमान के, आदि तीर्थंकर ऋषभेश्वर।
आदि मदन पद प्राप्त बाहुबली, चक्री आदि सु भरतेश्वर।।
दर्शन करते अहो जिनेश्वर, भक्ति भाव उर उमगाया।
करूँ समुच्चय पूजन मैं भी, जिनपद पाने ललचाया।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-ताटंक)

जन्म मरण का चक्र मिटाने, आया प्रभुवर जल लेकर।
अविनाशी ध्रुव पद आराधूँ, भाऊँ भावना मंगलकर।।
हे आदीश्वर! हे बाहुबली, हे भरत जिनेश्वर जगनामी।
भक्तिभाव से करूँ अर्चना, अपनी निधि पाऊँ स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन में कुछ शक्ति नहीं है, रागाताप मिटाने की।
उसे चढ़ाकर जगी लालसा, प्रभु शीतलता पाने की।।हे आदी.।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय है केवल निज स्वभाव, स्वाभाविक प्रभुता ही अक्षय।
पूजूँ अक्षत से यही भाव क्षत-भावों का हो जावे क्षय।।हे आदी.।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

ये भोग रोग की खान दिखें, अब यही भाव निष्काम रहूँ।
श्रद्धा के सुमन समर्पित हैं, प्रभु चाह दाह में नहीं दहूँ।।हे आदी.।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

Scanned with CamScanner

हे अनाकार! हे परमतृप्त! नैवेद्य चढ़ाऊँ भक्ति पगा।
समरस पीते नित तृप्त रहूँ, पूजन करते यह भाव जगा।।
हे आदीश्वर! हे बाहुबली, हे भरत जिनेश्वर जगनामी।
भक्तिभाव से करूँ अर्चना, अपनी निधि पाऊँ स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हे केवलज्ञान प्रकाशमयी! मैं भी ऐसा प्रकाश पाऊँ।
निर्मोही हो, निर्ग्रन्थ रहूँ बस निज स्वभाव में रम जाऊँ।।हे आदी.।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

ऐसा पुरुषार्थ जगे स्वामी, मैं निर्मल आतम ध्यान धरूँ।
निष्कर्म दशा प्रगटे अनुपम, वैभाविक परिणति दूर करूँ।।हे आदी.।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्यो-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति. स्वाहा।

अरे भोगते कर्मों के फल, मैं चिरकाल गंवाया है।
मुक्तस्वरूप! लहूँ मुक्तिफल भाव यही उर आया है।।हे आदी.।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्भुत आतम वैभव स्वामिन्! प्रगट दिखाया है तुमने।
ऐसा निज वैभव पाने को यह अर्घ चढ़ाया है मैंने।।हे आदी.।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-भरतेश्वरजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- कर्मभूमि की आदि में, किया स्व-पर कल्याण।
अद्भुत जीवन आपका, पाया पद निर्वाण।।

(तर्ज : अहो जगत गुरूदेव)

पंचकल्याणक पूज्य **ऋषभदेव** जिनराजा।
साँचे दीनदयाल, तारण-तरण जिहाजा।।

Scanned with CamScanner

राज्यावस्था माँहिं, लोक रीति वर्तायी।
निधन सुरी अवलोक, तत्त्व भावना भायी।।
मुनि दीक्षा अवधार, मार्ग प्रवर्तन कीना।
नृप श्रेयांस कुमार, प्रथमाहार सु दीना।।
सहस्र वर्ष तप कीन, घाति कर्म नशाये।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य, प्रभु अनन्त प्रगटाये।।
समवशरण के माँहिं, नाथ दिव्य ध्वनि द्वारा।
प्रगटा मुक्तिमार्ग, धर्मतीर्थ सुखकारा।।
पूर्व चौरासी लाख, आयु पूर्ण कर स्वामी।
आतम गुण विलसाय, आप हुए शिवगामी।।
बाहुबली भगवान, अनुपम चरित तुम्हारा।
पढ़ते सुनते देव! भासे जगत असारा।।
युद्ध क्षेत्र के माँहि, तुम वैराग्य विचारा।
अहो सहज निर्द्वन्द्व, निर्ग्रन्थ पद स्वीकारा।।
नहीं आहार-विहार, आसन अचल लगाया।
माने जग आश्चर्य, चक्री शीश नवाया।।
क्षपक श्रेणि चढ़ आप, अनन्त चतुष्टय लीना।
ऋषभदेव से पूर्व, शिवपुर गमन सु कीना।।
पूजा कर जिनराज, आनन्द उर न समाये।
नाशे मिथ्या मोह, रत्नत्रय प्रगटाये।।
धन्य धन्य **भरतेश,** तुम गुण कैसे गाऊँ।
अहो आप सम आप, पूजा कर हर्षाऊँ।।

Scanned with CamScanner

करी दिग्विजय आप, चक्र सुदर्शन लेकर।
नृपति सहस बत्तीस, मानी आज्ञा सुखकर।।
नव निधि, चौदह रत्न, वैभव अपरम्पारा।
हुआ हृदय वैराग्य प्रभु तृण सम परिहारा।।
दीक्षा दिन ही देव, केवलज्ञान सु पाया।
आतम सुख स्वाधीन, अहो आप दर्शाया।।
कर्म चक्र वश जीव, भव भव में भरमाये।
धर्म चक्र जिननाथ, सब दुख द्वन्द्व नशाये।।
मिटे चतुर्गति चक्र, परमानन्द विलसावे।
सिद्ध चक्र में जाय, फिर तो अचल रहावे।।
सहज भाव से होय, प्रभु पूजन सुखकारी।
यही भावना ईश ! परिणति हो अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबलि-भरतेश्वर-जिनेन्द्रेभ्यो-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-सोरठा)

जिनपूजा अविकार, भक्तिभाव से जो करें।
वे होवें भवपार, आधि-व्याधि सब ही मिटें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

हे भव्य! जिनरूप ही देखने योग्य है।
जिन वचन ही सुनने योग्य हैं।
जिन भावना ही भाने योग्य है।
अहो...! जिन मंदिर संसाररूपी मरूस्थल का कल्पवृक्ष है।

Scanned with CamScanner

श्री पंच बालयति तीर्थंकर मण्डल विधान

[illegible]

श्री पंच बालयति तीर्थंकर विधान पीठिका

(दोहा)

अनेकान्तमय ब्रह्मचर्य, सर्व गुणों की खान।
विषयों से विरक्त हो, प्रगटे आतम ध्यान॥1॥

इन्द्रिय सुख की वासना, सर्व दुःखों का मूल।
विषयों में आसक्त तो, शिवपथ जाये भूल॥2॥

ज्ञानी ज्ञानाभ्यास कर, विषय कषाय विडार।
भावें सम्यक् भावना, संयम का आधार॥3॥

[illegible] करके प्रभु, अहो स्वयं आराध्य।
भाव सहित कर वंदना, पाऊँ अक्षय साध्य॥4॥

बालयती तीर्थेश को, नमहूँ त्रियोग सम्हार।
मंगलमयी विधान शुभ, रचूँ सु मंगलकार॥5॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री पंच-बालयति पूजन

(छन्द- [illegible])

हे ब्रह्मचर्य के धनी ब्रह्ममय, परम पूज्य त्रिभुवन स्वामी।
हे पंच बालयति तीर्थंकर, तुम सम परिणति हो जगनामी॥
आनन्दमयी निज परम ब्रह्म, मैंने प्रत्यक्ष निहारा है।
उल्लास हृदय में छाया प्रभु, जब मैंने तुम्हें चितारा है॥
ज्यों दर्पण सन्मुख हो जग में, मोही तन रूप सजाते हैं।
त्यों तुम पूजन कर हे जिनवर, हम अपना भाव बढ़ाते हैं॥

(सोरठा)

वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व प्रभु, महावीर जिन।
नमत होय सुख चैन, द्रव्य-दृष्टि धर पूज हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरपंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरपंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरपंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीरछन्द)

निज में जुड़ती है दृष्टि जभी, समता का सहज प्रवाह बहे।
आनन्द अपूर्व प्रकट होवे, तब जन्म-जरा-मृत नहीं रहे।।
है जन्म-जरा-मृत रहित प्रभु! मम आज दृष्टि में आया है।
समरस से तृप्त रहूँ विभुवर, मैंने जल यहाँ चढ़ाया है।।
अतिशय है ब्रह्म भाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है।
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परम शांति शीतलता से, आपूर्ण सरोवर मम प्रभु है।
भव रहित जहाँ भव ताप नहीं, सर्वोत्कृष्ट सुखमय विभु है।।
जब ताप नहीं तब चन्दन का भी, काम नहीं कुछ शेष रहा।
चन्दन प्रभु यहीं चढ़ाया है, निष्पाप-ताप निज रूप गहा।।अतिशय.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्य: संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

छिलके से ढका हुआ अक्षत, छिलका हटते ही प्रकट हुआ।
पर्याय दृष्टि हटते ही त्यों, मम अक्षय प्रभु प्रत्यक्ष हुआ।।
निज अक्षय प्रभु के आश्रय से ही, राग-द्वेष का होवे क्षय।
ये अक्षत यहाँ चढ़ाये हैं, मैंने पाया है पद अक्षय।।अतिशय.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

निष्काम पूर्ण निज वैभव का, मैं तृप्त हो गया दर्शन कर।
संकल्प विकल्प प्रवेश न हों, रहते सीमा से ही बाहर।।
अद्‌भुत रहस्य यह पाया है, इच्छाओं की उत्पत्ति नहीं।
बस निज स्वभाव में मग्न रहूँ, ये पुष्प चढ़ाता आज यहीं।।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है।
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

समरस अमृत का सागर है, क्षुत् पीड़ा का अस्तित्व नहीं।
त्यागोपादान शून्य पर से, कुछ ग्रहण त्याग कर्तृत्व नहीं।।
जो निज स्वभाव से च्युत होकर, तन के आश्रय से भूख लगी।
नैवेद्य समर्पित यहीं प्रभो! स्वाश्रय से भव की भूख भगी।।अतिशय.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकाशत्व शक्ति शाश्वत् मेरी, है सहज प्रकाशित मम स्वभाव।
सब बाह्य प्रकाश अनावश्यक, उसमें नहिं दिखता निजस्वभाव।।
बाहर की दृष्टि छोड़ अहो! स्वसन्मुख चिन्मय ज्योति जगे।
ये दीपक यहीं विसर्जित है, अन्तर लौ से तम मोह भगे।।अतिशय.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्ममयी शाश्वत सुगन्ध चेतन नंदन में महक रही।
दुर्गन्धित भाव विकारों का, किंचित् भी है अस्तित्व नहीं।।
यह धूप यहीं प्रभु छोड़ रहा, अब पर से दृष्टि हटाई है।
स्वसन्मुख होकर अब प्रभु सम, स्वधर्म सुरभि शुभ पायी है।। अतिशय.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मुक्त स्वरूप सहज पाया; आनन्द अपूरव छाया है।
शिवफल की भी वांछा न रही, अन्तर पुरुषार्थ जगाया है।।
ज्ञानी तो फल वाँछा त्यागे, पर मूढ़ त्याग का फल चाहे।
फल चढ़ा रहा हूँ हे जिनवर, बस ये विकल्प भी नहिं आये।। अतिशय.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु सर्व विशुद्ध स्वतत्त्व लखा, अब दृष्टि न पल भी हटती है।
होता उपयोग जभी बाहर, एकाग्र भावना जगती है।।
एकाग्र रहे उपयोग सदा, यह ही निश्चय से अर्घ्य कहा।
जिससे अविचल अनर्घ्यपद हो, प्रभु बाह्य अर्घ्य इसलिए तजा।।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है।
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - वासुपूज्य श्री मल्लिजिन, नेमि पार्श्व महावीर।
बाल ब्रह्मचारी सुजिन, नमत मिटै भवपीर।।

(छन्द-पद्धरि)

जय **वासुपूज्य** देवाधिदेव, मंगलमय मंगलकरन एव।
जय चिदानन्द चिद्रूप सार, धारी निज महिमा निर्विकार।।
पूरवभव में तुमने स्वामी, सुन युगमंधर प्रभु की वाणी।
नित आत्मभावना भाई थी, तीर्थंकर प्रकृति बंधाई थी।।
तप कर महाशुक्र विमान गये, चय नृप वसुपूज्य के पुत्र भये।
कल्याणक देव मनाये थे, पर निज में आप समाये थे।।
भोगों को नहीं स्वीकार किया, दूरहि से प्रभुवर छोड़ दिया।
हो बालयति दीक्षा धारी, प्रकटाया निज पद सुखकारी।।
कर रहा अर्चना **मल्लिनाथ,** भवि दर्शन कर होते सनाथ।
वट वृक्ष विशाल गिरा लख कर, पूरव भव में दीक्षा धरकर।।
तीर्थंकर पद का बन्ध किया, अपराजित स्वर्ग प्रयाण किया।
तँहतैं चयकर अवतार लिया, शादी के समय वैराग लिया।।
छह दिन छद्मस्थ रहे स्वामी, नव-केवललब्धि रमा पायी।
भव्यों को शिवपथ दर्शाया, सम्मेदशिखर से शिव पाया।।
जय **नेमीश्वर** महिमा महान, सुन पशु क्रन्दन वैराग्य ठान।
छोड़े पशु अरु राजुल छोड़ी, भवबन्धन की कड़ियाँ तोड़ीं।।

Scanned with CamScanner

जग को अनुपम आदर्श दिया, प्रभु धर्म अहिंसा प्रकट किया।
गिरनार शिखर से शिव पाया, प्रभु चरणों में हम सिर नाया।।
जय **पार्श्वनाथ** तव गुण अपार, गणधर भी पावें नहीं पार।
इक दिवस सभा में विराज रहे, साकेत नरेश की भेंट लिए।।
इक दूत वहाँ पर आया था, साकेत विभव दरशाया था।
ऋषभादि प्रभु स्मरण हुआ, वैराग्य हृदय में जाग उठा।।
दीक्षा ले निज में मग्न हुए, तब कमठ घोर उपसर्ग किये।
अप्रभावित अचल रहे जिनवर, परमात्म दशा प्रगटी सत्वर।।
ऐसी स्थिरता प्रभु पाऊँ, बस परम ब्रह्म में रम जाऊँ।
हे **महावीर** विभु परम धीर, महिमा सागर से भी गम्भीर।।
शादी प्रसंग जब आया था, प्रभुवर तुमने ठुकराया था।
दीक्षा ले द्वादश वर्ष प्रभो, दुर्द्धर तप धारा आप विभो।।
निज ध्यान अग्नि द्वारा जिनेश, कर्मों को ध्वस्त किया अशेष।
अन्तिम तीर्थंकर अभिरामी, मैं करूँ वन्दना जगनामी।।
तव दर्शन करके हे स्वामी, मैंने निज महिमा पहिचानी।
प्रभु प्रबल पराक्रम प्रगटाऊँ, रागादि भाव पर जय पाऊँ।।
जो तीर्थ आपने प्रगटाया, वह ही स्वामी मुझको भाया।
कीचड़ लपेट तन धोना क्या, अरु कूद अग्नि में रोना क्या।।
श्रद्धान परम जागा मन में, सुख शान्ति सदा है अन्तर में।
परमाणु मात्र भी नहीं पर में, मेरा सर्वस्व सदा मुझमें।।
उपयोग नहीं पर में भागे, अतिचार नहीं किंचित् लागे।
प्रभुवर! निज में ही रम जाऊँ, निज परम ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परम ब्रह्म आनन्दमय, चित् स्वभाव अविकार।
समयसार में लीन हो, होऊँ भव से पार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(इसके पश्चात् इसी पुस्तक में आगे दी गई श्री पंच-बालयति तीर्थंकरों की अलग-अलग पूजन करें, तत्पश्चात् श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की पूजन करें।)

Scanned with CamScanner

श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजन

स्थापना (छन्द–अडिल्ल)

क्षमा आदि अन्तर्गर्भित जिसमें अहा,
विषय कषायों से विरक्ति लक्षण कहा।
आत्मलीनता ब्रह्मचर्य सुखकार है,
पूजूँ-धारूँ सहज भक्ति उर धार है।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द–अवतार)

ले समकित जल अविकारी, धोऊँ मिथ्यामल भारी।
भक्ति से पूज रचाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले क्षमा भावमय चन्दन, करता नित ही अभिनन्दन।
पूजन करि क्रोध नशाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत्रूप विभाव नशाऊँ, अक्षय स्वरूप ही ध्याऊँ।
अक्षत से पूज रचाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानामृत जल बरसावे, विषयों की चाह नशावें।
भावों के पुष्प चढ़ाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जब आतम अनुभव आवे, अद्भुत तृप्ति प्रगटावे।
चरु सरस भावमय लाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जहँ सम्यग्ज्ञान विलसता, मिथ्यातम सहज विनशता।
प्रभु अन्तर्दीप जलाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्ध्यान मिटे दुखकारी, हो आत्मध्यान सुखकारी।
मैं कर्म कलंक जलाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के फल नहिं चाहूँ, मैं मुक्ति महाफल पाऊँ।
प्रभु प्रासुक फल ले आऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुता अनर्घ्य अविकारी, मैंने प्रत्यक्ष निहारी।
भक्तिमय अर्घ्य चढ़ाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवधाशील अर्घ्यावलि

(दोहा)

ब्रह्मचर्य अद्भुत निधि, राखो सदा बचाय।
विषयी तस्कर जग फिरे, दृढ़ नव बाढ़ लगाय।।

ॐ ह्रीं श्री नवधाशीलपालनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

स्त्री संग तजो दुखकारी, भजो असंग भाव अविकारी।
सत्संगति में रहकर भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीसहवासवर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय निज धर्म सम्हारो, नहीं वासना सहित निहारो।
खोटे भाव नहीं हों भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणवर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसे हो विषयों का पोषण, ऐसे वचनशील के दूषण।
सुनो न बोलो मेरे भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री रागवचनवर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

करो सदा तत्त्वों का चिन्तन, भोगों का नहिं होय स्मरण।
सावधान नित रहकर भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वभोगानुस्मरणवर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करो सदा सात्विक आहार, सादा जीवन-श्रेष्ठ विचार।
धर निर्ग्रन्थ भावना भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री वृष्येष्टरसवर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर रत्नत्रयमय शृंगार, तजो अध्रुव तन का श्रृंगार।
शील स्वयं आभूषण भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री स्वशरीरसंस्कारवर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारी की शय्या और वस्त्र, करें विकार भाव हों त्रस्त।
विविक्त शय्यासन तप भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीशय्यासनवर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अति भोजन प्रमाद उपजाय, कामादिक दुर्भाव कराय।
युक्ताहारी होकर भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री उदरपूर्णासनवर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विकथा त्याग करो स्वाध्याय, आतम अनुभव रस विलसाय।
चेष्टाएं निर्मल हों भाई, ब्रह्मचर्य पालो सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री कामकथावर्जनरूपोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्माय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

सोरठा- अब्रह्मभाव विडार, ब्रह्मस्वरूप निहारते।
रहें सहज अविकार, तिन गुण चिन्तत अघ नशैं।।

(छन्द-पद्धरि)

जिन परम ब्रह्म को पहिचाना, अपना सुख अपने में जाना।
अपनी प्रभुता प्रतिभासी हो, उनको नित सहज उदासी हो।।

Scanned with CamScanner

... जिनेश्वर के नन्दन, करते शुद्धातम अभिनन्दन।
नित तत्त्वभावना भाते हैं, अपना वैराग्य बढ़ाते हैं।।
ब्रह्मानन्द ही जगमाँहि सार, है शिवस्वरूप शिव सुखकार।
आनन्द ही तृप्तिदायक है, निजपद संतुष्टि प्रदायक है।।
भोगों का चिन्तन, अभिलाषा, संतापकरण दुःखमय भाषा।
कामों अरु चेष्टा महानिंद्य, से होय जीव को पापबंध।।
विषयों के वश जो होंय दीन, वे रहें सदा ही पराधीन।
जो विषयों से होवें उदास, उनका सब जग हो जाय दास।।
व्रत ब्रह्मचर्य सबसे महान, अन्तर्गर्भित सब सुगुण जान।
प्रगटाने योग्य सु उपादेय, इससे भवि पावें परम श्रेय।।
अति पुण्योदय अवसर आया, नरभव अरु जिनशासन पाया।
स्वाध्याय करो मंगलकारी, तत्त्वों का निर्णय हितकारी।।
अपने को ध्रुव आतम जानो, देहादिक भिन्न सु पहिचानो।
रागादिक जानो दुःखदायी, रत्नत्रय ही आनन्ददायी।।
समझो चारों गति ही दुःखमय, है मात्र मोक्ष ही मंगलमय।
आतम अनुभव कर श्रद्धाधर, वैराग्य भावना फिर भाकर।।
इन्द्रिय विषयों का त्याग करो, अब जगत्पूज्य ब्रह्मचर्य धरो।
बाधाओं से नहीं घबराओ, दृढ़ता पूर्वक बढ़ते जाओ।।
लोकोत्तम ज्ञायक आराधो, समदर्शी हो शिवपद साधो।
है यही जगत में एक सार, शाश्वत् आनन्दमय समयसार।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– समयसारमय परिणति, नियमसार हो जाय।
यही परम ब्रह्मचर्य है, धारे सो शिव पाय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री पंच-बालयति तीर्थंकर-समुच्चय-महाजयमाला

(दोहा)

यह विधि प्रभु पूजा करी, भुक्ति मुक्ति दातार।
जयमाला गाऊँ सुखद, काम विनाशन हार।।

(छन्द-रोला)

अहो परम ब्रह्मचर्य धर्म नित मंगलकारी।
लोकोत्तम है अनन्य शरण सबको हितकारी।।
इन्द्रादिक से पूजित **वासुपूज्य** जिनस्वामी।
मल्लिनाथ हे मोहमल्ल नाशक जगनामी।।

पशुओं पर करुणा दर्शाकर **नेमि** विरत हो।
दीक्षा लेकर जिनपद पाया निज में रत हो।।
नाग नागिनी भी सम्बोधे **पार्श्व** कुंवर ने।
दीक्षा ले परमातम पद पाया फिर प्रभु ने।।

शासन नायक **वर्द्धमान** आदर्श हमारे।
यौवन में ही निजबल से कामादि विदारे।।
बिन भोगे ही विषय-भोग प्रभुवर ठुकराये।
सहज परम स्वाधीन ज्ञान सुख निज में पाये।।

यही भावना मैं भी प्रभु निष्काम रहाऊँ।
छोड़ सकल जग द्वन्द-फन्द शुद्धातम ध्याऊँ।।
सार भूत निज आतम जग असार दिखाया।
अन्तर्मुख जब हुआ अतीन्द्रिय निज रस पाया।।

भक्ति उर न समावे प्रभो विधान रचाया।
भाव जोड़ने का उपक्रम अल्पज्ञ कराया।।
हे अचिन्त्य महिमाधारी कैसे गुण गाऊँ।
भाव पुष्प अर्पितकर चरणों शीश नवाऊँ।।

Scanned with CamScanner

सब व्रत गर्भित ब्रह्मचर्य व्रत भव दु:खहारी।
होय परम निर्ग्रन्थ सहज ज्ञानी ब्रह्मचारी।।
ब्रह्मचर्य की महिमा नित जयवन्त प्रवर्त्ते।
ब्रह्मचर्य धारण कर जग शिवमग में वर्ते।।

(दोहा)

परम ब्रह्म आनन्दमय, परम ध्येय अभिराम।
सहज लीनता ब्रह्मचर्य, नित प्रति करूँ प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये महाजयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

दोहा – भूल चूक जो भी दिखे, सुधी सुधारो सोय।
जिनभक्ति हृदय वसे, भाव सफल सब होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

विधान समापन पाठ

तर्ज : श्री सिद्धचक का पाठ....

मैं चिदानन्द चिद्रूप सहज सुखरूप।
परम अविकारी, समझो भवि मंगलकारी। टेक।।
अब तक नहिं निज को पहिचाना, पर में ही अपनापन जाना।
पर्यायदृष्टि से सहे दु:ख अतिभारी, समझो भवि मंगलकारी।।1।।
तुम करो व्यर्थ ही रोष नहीं, पर का किंचित भी दोष नहीं।
निज भूल छोड़कर हो चैतन्य विहारी, समझो भवि मंगलकारी।।2।।
अति उत्तम अवसर आया है, श्री जिनवर दर्शन पाया है।
अब करो भेद विज्ञान सहज सुखकारी, समझो भवि मंगलकारी।।3।।
जड़ देह कर्म रागादि अरे, सबसे न्यारा चिद्रूप धरे।
है स्वयंसिद्ध परमातम आनन्दकारी, समझो भवि मंगलकारी।।4।।
स्वाभाविक शक्ति अनंत अहो, प्रभुता का भी कहीं अन्त न हो।
अद्भुत से भी अद्भुत वैभव का धारी, समझो भवि मंगलकारी।।5।।
ध्रुव मंगल उत्तम शरण यही, श्रद्धेय यही है ध्येय यही।
निज प्रभु ध्याता ही पावे शिव सुखकारी, समझो भवि मंगलकारी।।6।।

Scanned with CamScanner

श्री निर्वाणक्षेत्र पूजन

(गीतिका)

है तीर्थ शाश्वत आत्मा, उसका आराधन जो करें।
वे आत्म आराधक जगत में, चरण पावन जहँ धरें।।
वे तीर्थक्षेत्र कहाय सुखकर, भाव से पूजन करूँ।
हो आत्म साधक रत्नत्रय, परिपूर्ण कर भव से तिरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अवतार)

मलहारी जल कहलाय, अन्तर्मल न हरे।
अन्तर्मल सहज नशाय, सो सम्यक् जल ले।।
सम्मेद शिखर गिरनार, चम्पा पावापुर।
कैलाश आदि सुखकार, पूजत हर्षे उर।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

क्रोधादिक अनल समान, दाह करें दुखकर।
करने उनका अवसान, अनुपम चन्दन धर।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

क्षत्रूप विभव जगमाँहिं, प्रभु सम ठुकराऊँ।
अक्षय आतम पद ध्याय, अक्षय पद पाऊँ।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय सुख दुख के मूल, विष सम जान तजूँ।
अमृतमय ब्रह्म स्वरूप, हो निष्काम भजूँ।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नहिं मिटे भोग की भूख, सचमुच भोगों से।
होऊँ निजरस में तृप्त, बस हो भोगों से।।

Scanned with CamScanner

सम्मेद शिखर गिरनार, चम्पा पावापुर।
कैलाश आदि सुखकार, पूजत हर्षे उर।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में व्यर्थ, भटका दु:ख पाया।
महिमामय जिनवृष पाय, अनुभव प्रगटाया।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चिनगारी सम्यक्ज्ञान अन्तर में डारी।
प्रज्ज्वलित हो आतम ध्यान, शोधक सुखकारी।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पुण्य पाप के माँहि, भव भव भटकाया।
शिवफल की प्राप्ति हेतु, अब मन हुलसाया।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाव अर्घ्य सुखकार निज में पागत हों।
प्रभु सर्व विभाव असार, दु:खमय त्यागत हों।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थ वास की भावना, सहज होय दिन रात।
गाऊँ जयमाला सुखद, ज्ञानमयी विख्यात।।

(छन्द-पद्धरि)

जयवन्तो जग में धर्म तीर्थ, मंगलमय मंगलकरण तीर्थ।
सब पाप नशावें धर्म तीर्थ, शिवपथ दर्शावें धर्म तीर्थ।।
निज शुद्धातम परमार्थ तीर्थ, रत्नत्रय है व्यवहार तीर्थ।
अध्यात्म कथन यह सारभूत, भविजन हित हेतु निमित्त भूत।।

Scanned with CamScanner

धर्मी से सम्बन्धित जु होंय, हों धर्मक्षेत्र जगपूज्य सोय।
निर्वाण भूमि तिनमें महान, पूजों विशेष धरि भेदज्ञान।।
कैलाश शिखर प्रभु आदिनाथ, गिरनार शिखर प्रभु नेमिनाथ।
चम्पापुर वासुपूज्य प्रभुवर, पावापुर महावीर जिनवर।।
तीर्थंकर बीस सम्मेद शिखर, पायो निर्वाण अचल सुखकर।
है सर्वक्षेत्र मंगल स्वरूप, जहँ तें भये प्रभुवर सिद्ध रूप।।
पूजत उपजे आनन्द महान, निज सिद्धरूप का होय ध्यान।
तब देहादिक अति भिन्न लगे, शिवसाधन में पुरुषार्थ जगे।।
कर्मादि शून्य ज्ञायक स्वरूप, निर्मम अखण्ड आनंद रूप।
मैं सहज मुक्त मैं नित्यमुक्त, निर्दोष निजातम सुगुण युक्त।।
यों हुई प्रतीति सुखस्वरूप, भावें न स्वाँग जड़ के विरूप।
निर्ग्रन्थ भावना मंगलमय, वर्ते शिवदाता आनंदमय।।
साधक हो साधूँ पूर्ण भाव, नाशे भव कारण सब विभाव।
यों भाव धार करता प्रणाम, उर बसे परम तीरथ ललाम।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– सिद्धक्षेत्र पूजन करें, सिद्ध रूप को ध्यान।
धरें परम आनन्दमय, होवें सिद्ध समान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

'**तीर्थवन्दना**' *की सार्थकता*

अहो... शाश्वत् तीर्थस्वरूप शुद्धात्मा की आराधना का उत्साह जाग्रत होने पर ही तीर्थवन्दना सार्थक होती है।

Scanned with CamScanner

भाग-3 : नैमित्तिक पूजन

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजन

(छन्द-वीर)

नंदीश्वर के अकृत्रिम जिन मंदिर अरु जिनबिम्ब अहा।
ज्ञान माँहि स्थापन करते उछले ज्ञानानन्द महा।।
ज्ञानमयी ही हो आराधन, सहजपने निष्काम प्रभो।
तृप्त सदैव रहूँ निज में ही, और चाह नहीं शेष विभो।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अड़िल्ल)

स्वाभाविक निर्मल जल से अविकार हैं।
दुखमय जन्म जरा मृत नाशनहार हैं।।
नंदीश्वर के बावन मंदिर अकृत्रिम।
पूजूँ श्री जिनबिम्ब अनूपम जिन समं।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपेपूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ चन्दन नहीं अन्तर्ताप विनाशकं।
सहज भाव चन्दन भवताप विघातकं।। नंदीश्वर...।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल भाव अक्षत ले मंगलकार हैं।
स्वाभाविक अक्षय पद के दातार हैं।। नंदीश्वर...।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

आत्मीक गुण पुष्प जगत में सार हैं।
विषय चाह दव दाह शमन कर्तार हैं।।
नंदीश्वर के बावन मंदिर अकृत्रिम।
पूजूँ श्री जिनबिम्ब अनूपम जिन समं।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन व्यंजन नहीं क्षुधा को नाशते।
तातें पूजूँ अकृत बोध नैवेद्य ले।। नंदीश्वर...।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ दीपक नहिं मोह विनाशनहार है।
मोह नशे जब जाने जाननहार है।। नंदीश्वर...।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटे अग्नि निर्मल आतम धर्म की।
जिससे होवे हानि सर्व ही कर्म की।। नंदीश्वर...।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पाऊँ परम भावफल प्रभु मंगलमयी।
और कामना शेष नहीं मन में रही।। नंदीश्वर...।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धभावमय अर्घ्य करूँ आनन्द सों।
पद अनर्घ्य पाऊँ छूटूँ भवफन्द सों।। नंदीश्वर...।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

सोरठा - धर्म पर्व सुखकार, हे जिन! पाया भाग्य से।
ध्याऊँ प्रभुपद सार, विषय कषायारम्भ तजि।।

(चौपाई)

अष्टम द्वीप नंदीश्वर सार, पूजूँ वन्दूँ भाव संभार।
इक इक अंजनगिरि अविकार, चार-चार दधिमुख सुखकार।।
आठ आठ रतिकर मनुहार, दिशि दिशि तेरह मंदिर सार।
बावन मंदिर यों पहिचान, निरखत होवे हर्ष महान।।
रत्नमयी मनहर जिनबिम्ब, सन्मुख भासे निज चिद्बिम्ब।
वर्णन है जिन आगम मांहि, भाव सहित पूजत मन लाहिं।।
कार्तिक फाल्गुनऽषाढ़ मंझार, अन्त आठ दिन आनन्दधार।
जहँ सुरगण वन्दन को जाँहि, पुरुषार्थी सम्यक्त्व लहाहिं।।
यद्यपि शक्ति गमन की नाँहि, तदपि ज्ञान में सहज लखाहिं।
भाव वन्दना कर सुखकार, निज अकृत्रिम भाव निहार।।
हुआ सहज संतुष्ट जिनेश, अब वांछा प्रभु रही न लेश।
निज प्रभुता निज में विलसाय, काल अनन्त सु मग्न रहाय।।
धर्म पर्व मंगलमय सार, जिस निमित्त हो तत्त्व विचार।
कर उद्यम पाऊँ पद सार, जय जय समयसार अविकार।।
पर्व अठाई मंगलरूप, ध्याऊँ निज अनुपम चिद्रूप।
नित्य पवित्र परम अभिराम, शाश्वत परमातम सुखधाम।।
स्वयं सिद्ध अकृत्रिम जान, अजर अमर अव्यय पहिचान।
देखन योग्य स्वयं में देख, विलसे उर आनन्द विशेष।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- धन्य हुआ कृतकृत्य हुआ, पाया श्री जिनधर्म।
मर्म तत्त्व का प्राप्त कर, लहूँ सहज शिवशर्म।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री पंचमेरू पूजन

(सोरठा)

पंचमेरु अभिराम, शोभे ढ़ाईद्वीप में।
अस्सी श्री जिनधाम, अकृत्रिम अविकार हैं।।
जिनप्रतिमा सुखकार, इक इक में शत आठ हैं।
होवे जय जयकार, भाव सहित पूजा करूं।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंवन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंवन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंवन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-दिग्पाल)

लेऊँ प्रभु समकित जल, धुल जावे मिथ्यामल।
पंचमेरु असी मन्दिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शन-विजय-अचल-मंदर-विद्युन्मालीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिन-चैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले क्षमा भाव चन्दन, कर जिनवर का सुमिरन।
पंचमेरु असी मंदिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत् का अभिमान तजूँ, अक्षत निज भाव भजूँ।
पंचमेरु असी मंदिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्योऽक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले पुष्प शील के शुभ, नाशूँ प्रभु काम अशुभ।
पंचमेरु असी मंदिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

समता रस स्वादी बनूँ, दुर्दोष क्षुधादि हनूँ।
पंचमेरु असी मंदिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान सु परकाशे, अज्ञान तिमिर नाशे।
पंचमेरु असी मंदिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्येय रूप ध्याऊँ, दश धर्म सु महकाऊँ।
पंचमेरु असी मंदिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विषमय विधि फल त्यागा, शिवफल में चित पागा।
पंचमेरु असी मंदिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाव अर्घ्य सुन्दर, निज विभव लहूँ जिनवर।
पंचमेरु असी मंदिर, जिनबिम्ब जजूँ सुखकर।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यःऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पंचमेरु के जिन भवन, पूजत हो आनन्द।
गाऊँ जयमाला सुखद, नशें कर्म के फन्द।।

(छन्द–पद्धरि)

जय पंचमेरु जग में महान, शाश्वत अकृत्रिम तीर्थ जान।
तीर्थङ्कर का जन्माभिषेक, इन्द्रादि करें उत्सव विशेष।।

Scanned with CamScanner

जय प्रथम सुदर्शन मेरु सार, स्थित सु द्वीप जम्बू मंझार।
लख योजन उन्नत अति विशाल, शोभे भूपर वन भद्रशाल।।
ऊपर चढ़ पाँच शतक योजन, नंदन वन दीखे मनमोहन।
ऊँचा साढ़े बासठ सहस्र, योजन सोहे वन सोमनस।।
तहँ तै छत्तीस सहस योजन, गिरशीस लसे शुभ पांडुक वन।
चारों दिशि के वन में सुन्दर, शोभें चैत्यालय श्री जिनवर।।
इक इक में इक शत आठ लसे, जिनबिम्ब लखत दुर्मोह नशे।
ज्यों दर्पण में तन रूप लखे, त्यों आत्मस्वरूप प्रत्यक्ष दिखे।।
फिर विजय अचल धातकीखण्ड, पूरब पश्चिम दिशि अति उतंग।
मंदर विद्युन्माली सु नाम, पुष्कर में राजे अति ललाम।।
योजन चौरासी सहस उतंग, चारों मेरु सोहे अभंग।
तहँ सोलह सोलह चैत्यालय, मनहर सुखकर श्री जिन आलय।।
इन्द्रादिक सुर अरु विद्याधर, चारण ऋद्धिधारी मुनिवर।
प्रभु भाव वंदना करूँ सार, निज भाव माँहिं मैं भी निहार।।
पूजूँ वंदूँ आनन्दित हो, तासों विधि बंधन खंडित हो।
भोगों की चित में दाह नहीं, इन्द्रादिक पद की चाह नहीं।।
अकृत्रिम शुद्धातम साधूँ, अविनाशी शिवपद आराधूँ।
अपना पद अपने में पाऊँ, चरणों में बलिहारी जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मंगलकर होवे सदा, जिन पूजा जग माँहि।
अपनो भाव सुधारि के, भवि निश्चय शिव पाँहि।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री सोलहकारण पूजन

(छन्द-वीर)

भव दु:ख निवारण सोलहकारण, सहज भाव से नित भाऊँ।
आनन्दित हो उत्साहित हो, रत्नत्रय पथ पर मैं धाऊँ।।
जिन भायीं भावना मंगलमय, उनने तीर्थङ्कर पद पाया।
मैं पूजूँ धरि बहुमान हृदय में, धर्म तीर्थ शुभ प्रगटाया।।

(दोहा)

मैं भी भाऊँ चाव सों, निज अन्तर लौ लाय।
होवे धर्म प्रभावना, तिहुँ जग में सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम।

(छन्द-मानव)

धरि दर्शविशुद्धि सुखमय, निर्मल जल ले समतामय।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दु:खहारी।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-विनयसंपन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचार-अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-संवेग-शक्तिस्त्याग-तप:-साधुसमाधि-वैयावृत्यकरण-अर्हद्भक्ति-आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-प्रवचनभक्ति-आवश्यकापरिहाणि-मार्गप्रभावना-प्रवचनवत्सलत्वेति तीर्थंकरत्वकारणेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धैर्यमयी ले चन्दन, जिन चरणों में कर वन्दन।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दु:खहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्य: संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निस्तुष ज्ञानाक्षत धारूँ, क्षत् विभव चाह परिहारूँ।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दु:खहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

निष्काम शील प्रगटाकर, भावों के पुष्प चढ़ाकर।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दुःखहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज रसमय चरु ले आऊँ, दुर्दोष क्षुधादि नशाऊँ।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दुःखहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान तिमिर क्षयकारी, ले ज्ञानदीप अविकारी।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दुःखहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्याऊँ पद पाप निकन्दन, नाशें सब ही विधि बन्धन।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दुःखहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल भक्तिमयी सु चढ़ाऊँ, निर्वाण महाफल पाऊँ।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दुःखहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अर्घ्य अनूपम सुखमय, लहूँ भावलीनता अक्षय।
पूजूँ भाऊँ सुखकारी, सोलहकारण दुःखहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा- इह विधि मंगलकार, पूजा करि आनन्द सौं।
सहज स्वरूप विचार, गाऊँ जयमाला सुखद।।

(छन्द-त्रोटक)

सम्यक् दर्शन निर्दोष होय, शंकादि दोष लागे न कोय।
रत्नत्रय प्रति नित विनय रहे, कब पूर्ण होय यह भाव रहे।।

Scanned with CamScanner

निर्दोष शील वर्ते अखण्ड, परमार्थ लहूँ हो मोह खण्ड।
भाऊँ सु निरन्तर भेदज्ञान, जासों पाऊँ निज पद महान।।
हो धर्म धर्म फल में उछाह, उपजे न कदाचित् विषय दाह।
निजशक्ति संभारि करूँ सुदान, त्यागूँ विभाव दुखकारि जान।।
शक्ति अनुसार धरूँ विचित्र, इच्छा निरोध जिन तप पवित्र।
साधु समाधि में करि सहाय, मैं भी समाधि लहूँ सुखदाय।।
हो तत्पर वैयावृत्ति माँहि, विचरूँ मैं भी शिवमार्ग माँहि।
अरहंत भक्ति धरि विषय टार, आराधूँ साधूँ स्वपद सार।।
आचार्यभक्ति होवे पवित्र, धारूँ निर्मल सम्यक् चरित्र।
वंदूँ बहु श्रुतधर उपाध्याय, लहूँ ज्ञान महान सु मुक्तिदाय।।
जिन प्रवचन की भक्ति अनूप, धरि ध्याऊँ अविकल चित्स्वरूप।
आवश्यक निश्चय अरु व्यवहार, हो सहज भाव से सुखकार।।
होवे प्रभावना मंगलमय, जिनधर्म धरें सब हों निर्भय।
धर्मी प्रति अति ही वात्सल्य, होवे सुखकारी अरु निःशल्य।।
सोलहकारण आनन्दकार, तीर्थङ्कर पद की देन हार।
निर्वांछक हो भाऊँ सु सार, ध्रुवतीर्थ रूप निजपद निहार।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

सोलह कारण भावना, सब ही को सुखदाय।
पूजूँ भाऊँ भक्ति धरि, श्री जिनधर्म सहाय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

वीतराग भाव साध्य है।

ज्ञायक भाव ध्येय है।

सकल विश्व ज्ञेय है।

Scanned with CamScanner

श्री दशलक्षण धर्म पूजन

(गीतिका)

उत्तम क्षमादिक धर्म आतम का सहज निजभाव है।
सुख शान्ति का है हेतु जग में, मुक्ति का सु उपाव है।।
है मूल सम्यग्दर्श, निज में लीनतामय ये धरम।
पूजूँ सु भाऊँ भावना, हो पूर्ण दशलक्षण धरम।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-रेखता)

सहज प्रासुक सु निर्मल जल, करो प्रक्षाल मिथ्यामल।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त भावों का ले चन्दन, सहज भवताप निकंदन।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखय पद कारणे अक्षय, आत्म पद का करो आश्रय।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन श्रद्धा सजाओ सब, काम दुःखमय नशाओ अब।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सन्तोषमय नैवेद्य, क्षुधादिक का न हो कुछ खेद।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

उजारो ज्ञान का दीपक, महातम मोह का नाशक।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शोधक जले तप की, भस्म हो कर्म की प्रकृति।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं फल पुण्य के चाहो, मोक्षफल भी सहज पाओ।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

समर्पित अर्घ्य अविकारी, होओ साक्षात् शिवचारी।
धर्म दशलक्षणी सुखकर, जजो निज माँहि दृष्टि धर।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों के अर्घ्य

(चौपाई)

निज अन्तर्मुख दृष्टि होवे, परमानन्दमय वृत्ति होवे।
तहँ अनिष्ट भासे नहीं कोई, क्रोध बैर उत्पन्न न होई।।
उत्तम क्षमा सहज अविकारी, वर्ते निज पर को हितकारी।
तत्त्वाभ्यास करो मनमाँही, पर का दोष लखो कछु नाहीं।।
जैसा कर्म उदय में आवे, वैसे ही संयोग सु पावे।
तातैं कर्म बंध के कारण, क्रोधादिक का करो निवारण।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेदज्ञान करि देखो भाई! मिथ्यामान महादुखदाई।
मानी के सब बैरी होवें, मानी को सब नीचा जोवें।।
जल ज्यों पत्थर में न समावे, त्यों मानी निज बोध न पावे।
स्वाभाविक निज प्रभुता देखो, ज्ञानी के जीवन को देखो।।

Scanned with CamScanner

अध्रुव वस्तु का मान सु त्यागो, विनयवंत हो निज में पागो।
उत्तम मार्दव आनन्द दाता, पूजो धरो सहज हो ज्ञाता।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज सरल निज भाव पिछानो, गुप्त पाप को माया जानो।
नहीं छिपावो ताहि मिटावो, **उत्तम आर्जव** चित में लावो।।
क्यों समझे ठगता औरों को, पाप बंध कर ठगता निज को।
उत्तम जिनशासन को भजकर, दुखमय छल प्रपंच को तजकर।।
कोई बहाना नहीं बनाओ, रत्नत्रय पथ पर बढ़ जाओ।
सरल स्वभावी होकर भ्राता, उत्तम आर्जव पूजो ज्ञाता।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमआर्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ लाभ का कारण नाहीं, व्यर्थ क्लेश करता मन माहीं।
लोभी विषयी महामलीना, दर-दर ठोकर खावे दीना।।
ज्ञेय लुब्ध अज्ञानी प्राणी, स्वानुभूति बिन दुःखी अज्ञानी।
जिन उपदेश भाग्य तें पाय, अनुभव रस में तृप्त रहाय।।
ध्याओ आतम परम पवित्रा, नाशे आश्रव अति अपवित्रा।
निर्लोभी हो पाप नशाय, **उत्तम शौच** जजो सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम सत्य धर्म परधाना, सत्य समझ बिन नहीं कल्याणा।
तीर्थ प्रवर्ते सत्य वचन से, होय प्रतिष्ठा सत्य धर्म से।।
सत्य धर्म सबको सुखदाई, झूठ दुःखमय दुर्गति दाई।
बोलो हित मित प्रिय सत् वयना, अथवा शान्त मौन ही रहना।
वस्तुस्वरूप यथार्थ पिछानो, करके स्वानुभूति श्रद्धानो।
तज परभाव रमो निज ही में, प्रगटे सत्य धर्म जीवन में।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

अहो अतीन्द्रिय आनन्द आवे, विषयों में नहिं चित्त भ्रमावे।
तज प्रमाद सब हिंसा टारी, होओ **उत्तम संयम** धारी।।
करि विचार देखो मन माँही, भोगों में सुख किंचित् नाहीं।
हस्ति मीन अलि पतंग हिरन सम, विषयों में दुख लहें मूढ़जन।।
हो विरक्त सब पाप नशावें, धरि संयम ज्ञानी सुख पावें।
उत्तम संयम शिवपद दाता, पूजो भाओ धारो ज्ञाता।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप निज में ही हो विश्रान्त, इच्छाएँ हो जावें शान्त।
सब ही सुख की इच्छा करें, आत्मबोध बिन सुख नहीं लहें।।
ज्यों ज्यों भोग संयोग लहाय, आशा तृष्णा बढ़ती जाय।
इच्छा पूरी कबहुँ न होय, करो निरोध सहज तप होय।।
बारह भेद व्यवहार कहाय, निश्चय तप सब कर्म नशाय।
अपनी-अपनी शक्ति प्रमान, **उत्तम तप** धारो बुधिवान।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुखदायक विभाव सब त्याग, आत्म धर्म में धरि अनुराग।
चार प्रकार दान शुभ देय, त्रिविधि पात्र को दे यश लेय।।
औषधि अभय आहार सु जान, ज्ञान दान सबमें परधान।
ज्ञान बिना भ्रमता तिहुँ लोक, आत्मज्ञान से पावे मोक्ष।।
निज को निज पर को पर जान, ज्ञानमयी कर प्रत्याख्यान।
सर्व दान दे हो निर्ग्रन्थ, **उत्तम त्याग** धरे सो सन्त।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हूँ मैं एक शुद्ध चिन्मात्र, अन्य न मम परमाणु मात्र।
मोहादिक औपाधिक भाव, मेरे नहिं मैं ज्ञान स्वभाव।।

Scanned with CamScanner

मैं स्वभाव से आनन्द रूप, द्विविधि परिग्रह दुःख स्वरूप।
परिग्रह त्याग आकिंचन्य धर्म, धारि मुनीश्वर नाशें कर्म।।
श्रावक भी परिमाण कराहिं, परिग्रह में किंचित् रुचि नाहिं।
यों **उत्तम आकिंचन** सार, पूजो धारो भव्य संभार।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य अविकार, पूजो धर्म शिरोमणि सार।
कामभाव दुर्गति को मूल, भव-भव में उपजावे शूल।।
लहे न चैन करे कृत निंद्य, कामासक्त बढ़ावे बंध।
तातैं शील बाढ़ नौ धार, अपनो ब्रह्म स्वरूप निहार।।
त्यागो दुखमय इन्द्रिय भोग, पाओ ज्ञानानन्द मनोग।
जयवन्तो ब्रह्मचर्य अनूप, धारे सो होवे शिवभूप।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- मोह क्षोभ बिन परिणति, ही दशलक्षण धर्म।
भेदज्ञान करि धारिये, तजि क्रोधादि अधर्म।

(तर्ज-हे दीन बन्धु श्री पति...)

दशलाक्षणीक धर्म सहज सुःखकार है।
आनन्दमयी यह धर्म अहो मुक्तिद्वार है।।
दशलाक्षणीक धर्म ही नाशे विकार है।
जिनवर प्रणीत धर्म करे भव से पार है।।
दशलाक्षणीक धर्म कल्पवृक्ष से अधिक।
समतामयी यह धर्म चिन्तामणि से है अधिक।।
दशलाक्षणीक धर्म धरे सहज ही ज्ञाता।
बिन याचना बिन कामना सब सुख प्रदाता।।

Scanned with CamScanner

दशलाक्षणीक धर्म क्रोध मान से रहित।
मंगलमयी यह धर्म माया लोभ से रहित।।
ये ही सनातन धर्म सत्य रूप है पवित्र।
संयम स्वरूप अभय रूप भोगों से विरक्त।।
तप त्याग रूप धर्म ये आनन्द स्वरूप है।
परिग्रह प्रपंच शून्य, ब्रह्मचर्य रूप है।।
दशलाक्षणीक धर्म ज्ञानमय स्वभाव है।
वर्ते निजाश्रय से सहज मिटते विभाव है।।
दशलाक्षणीक धर्म मैत्री भाव का सेतु।
अहिंसामयी यह धर्म विश्व शान्ति का हेतु।।
आओ भजो यह धर्म तत्त्वज्ञान पूर्वक।
सब द्वन्द फन्द छोड़कर स्वलक्ष्य पूर्वक।।
यह धर्म है वस्तु स्वभाव सम्प्रदाय ना।
यह धर्म है अनादि निधन भेदभाव ना।।
निष्काम भाव से सहज यह भावना वर्ते।
दशलाक्षणीक धर्म नित जयवन्त प्रवर्ते।।

(छन्द-घत्ता)

दशलक्षणरूपं धर्म अनूपं, धरे परम आनन्द से।
दुर्भाव नशावे सब सुख पावे, छूटे भव दुख द्वन्द से।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्येतिदशलक्षणधर्माय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दशलक्षण हैं धर्म के, धर्म नहीं दशरूप।
मोह क्षोभ बिन धर्म है, सहजहिं-साम्य स्वरूप।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री रत्नत्रय पूजन

(गीतिका)

दुखहरण मंगलकरण जग में, रत्नत्रय पहिचानिये।
परमार्थ अरु व्यवहार से, दो विधि निरूपण जानिये।।
शुद्धात्म रुचि अनुभूति अरु, आचरण निश्चय रत्नत्रय।
व्यवहार है बस निमित्त सहचर, नियत से हो कर्म क्षय।।
पूजूँ परम उल्लास से मैं, दृष्टि अन्तर धारिके।
भाऊँ स्वपद की भावना, जग द्वन्द्व फन्द निवारिके।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्‌रत्नत्रयधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्‌रत्नत्रयधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्‌रत्नत्रयधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

निर्मल सम्यक् नीर ले, मिथ्यामैल विडार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन ले अनुभूति मय, भव आताप निवार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद के कारणे, अक्षय प्रभु उर धार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परम ब्रह्म की भावना, निर्विकल्प उर धार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

निज रस से ही तृप्त हो, दोष क्षुधादि विडार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ज्योति चैतन्यमय, हो जगमग सुखकार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धातम का ध्यान धरि, नाशूँ सर्व विकार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंचन कर चारित्र तरू, पाऊँ शिवपद सार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य अभेद सुभक्तिमय, परमानन्द दातार।
पूजूँ धारूँ भक्ति से, रत्नत्रय अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्-रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्यग्दर्शन

(छन्द-वीर)

आतम दर्शन सम्यग्दर्शन, अहो धर्म का मूल है।
हो निःशंक धारूँ निज में ही, नाशे भव का शूल है।।
निर्वांछक हो ग्लानि त्यागूँ, रहूँ अमूढ़ सु सत्पथ में।
उपगूहन कर करूँ स्थितिकरण स्व-पर का शिवपथ में।।
करूँ सहज वात्सल्य धर्म की, मंगलमयी प्रभावना।
ये ही अष्ट अंग युत समकित, हो न कदापि विराधना।।

ॐ ह्रीं श्रीअष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहितसम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

श्री सम्यग्ज्ञान

निज में निज का अनुभव होवे, निश्चय सम्यग्ज्ञान हो।
है निमित्त व्यवहार जिनागम, से हो तत्त्वज्ञान जो।।
शुद्ध उच्चारण सदा करूँ अरु, शुद्ध अर्थ अवधारूँ मैं।
उभय शुद्धि धरि योग्य काल में, ही स्वाध्याय सम्हारूँ मैं।।
सदा बढ़ाऊँ गुरु का गौरव, यथा योग्य बहुमान करूँ।
विनय पूर्वक संशयादि तजि, विकसित सम्यग्ज्ञान वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्यक्चारित्र

विषय चाह की दाह शमित हो, सम्यक् चारित्र धारूँ मैं।
रत्न अमोलक दुर्लभ पाया, करि पुरुषार्थ सम्हारूँ मैं।।
स्व-पर दयामय तेरह भेद सु, निश्चय निज में लीनता।
त्यागूँ भोग परिग्रह दुखमय, जिनमें प्रतिक्षण दीनता।।
हो स्वाधीन करूँ शिव साधन, जासों निज पद पावना।
लोक शिखर पर सहज विराजूँ, फेरि न भव में आवना।।

ॐ ह्रीं श्रीत्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(सोरठा)

सम्यग्दर्शन ज्ञान, अरू चारित्र की एकता।
ये ही पथ निर्वाण, निश्चय आत्मस्वरूप है।।
महिमा अपरम्पार, वचन अगोचर ज्ञानमय।
वन्दूँ बारम्बार, गाऊँ जयमाला सुखद।।

(छन्द-पद्धरि)

सम्यक् रत्नत्रय आत्मरूप, सम्यक् रत्नत्रय शिव स्वरूप।
सम्यक् रत्नत्रय त्रिजगसार, इसही से हो भव सिन्धु पार।।

Scanned with CamScanner

सम्यक् रत्नत्रयज्योतिरूप, नहिं रहे लेश तम मोह रूप।
निज रत्नत्रयमय शुद्ध भाव, प्रगटें विघटें दुखमय विभाव।।
सम्यक् रत्नत्रय हित उपाय, चिर विधि बन्धन सहजहिं नशाय।
ये ही भविजन को परम श्रेय, प्रगटाने योग्य सु उपादेय।।
धनि धनि रत्नत्रय धरूँ सार, त्रैलोक्य पूज्य निज पद निहार।
अशरण जग में हैं शरण भूत, जिनवचन कहा सत्यार्थ रूप।
ताको सुयत्न है भेदज्ञान, श्रीदेव-शास्त्र-गुरु निमित्त जान।
जिन कथित तत्त्व का हो अभ्यास, हो स्वानुभूति लीला विलास।।
हो उदित सहज सम्यक्त्व सूर्य, रागादि विजय को बजे तूर्य।
वर्ते निर्मल उत्तम विचार, वैराग्य भावना बढ़े सार।।
आरम्भ परिग्रह पाप मूल, निर्ग्रन्थ होय छोड़े समूल।
आनन्द वीर रस रह्यो छाय, तड़ तड़ तड़ विधि बन्धन नशाय।।
ध्याऊँ स्वरूप श्रेणी चढ़ाय, निर्मुक्त परम पद सहज पाय।
ऐसी महिमा मन में सुभाय, पूजूँ रत्नत्रय मुक्तिदाय।।

(छन्द-धत्ता)

रत्नत्रयरूपं, आत्मस्वरूपं, मंगलमय मंगलकारी।
साक्षात् सु पाऊँ, थिर हो जाऊँ, निजपद पाऊँ अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पढ़ें सुनें चिन्तें अहो, पूजें धरि उर चाव।
निश्चय शिवपद वे लहें, नाशें सर्व विभाव।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री क्षमावाणी पर्व पूजन

स्थापना (छन्द-ताटंक)

महाहर्ष से पूजा करता, क्षमामयी परमातम की।
अन्तर्मुख हो करूँ भावना, क्षमा स्वभावी आतम की।।
शुद्धातम-अनुभूति होते, ऐसी तृप्ति प्रगटाती।
क्रोधादिक दुर्भावों की सब, सन्तति तत्क्षण विनशाती।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-वीर)

जिनवर का स्मरणमयी जल, मिथ्या मैल नशाता है।
सम्यक्भाव प्रगट होते ही, मुक्तिद्वार खुल जाता है।।
उत्तम क्षमा हृदय में वर्ते, सहज सदा ही ज्ञानमयी।
मोह क्षोभ बिन शुद्ध परिणति, रहे प्रभो वैराग्यमयी।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव स्तवनमय चन्दन ही, भवाताप विनशाता है।
शीतल होती सहज परिणति, चित्त न फिर भटकाता है।।उत्तम क्षमा..।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय वैभव अक्षय प्रभुता, अंतर माँहि दिखाती है।
जिनवर सम ही क्षत् भावों से, सहज विरक्ति आती है।।उत्तम क्षमा..।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

समयसारमय सहज परिणति, नियमसार हो जाती है।
कामवासना उस आनन्द से, सहजपने विनशाती है।।उत्तम क्षमा..।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभो आपके सन्मुख होते, ऐसी तृप्ति होती है।
नहीं भोगों की भूख सताती, अद्भुत तृप्ति होती है।।
उत्तम क्षमा हृदय में वर्ते, सहज सदा ही ज्ञानमयी।
मोह क्षोभ बिन शुद्ध परिणति, रहे प्रभो वैराग्यमयी।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान प्रगट होते ही, सिद्ध समान स्वभाव दिखे।
अनेकान्तमय तत्त्व दिखाता, मोह महातम सहज नशे।।उत्तम क्षमा.. ।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भेदज्ञान की चिनगारी, वैराग्य भाव से सुलगाती।
ध्यान अग्नि से सहजपने ही, कर्म कालिमा जल जाती।।उत्तम क्षमा.. ।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मलाभ से विषय सुखों का, लोभ सहज मिट जाता है।
आत्मलीनता से बिन चाहे, मोक्ष महाफल आता है।।उत्तम क्षमा.. ।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाऊँ, निज अनर्घ पद पाने को।
पूजा करते भाव उमगता, निज में ही रम जाने को।।उत्तम क्षमा.. ।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जयमाला गाते हुए, यही भाव सुखकार।
दशलक्षणमय धर्म की, गूँजे जय जयकार।।

(तर्ज-: हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम..)

सम्यग्दर्शन ज्ञान सहित, चारित्र हो रागादि रहित।
यही भावना हे जिनवर, सफल होय मेरी सत्वर।।
द्रव्य भाव से स्तुति कर, मैं भी अन्तर्मुख होकर।
अहो आत्म में निज पर की, करूँ भावना सिद्धों की।।

Scanned with CamScanner

द्रव्य दृष्टि से सिद्ध समान, देखूँ सबको ही भगवान।
भिन्न लखूँ औपाधिक भाव, सहज निहारूँ ज्ञायक भाव।।
होय मंगलाचरण तभी, परिणति ज्ञानानन्दमयी।
भासे जिनशासन का मर्म, सहज प्रगट हो आतमधर्म।।
परम साध्य का हो पुरुषार्थ, समय समय भाऊँ परमार्थ।
दिखे न पर में इष्ट अनिष्ट, नशें सहज क्रोधादिक दुष्ट।।
सहज अहेतुक अरु स्वाधीन, नहीं परिणमन पर-आधीन।
कोई किसी का कर्त्ता नाँहिं, कहा जिनेश्वर आगम माँहि।।
ज्ञानदृष्टि से सहज दिखाय, परमानन्द अहो उपजाय।
होय निःशंकित अरु निरपेक्ष, ग्लानि मन में रहे न शेष।।
हो निर्मूढ़ लगें निज माँहिं, पर का दोष दिखे कुछ नाहिं।
निज परिणति निज माँहि लगाय, परमप्रीति धर धर्म दिपाय।।
संशय विभ्रम और विमोह, दोष ज्ञान में रहे न कोय।
शुद्धज्ञान वर्ते निजमाँहि, अष्ट अंग सहजहिं विलसाहिं।।
पर से हो विरक्ति सुखदाय, संयम का पुरुषार्थ बढ़ाय।
विषयारंभ परिग्रह टार, व्रत समिति गुप्ति उर धार।।
हो निर्ग्रन्थ रमें निजमाँहिं, बाहर की किंचित् सुधि नाँहिं।
शुक्ल ध्यान से कर्म नशाय, अविनाशी शिवपद प्रगटाय।।
यही भावना मन में धार, करके उत्तम तत्त्व विचार।
क्षमा भाव सबके प्रति लाय, सब जीवों से क्षमा कराय।।
अन्तर बाहर हो निर्ग्रन्थ, अपनाऊँ जिनवर का पंथ।
जिनशासन वर्ते जयवंत, रत्नत्रय वर्ते जयवन्त।।
क्षमाभाव अन्तर न समाय, वचनों में भी प्रगटे आय।
सहज सदा वर्ते वात्सल्य, परिणति होवे सहज निःशल्य।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्माय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दोष दृष्टि को छोड़कर, गुण ग्रहण का भाव।
रहे सदा ही चित्त में, ध्याऊँ सहज स्वभाव।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री अक्षय तृतीया पूजन

(दोहा)

कर्मभूमि की आदि में ऋषभ मुनि अविकार।
नृप श्रेयांस दिया प्रथम इक्षु रस आहार।।
दानतीर्थ का प्रवर्तन, हुआ सु मंगलकार।
अक्षय तृतीया का दिवस, पूजें प्रभु सुखकार।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापननम्।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अवतार)

मिथ्यामल नाशक नीर, सम्यक् सुखकारी।
ले तुम समीप हे देव, नित मंगलकारी।।
पूजें हम ऋषभ मुनीश, हो युक्ताहारी।
साक्षात् अनाहारी, हो शिवमगचारी।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधानल नाशक नाथ, चन्दन क्षमामयी।
पाया तुम सम सुखकार, ज्ञायक ज्ञानमयी।।पूजें.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत वैभव सुखकार, अन्तर माँहि लखा।
क्षत् विक्षत् विभव असार, भासा मोह नसा।।पूजें.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम भावना देव, जागी हितकारी।
परमार्थ भक्ति से काम, नाशे दुखकारी।।पूजें.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हों निज से निज में तृप्त, वह विधि सिखलाई।
कैसे गावें उपकार, शाश्वत निधि पाई।।

Scanned with CamScanner

पूजें हम ऋषभ मुनीश, हो युक्ताहारी।
साक्षात् अनाहारी, हो शिवमगचारी।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् प्रकाश में नाथ, शिवपथ दिखलाया।
हम रहें आपके साथ, ये ही मन भाया।।पूजें.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कर्म निरामय देव, अन्तर में पाया।
ध्यावें नाशें सब कर्म, ये ही मन भाया।।पूजें.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पुण्य पाप के नाथ, भोगे दुःखकारी।
अब मुक्ति महाफल देव, पावें अविकारी।।पूजें.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले उत्तम अर्घ्य मुनीश, अति ही हर्षावें।
चरणों में नावें शीश, ध्रुव प्रभुता पावें।।पूजें.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जयमाला गावें सुखद, मन में धरि उल्लास।
यही भावना है प्रभो! रहें आपके पास।।

(छन्द-वीर)

दीक्षा लेकर ऋषभ मुनीश्वर, छह महीने उपवास किया।
फिर आहार निमित्त ऋषीश्वर, जगह-जगह परिभ्रमण किया।।
कोई हाथी-घोड़े-वस्त्राभूषण, रत्नों के भर थाल।
ले सन्मुख आदर से आवें, देख साधु लौटें तत्काल।।
नहीं जानें आहार-विधि, इससे सब ही लाचार हुए।
अन्तराय का उदय रहा, तेरह महीने नौ दिवस हुए।।
धन्य मुनीश्वर, धन्य आत्मबल, आकुलता का लेश नहीं।
तृप्त स्वयं में मग्न स्वयं में, किञ्चित् भी संक्लेश नहीं।।

Scanned with CamScanner

उदय नहीं हो दुःख का कारण, यदि स्वभाव का आश्रय हो।
निज से च्युत हो दुखी रहे, तो फिर उपचार उदय पर हो।।
दोष देखना किन्तु उदय का, कही अनीति जिनागम में।
उदय उदय में ही रहता है, नहीं प्रविष्ट हो आतम में।।
भेदज्ञान कर द्रव्यदृष्टि धर, स्वयं स्वयं में मग्न रहो।
स्वाश्रय से ही शान्ति मिलेगी, आकुलता नहीं व्यर्थ करो।।
अशरण जग में अरे 'आत्मन्'!, नहीं कोई हो अवलम्बन।
तजकर झूठी आस पराई, अपने प्रभु का करो भजन।।
इन्द्रादिक से सेवक चक्री, कामदेव से सुत जिनके।
देखो एक समय पहले भी, नहीं आहार मिले उनके।।
हुई योग्यता सहजपने ही, सर्व निमित्त मिले तत्क्षण।
मंगल सपनों का फल सुनकर, नृप श्रेयांस थे हर्ष मगन।।
देखा आते ऋषभ मुनि को, जाति स्मरण हुआ सुखकार।
नवधा भक्ति पूर्वक नृप ने, दिया इक्षुरस का आहार।।
पंचाश्चर्य किये देवों ने, रत्न पुष्प थे बरसाए।
पवन सुगन्धित शीतल चलती, जय जय से नभ गुंजाए।।
धन्य पात्र है धन्य है दाता, धन्य दिवस धनि है आहार।
दानतीर्थ का हुआ प्रवर्तन, घर घर होवें मंगलाचार।।
तिथि वैशाख सुदी तृतीया थी, अक्षय तृतीया पर्व चला।
आदीश्वर की स्तुति करते, सहजहिं मुक्तिमार्ग मिला।।
ऋषभदेव सम रहे धीरता, आराधन निर्विघ्न खिले।
नहीं मिले भोजन तक फिर भी, आराधन से नहीं चले।।
थकित हुआ हूँ भव भोगों से, लेश मात्र नहीं सुख पाया।
हो निराश सब जग से स्वामिन्, चरण शरण में हूँ आया।।
यही भावना स्वयं स्वयं में, तृप्त रहूँ प्रभु तुष्ट रहूँ।
ध्येय रूप निज पद को ध्याते, ध्याते शिवपद प्रगट करूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ज्ञाता हो दाता बनें, रंच न हो अभिमान।
धर्म तीर्थ जयवन्त हो, उत्तम त्याग महान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री श्रुत पंचमी पूजन

(दोहा)

जिन श्रुत की पूजा करूँ, भक्तिभाव उर धार।
धन्य-धन्य श्रुतपंचमी, हुआ सुश्रुत अवतार।।
पुष्पदंत अरु भूतबलि, किया परम उपकार।
श्री षट्खण्डागम रचा, लिखा तत्त्व अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागम! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-रोला)

जिनवाणी गुण गाऊँ, प्रासुक जल ले आऊँ।
जन्म जरा मृत दोष नशाने, ध्रुवपद ध्याऊँ।।
षट्खण्डागम आदि श्रुतों की पूजा करता।
निज-पर भेद विज्ञान धार निज दृष्टि धरता।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन से पूजूँ अरु जिनश्रुत पढ़ूँ पढ़ाऊँ।
चन्दन सम शीतल परिणति निज में प्रगटाऊँ।।षट्.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

जिनवाणी के सन्मुख, अक्षत शुद्ध चढ़ाऊँ।
अक्षय आत्म स्वभाव सहज समझूँ समझाऊँ।।षट्.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

प्रासुक पुष्पों से, जिनश्रुत की पूज रचाऊँ।
कामवासना मेटूँ, निर्मल शील सु पाऊँ।।षट्.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

जिन श्रुत पाकर, अनुभव रस में तृप्त रहूँ मैं।
कर अर्पण नैवेद्य, क्षुधादिक दोष नशूँ मैं।।

Scanned with CamScanner

षट्खण्डागम, आदि श्रुतों की पूजा करता।
निज-पर भेद विज्ञान धार, निज दृष्टि धरता।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी उपकार, हृदय से नहीं भुलाऊँ।
दीपक सम्यग्ज्ञान जलाकर मोह नशाऊँ।।षट्.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मबन्ध से भिन्न आत्मा, नित ही ध्याऊँ।
तप की शोधक अग्नि जलाकर कर्म नशाऊँ।।षट्.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी से सहज मुक्त, आतम पहचानूँ।
निज में हो संतुष्ट कर्म फल वांछा त्यागूँ।।षट्.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य-भावमय अर्घ्य चढ़ाकर, श्रुतगुण गाऊँ।
जिनवाणी की कर प्रभावना, अति हर्षाऊं।।षट्.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा- भ्रमतम नाशनहार, स्याद्वादमय जैनश्रुत।
अभ्यासो अविकार, गुण गाऊँ आनन्द से।।

(छन्द-पद्धरि)

श्रुत परम्परा का ह्रास देख गुरुवर को सहज विकल्प हुआ।
जिनवाणी को लिपिबद्ध कराने का उनको शुभ भाव हुआ।।
तब श्री धरसेनाचार्य ऋषिश्वर दो मुनिवर बुलवाये थे।
अरू उनकी बुद्धि परखने को दो मंत्र सिद्ध करवाये थे।।
मंत्रों को देख अशुद्ध सहज ही संशोधन कर लीना था।
निष्काम भाव से सिद्ध किये फिर भी अभिमान न कीना था।।
प्रतिभा सम्पन्न विनय संयुत, मुनि देख ऋषीश्वर मुदित हुए।
शिक्षा देकर परिपक्व किया, आचार्य बना निश्चिंत हुए।।

Scanned with CamScanner

वे तो समाधिकर स्वर्ग गये, श्री पुष्पदन्त प्रारम्भ किया।
रच एक खण्ड श्री भूतबली स्वामी समीप था भेज दिया।।
श्री भूतबली ने शेष लिखा, यों षट्खण्डागम पूर्ण हुआ।
जेठ शुक्ल पंचमी दिवस जिनश्रुत का जय जयकार हुआ।।
आचार्य श्री ने संघ सहित जिनश्रुत की पूजा करवाई।
जिन के समान ही जिनवाणी भी पूज्य तिहूँ जग में गाई।।
धवल जयधवल महाधवल टीकाएँ फिर तो लिखी गई।
गोम्मटसार आदिक ग्रन्थों की फिर रचनाएँ सरल हुई।।
यों परम्परा आगम की चलती रही आज भी हमें मिली।
श्री गुणधर कुन्दकुन्द आदिक से परम्परा अध्यात्म चली।।
दोनों धारायें अविकारी सुखमय, शिवमारग दरशातीं।
चारों अनुयोगमयी जिनवाणी, वीतरागता सिखलाती।।
है अनेकान्तमय वस्तु प्ररूपित, स्याद्वाद से सुखकारी।
निर्मल दृष्टि से देखो तो अनुयोग सभी हैं हितकारी।।
आदर्श बताता है हमको, प्रथमानुयोग आनन्दकारी।
उज्ज्वल आचरण सिखाता है, चरणानुयोग मंगलकारी।।
करणानुयोग परिणामों को, अरु लोक स्वरूप बताता है।
द्रव्यानुयोग सम्यक्त्व मूल, निज पर का भेद सिखाता है।।
अतएव करो अभ्यास भव्य, नित आगम अरु अध्यातम का।
हो हेयादेय विवेक सहज, श्रद्धान जगे शुद्धातम का।।
शुद्धातम का आराधन ही, अविनाशी शिवपद दाता है।
जिनवाणी तो है निमित्त भूत, फल परिणामों का आता है।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(छन्द-अडिल्ल)

माता सम उपकारी, श्री जिनवाणि है।
तरण तारिणी नौका, सम जिनवाणि है।।
जो पूजें अभ्यासें, अन्तर प्रीति से।
अल्पकाल में छूटें, भव की रीति से।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री वीर शासन जयन्ती पूजन

(छन्द-रोला)

वीरनाथ का दर्शन, सबको मंगलकारी।
वीरनाथ का शासन, सबको आनन्दकारी।।
सहज वस्तु स्वातन्त्र्य, वीर ने हमें बताया।
स्वयं मुक्त हो, हमें मुक्ति का मार्ग दिखाया।।

(दोहा)

श्रावण वदी सुप्रतिपदा, खिरी दिव्यध्वनि वीर।
भाव सहित पूजा करें, पहुँचें भव के तीर।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - आज अद्भुत छवि निज निहारी....)

भाव सम्यक्त्वमय नीर लावें, जन्म-मरणादि का दुःख नशावें।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लेके चन्दन क्षमाभावमय प्रभु, ईर्ष्या-द्वेष मिटावें अहो विभु।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव अक्षत सहज अविकारी, भक्ति प्रभु की सदा सुःखकारी।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बालयति हो प्रभो योगधारा, देव ऐसा ही भाव हमारा।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

तृप्ति निज में प्रभो निज से पाई, ऐसी तृप्ति हमें भी सुहाई।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानमय दीप प्रभु ने जलाया, ज्ञानमय भाव हमको दिखाया।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यानमुद्रा जिनेश्वर सुहावे, देख पुरूषार्थ अन्तर जगावे।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

देख आराधना का महाफल, लगते निस्सार सब ही करमफल।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म वैभव अनर्घ्य दिखाया, अर्घ्य हमने भी जिनवर चढ़ाया।
वीर शासन जयन्ती मनावें, वीर को पूज निजपद को ध्यावें।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विपुलाचल पर जब प्रथम, खिरी दिव्यध्वनि सार।
भविजन अति हर्षित हुए, गूँजा जय-जयकार।।

(छन्द-त्रोटक)

जय महावीर जय वर्धमान, अतिवीर वीर सन्मति महान।
प्रभुवर को केवलज्ञान हुए, छियासठ दिन अरे व्यतीत हुए।।
नित समवशरण भर जाता था, पर योग नहीं बन पाता था।
कुछ नहीं समझ में आता था, भव्यों का मन अकुलाता था।।

Scanned with CamScanner

जब काल दिव्यध्वनि खिरने का, गौतम आदिक के तिरने का।
आया मंगलकारी जिनवर, तब इन्द्र अवधि जोड़ा सत्वर।।
सब समझ शिष्य का वेश लिया, गौतम समीप तब गमन किया।
बोले मेरे गुरु महावीर, हैं मौन-काव्य अति ही गंभीर।।
भावार्थ बताओ सुखकारी, 'त्रैकाल्यं' काव्य पढ़ा भारी।
कुछ अर्थ समझ में नहिं आया, गौतम का माथा चकराया।।
शिष्यों संग वीर समीप चला, कुछ होनहार था परम भला।
जब समवशरण दिखलाया था, विस्मित हो अति हर्षाया था।।
देखत मानस्तम्भ मान गला, प्रभु दर्शन कर सम्यक्त्व मिला।
कहकर नमोस्तु दीक्षाधारी, हुए चार ज्ञान अति सुखकारी।।
गणधर का सहज निमित्त मिला, भव्यों का भी शुभ भाग्य खिला।
प्रभु दिव्य ध्वनि मंगलकारी, सब जग को अति ही हितकारी।।
सुनकर भविजन प्रतिबुद्ध हुए, दीक्षा ले बहुजन शिष्य हुए।
प्रभु शासन तब से वर्ताया, है महाभाग्य हम भी पाया।।
है स्वानुभूतिमय स्वयंसिद्ध, जिनशासन चिर से ही प्रसिद्ध।
जिसमें सब जीव समान कहे, स्वभाव से ही भगवान कहे।।
देहादिक पुद्गल बतलाये, रागादिक दुख हेतु गाये।
शिवकारण सम्यक् रत्नत्रय, परिणति निज में ही होय विलय।।
अपना सुख ज्ञान सु अपने में, अपनी प्रभुता है अपने में।
पहिचाने बिन भव भ्रमते हैं, आराधन कर प्रभु बनते हैं।।
भोगों की नहीं कामना है, हे भगवन यही भावना है।
प्रगटावें पावन जिनशासन, फैलावें जग में प्रभु शासन।।

ॐ ह्रीं श्रीशासननायक-महावीरजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

शासन वीर महान, जयवन्तो जग में सदा।
पाकर आतम ज्ञान, आनंदित हों जीव सब।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री रक्षाबंधन पूजन

(छन्द-वीर)

घोर उपसर्गजयी समतामय रत्नत्रय के साधक हैं।
काया से भी निस्पृह जो निज शुद्धातम आराधक हैं।।
अहो अकंपन आदि मुनीश्वर हृदय हमारे वास करो।
हो वात्सल्य विष्णु मुनिवर सम श्री जिनधर्म प्रकाश करो।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीश्वरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीश्वरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम। ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादि-सप्तशतकमुनीश्वरसमूह! अत्र भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-ताटंक)

प्रासुक जल से पूजा करते, रोम-रोम हुलसाया है।
अहो सहज वात्सल्यमयी जिनशासन मन को भाया है।।
हुए अकम्पित श्री अकम्पन, आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि, प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

देख प्रभाव शांत भावों का, बलि आदिक भी विनत हुए।
करें अर्चना हम चंदन से, मुक्ति मार्ग के पथिक हुए।।हुए...।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत् विक्षत् तन हुआ किन्तु, परिणाम आपके अक्षत ही।
अक्षत् से पूजा करते हम, करें भावना ऐसी ही।।हुए...।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

भायें हम निष्काम भावना, कामजयी हों आप समान।
पुष्पों से करते पूजा हम, जानें सहज ज्ञान में ज्ञान।।
हुए अकम्पित श्री अकम्पन, आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि, प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निजानन्द में तृप्त साधु, आदर्श हमारे सदा रहें।
अहो पूजते नैवेद्य से, शुद्ध भोजन में भी विरत रहें।।हुए...।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे निर्मोही! उपसर्गों में, द्वेष नहीं तुमको आया।
ज्ञानमयी वैराग्य आप सम, पाने को दीपक लाया।।हुए...।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य अग्नि से तन झुलसा, अंतर अग्नि दुष्कर्म दहे।
धन्य महासमता के सागर, धूप चढ़ाकर पूज रहे।।हुए...।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उदासीन हो कर्मफलों में, ज्ञाता दृष्टा आप रहे।
साम्यभाव के ही प्रभाव से, उपसर्गों से मुक्त रहे।।हुए...।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

है अनर्घ महिमा मुनिवर की, है अनर्घ ही शुद्धातम।
हों अनर्घ परिणाम हमारे, अर्घ चढ़ा ध्यावें आतम।।हुए...।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

दोहा- रक्षाबंधन पर्व दिन, याद करें मुनिराज।
गावें जयमाला सुखद, सफल होय सब काज।।

(छन्द-पद्धरि)

जय मुनि जीवन आनंदमयी, पर से निस्पृह शुद्धात्ममयी।
है परम जितेन्द्रिय ज्ञानमयी, है परम तृप्त वैराग्यमयी।।
आरम्भ परिग्रह के त्यागी, शिव सुख में ही वे अनुरागी।
विषयों की आशा भी न रही, संतुष्ट परिणति निज में ही।।
वर्ते अन्तर में भेदज्ञान, अनुशासन जिनका था महान।
रहते आज्ञा में गुरुवर की, मुद्रा जिनकी थी जिनवर सी।।
था संघ सात सौ मुनियों का, अद्‌भुत समूह था गुणियों का।
उज्जयिनी नगरी में आया, भूपति दर्शन कर हर्षाया।।
मुनि मौन रहे न विवाद हुआ, पर समय लौटते वाद हुआ।
श्रुतसागर से परास्त होकर, द्वेषी मंत्री क्रोधित होकर।।
रात्रि में आये वध करने, पर कीना कीलित देवों ने।
यह देख नृपति ने दिया दण्ड, निर्वासित मंत्री हुए खिन्न।।
हस्तिनापुरी नगरी आकर, सेवा से नृप को हर्षाकर।
वरदान धरोहर रूप लिया, होकर निःशंक वहाँ वास किया।।
फिर दैवयोग से वहाँ संघ, आया पावस में नया रंग।
सब नर नारी थे हर्षाये, पर मंत्री मन में घबराये।।
था निमित्त एक ही अविकारी, परिणति सब की न्यारी न्यारी।
वरदान नृपति से लिया माँग पा राज्य रचाया क्रूर स्वाँग।।
मुनि संघ समीप ही यज्ञ किया, अग्नि प्रज्वलित कर कष्ट दिया।
मुनिवर समता धर लीन हुए, नृप और प्रजाजन खिन्न हुए।।

Scanned with CamScanner

था हाहाकार मचा भारी, सुन समाचार अति दुःखकारी।
विष्णुकुमार मुनि द्रवित हुए, वात्सल्य भाव वश चलित हुए।।
वामन बनकर बलि ढ़िंग आए, डग तीन भूमि ले हर्षाये।
विक्रिया बना तन फैलाया, बलि देख रूप था चकराया।।
चरणों में मस्तक नवा दिया जिनधर्म सु अंगीकार किया।
उपसर्ग सहज ही दूर हुआ, घर घर में मंगलाचार हुआ।।
मुनियों को शुद्ध आहार दिया, वात्सल्य धर्म था सिखा दिया।
ले प्रायश्चित विष्णु मुनिवर, तप द्वारा कर्म नाश सत्वर।।
पंचमगति पायी अविकारी, हम करें वंदना सुखकारी।
रक्षाबंधन का पर्व चला हमको भी शुभ संदेश मिला।।
वात्सल्य सहज ही विस्तारें, निःशंकित हो समता धारें।
निरपेक्ष मौन सबसे उत्तम, निर्ग्रन्थ मार्ग ही लोकोत्तम।।
तन-मन-धन सब अर्पण करके, युक्ति से विनय-विशुद्धि से।
जिनधर्म प्रभाव बढ़ावेंगे निज शुद्धातम आराधेंगे।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारसहिताकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनिश्वरेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- वाद विवाद से दूर, करें सहज आराधना।
हो समता भरपूर, बढ़े सुधर्म प्रभावना।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

1. **शरीर से भी विरक्त तत्त्व-भावना भाते हुए समता का अभ्यास ही साधना है।**
2. **शाश्वत आनन्दमयी स्वरूप को निहारते हुए सहज आनन्दित रहना ही आराधना है।**

Scanned with CamScanner

भाग-4 : श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन (विधान)

श्री चौबीस तीर्थंकर स्तवन

1. श्री आदिनाथ भगवान

(गीतिका)

लीन हो निज ध्येय में, सर्वज्ञ पद पाया प्रभो।
आदि तीर्थंकर नमन अविकार हो, सुखकार हो।।
अखिल जग में, एक शुद्धातम ही भासे सार है।
पाया स्वयं में ही अहो, आनंद अपरम्पार है।।

2. श्री अजितनाथ भगवान

मोह ही हुआ पराजित, अजित प्रभु अविजित रहे।
चिद्रूप को आराधकर, शिवभूप जिनवर हो गये।।
ऐसा पराक्रम प्रगट होवे, निर्विकल्प रहूँ सदा।
संतुष्ट प्रभु निर्मुक्त निज में, सहज तृप्त रहूँ सदा।।

3. श्री सम्भवनाथ भगवान

अहो संभवनाथ दर्शन कर, परम आनन्द हुआ।
परभाव विरहित एक ज्ञायक, भाव का दर्शन हुआ।।
भावना जागी सहज, निर्ग्रन्थ पद अविकार हो।
तृप्त निज में ही सदा, पर की न चाह लगार हो।।

4. श्री अभिनन्दननाथ भगवान

अहो अभिनन्दन प्रभो, स्वीकार अभिनंदन करो।
आत्म आराधन करूँ मैं, आप प्रभु साक्षी रहो।।
क्रूरता से शून्य होवे, सिंहवृत्ति ज्ञानमय।
रहूँ निज में मग्न सहजहिं, कर्म नाशें क्लेशमय।।

Scanned with CamScanner

5. श्री सुमतिनाथ भगवान

कुमति वश पर निमित्त दृष्टि, सहा दुःख अपार है।
चिदानन्दमय आत्मा ही, अमित गुण भंडार है।।
आत्म आश्रय से जिनेश्वर, ध्रुव अचल शिवपद लहा।
धनि सुमति जिन, सुमतिदाता जगत त्राता हो अहा।।

6. श्री पद्मप्रभ भगवान

स्वर्ण विरचित पंकजों की, पंक्ति प्रभु चरणों तले।
शोभती सु विहार काले, और बहु अतिशय धरे।।
पद्मवत् निर्लिप्त मुद्रा, मुक्तिपथ दरशावती।
पद्मप्रभ तुमको निरखते, याद अपनी आवती।।

7. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

हे सुपार्श्व जिनेन्द्र तेरा, स्तवन कैसे करूँ।
गुण अनन्त अहो अलौकिक, आदि अन्त नहीं लहूँ।।
वचन में आवें नहीं, चिन्तन न पावे पार है।
स्वानुभवमय भक्ति वर्ते, वंदना अविकार है।।

8. श्री चन्द्रप्रभ भगवान

सुधा झरती शांत मूरति, चन्द्रप्रभ अति सोहनी।
मोहनाशक दिव्य ध्वनि, स्वामी परम मनमोहिनी।।
चन्द्र किरणों के परस से, सिन्धु ज्यों उछले प्रभो।
उछले परम आनन्द सागर, सहज दरशन से विभो।।

9. श्री पुष्पदंत भगवान

हे प्रभो! अध्यात्म विद्या, दिव्यध्वनि से तुम कही।
पुष्पदन्त जिनेन्द्र मुक्ति, की सुविधि भविजन लही।।

Scanned with CamScanner

नाम सार्थक सुविधिनाथ, स्वपद भजूँ अतिचाव से।
निश्चिंत हूँ निर्द्वन्द हूँ रूचि लगी सहज स्वभाव से।।

10. श्री शीतलनाथ भगवान

आधि-व्याधि-उपाधिमय, भवताप से तपता रहा।
अहो! शीतलनाथ मम उर, दर्श से शीतल भया।।
परम शीतल तत्त्व, निज शुद्धात्मा पाया अहा।
तृप्त निज में ही रहूँ, संताप नहिं उपजे कदा।।

11. श्री श्रेयांसनाथ भगवान

निरपेक्ष होते भी अहो, जग दुख हरो श्रेयांस जिन।
सहज जीते कर्म शत्रु, क्रोध बिन शस्त्रादि बिन।।
शृंगार बिन स्वामी स्वयं ही, जगत के शृंगार हो।
ध्रुव श्रेय पाया नाथ, मेरी वंदना अविकार हो।।

12. श्री वासुपूज्य भगवान

चक्र से या वज्र से भी, मोह जो नशता नहीं।
जिननाथ तव उपदेश से, दुर्मोह नाशे सहज ही।।
इन्द्रादि से भी पूज्य स्वामिन्, वासुपूज्य सु नाम है।
सहज पूज्य स्वभाव पाया, नाथ सहज प्रणाम है।।

13. श्री विमलनाथ भगवान

स्नान बिन निर्मल हुए, प्रभु आप सहज स्वभाव से।
स्वयं छूटे कर्ममल, विभु आत्मध्यान प्रभाव से।।
विमल जिनवर दर्श करते, भेदज्ञान हृदय जगा।
भ्रान्ति विघटी शान्ति प्रगटी, भाव अति निर्मल भया।।

Scanned with CamScanner

14. श्री अनन्तनाथ भगवान

बसे सादि अनंत शिव में, परम आनन्द रूप हो।
प्रगटे अनन्त सुगुण जिनेश्वर, रहो ज्ञाता रूप हो।।
प्रभुता अनन्त सुज्ञान में भी, अनंत ही प्रतिभासती।
प्रभु अनन्त सुदर्श से, महिमा अनन्त प्रकाशती।।

15. श्री धर्मनाथ भगवान

जिन धर्म पाया भाग्य से, आनंद अपरम्पार है।
दीखे स्वयं में ही अहो, अक्षय विभव भंडार है।।
निन्दा करें या त्रास दें जन, धर्म नहीं छोड़ूँ प्रभो।
हे धर्मनाथ जिनेन्द्र दुःखमय, बन्ध सब तोड़ूँ विभो।।

16. श्री शान्तिनाथ भगवान

जन्म क्षण में ही जगत में, सहज ही साता हुई।
सहस्र नेत्रों देखते, नहीं इन्द्र को तृप्ति हुई।।
विभव चक्री का प्रभो, निस्सार जाना आपने।
हे शान्ति जिन! सुख शान्तिमय, निज पद प्रकाशा आपने।।

17. श्री कुन्थुनाथ भगवान

प्रभु अहिंसा धर्म जग में, आपने विस्तृत किया।
मैत्री-प्रमोद, दया तथा माध्यस्थ भाव सिखा दिया।।
अनुभूत मुक्तिमार्ग का, उपदेश दे प्रभु शिव बसे।
हे कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! सहज सु, भक्ति उर में उल्लसे।।

18. श्री अरनाथ भगवान

षट्खण्ड पर पाकर विजय, चक्री कहाए हे प्रभो।
फिर विजय पाकर मोह पर, तीर्थेश कहलाए विभो।।

Scanned with CamScanner

भव रहित भगवान आत्मा, आप दर्शाया हमें।
अरनाथ जिन! उपकार वश, नित भाव से वन्दन तुम्हें।।

19. श्री मल्लिनाथ भगवान

हे बाल ब्रह्मचारी प्रभो, चिद्‌ब्रह्म रस में रम रहे।
यौवन समय निर्ग्रन्थ दीक्षा, धार शिवचारी भये।।
त्रैलोक्य जेता काम जीता, होय निर्मोही सहज।
हे मल्लिजिन! प्रभु रूप लखते, शीश झुक जाता सहज।।

20. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

हे नाथ मुनिसुव्रत तुम्हें, पाकर सनाथ हुआ जगत।
दिव्य ध्वनि सुनकर सु जाना, भविजनों ने सत् असत्।।
असत् रूप विभाव तज, सत् भाव की आराधना।
कर तिरें भविजन भवोदधि, हो सहज प्रभु वन्दना।।

21. श्री नमिनाथ भगवान

अणुमात्र का स्वामित्व तज, त्रयलोक के स्वामी हुए।
आत्मा में मग्न हो, सर्वज्ञ जगनामी हुए।।
शुद्धात्मा ही मंगलोत्तम, शरण रूप अनन्य है।
हो नमन् नमि जिन! आपको, नमनीय रूप अनन्य है।।

22. श्री नेमिनाथ भगवान

हे नेमि प्रभु! आदर्श है, वैराग्य जग में आपका।
चढ़ गये गिरनार स्वामी, तोड़ बन्धन पाप का।।
निर्ग्रन्थ हो, निर्द्वन्द हो, प्रभु मग्न निज में ही हुए।
प्रभुता सहज प्रगटी अलौकिक तृप्त निज में ही हुए।।

Scanned with CamScanner

23. श्री पार्श्वनाथ भगवान

नाग नागिन दग्ध लखकर, करूण हो संबोधिया।
धरणेन्द्र पद्मावती हुए, वैराग्य प्रभु तुम भी लिया।।
निर्ग्रन्थ हो आत्मार्थ साधा, हो गये परमात्मा।
जग को बताया पार्श्वप्रभु, परमात्मा सब आत्मा।।

24. श्री महावीर भगवान

जीता सुभट दुर्मोह सा प्रभु, मदन को निर्मद किया।
जग से विरत हो आत्मरत, परमात्म पद को पा लिया।।
तत्त्वोपदेश दिया प्रभो! आदेय शुद्धात्मा कहा।
हे वीर जिनवर तुम प्रसाद सु, सहज निजपद हम लहा।।

विधान-पीठिका

(दोहा)

नेता मुक्तिमार्ग के, सांचे तारणहार।
कर्म कलंक विनष्ट कर, हुए विश्व ज्ञातार।।
तीर्थंकर चौबीस वर, मंगलमय अविकार।
भक्तिभाव से पूजते, मन में हर्ष अपार।।
पूजों समुच्चय रूप से, अरू प्रत्येक प्रत्येक।
अन्तर माँहि निहारता, मैं अनेक में एक।।
निजानन्द निज में लहूँ, भोगों की नहिं चाह।
पाऊँ मैं भी आप सम, रत्नत्रय की राह।।
जब तक नहीं निर्ग्रन्थ पद, प्रगटे मंगलरूप।
जिनवर पूजन के निमित्त, भाऊँ शुद्ध चिद्रूप।।
मुक्तिमार्ग की सुविधि ही, जान प्रशस्त विधान।
भक्ति भाव से पूजते, करूँ भेद विज्ञान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन

(गीतिका)

पंचकल्याणक सुपूजित, ऋषभ आदि जिनेश्वरा।
वर्तमान में इस क्षेत्र में, विभु धर्म तीर्थ प्रगट किया।।
पूजन करूँ अति भक्ति से, उपकार परम विचारि के।
बोधि समाधि प्राप्त हो, यह भाव उर में धारि के।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांत-चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांत-चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांत-चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्

(छन्द-रोला)

भव-भव में प्रभु जन्म मरण करि बहु दुख पाया।
दर्शन पाकर आज देव! अमरत्व लखाया।।
समता जल ले पूजूँ ध्याऊँ हे अविकारी।
ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा भाव धरि क्रोधादिक पर प्रभु जय पाई।
आत्म शान्ति की युक्ति दिव्य ध्वनि से दरशाई।।
क्षमा भाव चन्दन ले पूजूँ हे अविकारी।।ऋषभादिक.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत् भावों में फँसकर नहिं संसार बढ़ाना।
नाथ इष्ट है तुम सम ही अक्षय पद पाना।।
आत्म भावना अक्षत ले पूजूँ अविकारी।।ऋषभादिक.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्यो-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु प्रसाद से काम सुभट क्षण में विनशाऊँ।
भाऊँ ब्रह्म स्वरूप सहज आनन्द प्रगटाऊँ।।
जजूँ पुष्प निष्काम भावमय ले अविकारी।।ऋषभादिक.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

चपल इन्द्रियों पर जय पाकर तृप्ति पाऊँ।
निजानन्द रस आस्वादी हो क्षुधा मिटाऊँ।।
सहज तृप्त निर्वांछक हो पूजूँ अविकारी।
ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी सुन भेदज्ञान कर मोह तजूँ मैं।
अन्तर्मुख हो परमभाव निज सहज लखूँ मैं।।
निर्मोही हो पूजूँ ध्याऊँ हे अविकारी।।ऋषभादिक.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य-भाव-नो-कर्मों से शुद्धातम न्यारा।
अहो आपकी साक्षी में प्रत्यक्ष निहारा।।
कर्म कलंक नशाऊँ पूजूँ हे अविकारी।।ऋषभादिक.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्यो-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो निरीह निज से ही निज में शिवफल पाया।
नित्य मुक्त आतम परमातम सम दर्शाया।।
ध्याऊँ आत्म स्वरूप सहज पूजूँ अविकारी।।ऋषभादिक.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! धूल सम जग वैभव क्षण में ठुकराया।
अन्तर्मग्न हुए अनर्घ्य निज वैभव पाया।।
जजूँ अर्घ्य ले शुद्ध भावमय हे अविकारी।।ऋषभादिक.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि-महावीरान्तेभ्यो-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

दोहा- सहज भाव से पूजकर, गाऊँ शुभ जयमाल।
ध्याऊँ ध्येय स्वरूप निज, कटे कर्म जंजाल।।

(छन्द-भुजंगप्रयात, तर्ज-मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक...)

ऋषभनाथ पूजूँ महासु:खकारी, अजितनाथ वन्दूँ करम रिपु संहारी।
सम्भव जिनेश्वर जजूँ शम प्रदाता, नमूँ नाथ अभिनंदनं शिव विधाता।।
सुमति पद्मप्रभ अरु सुपारस को वंदन, अहो चन्द्रप्रभ जिन भजूँ दुख निकन्दन।
श्री पुष्पदंत सु शीतल जिनेश्वर, नमूँ भक्ति से पूज्य श्रेयांस जिनवर।।
प्रथम बालयति वासुपूज्य सु स्वामी, करम मल विघातक विमल जिन नमामी।
अनन्त जिनेश्वर सुगुणऽनन्त धारी, नमूँ धर्मनाथं धरम पथ प्रचारी।।
जजूँ शान्तिनाथं परम शान्तिदायक, जयतु कुन्थु जिनवर अहिंसा विधायक।
श्री अर जिनेन्द्रं धरम नीति धारी, नमूँ मल्लि जिनवर परम ब्रह्मचारी।।
मुनिसुव्रतं नमि तथा नेमिनाथं, नमूँ पार्श्वनाथं श्री वीरनाथं।
महाभक्ति से नाथ गुणगान करके, धरम तीर्थ पाऊँ स्वपद दृष्टि धरिके।।
न लौकिक फलों की प्रभो कामना है, न विषसम कुभोगों की कुछ वासना है।
रहो आप आदर्श निजपद को ध्याऊँ, कि साधन ही क्या ? साध्य भी निज में पाऊँ।।

(छन्द-धत्ता)

जय जय अविकारी, शिवसुखकारी, तीर्थेश्वर चौबीस भला।
जो प्रभु गुण गावें, मोह नशावें, पावें केवलज्ञान कला।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादिमहावीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्यो-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

पूजें जिनपद सार, ध्यावें निज शुद्धात्मा।
सो पावें भव पार, त्रिविध कर्ममल नाशिकै।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(1) श्री आदिनाथ पूजन

दोहा- नमूँ जिनेश्वर देव मैं, परम सुखी भगवान।
आराधूँ शुद्धात्मा, पाऊँ पद निर्वाण।।

हे धर्म पिता सर्वज्ञ जिनेश्वर, चेतन मूर्ति आदि जिनं।
मेरा ज्ञायक रूप दिखाने, दर्पण सम प्रभु आदि जिनं।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण पा, सहज सुधारस आप पिया।
मुक्तिमार्ग दर्शाकर स्वामी, भव्यों प्रति उपकार किया।।

दोहा- साधक शिवपद का अहो, आया प्रभु के द्वार।
सहज निजातम भावना, जिन पूजा का सार।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चेतनमय है सुख सरोवर, श्रद्धा पुष्प सुशोभित है।
आनन्द मोती चुगते हंस, सुकेलि करैं सुख पाते हैं।।
स्वानुभूति के कलश कनकमय, भरि-भरि प्रभु गुण गाते हैं।
ऐसे धर्मी निर्मल जल से, मिथ्या मैल नशाते हैं।।

अथाह सरवर आत्मा, आनन्द रस छलकाय।
आत्म शान्ति रस पान से, जन्म-मरण मिट जाय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मग्न प्रभु चेतन सागर में, शान्ति जल से न्हाय रहे।
मोह मैल को दूर हटाकर, भवाताप से रहित भये।।
तप्त हो रहा मोह ताप से, सम्यक् रस में स्नान करूँ।
समरस चन्दन से पूजूँ अरु, तेरा पथ अनुसरण करूँ।।

Scanned with CamScanner

चेतन रस को घोलकर, चारित्र सुगन्ध मिलाय।
भाव सहित पूजा करूँ, शीतलता प्रगटाय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष अगोचर प्रभो आप, पर अक्षत से पूजा करता।
अक्षातीत ज्ञान प्रगटाकर, शाश्वत अक्षय पद भजता।।
अन्तर्मुख परिणति के द्वारा, प्रभुवर का सम्मान करूँ।
पूजूँ जिनवर भक्तिभाव से, निज सुख का आस्वाद करूँ।।

अक्षय सुख का स्वाद लूँ, इन्द्रिय मन के पार।
सिद्ध प्रभु सुख मगन ज्यों, तिष्ठे मोक्ष मंझार।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम अतीन्द्रिय देव अहो! पूजूँ मैं श्रद्धा सुमन चढ़ा।
कृतकृत्य हुआ निष्काम हुआ, तब मुक्ति मार्ग में कदम बढ़ा।।
गुण अनंतमय पुष्प सुगन्धित, विकसित हैं निज आतम में।
कभी नहीं मुरझावें, परमानन्द पाया शुद्धातम में।।

रत्नत्रय के पुष्प शुभ, खिले आत्म उद्यान।
सहजभाव से पूजते हर्षित हूँ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृप्त क्षुधा से रहित जिनेश्वर, चरु लेकर मैं पूज करूँ।
अनुभव रसमय नैवेद्य सम्यक्, तुम चरणों में प्राप्त करूँ।।
चाह नहीं किंचित् भी स्वामी, स्वयं स्वयं में तृप्त रहूँ।
सादि-अनंत मुक्तिपद जिनवर, आत्मध्यान से प्रकट लहूँ।।

जग का झूठा स्वाद तो, चाख्यो बार अनन्त।
वीतराग निज स्वाद लूँ, होवे भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित दीपों का प्रकाश भी, दूर नहीं अज्ञान करे।
आत्मज्ञान की एक किरण ही, मोह तिमिर को तुरत हरे।।

Scanned with CamScanner

अहो ज्ञान की अद्‌भुत महिमा, मोही नहिं पहिचान सकें।
आत्मज्ञान का दीप जलाकर, साधक स्व-पर प्रकाश करें।।

स्वानुभूति प्रकाश में, भासे आत्म स्वरूप।
राग पवन लागे नहीं, केवल ज्योति अनूप।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वेष भाव तो नहीं रहा, रागांश मात्र अवशेष हुआ।
ध्यान अग्नि प्रगटी ऐसी, तहाँ कर्मेन्धन सब भस्म हुआ।।
अहो! आत्मशुद्धि अद्‌भुत है, धर्म सुगन्धी फैल रही।
दशलक्षण की प्राप्ति करने, प्रभु चरणों की शरण गही।।

स्व सन्मुख हो अनुभवूँ, ज्ञानानन्द स्वभाव।
निज में ही हो लीनता, विनसैं सर्व विभाव।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन मूल अहो, चारित्र वृक्ष पल्लवित हुआ।
स्वानुभूतिमय अमृत फल, आस्वादूँ अति ही तृप्त हुआ।।
मोक्ष महाफल भी आवेगा, निश्चय ही विश्वास अहो।
निर्विकल्प हो पूर्ण लीनता, फल पूजा का प्रभु फल हो।।

निर्वांछक आनन्दमय, चाह न रही लगार।
भेद न पूजक पूज्य का, फल पूजा का सार।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् तत्त्व स्वरूप न जाना, नहिं यथार्थतः पूज सका।
राग भाव को रहा पोषता, वीतरागता से चूका।।
काललब्धि जागी अन्तर में, भास रहा है सत्य स्वरूप।
पाऊँगा निज सम्यक् प्रभुता, भास रही निज माँहि अनूप।।

सेवा सत्य स्वरूप की, ये ही प्रभु की सेव।
जिन सेवा व्यवहार से, निश्चय आतम देव।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

कलि अषाढ़ द्वय जान, सर्वार्थसिद्धि विमान से।
आय बसे भगवान, मरूदेवी के गर्भ में।।
गर्भवास नहीं इष्ट, तहाँ भी प्रभु आनन्दमय।
माँ को भी नहिं कष्ट, रत्न पिटारे ज्यों रहे।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पृथ्वी हुई सनाथ, नवमी कृष्णा चैत को।
नरकों में भी नाथ, जन्म समय साता हुई।।
इन्द्रादिक शिर टेक, किया महोत्सव जन्म का।
मेरू पर अभिषेक, क्षीरोदधि तें प्रभु भयो।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भासा जगत असार, देख निधन नीलांजना।
नवमी कृष्णा चैत्र परम दिगम्बर पद धरो।।
चिदानन्द पद सार, ध्याने को मुनि पद लिया।
परम हर्ष उर धार, लौकान्तिक धनि धनि कहा।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगट्या केवलज्ञान, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
धर्मतीर्थ अम्लान, हुआ प्रवर्तित आप से।।
समझा तत्त्व स्वरूप, दिव्य देशना श्रवण कर।
पाई मुक्ति अनूप, भविजन निज पुरुषार्थ से।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाया अविचल थान, चौदश कृष्णा माघ दिन।
गिरि कैलाश महान, तीर्थ प्रगट जग में हुआ।।
सहज मुक्ति दातार, शुद्धातम की भावना।
वर्ते प्रभु सुखकार, मैं भी तिष्ठूँ मोक्ष में।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

दोहा- आदीश्वर वन्दूँ सदा, चिदानन्द छलकाय।
चरण शरण में आपकी, मुक्ति सहज दिखाय।।

धन्य-ध्यान में आप विराजे, देख रहे प्रभु आतमराम।
ज्ञाता-दृष्टा अहो जिनेश्वर, परम ज्योतिमय आनन्दधाम।।
रत्नत्रय आभूषण साँचे, जड़ आभूषण का क्या काम।
राग-द्वेष निःशेष हुए हैं, वस्त्र-शस्त्र का लेश न नाम।।
तीन लोक के स्वयं मुकुट हो, स्वर्ण मुकुट का है क्या काम ?
प्रभु त्रिलोक के नाथ कहाओ, फिर भी निज में ही विश्राम।।
भव्य निहारें अहो आपको, आप निहारें अपनी ओर।
धन्य आपकी वीतरागता, प्रभुता का प्रभु ओर न छोर।।
आप नहीं देते कुछ भी पर, भक्त आप से ले लेते।
दर्शन कर उपदेश श्रवण कर, तत्त्वज्ञान को पा लेते।।
भेदज्ञान अरु स्वानुभूति कर, शिवपथ में लग जाते हैं।
अहो आप सम स्वाश्रय द्वारा, निज प्रभुता प्रगटाते हैं।।
जब तक मुक्ति नहीं होती प्रभु, पुण्य सातिशय होने से।
चक्री इन्द्रादिक के वैभव, मिले अन्न संग के तुष से।।
पर उनको चाहें नहिं ज्ञानी, मिलें किन्तु आसक्त न हों।
निजानन्द अमृत रस पीते, विष-फल चाहे कौन अहो ?।।
भाते नित वैराग्य भावना, क्षण में छोड़ चले जाते।
मुनि दीक्षा ले परम तपस्वी, निज में ही रमते जाते।।
घोर परीषह उपसर्गों में मन सुमेरु नहिं कम्पित हो।
क्षण-क्षण आनन्दरस वृद्धिंगत, क्षपक श्रेणि आरोहण हो।।
शुक्लध्यान बल घाति विनष्टे, अर्हत् दशा प्रगट होती।
अल्पकाल में सर्व कर्ममल, वर्जित मुक्ति सहज होती।।

Scanned with CamScanner

परमानन्द मय दर्श आपका, मंगल उत्तम शरण ललाम।
निरावरण निर्लेप परम प्रभु, सम्यक् भावे सहज प्रणाम।।
ज्ञान माँहिं स्थापन कीना, स्व-सन्मुख होकर अभिराम।
स्वयं सिद्ध सर्वज्ञ स्वभावी, प्रत्यक्ष निहारूँ आतमराम।।

दोहा- प्रभु नन्दन मैं आपका, हूँ प्रभुता सम्पन्न।
अल्पकाल में आपके, तिष्ठूँगा आसन्न।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दर्शन-ज्ञान स्वभावमय, सुख अनंत की खान।
जाके आश्रय प्रगटता, अविचल पद निर्वान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(2) श्री अजितनाथ पूजन

(दोहा)

मोह महारिपु जीतकर, कामादिक रिपु जीति।
सर्व कर्म मल धोय के, मेटी भव की रीति।।
भाव सहित पूजा करूँ, प्रभु चित माँहि वसाय।
तृप्त रहूँ आनन्द में, जाननहार जनाय।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-रोला)

शाश्वत प्रभु अवलोक, परम आनन्द उपजाया।
प्रभु प्रसाद से जन्म जरान्तक, भय विनशाया।।
अजित जिनेश्वर भक्ति भाव से, पूजन तेरा।
करूँ सहज हो, वृद्धिंगत रत्नत्रय मेरा।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

सहज ज्ञान में भासित, ज्ञायक अनुभव आये।
शांत ज्ञेय निष्ठा हो, भव आताप नशाये।।
अजित जिनेश्वर भक्ति भाव से, पूजन तेरा।
करूँ सहज हो, वृद्धिंगत रत्नत्रय मेरा।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत् विभाव से भिन्न स्वयं को अक्षय ध्याऊँ।
प्रभु का यह उपकार, सहज अक्षय पद पाऊँ।।अजित.।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रहूँ परम निष्काम, आत्म आश्रय के बल से।
सर्व-वासना मिटें, ब्रह्मचर्य के ही फल से।।अजित.।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा वेदना की पीड़ा, कैसे उपजावे?
वेदक वेद्य अभेद, ज्ञान वेदन में आवे।।अजित.।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्प्रकाशमय सदा सहज, निर्मोह निजातम।
आराधूँ हे नाथ, प्रगट हो पद परमातम।।अजित.।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलें ध्यान की अग्नि माँहिं, सब कर्म विकारी।
अहो विभो! निष्कर्म अवस्था, हो अविकारी।।अजित.।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जगा हृदय बहुमान, देव तुम पूज रचायी।
हुआ परम फल, फल की अभिलाषा विनशायी।।अजित.।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अनर्घ्य हे नाथ! अर्घ्य क्या तुम्हें चढ़ाऊँ।
अन्तर्मुख हो पूजक-पूज्य सु भेद मिटाऊँ।।अजित.।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

गर्भवास निष्पाप, जेठ अमावस के दिना।
कीना प्रभुवर आप, भाव सहित पूजूँ चरण।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म भयो सुखकार, माघ सुदी दशमी दिवस।
आनन्द अपरम्पार, भयो सहज त्रयलोक में।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिपद दीक्षा धार, माघ सुदी दशमी दिना।
हो निशल्य अविकार, सहज निजातम साधिया।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म निरवार, पौष सुदी एकादशी।
पूर्ण ज्ञान सुखकार, पाया प्रभु अरिहंत पद।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल एकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया पद निर्वाण, चैत्र सुदी तिथि पंचमी।
शिखर सम्मेद महान, मैं पूजूँ अति चाव सौं।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– ज्ञान शरीरी नाथ को, ज्ञान माँहिं अवलोक।
ज्ञानमयी आनन्द हो, मिटे उपद्रव शोक।।

(गीतिका)

जित शत्रु नंदन, भव निकन्दन, ज्ञानमय परमात्मा।
जयमाल गाऊँ भक्ति से, ध्याऊँ सहज शुद्धात्मा।।
पूर्व भव में विमल वाहन, भूप नीतिवान थे।
श्रुत केवली मुनिराज देखे, जो गुणों की खान थे।।
उपदेश सुन अन्तर्मुखी, परिणमन प्रभु तुमने किया।
संसार में अब नहिं रहूँ, संकल्प तत्क्षण कर लिया।।

Scanned with CamScanner

निर्ग्रन्थ हो निर्द्वन्द हो, भायीं सु सोलह भावना।
प्रकृति तीर्थंकर बंधी, शुभरूप मंगल कारना।।
सन्यास पूर्वक देह तजकर, हुए प्रभु अहमिन्द्र थे।
थी शुक्ल लेश्या भाव निर्मल, वासना से शून्य थे।।
छह माह आयु शेष थी, तब रत्न धारा बरसती।
सुन्दर हुई सम्पन्न अति, साकेत नगरी हरषती।।
सोलह सु सपने मात देखे, गर्भ में आये प्रभो।
कल्याण देवों ने मनाया, सभी हर्षाये अहो।।
फिर जन्मते अभिषेक इन्द्रों ने, सुमेरू पर किया।
थे सहज वैरागी नहीं राज्यादि करते रस लिया।।
नक्षत्र टूटा देखते, वैराग्यमय चिन्तन किया।
अनुमोदना लौकान्तिकों की पाय हर्षाया हिया।।
आनन्दमय निर्ग्रन्थ दीक्षा धरी प्रभु आनन्द से।
आराधना करते प्रभो, छूटे करम के फन्द से।।
होकर स्वयंभू देव, मुक्ति-मार्ग दर्शाया सहज।
पुनि घाति शेष अघातिया, ध्रुव सिद्धपद पाया सहज।।
पूजा करूँ प्रभु आपकी, निष्काम हो निष्पाप हो।
परिणति स्वयं में लीन हो, आदर्श जग में आप हो।।
उच्छिष्ट सम छोड़े हुए, भव भोग इष्ट नहीं मुझे।
मम नित्य ज्ञानानन्दमय प्रभु परम इष्ट मिला मुझे।।
सन्तुष्ट हूँ अति तृप्त हूँ, रतिवन्त हूँ निज भाव में।
जयवन्त हो श्री जैनशासन, लीन सहज स्वभाव में।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभुवर चरणप्रसाद से, विजित होंय सब कर्म।
स्वाभाविक प्रभुता खिले, रहूँ सदा निष्कर्म।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(3) श्री सम्भवनाथ पूजन

(दोहा)

नमूँ जिनेश्वर देव मैं, अनन्त चतुष्टयवान।
आवागमन रहित प्रभो! करता भाव-आह्वान्।।
दृष्टि ज्ञान सुध्यान में, सदा विराजो आप।
आओ प्रभु सन्निकट हो, मेटो मम भवताप।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अवतार)

प्रभु जन्म मरण से पार, आतम तत्त्व लखा।
जीवन का सहज प्रवाह, अनादि अनंत दिखा।।
हे सम्भवनाथ जिनेश, पूजूँ सुखदाई।
हे प्रभु! तुम चरण प्रसाद, आतम निधि पाई।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भव-भव का संताप, सहज विनष्ट हुआ।
लोकोत्तर चन्दन आप, मैं कृत कृत्य हुआ।। हे.।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

विभु! अक्षयपद अभिराम, आप दिखाया है।
अक्षत से पूजत स्वामि, चित हरषाया है।। हे.।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शोभे जिन सौम्य स्वरूप, अनुपम अविकारी।
ध्रुव ब्रह्मरूप चिद्रूप, ध्याऊँ सुखकारी।। हे.।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

हो सहज तृप्त जिनराज, अपने माँहि सही।
संतुष्ट हुआ चित आज, वांछा शेष नहीं।।
हे सम्भवनाथ जिनेश, पूजूँ सुखदाई।
हे प्रभु! तुम चरण प्रसाद, आतम निधि पाई।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही आत्म स्वभाव, तुम सम पहिचाना।
नाशूँ दुर्मोह विभाव, प्रभु निज पद जाना।। हे.।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन काया माँहि, अग्नि ध्यान मयी।
हो ज्वलित, कर्म विनशाहिं, वर्तूं ज्ञानमयी।। हे.।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु प्रभुता पूर्ण निहार, परमानन्द हुआ।
प्रभु पूजक भेद विडार, जाननहार हुआ।। हे.।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादिक पद निस्सार, भासे दुखकारी।
पाऊँ अनर्घ पद सार, अविचल अविकारी।। हे.।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(तर्ज-घड़ी जिनराज दर्शन की... । तुम्हारे दर्श बिन...)

अहो! फागुन सुदी आठें, खोलते कर्म की गाठें।
नाथ जब गर्भ में आये, जजत इन्द्रादि हर्षाये।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णिमा कार्तिकी सुखमय, जन्म कल्याण मंगलमय।
भव्य बहुमान से पूजें, पूजते कर्म रिपु धूजें।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पूर्णिमा मगसिरी आई, धरी दीक्षा सु सुखदाई।
किया कचलौंच प्रभु ऐसे, कर्म लौंचे हो जिन जैसे।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लपूर्णिमायां तपोमंगलमण्डिताय श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थी कृष्ण कार्तिक को, नशाया कर्म घाति को।
हुआ केवल सु मंगलमय, पूजते नष्ट हो भव भय।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदि षष्टि सुखदाई, प्रभो पंचम गति पाई।
अहो! जिनराज को जजते, मुक्ति मिलती सहज भजते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री सम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- दुर्गम भवसागर विषैं, तारण तरण जिहाज।
भक्ति भाव उर में धरूँ, गुण गाऊँ जिनराज।।

पूजन करते नाथ आपकी, आनन्द अपरम्पार रे।
भव विरहित हे सम्भव जिनवर, सहज लहूँ भवपार रे।।टेक।।

द्रव्येन्द्रिय, भावेन्द्रिय अरु, इन्द्रिय विषयों से भिन्न हो।
सहज अतीन्द्रिय ज्ञानानन्दमय, अनुभव करूँ अखिन्न हो।।
करूँ देव परमार्थ स्तुति, रहूँ सहज अविकार रे।।1।।पूजन...

एक शुद्ध निर्मम निर्मोही, स्वयं स्वयं को जान मैं।
होय क्षीण मोहादि कर्म रिपु, ऐसा धारूँ ध्यान मैं।।
रहे प्रतिष्ठित ज्ञान-ज्ञान में, चाह न रही लगार रे।।2।।पूजन...

उड़ते पक्षी की छाया सम, विषयों से सुख की आशा।
महाक्लेशकारी प्रभु जानी, पुद्गल का क्या विश्वासा?
हो निराश जग से हे स्वामिन्! साधूँ निज पद सार रे।।3।।पूजन...

Scanned with CamScanner

रचना मेघ विघटते लखकर, जिन दीक्षा ली अविकारी।
आत्मध्यान धरि कर्म नशाये, अक्षय प्रभुता विस्तारी।।
धर्म तीर्थ का किया प्रवर्तन, तिहुँ जग तारण हार रे।।4।।पूजन...

तीर्थ स्वरूप आपको पाकर, भेदज्ञान की ज्योति जगी।
दुखकारी परलक्षी परिणति, नाथ सहज ही दूर भगी।।
करूँ देव अनुकरण आपका, शिवस्वरूप शिवकार रे।।5।।पूजन...

मोहीजन को लगे असम्भव, रागादि का मिट जाना।
आज सहज सम्भव भासे प्रभु, वीतराग पद पा जाना।।
प्रभु प्रसाद मिट जावे पूजक-पूज्य भेद दुखकार रे।।6।।पूजन...

(छन्द–बसंततिलका)

इन्द्रादि शीष नावें, आनन्द बढ़ावें,
अति भक्ति भाव लावें, पूजा रचावें।
मैं अचर्ना करूँ क्या ? है शक्ति थोरी,
पूजन निमित्त परिणति, निज माँहिं जोरी।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

जो पूजें मन लाय, सम्भवनाथ जिनेश को।
पावें इष्ट अघाय, अविनाशी शिवपद लहें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

'पूजा का स्वरूप'

गुणगान एवं नमनादि करना द्रव्य पूजा है।
गुणों का चिन्तनादि भाव पूजा है।
उनके समान निजस्वरूप की आराधना परमार्थ पूजा है।

Scanned with CamScanner

(4) श्री अभिनन्दननाथ पूजन

(छन्द-वीर)

चन्द्र कान्ति की सूर्य तेज की, इन्द्र विभव की चाह करें।
ऐसी कान्ति तेज अरु वैभव, अभिनन्दन प्रभु सहज धरें।।
गुण अनुपम अक्षय है जिनवर, क्या महिमा का गान करूँ।
हृदय विराजो अभिनन्दन प्रभु, निजानन्द रस पान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-गीतिका)

आया शरण जिननाथ की जब, सहज ही अतिशय हुआ।
दिखा शाश्वत आत्मा, मरणादि से निर्भय हुआ।।
नाथ अभिनन्दन प्रभु की, करूँ पूजा भक्ति से।
पाऊँ विशुद्धि परम जिनवर सम, स्वयं की शक्ति से।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन रूप लख मैंने लखा, शीतल स्वभाव सु आपका।
चन्दन चढ़ा निजपद भजूँ , कारण नशे भवताप का।।नाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय जिनेश्वर पद निरख, इन्द्रादि पद दुखमय लगे।
निज भावमय अक्षत चढ़ाऊँ भाग्य मेरे हैं जगे।।नाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज गुणमय सुमन माला, कंठ में धारण करूँ।
निष्काम परम सुशील पाऊँ, भाव अब्रह्म परिहरूँ।।नाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

स्वानुभवमय सरस चरु यह, आप ढिंग पाया प्रभो।
तृप्ति हुई ऐसी कि काल अनन्त तृप्त रहूँ विभो।।
नाथ अभिनन्दन प्रभू की, करूँ पूजा भक्ति से।
पाऊँ विशुद्धि परम जिनवर सम, स्वयं की शक्ति से।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान दीप प्रकाश से, आलोकमय मेरा सदन।
झलके सु लोकालोक ऐसा, ज्ञान-केवल लहूँ जिन।।नाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह देह धूपायन बनाकर, ध्यान की अग्नि जला।
भस्म कर्मों को करूँ, जिनधर्म है मुझको मिला।।नाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं शेष कुछ वाँछा रही, पूजा सफल मेरी हुई।
निश्चय मिले मुक्ति सुफल, जब दृष्टि है सम्यक् हुई।।नाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्या मूल्य है जड़ अर्घ्य का, पाया अनर्घ्य निजात्मा।
अर्घ्य उत्तम प्रभु चढ़ाऊँ, मुदित हो परमात्मा।।नाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

आये गर्भ मँझार, माँ सिद्धार्था धनि हुई।
देव किया जयकार, षष्ठी सुदि वैशाख दिन।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुआ जन्म सुखकार, माघ सुदी बारस तिथि।
हर्षित इन्द्र अपार, उत्सव नाना विधि किए।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Scanned with CamScanner

नश्वर मेघ निहार, हो विरक्त जिननाथ जी।
दीक्षा ली सुखकार, माघ सुदी बारस दिना।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रही सहज हो नाथ, वर्ष अठारह मुनिदशा।
आप हुए जिननाथ, पौष सुदी चौदश दिना।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आनन्द कूट प्रसिद्ध, शिखर सम्मेद महान है।
तहँ ते भये सुसिद्ध, षष्ठी सुदि वैशाख प्रभु।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जयमाला जिनराज की, गाऊँ मंगलकार।
जिनकी शुभ परिणति लखे, हो वैराग्य उदार।।

(चौपाई)

वंदन अभिनन्दन स्वामी को, चौथे तीर्थंकर नामी को।
विदेहक्षेत्र में नृपति महाबल, न्यायवन्त शोभें बहु दल बल।।
इक दिन सहज रूप वैरागे, यों मन माँहिं विचारन लागे।
ओस बिन्दु सम वैभव सारा, दुख कारण सब ही परिवारा।।
ज्यों-ज्यों भोग मनोहर पावें, तृष्णा त्यों-त्यों बढ़ती जावे।
जब तक श्वांसा तब तक आशा, आशावान जगत के दासा।।
जब मन की आशा मर जावे, परम सुखी जगनाथ कहावे।
सुख सिद्धि का एकहि साधन, निज ज्ञायक प्रभु का आराधन।।
अब मैं समय नहीं खोऊँगा, जग प्रपंच तज मुनि होऊँगा।
यों विचार त्यागा संसारा, आनन्दमय निर्ग्रन्थ पद धारा।।

Scanned with CamScanner

तज परिग्रह प्रभु हुए विरागी, हर्ष सहित मुनिदीक्षा धारी।
उत्तम तीर्थंकर पददायी, सोलहकारण भावना भायी।।
देह समाधि पूर्वक छोड़ी, निज परिणति निज में ही जोड़ी।
विजय विमान माँहिं उपजाये, हो अहमिन्द्र दिव्य सुख पाये।।
छह महीना आयुष्य रह गई, नगरि अयोध्या शोभित भई।
रत्न धनपति ने वर्षाये, माँ को सोलह स्वप्न दिखाये।।
अन्तिम गर्भ माँहिं प्रभु आए, कल्याणक इन्द्रादि मनाए।
जन्मादिक के उत्सव भारी, जग प्रसिद्ध सबको सुखकारी।।
भोगों की कुछ कमी नहीं थी, परिणति फिर भी रंगी नहीं थी।
तप धर केवलज्ञान सु पाया, मंगल धर्म तीर्थ प्रगटाया।।
समवशरण की शोभा प्यारी, बारह सभा लगी सुखकारी।
गणधर इक सौ तीन विराजे, सोलह सहस्र केवली राजे।।
लाखों साधु आर्यिका सोहें, संघ चतुर्विध मन को मोहें।
महातत्त्व दर्शाया स्वामी, पाऊँ मैं भी अन्तर्यामी।।
सकल विभव तज मोक्ष पधारे, आऊँ नाथ समीप तुम्हारे।
भाव सहित अभिनन्दन करते, शाश्वत प्रभु को नित्य सुमरते।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

पूजा हो सुखकार, अभिनन्दन जिनराज की।
पावें शिवपद सार, आकुलता का नाश हो।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(5) श्री सुमतिनाथ पूजन

(गीतिका)

देवेन्द्र और नरेन्द्र चरणों में सदा सिर नावते।
हर्षावते गुण गावते निज भव भ्रमण विनशावते।।
उन सुमति जिन की अर्चना को मम हृदय उमगावता।
असमर्थ हूँ अल्पज्ञ हूँ फिर भी प्रभो! गुण गावता।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-माला)

सुमति जिन पूजों हरषाई।
कुमति विनाशक सुमति प्रकाशक पूजों हरषाई।।
भूल स्वयं को भव-भव भटक्यो, महाक्लेश पाई।
जन्म मरण नाशन को पूजों, जल से सुखदाई।।सुमति.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप निवारण को, चन्दन से अधिकाई।
प्रभु के चरण जजों अविनाशी शीतलता दाई।।सुमति.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रुव के आश्रय से हे जिनवर! ध्रुवगति प्रगटाई।
भक्तिभाव अक्षत सों पूजों, अक्षय पद दाई।।सुमति.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्योदय के सकल भोग, बिन भोगे खिर जाई।
कामवासना ब्रह्मचर्य के बल से विनशाई।।सुमति.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन सकल असार दिखे हे परम तृप्ति दाई।
अमृत झरे अहो अन्तर में, क्षुधा न उपजाई।।

Scanned with CamScanner

सुमति जिन पूजों हरषाई।
कुमति विनाशक सुमति प्रकाशक पूजों हरषाई।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्यचन्द्र भी हर न सकें, जिस तम को जिन राई।
ज्ञान ज्योति ताके नाशन को, प्रभुवर प्रगटाई।।सुमति.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ध्यान की अग्नि, कर्म नाशन को प्रज्वलाई।
स्वाभाविक दशधर्म सुगन्धी, जग में फैलाई।।सुमति.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक फल अब नहीं चाहिए, भव-भव दुखदाई।
महामोक्ष फल प्रगटाने को परम शरण पाई।।सुमति.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर में विलसाई स्वामी, अद्‌भुत प्रभुताई।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति जिनेश्वर, उर में उमगाई।।सुमति.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(आलोचना पाठ)

सोलह सपने माँ देखे, वर्ते उर हर्ष विशेषे।
सावन सित दूज सुहाई, गरभागम मंगलदाई।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सित चैत एकादशि आई, जन्मे त्रिभुवन सुखदाई।
कल्याणक इन्द्र मनावें, भवि पूजत बहु सुख पावें।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

नवमी सित वैशाख महाना, तप धारा श्री भगवाना।
पूजत पद भावना भाऊँ, निर्ग्रन्थ दशा कब पाऊँ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Scanned with CamScanner

सित चैत एकादशि आई, प्रभु केवल लक्ष्मी पाई।
सुर समवशरण रचवाया, धर्मामृत प्रभु बरसाया।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

एकादशि चैत सुदी की, पाई पंचम गति नीकी।
प्रभु सविनय अर्घ्य चढ़ाऊँ, निर्मुक्त महापद ध्याऊँ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- इन्द्रादिक पूजित चरण, धन्य-धन्य जिनराज।
भक्ति सहित गुण गाँय हम, पावें सुगुण समाज।।

(छन्द-पद्धरि)

जय सुमति जिनेश्वर गुण गरिष्ट, दर्शायो निजपद परम इष्ट।
प्रभु स्वयं सिद्ध मंगल स्वरूप, बिन्मूरति चिन्मूरति अनूप।।
निरपेक्ष निरामय निर्विकार, जयवन्तो शाश्वत् समयसार।
निज साधन से ही साध्य हुए, आराधन कर आराध्य हुए।।
अक्षय अनंत गुण प्रगटाये, कर्मों के बादल विघटाये।
जय दर्शन ज्ञान अनंत देव, सुख वीर्य अनंत हुए स्वयमेव।।
अद्भुत प्रभुता जिनराज अहो, महिमा है अपरम्पार प्रभो।
निष्काम स्वयं में रहे पाग, जग से निस्पृह हे वीतराग।।
निर्भूषण जग-भूषण जिनेश, नाशे प्रभु जग के सर्व क्लेश।
जब शान्त मूर्ति का अवलोकन, अनुपम स्वरूप का हो चिन्तन।।
रागादि स्वयं ही होंय मंद, हों शिथिल सहज ही कर्म बन्ध।
स्वाभाविक आनन्द स्वाद पाय, फिर परिणति निज में ही रमाय।।
नाशे पर की झूठी ममता, सबमें समता निज में रमता।
परिणाम सहज अविकारी हो, मंगलमय मंगलकारी हो।।

Scanned with CamScanner

लक्ष्मी चरणों की दासी हो, फिर भी प्रभु सहज उदासी हो।
इन्द्रादिक पद की चाह न हो, उपसर्गों की परवाह न हो।।
अन्तर्पुरुषार्थ बढ़े स्वामी, हो साधु दशा त्रिभुवननामी।
वृद्धिंगत होवे रत्नत्रय, कर्मों का होता जावे क्षय।।
रागादि दोष निःशेष होय, प्रभु आत्मीक गुण प्रगट होंय।
यों मोक्षमार्ग का निमित्त देख, जागी उर में भक्ति विशेष।।
भक्तिवश ही गुणगान किया, पूजन करते हरषाय हिया।
तुम शासन पा परमार्थ ध्याय, पाऊँ पद अक्षय सौख्यदाय।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

कुमति विनाशक सुमति जिन, पायो सुखद सहाय।
निश्चय निज प्रभुता लहूँ, आवागमन नशाय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(6) श्री पद्मप्रभ पूजन

(छन्द-अडिल्ल)

जय जय पद्म जिनेश, परम सुख रूप हो,
स्वानुभूति के निमित्त शुद्ध चिद्रूप हो।
दर्शन पाकर हुआ सहज आनन्दमय,
करूँ अर्चना रागादिक पर हो विजय।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-गीतिका)

इन्द्रादि से पूजित दरशकर, परम ज्ञान प्रकाशिया।
पानकर समता सुधा, जन्मादि का भय नाशिया।।

Scanned with CamScanner

भव भोग तन वैराग्य धार, सु शुद्ध परिणति विस्तरूँ।
श्री पद्मप्रभ जिनराज की पूजा करूँ भव से तिरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवचन सुन निज भाव लखि, परिणाम अति शीतल भया।
चन्दन नहीं भव ताप नाशक, जान तुम आगे तज्या।।भव.।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड सुगुण करण्ड, चिदात्म देव महान है।
सो प्रभु प्रसादहिं पाइयो, जागा सहज बहुमान है।।भव.।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञानमय ब्रह्मचर्य ही है परम औषधि काम की।
तातैं जिनेश्वर शरण आया, कामना तजि वाम की।।भव.।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज हेतु निज में ही निरन्तर, झरे अमृत ज्ञानमय।
ताके आस्वादत तृप्ति हो, नाशें क्षुधादिक दुःखमय।।भव.।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानतम में भटकते जो, दुख सहे कैसे कहूँ?
प्रभु भेदज्ञान प्रकाश करि, निर्मोह निज आतम लहूँ।।भव.।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यानाग्नि में नाशे करम मल, आत्म शुद्ध कहाय है।
निष्कर्म अविनाशी स्वपद हो, भव भ्रमण नशि जाय है।।भव.।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व जिसका मूल है, चारित्र धर्म धरूँ सही।
ताके प्रभाव लहूँ सहज, ध्रुव अचल अनुपम शिव मही।।भव.।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि आत्मधर्म अनर्घ्य स्वामी, अर्घ्य से पूजूँ अहो।
इन्द्रादि पद के विभव भी, निस्सार भिन्न लगें प्रभो।।भव.।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द-होली)

श्री पद्मप्रभ जिनराजजी, जयवन्तो सुखकार।
माघ कृष्ण षष्ठी दिन आये, स्वामी गर्भ मंझार।
करें देवियाँ सेवा माँ की, वर्षे रत्न अपार।।श्री.।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णपष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, जन्मे जग दुखहार।
जन्म महोत्सव सुरगण कीनो, घर घर मंगलाचार।।श्री.।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जाति स्मरण निमित्त हुआ प्रभु लख संसार असार।
कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को दीक्षा ली अविकार।।श्री.।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कौशाम्बी वन शुक्ल ध्यान धर, केवल लक्ष्मी सार।
पाई चैत सुदी पूनम को, त्रेसठ प्रकृति निवार।।श्री.।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मोहन कूट शिखर से प्रभुवर, सर्व कर्म मल टार।
फाल्गुन कृष्ण चौथ के दिन पायो शिवपद सार।।श्री.।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जयमाला जिनराज की, गाऊँ भवि सुखदाय।
पाऊँ ज्ञान विरागता, सकल उपाधि नशाय।।

(छन्द-नाराच)

पद्म के समान कान्तिमान पद्मप्रभ जिनेन्द्र,
वंदते सु भक्ति से तीन लोक के शतेन्द्र।
दिखावते असार पुण्य का विभव मनो प्रभो,
सारभूत आत्मीक ज्ञान सुख अहो अहो।।1।।

Scanned with CamScanner

द्रव्यदृष्टि धारिके, मिथ्यात्व भाव नाशिके,
विषय कषाय त्यागिके निर्ग्रन्थ पद सु धारिके।
सार्थक किया प्रभो! सुनाम अपराजितं,
भावना हृदय जगी सहज सोलहकारणं।।2।।
तीर्थंकर प्रकृति बंधी आप ग्रैवेयिक गये,
गर्भ समय मात को सोल स्वप्ने भये।
जन्म समय इन्द्र ने सुमेरू पर न्हवन किया,
पद्म चिन्ह पद्मप्रभ नाम को प्रसिद्ध किया।।3।।
राज्यकाल में भी प्रभु अंतरंग उदास था,
चित्त में स्व चित्स्वरूप का ही मात्र वास था।
एक दिवस देख द्वार पर बंधे सु हस्ति को,
हुआ सु जाति स्मरण सहज प्रभो विरक्त हो।।4।।
त्याग सर्व परिग्रह साधु दीक्षा धरी,
ध्यान ऐसा किया कर्म प्रकृति हरी।
छट्ठवें तीर्थनाथ वर्तमान के हुए,
वज्र चामर आदि शतक गणधर हुए।।5।।
समवशरण माँहिं अंतरीक्ष मन मोहते,
अष्ट प्रातिहार्य सह अनेक विभव सोहते।
ओंकार ध्वनि खिरी तत्त्व दर्शित हुए,
आत्मबोध प्राप्त कर भव्य हर्षित हुए।।6।।
सिद्ध सम शुद्ध बुद्ध आतमा दिखा दिया,
गुणस्थान आदि से भिन्न दर्शा दिया।
मोह आदि दुःखरूप बंध हेतू कहे,
ज्ञानमय संवरादि मुक्ति हेतू कहे।।7।।

Scanned with CamScanner

मुक्तिदशा साध्य ध्येय शुद्ध आत्मा कहा,
आत्मदृष्टि धारि पूजते प्रभो! तुम्हें अहा।
साधु-संग होय प्रभु! असंग रूप ध्याऊँ मैं,
आपके प्रसाद सहज सिद्ध स्वपद पाऊँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

पद्मप्रभ भगवान, लोक शिखर पर राजते।
पाऊँ आतमज्ञान, भाव सहित पूजूँ नमूँ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(7) श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

(रोला)

जिनवर पूजा भविजन को मंगलकारी है,
भाव विशुद्धि का निमित्त सब दुःखहारी है।
पार्श्ववर्ति लख देह शुद्ध चेतन पद ध्यावें,
श्री सुपार्श्व भगवान भाव से पूज रचावें।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-दिग्पाल)

मुनिमन समान जल ले, जिनराज चरण पूजें।
आवागमन मिटे मम, जन्मादि दोष धूजें।।
पूजा सुपार्श्व स्वामी, ऐसी करें तुम्हारी।
हो तुम समान जिनवर, भावी दशा हमारी।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप रहित प्रभु क्या? चन्दन तुम्हें चढ़ायें।
सुनकर वचन जिनेश्वर, नाशें सभी कषायें।।पूजा.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

अक्षत अखण्ड लेकर, जिननाथ गुण विचारें।
अक्षय सुगुणमयी प्रभु, निज आत्मा निहारें।।
पूजा सुपार्श्व स्वामी, ऐसी करें तुम्हारी।
हों तुम समान जिनवर, भावी दशा हमारी।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले पुष्प शीलमय जिन, होवें परम जितेन्द्रिय।
है उपादेय भासा, हमको भी सुख अतीन्द्रिय।।पूजा.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस पाया, प्रभुता परम स्वयं में।
क्षुत् वेदना नशायें, रम जायें हम स्वयं में।।पूजा.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार नाशे, पावें प्रकाश अनुपम।
हे पूर्ण ज्ञानमय प्रभु, चरणों में आए हैं हम।।पूजा.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हों भस्म कर्म सब ही, ऐसा हो ध्यान जिनवर।
हो धर्म से सुवासित, जीवन हमारा प्रभुवर।।पूजा.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व मूल संयुक्त चारित्र तरु लगावें।
अक्षय अनंत रसमय, मुक्ति के फल सु पावें।।पूजा.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्लभ सु अर्घ्य लेकर, हम भावना संवारे।
अविचल अनर्घ्य प्रभुता, निज में ही प्रभु निहारें।।पूजा.।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

गर्भागम सुखकार, भादों सुदि छठि को हुआ।
वरषे रतन अपार, सोलह सपने माँ लखे।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Scanned with CamScanner

द्वादशि सुदी सु ज्येष्ठ, जन्मे त्रिभुवन नाथ जी।
इन्द्र कियो अभिषेक, पाण्डुक शिला सुमेरू पै।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आत्मीक सुखसार, लखि प्रभुवर दीक्षा धरी।
गूँजा जय जयकार, जेठ सुदी बारस दिना।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा षष्ठि, हुए स्वयंभू नाथ जी।
हर्षमयी हुई सृष्टि, दिव्य बोध को पाय के।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शिखर सम्मेद महान, फाल्गुन कृष्णा सप्तमी।
प्रभु पायो निर्वाण, पूजें अति आनन्द सों।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- हुए विरक्त सु जगत से, पतझड़ लख जिनदेव।
निर्ग्रन्थ पथ अपनाय के, मुक्त हुए स्वयमेव।।

(तर्ज : चित्स्वरूप महावीर....)

श्री सुपार्श्व जिनराज, मुक्ति पथ दरशाया।
परमानन्द स्वरूप, जिनेश्वर दरशाया।।टेक।।

द्रव्येन्द्रिय, भावेन्द्रिय, इन्द्रिय विषयों से प्रभु भिन्न कहा।
परम अतीन्द्रिय ज्ञानानन्दमय, सिद्ध समान स्वरूप कहा।।
स्वानुभूत जिनमार्ग, जिनेश्वर दरशाया।।1।।

द्रव्यकर्म-नोकर्म-भावकर्मों से न्यारा देव कहा।
नित्य निरंजन निष्क्रिय-ध्रुव, निर्मुक्त चिदानन्द रूप अहा।।
नयातीत पक्षातिक्रान्त प्रभु दरशाया ।।2।।

Scanned with CamScanner

जीव समास-मार्गणा-गुणथानों से, ज्ञायक भिन्न अहा।
टंकोत्कीर्ण सु अलिंगग्रहण, अव्यक्त स्वानुभव गम्य कहा।।
आश्रय करने योग्य, निजातम दरशाया।।3।।
नवतत्त्वों के स्वांगों से, निरपेक्ष निरामय रूप कहा।
जिनने समझा भव दुख नाशा, नित्यानंद स्वरूप लहा।।
हेय-उपादेय भेद महेश्वर दरशाया ।।4।।
रागादिक दुख रूप बताये, वीतराग शिवपंथ कहा।
परम अहिंसा से ही होता, भव भ्रमणा का अन्त अहा।।
रत्नत्रय अविकार, तुम्हीं ने दरशाया ।।5।।
बहिरातमता हेय जान तज, अन्तर आतम हों स्वामी।
ध्रुव परमातम पद को साधें, तुम सम ही अन्तर्यामी।।
धन्य-धन्य शिवरूप, आपने दरशाया।।6।।
जब तक आराधन पूरा हो, जिनशासन का योग मिले।
निर्मल आत्म भावना वर्ते, निज गुणमय उद्यान खिले।।
पाया स्वाश्रित मार्ग चरण में सिर नाया।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्री सुपार्श्व जिनराज की, भक्ति करें जो कोय।
इन्द्रादिक पद पाय के, निश्चय मुक्त सु होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

सबसे पहले तत्त्वज्ञान कर, स्व-पर भेद-विज्ञान करो।
निजानन्द का अनुभव करके, भोगों में सुख बुद्धि तजो।।

Scanned with CamScanner

(8) श्री चन्द्रप्रभ पूजन

(छन्द–जोगीरासा)

तज गृहजाल महादुखकारण, चरण शरण में आया।
चन्द्र समान शान्त निर्मल छवि, लखि आनन्द उपजाया।।
तन मन धन है सर्व समर्पण, करूँ अर्चना स्वामी।
चंचल परिणति थिर हो निज में, तुम सम त्रिभुवननामी।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द–भुजंगप्रयात, तर्ज : मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक...)

चढ़ाऊँ क्षमाभाव मय नीर सुखकर,
नशें जन्म मरणादि कारण सु दुखकर।
अहो चन्द्रप्रभजी की पूजा रचाऊँ,
सहजज्ञानमय भावना सहज भाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चढ़ाऊँ परमशान्तिमय प्रभु,
भवाताप नाशे जजूँ आपको विभु।।अहो..।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अमल भाव-मय देव लाऊँ,
विनाशीक जग के अपद नाहिं चाहूँ।।अहो..।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अतीन्द्रिय निजानन्द निज माँहि सरसे,
सतावे नहीं काम जिनवर शरण से।।अहो..।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

चिदानन्द-सुधारस प्रभो पान करके,
क्षुधादिक महादोष क्षणमाँहिं हरके।
अहो चन्द्रप्रभजी की पूजा रचाऊँ,
सहजज्ञानमय भावना सहज भाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकाशित सहज ज्ञान में नाथ ज्ञायक,
झलकते, नशें मोहतम दुःखदायक।।अहो..।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलें कर्म सब आत्म-ध्यानाग्नि माँहीं,
सुविकसित हों निजगुण नहीं अन्त पाहीं।।अहो..।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

न लौकिक फलों की प्रभो! कामना है,
महा मोक्षफल पाऊँ यह भावना है।।अहो..।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धरूँ भक्तिमय देव प्रासुक सु अर्घ्य,
लहूँ आत्म प्रभुता सु अविचल अनर्घ्य।।अहो..।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दोहा- चन्द्रप्रभ जिनराज का, गर्भागम सुखकार।
चैत कृष्ण पंचमी दिवस, पूजों भाव सम्हार।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे श्री जगदीश।
इन्द्रादिक उत्सव कियो, न्हवन कियो गिरिशीश।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

भव-तन-भोगविरक्त हो, जिनदीक्षा अविकार।
धरी पौष वदि ग्यारसी, पूजों करि जयकार।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन श्यामा सप्तमी, प्रगट्यो केवलज्ञान।
आतम महिमा मुक्तिपथ, दर्शायो भगवान।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित फाल्गुन सप्तमि गये, मुक्तिमाँहि परमेश।
पूजत पाप विनष्ट हों, धन्य धन्य सर्वेश।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा- जयवन्तो शिवभूप, अचिन्त्य महिमा के धनी।
परमानन्द स्वरूप, गाऊँ जयमाला प्रभो।।

(तर्ज-हे दीनबन्धु...)

हे चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! सत्य शरण हो तुम्हीं।
हे वीतराग देव! तारण तरण हो तुम्हीं।।
कर दर्श नाथ सहज ही कृतकृत्य हो गया।
प्रभु! स्वयं स्वयं में ही सहज तृप्त हो गया।।
विभु! तेजपुंज आत्मा को आप जानके।
होकर उदास लोक से दीक्षा सु धार के।।
ध्यानाग्नि में चहुँ घाति कर्म सहज जलाए।
अनन्त दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य तब पाए।।
अष्टम हुए तीर्थेश धर्मतीर्थ बताया।
ध्रुव तीर्थरूप आत्मा प्रत्यक्ष दिखाया।।

Scanned with CamScanner

आत्मानुभूतिमय अहो परमार्थ तीर्थ है।
जिससे तिरें भवसिन्धु वह सत्यार्थ तीर्थ है।।
निजभाव में रमते सदा तुम ही सु राम हो।
निष्काम परमब्रह्म हो आनन्दधाम हो।।
परमार्थ मुक्तिमार्ग के हो आप विधाता।
विश्वेश विष्णु रूप हो सब विश्व के ज्ञाता।।
अतिशय तुम्हें जो देखते वे दर्शनीय हों।
जो भावसहित पूजते वे पूजनीय हों।।
वाँछा ही मिटे देव तुम्हारे सु ध्यान से।
हो प्रगट आत्मीकभाव आत्म-ध्यान से।।
प्रभु! ध्यानमय मुद्रा सहज वैराग्य जगाती।
रागांश हों निश्शेष ज्ञान ज्योति जगाती।।
चैतन्यमय परमार्थ भावना सहज रहे।
भवनाश हो शिववास हो दुर्भावना दहे।।
गद्-गद् हुआ बहुमान से, बस मौन ही रहूँ।
नाथ हो निर्ग्रन्थ तेरा पन्थ में गहूँ।।
तेरे प्रसाद से सहज समाधि पाऊँगा।
ज्ञाता हूँ मुक्त ज्ञाता रूप ही रहाऊँगा।।

(छन्द-धत्ता)

श्रीचन्द्र जिनेशं, जय जगदीशं, धर्मेशं भवसर-तारी।
अदभुत प्रभुतामय, हुआ सु निर्भय, पूजत पद मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

समयसारमय आपकी, प्रभुता तिहुँ जग सार।
विस्मय उपजावे प्रभो, भुक्ति-मुक्ति दातार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(9) श्री पुष्पदंत पूजन

(गीतिका)

अक्षय सु आतम निधि बताई, प्राप्ति की भी विधि प्रभो।
है सार्थक यह नाम भी जिन, सुविधिनाथ कहा अहो।।
सौभाग्य से अवसर मिला, पूजा करूँ अति चाव से।
हे पुष्पदंत जिनेन्द्र बस, छूटूँ विकारी भाव से।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अडिल्ल)

निर्मल जल से पूजूँ, प्रभु हरषाय के
जन्म जरा मृत नाशूँ निजपद ध्याय के।
पुष्पदंत जिनराज करूँ गुणगान मैं,
होय प्रतिष्ठित सहज ज्ञान ही ज्ञान में।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति भावमय चन्दन ले पूजा करूँ।
नाशे ताप कषायों का समता धरूँ।।पुष्पदंत.।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजूँ निर्मल अक्षत से जिननाथ जी।
पाऊँ उत्तम धर्मी जन का साथ जी।।पुष्पदंत.।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य पुष्प ले भाऊँ जिनवर भावना।
विषयों की हो स्वप्न माँहिं भी चाह ना।।पुष्पदंत.।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठे नैवेद्य लख, निस्सार तजूँ प्रभो।
पीऊँ सन्तोषामृत तुम सम ही विभो।।पुष्पदंत.।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

सहज रतन रुचि दीप उजालूँ देवजी।
मोह महातम नशे सहज स्वयमेव जी।।
पुष्पदंत जिनराज करूँ गुणगान मैं,
होय प्रतिष्ठित सहज ज्ञान ही ज्ञान में।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त रौद्र तज आत्म ध्यान धारूँ अहो।
जरें कर्ममल निजगुण विस्तारूँ प्रभो।।पुष्पदंत.।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य-पाप फल सकल जिनेश्वर त्यागकर।
पाऊँ जिनवर मुक्तिफल आनन्दकर।।पुष्पदंत.।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भावमय अर्घ्य धरूँ आनन्द से।
पद अनर्घ्य हो बचूँ कर्म के फन्द से।।पुष्पदंत.।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द-चौपाई)

नवमी फागुन वदी सुहाई, गर्भ कल्याणक अति सुखदाई।
सेवे मात देवि सुखकारी, पूजूँ जिनवर मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगसिर सुदि एकम दिन आया, इन्द्र जन्मकल्याण मनाया।
उत्सव नाना भाँति रचाई, मैं भी पूजूँ त्रिभुवन राई।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक दिन उल्कापात हुआ था, अन्तर में वैराग्य हुआ था।
भाय भावना दीक्षाधारी, मगसिर सुदि एकम् सुखकारी।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमण्डिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मध्यान प्रभु ऐसा धारा, नाशे घाति कर्म दुखकारा।
कार्तिक शुक्ला द्वितीया स्वामी, धर्मतीर्थ प्रकटा अभिरामी।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

सुप्रभ टोंक सम्मेद महाना, आप पधारे अविचल थाना।
भादों सुदि अष्टमि सुखकारा, पूजत होवे हर्ष अपारा।।
ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नवमें प्रभो! अद्भुत महिमावंत।
शाश्वत् धर्म बताइया, रहे सदा जयवन्त।।

(छन्द-पद्धरि)

हे पुष्पदंत, हे सुविधिनाथ, दर्शन पाकर मैं हूँ सनाथ।
जिनराज भजूँ निज भाव सजूँ, परमानंदमय चिद्रूप भजूँ।।
हे तेजपुंज हे धर्ममूर्ति! हे ज्ञानपुंज चैतन्यमूर्ति।
मंगलमय लोकोत्तम स्वरूप, भविजन को तुम ही शरणरूप।।
नाशे कर्माश्रित सब विभाव, प्रगटे स्वाश्रित आतम स्वभाव।
तुम दिव्य ध्वनि सुन जगे ज्ञान, आतम-अनात्म की हो पिछान।।
पर्यायदृष्टि छूटे जिनन्द, प्रगटे अनुभव रस दुख निकन्द।
दुःख कारण रागादिक दिखाय, पुरूषार्थ तिन्हें नाशन जगाय।।
वैराग्य भावना सहज होय, क्षण-क्षण में निज शुद्धात्म जोय।
निर्ग्रन्थ मार्ग में बढ़े जाँय, तुम सम अक्षय पदवी सु पाँय।।
यों मुक्तिमार्ग के निमित्त आप, भव्यों के नाशो प्रभु संताप।
हे परम धरम दातार देव, चरणों में शीश नमें स्वयमेव।।
जो पूजे सो जगपूज्य होय, आपद ताको आवे न कोय।
तुम ढिंग वांछा ही प्रभु नशाय, निज में ही अद्भुत तृप्ति पाय।।
इन्द्रादिक पूजें चरण आन, अद्भुत अतिशय जिनवर महान।
ऐसी प्रभुता मैं भी सु पाय, तिष्ठूँ जिनेश तुम पास आय।।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

पुष्पदंत भगवान, तीन लोक चूड़ामणि।
होय सकल कल्याण, जिन पूजा परसादतैं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(10) श्री शीतलनाथ पूजन

(छन्द-अडिल्ल)

कल्पवृक्ष शुभ चिह्न सुदेव मनोज्ञ है।
कल्पवृक्ष नहीं तुम उपमा के योग्य है।।
अविचल सुख दातार सहज ज्ञातार हो।
हृदय विराजो प्रभो! परम उपकार हो।।

(दोहा)

जय जय शीतलनाथ जिन, मिथ्या तपन नशाय।
परम जितेन्द्रिय भाव सों, पूजें मंगलदाय।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-द्रुतविलम्बित)

सहज समकित जल प्रभु धारिके, जन्म मरण कुरोग निवारिके।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जगनायकं।।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भावनामय चन्दन लायके, दुःखमय भवताप नशायिके।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जग नायकं।।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज संयम धारें सुखकरं, अखय पद को पावें जिनवरं।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जग नायकं।।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पंच इन्द्रिय भोग विडारिके, भजें नित निष्काम विचारिकें।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जग नायकं।।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-कामबाणविध्वंसनाय-पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

तुम हुये निजरस लीन हो, क्षुधा तृष्णा सहजहिं क्षीण हो।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जग नायकं।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह नाशा सम्यक्ज्ञान से, क्या प्रयोजन दीपक भानु से।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जग नायकं।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

परम आतम ध्यान लगायिके, लहें निजपद कर्म नशायिके।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जग नायकं।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग प्रभुवर का अहो हम अनुसरें, पाप पुण्य नशें शिवफल लहें।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जग नायकं।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धरें अर्घ्य जिनेश्वर चरण में, तज प्रपंच सु आये शरण में।
परम आनन्दमय शिव दायकं, जजें शीतल जिन जग नायकं।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(चौपाई)

चैत्र कृष्ण अष्टमि दिन देव, अच्युत से च्युत हो स्वयमेव।
मात सुनन्दा उर अवतरे, गर्भ कल्याणक सुख विस्तरे।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण द्वादश जिनराय, अन्तिम जन्म भयो सुखदाय।
जन्मकल्याणक पूजा करें, यही भाव फिर जन्म न धरें।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मगंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभव यौवन इन्द्रिय-भोग, इन्द्रधनुष सम लखे मनोग।
माघ कृष्ण द्वादशि दिन नाथ, धारी दीक्षा नावें माथ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

स्वामी पौष चतुर्दशि श्याम, केवलज्ञान लह्योअभिराम।
शोभें समवशरण के माहिं, दर्शन से भवि पाप नशाहिं।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमि सित असौज-भगवान, पायो अविचल पद निर्वाण।
भाव सहित हम शीश नवांय, ज्ञाता दृष्टा रह शिव पांय।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- सहज शांत शीतल रहें, शीतल चरण प्रसाद।
गावें जयमाला सुखद, नाशें सर्व विषाद।।

(छन्द-त्रोटक)

श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र नमूँ, जिनतत्त्व समझ दुर्मोह वमूँ।
ज्ञायक हूँ सहज प्रतीति हो, आनन्दमय निज अनुभूति हो।।
पर में एकत्व ममत्व न हो, सपने में भी कर्तृत्व न हो।
परिणमन सहज होता भासे, ज्ञातृत्व सहज ही प्रतिभासे।।
कुछ इष्ट अनिष्ट विकल्प न हो, दुखमय मिथ्या संकल्प न हो।
दुख कारण आश्रव बंध नशें, संवर निर्जर सुखमय विलसें।।
यों तत्त्व प्रतीति नाथ धरें, प्रभु साक्षी हों भव सिन्धु तरें।
निर्ग्रंथ भावना भावत हैं, अविनाशी निजपद चाहत हैं।।
बिनशत मुक्ता सम ओस बिन्दु, निरखी प्रातः तुमने जिनेन्द्र।
तत्क्षण संसार असार तजा, आनन्दमय आतम रूप सजा।।
वस्त्राभूषण सब फैंक दिये, निर्मम होकर कचलौंच किये।
जिनयोग अपूर्व लगाया था, दुष्कर्म समूह नशाया था।।

Scanned with CamScanner

अद्‌भुत निज वैभव प्रगटाया, सुर समवशरण था रचवाया।
हुई दिव्य देशना सारभूत, भविजन को शुभ कल्याणभूत।।
लाखों प्राणी प्रतिबुद्ध हुए, तद्‌भव से भी बहु मुक्त हुए।
यों दशवें तीर्थंकर सु होय, सब कर्म नाशि गये सिद्ध लोय।।
ज्यों सिद्धालय में आप बसे, त्यों देहालय शुद्धात्म लसे।
हम ध्यावें मंगलकार प्रभो, वर्तें नित जाननहार विभो।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

पूजा श्री जिनराज, भक्ति-युक्ति युत जो करें।
पावें सिद्ध समाज, सब संक्लेश निवारिके।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(11) श्री श्रेयांसनाथ पूजन

(रोला)

श्रेय रूप ग्यारहवें तीर्थंकर पहिचाने।
अहो अकर्त्ता दृष्टा ज्ञाता सहज प्रमाने।।
जागा भाग्य हमारा, प्रभुवर पूज रचावें।
निजानन्द निजमाँहि, आप सम हम भी पावें।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-त्रिभंगी)

प्रभु देह उपजती देह विनशती, अविनाशी है शुद्धातम।
यह भेद जानकर निज अनुभव कर, पूजें ध्यावें परमातम।।
श्रेयांस जिनेन्द्रं इन्द्र नरेन्द्रं, पूजत अन्तर्दृष्टि धरें।
तिहुँ जग ज्ञातारं शिवदातारं, प्रभु चरणों में नमन करें।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु चन्दन बावन, ताप मिटावन, भवाताप नहीं दूर करे।
या सम नहीं दूजा, श्री जिन पूजा, सहज सर्व संताप हरे।।
श्रेयांस जिनेन्द्रं, इन्द्र नरेन्द्रं, पूजत अन्तर्दृष्टि धरें।
तिहुँ जग ज्ञातारं, शिवदातारं, प्रभु चरणों में नमन करें।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षतभाव दुखारी, हे त्रिपुरारी, त्याग अखण्डित भाव धरें।
अक्षय सुखरूपं, मुक्त स्वरूपं, अक्षत ले प्रभु पूज करें।।श्रेयांस.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों को भोगा, इच्छा रोगा, त्यों-त्यों अधिक बढ़ा स्वामी।
प्रभु शील बढ़ावें काम नशावें, शिवपद पावें जगनामी।।श्रेयांस.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज सुधबुध खोकर जिस वश होकर, खाद्य अखाद्य सभी खाया।
सो क्षुधा नशावें तृप्त रहावें, निज में प्रभु सम मन भाया।।श्रेयांस.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भ्रम तम नाशे, ज्ञान प्रकाशे, तातैं प्रभुवर चरण जजें।
निर्मोह रहावें, ज्ञान बढ़ावें, सहज परम निज भाव भजें।।श्रेयांस.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म महावन, भूलि रहे हम, शिव मारग नहीं मन भाया।
निज ध्येय सु ध्यावें, कर्म नशावें, परम धरम प्रभु से पाया।।श्रेयांस.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन! कर्मों के फल हुए सु व्याकुल, सो फल प्रभुवर नहिं चाहें।
सब सिद्धि प्रदाता शिवफलदाता, धर्म कल्पतरू प्रगटाएं।।श्रेयांस.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले द्रव्य सु अर्घ्यं भाव अनर्घ्यं, आनन्द सों जिनवर पूजें।
श्रद्धान जगाया भाव बढ़ाया, भव-भव के पातक धूजें।।श्रेयांस.।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पंचकल्याणक अर्घ्य

(चौपाई)

विमला माँ को स्वप्न दिखाये, पुष्पोत्तर तजकर प्रभु आये।
जेठ श्याम षष्ठी सुखकारी, जिन पद पूजें मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण एकादशि आई, जन्मे अनुपम मंगलदायी।
क्षीरोदधि तें जल भरलावें, सुरपति प्रभु अभिषेक करावें।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय-कषाय असार विचारे, हो निर्ग्रन्थ परम तप धारे।
फाल्गुन श्याम एकादशि स्वामी, भाव सहित हम शीश नमामी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान धरि घाति नशाये, अनन्त चतुष्टय प्रभु प्रगटाये।
माघ अमावस आनन्दकारी, पूजत होवें शिवमगचारी।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा जिनवर, मुक्ति पधारे सकल कर्म-हर।
इन्द्र मोक्ष कल्याण मनावें, भक्ति सहित प्रभु पूज रचावें।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

श्रेय रूप श्रेयांस जिन, परम श्रेय दर्शाय।
आप बसे शिव लोक में, भक्ति करूँ सुखदाय।।

(छन्द-त्रोटक)

नलिनप्रभ राजा के भव में रत्नत्रय प्रकटाकर।
तीर्थंकर प्रकृति बांधी थी, सोलहकारण भाकर।।

Scanned with CamScanner

आयु पूर्णकर साधु समाधि पूर्वक छोड़ी देह।
स्वर्ग सोलवें इन्द्र हुए थे भावें सदा विदेह।।
तहँते चयकर सिंहपुरी में लिया प्रभु अवतार।
दिव्योत्सव करते इन्द्रादिक देखत दृष्टि हजार।।
मतिश्रुत अवधिज्ञान के धारक जन्म समय से आप।
अतिशय रूप निरखते नाशें भव-भव के संताप।।
पुण्योदय के भोग भोगते अन्तर रहे उदास।
पतझड़ के तरु देखे इक दिन काल लगा गृहवास।।
भायी प्रभु वैराग्य भावना, लौकान्तिक सुर आय।
अनुमोदन करते प्रभुवर का, चरणों में सिर नाय।।
सहज भाव से दीक्षा लीनी, हुए नाथ निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक देव मनावें, आप बढ़े शिवपन्थ।।
आत्म ध्यान से अल्पकाल में प्रगटा केवलज्ञान।
समवशरण में दिव्य ध्वनि से दिया तत्त्व का ज्ञान।।
धर्म तीर्थ की कर प्रभावना, गये नाथ निर्वाण।
धर्म तीर्थ जिनवर का पाकर किया स्व-पर कल्याण।।
भाव सहित प्रभु पूजन करके, उपजा उर आनन्द।
सहज भावना होवे स्वामी, रहूँ परम निर्द्वन्द्व।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

(सोरठा)

सर्व सिद्धि दातार, वीतराग सर्वज्ञ जिन।
सहज लहें भवपार, अनुगामी हो आप के।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(12) श्री वासुपूज्य पूजन

(सवैया तेईसा, तर्ज : वीर हिमाचल तें...)

बालयती वसुपूज्य तनय, प्रभु वासव सेवित त्रिभुवननामी।
बारहवें तीर्थंकर हो, संयुक्त सुगुण छियालीस अभिरामी।।
मुक्तिमार्ग मिला भविजन को, दिव्यध्वनि द्वारा हे स्वामी।
भाव भये शुभ पूजन के, तिष्ठो उर में हे अन्तरयामी।।

(दोहा)

हर्षित हो पूजूँ चरण, चिंतू गुण अभिराम।
आराधूँ परमात्म पद, पाऊँ शाश्वत धाम।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-गीतिका)

निज आत्मतीर्थ सु पाइया, समतामयी जल जहाँ भरा।
मिथ्यात्व मल छूट्यो प्रभो! स्नान करि निर्मल भया।।
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते, नाथ! सहज स्वभाव सों।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप नाशा देव! शीतलता स्वयं में ही मिली।
आराधना की युक्ति पाई, सहज निज परिणति खिली।। श्री वासुपूज्य.।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अबाधित ज्ञानमय, चैतन्यप्रभु पाया अहो।
तुष बिना तन्दुल सम अमल, अक्षय स्व-पद आधार हो।। श्री वासुपूज्य.।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु! तुम गुणों की पुष्पमाला, कंठ में धारण करूँ।
निष्काम ब्रह्म स्वरूप ध्याऊँ, अब्रह्म परिणति परिहरूँ।।
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते, नाथ! सहज स्वभाव सों।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म अनुभव के समान, न रस दिखे तिहुँलोक में।
ताके आस्वादी क्षुधादिक, नाशे बसे शिवलोक में।।श्री वासुपूज्य.।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य ज्योति सु जगमगे, मोहान्धकार नहीं रहे।
फिर बाह्य दीपक भी सहज निस्सार मुझको भी लगे।।श्री वासुपूज्य.।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्दमय आराधना से, ध्यान की अगनी जले।
निज सुगुण विलसें सर्व वैभाविक करम ईंधन जले।।श्री वासुपूज्य.।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तिहूँ लोक पूजित सिद्धपद, आराधना का फल महा।
यह जानकर लौकिक फलों का भाव नहीं किंचित् रहा।।श्री वासुपूज्य.।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्भेद निरघ सु अर्घ्य लेकर, ज्ञानमय आनन्दमय।
मैं अर्चना करता प्रभु, निर्द्वन्द्व पद पाऊँ अभय।।श्री वासुपूज्य.।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द-द्रुत विलम्बित)

होय च्युत महाशुक्र विमान से, आये विजया माता गर्भ में।
षाढ़ कृष्णा षष्ठिमी थी सही, धनि हुई चम्पापुर की मही।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

चतुर्दशि फागुन की श्याम है, जन्म अन्तिम प्रभु अभिराम है।
किया था अभिषेक सुमेरू पर, पुण्यशाली इन्द्रों ने आनंद कर।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्याह अवसर पर प्रभु वैराग्य धरि, भव शरीर कुभोग असार लखि।
चतुर्दशि फागुन कलि शुभ घड़ी, अहो मुनिपद की सहज दीक्षा धरी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान महान लगाइया, ज्ञान केवल जिनवर पाईया।
दिव्यध्वनि भई मंगलकार है, दूज माघ शुक्ल की सुखकार है।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्दशी सित भादों की सही, लही प्रभुवर ने अहो अष्टम मही।
तीर्थ चम्पापुर महा सुखदाय है, अर्घ ले जजिहौं सहज शिवदाय है।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– इन्द्रादिक पूजें चरण, महाभक्ति उर धार।
गावें जयमाला प्रभो! आतमनिधि दातार।।

(चौपई)

जय जय वासुपूज्य भगवान, गुण अनन्त मंगलमय जान।
भरि यौवन में सहज विराग, भोगों प्रति उपज्या नहिं राग।।
निज में प्रमुदित बाह्य उदास, आत्म साधना का उल्लास।
जगत विभव किंचित् न सुहाय, तत्त्व विचार करें सुखदाय।।
शुद्धातम ही जग में सार, अविनाशी सुख का आधार।
इन्द्रिय सुख तो दुख के मूल, फल में उपजें भव भव शूल।।
संसारी निज ज्ञान विहीन, इन्द्रिय मद मेटन बलहीन।
विषय चाह उपजावे दाह, भोगन में भूलें शिवराह।।

Scanned with CamScanner

आत्मज्ञान बिन शरण न कोय, व्यर्थ मोह में क्लेशित होय।
अब विलम्ब करना नहीं जोग, धरूँ शीघ्र शिवदाता योग।।
सब विधि अवसर मिलो महान, जीतूँ कर्म लहूँ निर्वान।
दृढ़ विराग उपजा सुखदाय, तत्क्षण लौकान्तिक सुर आय।।
अनुमोदन कर शीश नवाय, धन्य विचार कियो जिनराय।
दीक्षा धरो प्रभो! अविकार, भायें भावना हम हूँ सार।।
इन्द्रादिक आये हर्षाय, प्रभु को तपकल्याण मनाय।
उत्सव सों प्रभु वन में गये, वस्त्राभूषण सब तजि दये।।
पंच मुष्ठि कचलौंच कराय, निर्ग्रन्थ रूप धरयो सुखदाय।
आत्म ध्यान की धुनी लगाय, एक वर्ष छद्मस्थ रहाय।।
चढ़े क्षपक श्रेणी सुखकार, प्रगटयो अर्हत् पद अविकार।
भविजन को शिवराह दिखाय, सिद्धालय में तिष्ठे जाय।।
ज्ञान मांहि हे देव निहार, करें अर्चना मंगलकार।
प्रभु चरणों में शीश नवाय, अद्‌भुत परमानन्द विलसाय।।

(छन्द-धत्ता)

प्रभु अमल अनूपं शुद्ध चिद्रूपं, सहजानंदमय राजत हो।
निष्काम जिनेश्वर, जजूँ महेश्वर, शिव मारग विस्तारत हो।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रभो! वासुपूज्य जिनराज।
करि सम्यक् आराधना, पाऊँ निजपद राज।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(13) श्री विमलनाथ पूजन

(चौपाई)

जय जय विमलनाथ भगवान, भक्ति सहित करता आह्वान्।
मेरे हृदय विराजो देव, आराधूँ निजपद स्वयमेव।।

(दोहा)

कम्पिल नगरी जन्म से, हुई जगत विख्यात।
कृतवर्मा प्रभु के पिता, जय जय श्यामा मात।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द–चाल होली)

प्रभु पूजों भाव सों, श्री विमलनाथ जिनराय जी पूजों भाव सों।
प्रासुक समतामय जल लीनों, अन्तर्दृष्टि लाय।
यही भावना प्रभु प्रसाद से, जन्म मरण मिट जाय।।प्रभु.।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा भावमय चन्दन, भव आताप मिटाय।
प्रभु चरणों में मैंने पाया, आनन्द उर न समाय।।प्रभु.।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में भोग संयोग विभव सब, विनाशीक दुखदाय।
अक्षय पद का आराधन कर, अक्षय प्रभुता पाय।।प्रभु.।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदाह अति ही दुखदायक, महा अनर्थ कराय।
ताको नाशि लहूँ तुम सम ही, ब्रह्मचर्य सुखदाय।।प्रभु.।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा भाव मिटे हे स्वामी, भव भव में दुखदाय।
सन्तोषामृत पियूँ निरन्तर, तुम समान जिनराय।।प्रभु.।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

भेदज्ञान का हुआ उजाला, मिथ्या तिमिर नशाय।
अविरल ज्ञान भावना भाऊँ, केवलि पद प्रगटाय।
प्रभु पूजों भाव सों, श्री विमलनाथ जिनराय जी पूजों भाव सों।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज तत्त्व का सहज ध्यान हो, कर्म समूह नशाय।
जगत पूज्य निष्कर्म निरंजन, सिद्ध स्वपद प्रगटाय।।प्रभु.।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप पुण्य के फल में प्राणी, भव-भव में भरमाय।
शुद्ध भाव से अहो जिनेश्वर, सहज मोक्ष फल पाय।।प्रभु.।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल अर्घ्य ले प्रभु चरणों में, आऊँ अति हर्षाय।
ज्ञानानन्दमय निज अनर्घ्यपद, पाऊँ हे शिवराय।।प्रभु.।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द-चाल)

गर्भागम मंगल गाये, नभ से सु रतन वर्षाये।
कलि जेठ सु दशमी जानो, प्रभु पूजत चित हुलसानो।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि माघ चतुर्थी आई, जन्मे जिन आनन्ददायी।
भयो मेरु न्हवन सुखकारी, पूजत प्रभु पद अविकारी।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि माघ चतुर्थी प्यारी, मुनिपद की दीक्षा धारी।
इन्द्रादिक उत्सव कीनो, सुनि आनन्द होय नवीनो।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि माघ छटी दिन आया, अरहंत परमपद पाया।
कैवल्यलक्ष्मी पाई, हमको शिव राह दिखाई।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लषष्ठ्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

कलि षाढ़ अष्टमी पावन, कर आवागमन निवारण।
निर्वाण महाफल पाया, हम पूजत शीश नवाया।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा- तेरहवें तीर्थेश, विमल-विमल पद देत हैं।
परम पूज्य सर्वेश, अनन्त चतुष्टय रूप जिन।।

(छन्द-कामिनी मोहन)

गाऊं जयमाल जिनराज आनन्द सौं,
छूटि हौं दुःखमय कर्म के फन्द सौं।
मोहवश मैं अनादि से भ्रमता रहा,
नाथ कैसे कहूँ जो महादुःख सहा।।
परम सौभाग्य से नाथ दर्शन हुआ,
जैनवाणी सुनी तत्त्वनिर्णय हुआ।
है त्रिविध कर्ममल शून्य शुद्धात्मा,
ज्ञान-आनन्दमय सहज परमात्मा।।
नित्य निरपेक्ष निर्द्वन्द्व निर्मल अहो,
सहज स्वाधीन निर्लेप ज्ञायक प्रभो।
जानकर नाथ आदेय आनन्द हुआ,
मोह तम मिट गया आत्म अनुभव हुआ।।
जागा बहुमान उर में अहो आपका,
भेद जाना धरम-कर्म पुण्य-पाप का।
आपकी स्तुति देव कैसे करूँ,
गुण अनन्ते विभो! चित्त माँही धरूँ।।

Scanned with CamScanner

आप ही लोक में सत्य परमेश्वरं,
वीतरागी सु सर्वज्ञ तीर्थंकरं।
आपको जग से वैराग्य जब था हुआ,
देव लौकान्तिकों ने सुमोदन किया।।

परम उल्लास से नाथ संयम धरा,
घातिया घात कर ज्ञान केवल वरा।
जग को दर्शाय ध्रुव शुद्ध परमात्मा,
हो गये आप निष्कर्म सिद्धात्मा।।

भाव पंचम परम पारिणामिक महा,
करके आराधना आप शिवपद लहा।
धन्य हो! धन्य हो!! परम उपकारी हो,
भावमय वंदना देव! अविकारी हो।।

ध्याऊँ निज देव को पाऊँ जिनदेव पद,
इन्द्र चक्री के पद जिसके सन्मुख अपद।
कामना वासना अन्य कुछ ना रही,
सहज कृत कृत्य ज्ञायक रहूँगा सही।।

(छन्द-धत्ता)

जय विमल जिनेशं, हरत कलेशं नमत सुरेशं सुखकारी।
जो पूजें ध्यावें, मोह नशावें, पावें पद मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-अडिल्ल)

जयवन्तो जिनराज, जगत में नित्य ही।
तुम प्रसाद भवि पावें, बोधि समाधि ही।।
वीतराग जिनधर्म सु, मंगलकार है।
भाव सहित जे धरें, लहें भव पार है।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(14) श्री अनन्तनाथ पूजन

(छन्द-वीर)

जय अनन्त भगवन्त संत प्रभु, तारण तरण जिहाज हो,
विषय-कषाय इन्द्रियाँ जीतीं, भावरूप जिनराज हो।
निज प्रभुता अनन्त दरशाई, मोह अंधेरा दूर भगा।
अनन्त चतुष्टय रूप महेश्वर, पूजन का उल्लास जगा।।

(दोहा)

प्रभुवर की पूजा करें, रोम रोम हुलसाय।
निज प्रभुता पावें प्रभो, यही भाव उमगाय।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज : पाँचों मेरू अस्सी जिनधाम)

समता भाव सहज सुखकार, जन्म मरण दुःख नाशनहार।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।
जय जय अनन्तनाथ भगवन्त, गुण अनन्त अनुपम शोभन्त।।महासुख.।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

समकित शीतलता का मूल, सहज नशे भव-भव की शूल।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।।जय-जय अनन्तनाथ।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के पद क्षत् रूप लखाय, अक्षय पद निज में विलसाय।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।।जय-जय अनन्तनाथ।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जीते काम सुभट जिनराय, धारें ब्रह्मचर्य हुलसाय।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।।जय-जय अनन्तनाथ।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

अनुभव रस में तृप्त रहाय, क्षुधा तृषा सहजहिं विनशाय।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।।
जय जय अनन्तनाथ भगवन्त, गुण अनन्त अनुपम शोभन्त।। महासुख।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव उद्योत कराय, सम्यग्ज्ञान प्रकाश लहाय।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।।जय-जय अनन्तनाथ।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मध्यान की अग्नि जलाय, सर्व विभाव सहज नशि जाय।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।।जय-जय अनन्तनाथ।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

साधन शुद्ध उपयोग बनाय, साध्य रूप शिवफल प्रगटाय।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।।जय-जय अनन्तनाथ।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को पाकर हुए सनाथ, पावें निज अनर्घ्यपद नाथ।
महासुख होय, प्रभु पद पूजें शिवसुख होय।।जय-जय अनन्तनाथ।।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(चौपाई)

कार्तिक कृष्णा एकम् के दिन, गरभ माँहिं आये तुम हे जिन।
पन्द्रह मास रत्न थे बरसे, मात-पिता नर नारी हरषे।।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल सृष्टि अति ही हरषाई, सिंहसेन गृह बजी बधाई।
ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशि दिन जन्मे, मेरु न्हवन कीनो सुरपति ने।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात देखकर स्वामी, धरि वैराग्य हुए शिवगामी।
ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशि सुखकार, वन में गूँजा जय-जयकार।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

एक मास धरि प्रतिमा योग, जये कर्म धरि ध्यान मनोज्ञ।
चैत अमावस केवल पाय, भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावस लह्यो निर्वाण, जय-जय अनन्तनाथ भगवान।
अचल सिद्धपद वन्दें सार, ध्यावें समयसार अविकार।।

ॐ ह्रीं चैतकृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा- अनन्तनाथ भगवान, जयवन्तो मम हृदय में।
करूँ प्रभो! गुण गान, भाव विशुद्धि के लिए।।

(छन्द-पद्धरि)

भव भ्रमण मूल मिथ्यात्व नाश, पाया प्रभुवर आतम प्रकाश।
जग विभव-विभाव असार त्याग, निर्ग्रन्थ मार्ग में चित्त पाग।।
साधा जिनवर शुद्धोपयोग, मुनि मुद्रा मन मोहे मनोग।
प्रभु मौन निजानन्द लीन हुए, निर्द्वन्द सहज स्वाधीन हुए।।
बिन काम दाह नहीं अक्ष भोग, नहीं राग द्वेष नहीं रोग शोक।
पर परिणति सों अत्यन्त भिन्न, निज रस में तृप्त रहें अखिन्न।।
धरि ध्यान क्षपक श्रेणी चढ़ाय, प्रभु घाति कर्म सहजहिं नशाय।
तब केवलज्ञान हुआ सुखकर, किया समवशरण धनपति आकर।।
भवि भागन वश खिरी दिव्य ध्वनि, हरषे सब ज्ञानी और मुनि।
शुद्धात्म तत्त्व ही कहा सार, ध्रुव एक शुद्ध वर्जित विकार।।
हम अनुभव करि कीना प्रमान, पाया प्रभुवर सत्यार्थ ज्ञान।
जीते रागादिक सकल क्लेश, आरम्भ परिग्रह तजि अशेष।।
धारें निर्ग्रन्थ स्वरूप देव, यह भाव भयो स्वामी स्वयमेव।
वृद्धिंगत हो पुरुषार्थ नाथ, पामरता का होवे विनाश।।

Scanned with CamScanner

जग में तुम ही हो सत्य शरण, प्रभु परम हितैषी मोह हरण।
हो परम धरम आराध्य सार, निज सम करि कारण दुर्निवार।।
प्रभु पद वन्दूँ मैं बार-बार, अविकारी आनन्दरूप धार।
तुम चरण प्रसाद लहूँ अनन्त, अपनी अक्षय प्रभुता महन्त।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

अहो अनन्त जिनेश को, नित पूजें मनलाय।
इन्द्रादिक से पूज्य हो, निश्चय शिवपद पाय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(15) श्री धर्मनाथ पूजन

(गीतिका)

हे प्रभो! शिवमार्ग पाया, भविजनों ने आपसे।
आपका दर्शन हुआ, प्रभुवर परम सौभाग्य से।।
भक्ति से पूरित हृदय गुणगान को उद्यत हुआ।
बहुमान से पूजा करूँ, निजनाथ के सन्मुख हुआ।।

(दोहा)

पूजूँ धर्म जिनेश को, भाव विशुद्धि धार।
प्रभु सम प्रभु अन्तर निरख, भक्ति करूँ अविकार।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-वीर)

सहज शुद्ध आतम नहिं जाना, मोह मलिनता नहिं जानी।
बाह्य मलिनता जल से धोई, धर्म रीति नहिं पहिचानी।।
मोह मलिनता को हरने अब, शुद्ध आत्मा को ध्याऊँ।
धर्मनाथ प्रभु की पूजा कर, परमधर्म निज में पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

चन्दनादि से शीतलता की, आशा में भरमाया था।
प्रभु गुण चिन्तन रूपी चंदन, नहीं क्रोधवश पाया था।।
अब भवाताप विनशाने को, भव रहित आत्मा को ध्याऊँ।
धर्मनाथ प्रभु की पूजा कर, परमधर्म निज में पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद नहिं पहिचाना, अक्षय वैभव नहिं पाया था।
अपद्भूत इन्द्रादि पदों में, सुख समझा ललचाया था।।
अक्षय अविकारी सुख पाने, ध्रुव रूप आत्मा को ध्याऊँ।।धर्म.।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम निजानन्द नहिं जाना, भोगों में चित्त लुभाया था।
अनुकूल भोग सामग्री पा, इतराया शील नशाया था।।
अब परम शील सुख पाने को, चिद्रूप आत्मा को ध्याऊँ।।धर्म.।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञायक स्वभाव की दृष्टि बिना, स्वाभाविक तृप्ति न पाई थी।
रे! क्षुधा रोग से पीड़ित हो, जो वस्तु मिली सब खाई थी।।
अविनाशी आनन्द पाने को, परिपूर्ण आत्मा को ध्याऊँ।।धर्म.।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में भटकाया, भव-भव में स्वामिन् दुखी हुआ।
निज निधि अवलोकन कर न सका, भव-भव में जन्मा और मुआ।।
अब सम्यग्ज्ञान प्रकाश मिला, चैतन्य आत्मा को ध्याऊँ।।धर्म.।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में खेय दशांग धूप, जग में जो धुआँ उड़ाते हैं।
नहिं इससे कर्म नष्ट होते, बहुते प्राणी मर जाते हैं।।
अब कर्म नशाऊँ ध्यानानल में, ध्येय आत्मा को ध्याऊँ।।धर्म.।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु पुण्य-पाप के फल पाकर, रति अरति करें प्राणी जग के।
पर पुण्य पाप को सहज त्याग, ज्ञानी साधक हों शिवमग के।।
अविनाशी शिवफल पाने को, निर्मुक्त आत्मा को ध्याऊँ।
धर्मनाथ प्रभु की पूजा कर, परमधर्म निज में ध्याऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुबार चढ़ाया द्रव्य अर्घ्य, पर प्रभु स्वरूप से रहा विमुख।
कुछ नहीं मूल्य है द्रव्य अर्घ्य का, निज अनर्घ्य पद के सन्मुख।।
अविचल अनर्घ्य पद पाने को, अब अनुपम शुद्धातम ध्याऊँ।।धर्म.।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(रोला)

गर्भागम जिनराज आपका मंगलकारी,
पन्द्रह माह रत्नवर्षा होवे सुखकारी।
अष्टमि सित वैशाख गर्भ कल्याण मनाया,
पूजत तुम्हें जिनेश महा आनन्द उपजाया।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल तेरस के दिन जन्मे अविकारी,
मेरु शिखर अभिषेक और उत्सव सुखकारी।
इन्द्रादिक ने किये, भक्ति कर मैं हर्षाऊँ,
जन्म मरण की सन्तति नाशे यह वर पाऊँ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात निहार विरागी हुए जिनेश्वर,
हुए माघ सित तेरस को निर्ग्रन्थ मुनीश्वर।
धन्यसेन नृप धन्य प्रथम आहार कराया,
हुए पंच-आश्चर्य हर्ष जन-जन में छाया।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

लगभग एक वर्ष मुनिपद में निजपद भाया,
रत्नपुरी दीक्षावन आकर ध्यान लगाया।
पौष शुक्ल पूनम दिन घाति कर्म नशाये,
समवशरण अरु अतिशय अन्य सहज प्रगटाये।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेदशिखर पर कर्म कलंक निवारे,
प्रभो चतुर्थी जेठ सुदी निर्वाण पधारे।
मुक्त स्वरूप विचार आपकी पूज रचाऊँ,
सम्यक् आराधन द्वारा निर्वाण सुपाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

जयमाला सुखकार, गाऊँ अति आनन्द सों।
भाव रहे अविकार, भव-भव के बन्धन नशें।।

(तर्ज-अहो जगत गुरु देव)

धर्मनाथ जिनराज, परम धरम दर्शाया,
रत्नत्रय अविकार, शिवपुर पंथ दिखाया।
प्रभो! प्रयोजनभूत, सप्त तत्त्व प्रगटाये,
उपादेय निज भाव, हेय अन्य सब गाये।।

निजदृष्टि निज ज्ञान, अहो लीनता निज में,
निज आश्रय से नाथ, सहज बढ़े शिवमग में।
निज अनुभव रस कूप, शिवपद मूल जिनेश्वर,
तुमरे चरण प्रसाद, जाना हे परमेश्वर।।

Scanned with CamScanner

त्रिभुवन मंगलकार, प्रभुवर धर्म तुम्हारा,
मिला हमें अविकार; जागा भाग्य हमारा।
पंचकल्याणक देव, सुरगण आय मनावें,
तीन लोक के जीव, सहजहिं साता पावें।।

निकट भव्य तो नाथ, लख सम्यक् प्रगटावें,
निर्मोही हो नाथ, शिवमारग में धावें।
दर्शन कर मुनिनाथ, मुक्त स्वरूप दिखावे,
पूजत तुम्हें जिनेश, मुक्ति समीप सु आवे।।
स्व-पर विवेक जगाय, देव! गुणों का चिन्तन,
चाह दाह विनशाय, होय धर्म आकिंचन।
धूल समान दिखाँय, जग के वैभव सारे,
पर पद आपद रूप, भोग भुजंग से कारे।।
भक्ति कर जिनदेव, यही भावना भाऊँ,
प्रभो! आप सम होय, अपनी प्रभुता पाऊँ।
तव पद मम उर माँहिं, मम उर तुम चरणन में,
तब लौं लीन रहाय, थिरता होवे निज में।।

(छन्द-घत्ता)

श्री धर्म जिनेश्वर हे परमेश्वर, जजत मुनीश्वर सुखकारी।
मैं भी प्रभु ध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवपद पाऊँ अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पूजत धर्म जिनेश को, सर्व क्लेश विनशाय।
अक्षय निज सम्पत्ति मिले, सिद्ध स्वपद प्रगटाय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(16) श्री शान्तिनाथ पूजन

(गीतिका)

चक्रवर्ती पाँचवें अरू, कामदेव सु बारहवें।
इन्द्रादि से पूजित हुए, तीर्थेश जिनवर सोलहवें।।
तिहुँलोक में कल्याणमय, निर्ग्रन्थ मारग आपका।
बहुमान से पूजन निमित्त, स्वरूप चिन्तें आपका।।

(सोरठा)

चरणों शीश नवाय, भक्तिभाव से पूजते।
प्रासुक द्रव्य सुहाय, उपजे परमानन्द प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-बसन्ततिलका)

प्रभु के प्रसाद अपना ध्रुवरूप जाना।
जन्मादि दोष नाशें हो आत्मध्याना।।
श्री शान्तिनाथ प्रभु की पूजा रचाऊँ।
सुख शान्ति सहज स्वामी निज माँहि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जाना स्वरूप शीतल उद्योतमाना।
भव ताप सर्व नाशे हो आत्मध्याना।।श्री शान्तिनाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय विभव प्रभु सम निज माँहि जाना।
अक्षय स्वपद सु पाऊँ हो आत्मध्याना।।श्री शान्तिनाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

निष्काम ब्रह्मरूपं निज आत्म जाना।
दुर्दान्त काम नाशे हो आत्मध्याना।।
श्री शान्तिनाथ प्रभु की पूजा रचाऊँ।
सुख शान्ति सहज स्वामी निज माँहि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परिपूर्ण तृप्त ज्ञाता निजभाव जाना।
नाशें क्षुधादि क्षण में हो आत्मध्याना।।श्री शान्तिनाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोह ज्ञानमय ज्ञायकरूप जाना।
कैवल्य सहज प्रगटे हो आत्मध्याना।।श्री शान्तिनाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कर्म निर्विकारी चिद्रूप जाना।
भव-हेतु-कर्म नाशें हो आत्मध्याना।।श्री शान्तिनाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्बन्ध मुक्त अपना शुद्धात्म जाना।
प्रगटे सु मोक्ष सुखमय हो आत्मध्याना।।श्री शान्तिनाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ्य प्रभुतामय रूप जाना।
विलसे अनर्घ्य आनन्द हो आत्मध्याना।।श्री शान्तिनाथ.।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दोहा- भादौ कृष्णा सप्तमी, तजि सर्वार्थ विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, आए श्री भगवान।।

ॐ ह्रीं भादवकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

कृष्णा जेठ चतुर्दशी, गजपुर जन्मे ईश।
करि अभिषेक सुमेरू पर, इन्द्र झुकावें शीश।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारभूत निर्ग्रन्थ पद, जगत असार विचार।
कृष्णा जेठ चतुर्दशी, दीक्षा ली हितकार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मध्यान में नशि गये, घातिकर्म दुखदान।
पौष शुक्ल दशमी दिना, प्रगटो केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ कृष्ण चौदशि दिना, भये सिद्ध भगवान।
भाव सहित प्रभु पूजते, होवे सुख अम्लान।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(चौपाई)

जय जय शान्तिनाथ जिनराजा, गाऊँ जयमाला सुखकाजा।
जिनवर धर्म सु मंगलकारी, आनन्दकारी भवदधितारी।।

(छन्द-लावनी)

प्रभु शान्तिनाथ लख शान्त स्वरूप तुम्हारा।
चित शान्त हुआ मैं जाना जाननहारा। टेक।।
हे वीतराग सर्वज्ञ परम उपकारी,
अद्भुत महिमा मैंने प्रत्यक्ष निहारी।

Scanned with CamScanner

जो द्रव्य और गुण पर्यय से प्रभु जानें,
वे जानें आत्मस्वरूप मोह को हानें।।
विनशें भव बन्धन हो सुख अपरम्पारा।
चित शान्त हुआ मैं जाना जाननहारा।।1।।
हे देव! क्रोध बिन कर्म शत्रु किम मारा?
बिन राग भव्य जीवों को कैसे तारा?
निर्ग्रन्थ अकिंचन हो त्रिलोक के स्वामी,
हो निजानन्दरस भोगी योगी नामी।।
अद्भुत, निर्मल है सहज चरित्र तुम्हारा।
चित शान्त हुआ मैं जाना जाननहारा।।2।।
सर्वार्थ सिद्धि से आ परमार्थ सु साधा,
हो कामदेव निष्काम तत्त्व आराधा।
तजि चक्र सुदर्शन, धर्मचक्र को पाया,
कल्याणमयी जिन धर्म तीर्थ प्रगटाया।।
अनुपम प्रभुता माहात्म्य विश्व से न्यारा।
चित शान्त हुआ मैं जाना जाननहारा।।3।।
गुणगान करूँ हे नाथ आपका कैसे?
हे ज्ञानमूर्ति! हो आप आप ही जैसे।
हो निर्विकल्प निर्ग्रन्थ निजातम ध्याऊँ,
परभावशून्य शिवरूप परमपद पाऊँ।।
अद्वैत नमन हो प्रभो सहज अविकारा।
चित शान्त हुआ मैं जाना जाननहारा।।4।।
कुछ रहा न भेद विकल्प पूज्य पूजक का,
उपजे न द्वन्द दुःखरूप साध्य साधक का।

Scanned with CamScanner

ज्ञाता हूँ ज्ञातारूप असंग रहूँगा,
पर की न आस निज में ही तृप्त रहूँगा।।
स्वभाव स्वयं को होवे मंगलकारा।
चित शान्त हुआ मैं जाना जाननहारा।।5।।

(छन्द-धत्ता)

जय शान्ति जिनेन्द्रं, आनन्दकन्दं, नाथ निरंजन कुमतिहरा।
जो प्रभु गुणगावें, पाप मिटावें, पावें आतमज्ञान वरा।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

भक्तिभाव से जो जजें, जिनवर चरण पुनीत।
वे रत्नत्रय प्रगटकर, लहें मुक्ति नवनीत।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(17) श्री कुन्थुनाथ पूजन

(दोहा)

कामदेव होकर प्रभो! किया काम निर्मूल।
चक्रवर्ती पद सम्पदा, समझी तुमने धूल।।
निर्ग्रन्थ पद आराधकर, धर्म तीर्थ प्रगटाय।
हुए मुक्त श्री कुन्थु प्रभु, पूजूँ प्रीति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-वीर)

अन्तर साम्यभाव धारण कर, जल जिन चरणों में लाऊँ।
जन्म जरा मृत दोष नाशने, अविनाशी निज पद ध्याऊँ।।

Scanned with CamScanner

कुन्थुनाथ की पूजा करते, हृदय हर्षित होता है।
भक्ति भाव से प्रभु गुण गाते, आनन्द विलसित होता है।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज भाव से शान्त भाव से, चन्दन नाथ चढ़ाता हूँ।
क्रोधादिक संताप मेटने, आत्म भावना भाता हूँ।।कुन्थु.।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अक्षत जिनवर सन्मुख, सविनय आज चढ़ाता हूँ।
क्षत् भावों से उदासीन हो, अक्षय पद को ध्याता हूँ।।कुन्थु.।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें नाथ निष्काम निरखकर, प्रासुक पुष्प चढ़ाता हूँ।
कामभाव को निष्फल करने, ब्रह्म भावना भाता हूँ।।कुन्थु.।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

देव! स्वयं में तृप्त तुम्हें लख, यह नैवेद्य चढ़ाता हूँ।
क्षुधा वेदना हरने को, परिपूर्ण भावना भाता हूँ।।कुन्थु.।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक प्रकाशक हो प्रभु, फिर भी दीप चढ़ाता हूँ।
मोह अंधेरा दूर भगाने, ज्ञान भावना भाता हूँ।।कुन्थु.।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य प्रभो! निष्कर्म अवस्था, मेरे मन को भाई है।
वैभाविक दुष्कर्म जलाने, ध्यान अग्नि प्रगटाई है।।कुन्थु.।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जैसा अविनाशी फल, पाने को चित ललचाया है।
प्रासुक फल ले भक्त हृदय प्रभु, चरण शरण में आया है।।कुन्थु.।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनर्घ्य वैभव लख मेरा, रोम-रोम पुलकाया है।
ऐसा पद प्रगटाने स्वामी, सविनय अर्घ्य चढ़ाया है।।कुन्थु.।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पंचकल्याणक अर्घ्य

(वीरछन्द)

तजि विमान सवार्थसिद्धि प्रभु, गर्भ विषैं आये सुखकार।
श्रावण कृष्णा दशमी के दिन, पूजूँ जिनवर मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सुदि वैशाख सु पावन, हुई बधाई मंगलकार।
अन्तिम जन्म हुआ हे स्वामी, पूजें हरि करि उत्सव सार।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नगरी की शोभा को लखते, जागा उर वैराग्य महान।
धनि एकम वैशाख सुदी को, पद निर्ग्रन्थ लिया अम्लान।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल पायो चैत सुदी तृतीया को घातिकर्म चकचूर।
अद्भुत समवशरण की शोभा, धर्म प्रभाव हुआ भरपूर।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

टोंक ज्ञानधर से शिव पायो, सुदि एकम वैशाख दिना।
हरि निर्वाण महोत्सव कीनो, पूजूँ मन-वच-काय बिना।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- परम अहिंसा धर्म का, दिया सत्य उपदेश।
निजानन्द में मग्न हो, गाऊँ सुयश जिनेश।।

(तर्ज-दिन रात मेरे स्वामी....)

आया शरण तुम्हारी, हे कुन्थुनाथ जिनवर।
आतम निधि सुपाऊँ, पुरुषार्थ जागे प्रभुवर।।टेक।।
जब से स्वरूप देखा, नहीं और कुछ सुहावे।
ज्यों मीन जल बिना त्यों, मम चित्त छटपटावे।।
निजपद की भावना है, तुम सम ही होऊँ सत्वर।
आतम निधि सुपाऊँ, पुरुषार्थ जागे प्रभुवर।

Scanned with CamScanner

प्रभु चक्रवर्ती पद को, तृण के समान छोड़ा।
होकर परम जितेन्द्रिय, विषयों से मुख को मोड़ा।।
भव जाल से विरत हो, हुए सहज दिगम्बर।।
आतम निधि सुपाऊँ, पुरुषार्थ जागे प्रभुवर।

धनि धर्ममित्र श्रावक, आहार प्रथम दीना।
निज आत्म भावना से, मुक्ती का मार्ग लीना।।
सुर हर्ष प्रगट कीना, पंचाश्चर्य प्रगट कर।।आतम..।।

एकाग्र हुए स्वामी, निज भाव थे निहारे।
फिर क्षपक श्रेणि चढ़कर, घाती करम संहारे।।
प्रगटा अनंत चतुष्टय, हुए अरहंत सुखकर।।आतम..।।

दश जन्म के थे अतिशय, कैवल्य के हुए दश।
देवों ने कीने चौदह, थे प्रातिहार्य भी अठ।।
धनपति ने भक्ति कीनी, विभु समवशरण रचकर।।आतम..।।

प्रभु दिव्य ध्वनि के द्वारा, सन्मार्ग था बताया।
तत्त्वों का मार्ग सुनकर, भव्यों ने बोध पाया।।
जिनमार्ग पर चलूँ मैं, निर्भय निःशंक होकर।।आतम..।।

अनुपम है प्रभुता प्रभु की, अद्‌भुत है महिमा प्रभु की।
वचनों से कैसे गावें, हम स्तुति सु प्रभु की।।
हो ज्ञान में प्रतिष्ठित बस ज्ञान ही जिनेश्वर।।आतम..।।

चिन्मूर्ति हो विराजे, ज्यों मुक्ति में हे स्वामी।
ध्रुव अचल ऋद्धि पाई, विश्वेश त्रिजगनामी।।
सो भावना मैं भाऊँ, चरणों में शीश धरकर।।आतम..।।

(छन्द-धत्ता)

प्रभु के गुण गावें, मुनिजन ध्यावें, शुद्धातम में लीन भये।
रागादि विनाशे, ज्ञान प्रकाशे, कर्म महारिपु सहज जये।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पूजा कुन्थु जिनेश की, नित नव मंगलकार।
जग प्रपंच से काढ़िकै, रत्नत्रय दातार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(18) श्री अरनाथ पूजन

(छन्द-लावनी)

अरनाथ जिनेश्वर, दुर्लभ दर्शन पाया।
हे जगत पूज्य! पूजा का भाव जगाया।।
मदनेश्वर, चक्री, तीर्थंकर पद धारी।
मम हृदय पधारो, भाव रहें अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

जन्म-जरामृत नाशि के, हुए प्रगट भगवान।
प्रभु समान शुद्धात्मा, अविनाशी पहिचान।।
सहज भक्ति उर धारि के, पूजूँ अर जिनराय।
ध्याऊँ ध्रुव परमात्मा, परमानन्द विलसाय।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप नाशक सुतप, कियो जिनेश्वर देव।
मिटती भक्ति प्रसाद से, चाह दाह स्वयमेव।।सहज.।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत के कारण घातिया, आत्म ध्यान से नाश।
अक्षय गुणमय आत्मा, किया विभो परकाश।।सहज.।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त्त ध्यान के हेतु हैं, रौद्र ध्यानमय भोग।
उत्तम शील प्रकाशकर, कीनो पूरण योग।।सहज.।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज रस में संतुष्ट हो, क्षुधा वेदनी टाल।
सो रस निज में ही झरे, पीवत होय निहाल।।

Scanned with CamScanner

सहज भक्ति उर धारि के, पूजूँ अर जिनराय।
ध्याऊँ ध्रुव परमात्मा, परमानन्द विलसाय।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज ज्ञानमय आत्मा, भासा तत्त्व महान।
मोहादिक विध्वंस कर, पाया केवलज्ञान।।सहज.।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेन्धन को भस्म कर, धर्म सुगन्ध सुदेय।
तीन लोक पूजित हुए, दिव्य धूप मैं लेय।।सहज.।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म प्रकृति त्रेसठ तजी, पच्चासी फिर नाशि।
महामोक्षफल प्रभु लहो, गुण अनन्त की राशि।।सहज.।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अनर्घ्य प्रभुता अहो! प्रगटाई जिननाथ।
सो प्रभुता अन्तर लखी, अर्घ्य लेय हे नाथ।।सहज.।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(तर्ज : भावना रथ पर चढ़ जाऊँ...)

पंचकल्याणक मनहारी-2, भव्यों के कल्याण निमित्त यह उत्सव सुखकारी।।टेक।।

पन्द्रह मास रतन शुभ वर्षे, आनन्द भयो भारी।
फाल्गुन शुक्ला तीज हुआ, गर्भागम सुखकारी।।पंचकल्याणक.।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मगसिर सुदी चर्तुदशि गजपुर, जन्मे जगतारी।
मेरु शिखर पर इन्द्रादिक, अभिषेक कियो भारी।।पंचकल्याणक.।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मगसिर शुक्ला दशमी को, निर्ग्रन्थ दशा धारी।
समता रस की धार बहाई, नित्यानन्दकारी।।पंचकल्याणक.।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Scanned with CamScanner

कार्तिक शुक्ला द्वादशि को लहि, केवल अविकारी।
धर्मतीर्थ का किया प्रवर्तन, सबको हितकारी।।पंचकल्याणक.।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृष्णा चैत अमावस्या को, बन्धदशा टारी।
नित्य निरंजन शिवपद पायो, अक्षय अविकारी।।पंचकल्याणक.।।

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- धर्म शस्य हित मेघ सम, श्री अरनाथ महान।
गाऊँ जयमाला प्रभो, परमानन्द की खान।।

(छन्द-भुजंगप्रयात) (तर्ज : मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक....)

प्रभो आपको पूजते हर्ष भारी,
स्वयं की विभूति स्वयं में निहारी।
अहो नाथ! तुमसे तुम्हीं हो दिखाते,
महानन्दमय पद तुम्हीं तो बताते।।
महामोहतम प्रभु तुम्हीं तो नशाते,
सहज ज्ञानमय ज्योति तुम ही जलाते।
सुगम मोक्षमारग तुम्हीं प्रभु दिखाते,
सरस ज्ञान गंगा तुम्हीं हो बहाते।।
विषयों के फन्दे से तुम ही छुड़ाते,
चर्तुगति दुःखों से तुम्हीं तो बचाते।
परम ज्ञान वैराग्य तुम ही जगाते,
निर्ग्रन्थ पथ में तुम्हीं प्रभु बढ़ाते।।
हो निरपेक्ष बान्धव तुम्हीं साँचे जग में,
तुम्हीं मार्गदर्शक अहो मोक्ष मग में।

Scanned with CamScanner

हुआ मैं निशंकित तुम्हारे वचन से,
परम सौख्य पाया स्वयं अनुभवन से।।
कहाँ तक कहूँ नाथ महिमा तुम्हारी,
न शब्दों में शक्ति प्रभो! इतनी धारी।
चिन्तन तुम्हारा नहीं पार पावे,
अहो स्वानुभव में न आनंद समावे।।
खिला पुण्य मेरा, मिला दर्श तेरा,
यही भावना होय वन माँहिं डेरा।
हो निर्ग्रन्थ मुद्रा महासु:खकारी,
सहज ध्यान में कर्म नाशे विकारी।।
नहीं कामना कोई निष्काम वर्तूं,
परम समरसी भाव निर्मान वर्तूं।
नहीं क्षोभ आवे परम शांत वर्तूं,
निर्द्वन्द्व निर्मूढ़ निर्भ्रान्त वर्तूं।।
विशुद्धि जिनेश्वर सु बढ़ती ही जावे,
परम भाव में वृत्ति रमती ही जावे।
प्रभो आप सम ही परम लीनता हो,
परम मुक्तता हो, परम पूर्णता हो।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

निज कल्याण स्वरूप, धर्मचक्र के अर प्रभो।
पूजूँ हे शिवभूप! होवें मंगल नित नये।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(19) श्री मल्लिनाथ पूजन

(छन्द-अडिल्ल)

मल्लिनाथ जिनराज, परम आदर्श हो।
भविजन को सुखदाय, आपका दर्श हो।।
देव आप सम ब्रह्मचर्य वर्तें सदा।
पूजूँ तुम्हें जिनेश, हर्ष उर में महा।।

(दोहा)

परम जितेन्द्रिय जिन हुए, काम सुभट को जीत।
स्वाभाविक आनंद की, जागी सहज प्रतीति।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-अवतार)

जल जाना प्रभु निस्सार, चरणन माँहि तजूँ।
तुमसम ही हे जिनराज, अव्यय भाव सजूँ।।
हे बालयती तीर्थेश, नित प्रति शिर नाऊँ।
हे मल्लिनाथ जिनराज, शाश्वत पद पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चन्दनादि निस्सार, चरणन माँहि तजूँ।
तुम सम ही हे जिनराज, शीतल शांत रहूँ।।हे बालयती.।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत् रूप विभाव असार, चरणन माँहिं तजूँ।
तुम सम ही हे जिनराज, अक्षय सौख्य लहूँ।।हे बालयती.।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये-अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्रभु काम भोग निस्सार, चरणन माँहि तजूँ।
तुम सम ही हे जिनराज, ब्रह्म विलास भजूँ।।
हे बालयती तीर्थेश, नित प्रति शिर नाऊँ।
हे मल्लिनाथ जिनराज, शाश्वत पद पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निस्सार बाह्य नैवेद्य, चरणन माँहिं तजूँ।
तुम सम ही हे जिनराज, तृप्त सदैव रहूँ।।हे बालयती.।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ दीपक प्रभु निस्सार, चरणन माँहिं तजूँ।
तुम सम ही हे जिनराज, नित निर्मोह रहूँ।।हे बालयती.।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखरूप नहीं जड़ धूप, चरणन माँहिं तजूँ।
तुम सम ही हे जिनराज, नित निष्कर्म रहूँ।।हे बालयती.।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक फल सर्व असार, चरणन माँहिं तजूँ।
तुम सम ही हे जिनराज, मुक्त सदैव रहूँ।।हे बालयती.।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु बाह्य विभव निस्सार, चरणन माँहिं तजूँ।
तुम सम ही हे जिनराज, विभव अनर्घ्य लहूँ।।हे बालयती.।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

करे जगत कल्याण, गर्भागम भी आपका।
हो भवभय से त्राण, भाव सहित पूजूँ प्रभो।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जन्म समय इन्द्रादि, कीना न्हवन सुमेरु पर।
जन्मोत्सव कर याद, आनन्द धरि पूजूँ प्रभो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लेकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्याह समय वैराग, धारि हृदय दीक्षा लही।
निज स्वरूप में पाग, कर्म नाश उद्यम किया।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुपाय, धर्म तीर्थ प्रगटाइयो।
निश्चय शिव-सुखदाय, पूजूँ अति उल्लास सौं।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वकर्म मल जारि, अविनाशी शिवपद लह्यो।
मुक्त स्वरूप निहार, प्रभु निश्चय पूजा करूँ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जयमाला जिनराज की, गाऊँ मंगल रूप।
कर स्मरण चरित्र प्रभु, ध्याऊँ शुद्ध चिद्रूप।।

(चौपाई)

जय जय मल्लिनाथ भगवान, जिनमुद्रा लखकर अम्लान।
आनन्द मेरे उर न समाय, तन का रोम-रोम पुलकाय।।
महिमा प्रभु की कही न जाय, प्रभु भक्ति वाचाल कराय।
परम ब्रह्म परमात्म स्वरूप, तुम गुण तिहुँ जगमाँहि अनूप।।
जम्बूद्वीप विदेह मँझार, नृपति वैश्रवण चित्त उदार।
मुनि सुगुप्ति के दर्शन किए, रत्नत्रय व्रत सहजहिं लिए।।
इक दिन वन विहार के काल, देखा वट का वृक्ष विशाल।
किन्तु लौटते समय विनष्ट, देख हुआ था चित्त विरक्त।।

Scanned with CamScanner

दीक्षा ले भायीं सुखकार, भावना सोलह कारण सार।
किया प्रकृति तीर्थंकर बंध, कर समाधि हुए अहमिन्द्र।।
मिथिला नगरी राजा कुम्भ, प्रजावती रानी अतिरम्य।
अपराजित विमान तें सार, आये ताके गर्भ मंझार।।
नाना उत्सव देव सु किये, धन्य घड़ी प्रभु जन्मत भये।
हुआ सुमेरु पर अभिषेक, दर्शन से प्रभु जगे विवेक।।
अद्भुत क्रीड़ाएं सुखकार, करते बढ़ते भये कुमार।
शादी को जब चली वरात, लख शोभा प्रभु हुए उदास।।
हुआ जाति स्मरण सु ज्ञान, दीक्षा हेतु किया प्रस्थान।
धिक्-धिक् कह त्यागे जड़भोग, आराधा निजरूप मनोग।।
छह दिन में लहि केवलज्ञान, धर्मतीर्थ प्रगटा अम्लान।
समवशरण में शोभें आप, भविजन के नाशें संताप।।
एक मास पहले जिनराज, सम्बल कूट सु आय विराज।
करके योग निरोध महान, पायो अविचल पद निर्वाण।।
भाव सहित पूजत जिनदेव, तत्त्वज्ञान जागे स्वयमेव।
विचरूँ मैं भी प्रभु के पंथ, पाऊँ दशा परम निर्ग्रन्थ।।

(छन्द-धत्ता)

जय मल्लि जिनेन्द्रं, आनन्द कन्दं, चिदानन्दमय चित्त धरूँ।
तज जग जंजालं, सुगुण विशालं, प्रभु समान ही प्रगट करूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

प्रभु पूजा सुखकार, हर्षित हो नित प्रति करूँ।
पाऊँ निज पद सार, अन्य न कोई कामना।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(20) श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

(गीतिका)

मुनिनाथ त्रिभुवननाथ पूजित, मुनिसुव्रत प्रभु को नमूँ।
जिन भक्तिमय धरि भाव निर्मल, मोह मायादिक वमूँ।।
मम हृदय में आओ विराजो, हर्ष से पूजन करूँ।
निर्भेद हो, निरखेद हो, निर्मुक्त प्रभुता विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-चौपाई)

आत्म तीर्थ जल से अविकारी, भाव सहित पूजूँ त्रिपुरारी।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-आताप विनाशन हारी, चन्दन से पूजूँ उपकारी।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अबाधित पद धारी, अक्षत से पूजें अविकारी।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परम ब्रह्ममय रूप सु ध्याऊँ, काम वासना दूर भगाऊँ।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निजरस आस्वादी हो स्वामी, नाशूँ क्षुधा महादुखदानी।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

स्वपर ज्ञानमय ज्योति जगाऊँ, मोह महातम सहज मिटाऊँ।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि में कर्म जलाऊँ, उर्ध्वगमन से शिवपुर जाऊँ।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी पुण्यफल हेय लखाऊँ, निर्वांछक हो शिवफल पाऊँ।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, पद अनर्घ्य प्रभु सम प्रगटाऊँ।
मुनिसुव्रत प्रभु गुण उच्चारूँ, धन्य भाग्य जब मुनि व्रत धारूँ।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द–अडिल्ल)

श्रावण कृष्णा दूज गर्भ आए प्रभो, सोलह सपने माँ को दिखलाए विभो।
करें देवियाँ सेव मात की चाव सों, हम हूँ पूजें जिनवर भक्ति भाव सों।।
ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि वैशाख वदी दशमी अति पावनी, जन्मकल्याणक की थी छटा सुहावनी।
मेरु शिखर पर इन्द्र प्रभु को ले गयो, किया महा–अभिषेक जगत आनन्द भयो।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममंगलमप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख गजराज प्रसंग विरक्ति मन धरी, ली हरिवंश शिरोमणि ! दीक्षा शिवकरी।
तिथि वैशाख वदी दशमी सुखकार थी, मुनिसुव्रत की गूँजी जय–जयकार थी।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

तिथि वैशाख वदी नवमी चित थिर कियो, क्षपक श्रेणि चढ़ घाति नाशि केवल लियो।
दिव्यध्वनि सुन भव्य अनेक सु तिर गये, पूजत अहो जिनेश भाव सम्यक् भये।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जर टोंक शिखर सम्मेद तें शिव गये, फाल्गुन कृष्णा बारस सिद्धालय ठये।
परम मुक्त शुद्धात्म स्वरूप दिखाइया, हे प्रभु हमहूँ पावें भाव जगाइया।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जीते अन्तर शत्रु प्रभु, इन्द्रिय विषय कषाय।
मुनिव्रत धरि शिवपद लह्यो, मुनिसुव्रत जिनराय।।

(वीरछन्द)

पूजा करके भक्ति करते, मुनिसुव्रत भगवान की।
यही भावना प्रभु सम पावें, पदवी हम निर्वाण की।।
देखो प्रभु ने सहज भाव से, दुर्लभ रत्नत्रय धारा।
जगत प्रपंच तजे दुःखकारी, मुनि दीक्षा को स्वीकारा।।
सभी जीव दुःखों से छूटें, पावें आतम ज्ञान को।
पाप-पुण्य की बेड़ी टूटें, धारें आतमध्यान को।।
जब ही ऐसे भाव जगे थे, प्रकृति बँधी तीर्थंकर की।
हुए पंचकल्याणक मण्डित, जय हो जगत हितंकर की।।
सोमा-नन्दन कर्म निकन्दन, धर्मतीर्थ जो प्रगटाया।
महाभाग्य हमने भी पाया, महानन्द उर में छाया।।
मोह अंधेरा दूर हुआ है, वस्तु स्वभाव धर्म भासा।
जीव-अजीव भिन्न दिखलावें, दुखकारण आश्रव नाशा।।
संवर पूर्वक होय निर्जरा, कर्म बंध तड़ तड़ टूटें।
धन्य परम निर्मुक्त दशा हो, पर-सम्बन्ध सभी छूटें।।

Scanned with CamScanner

तृप्त स्वयं में मग्न स्वयं में, काल अनंत रहें अविकार।
यही भावना सहज पूर्ण हो, और चाह नहिं रही लगार।।
करें अनुसरण प्रभो आपका, आराधन निज आतम का।
हुआ सहज विश्वास मुनीश्वर, पद पाऊँ परमातम का।।

(छन्द-धत्ता)

अनुपम गुणधारी हे अविकारी, मुनिसुव्रत जिनशरण लही।
रत्नत्रय पाऊँ मंगल गाऊँ, जाऊँ अष्टम मुक्ति मही।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

पूजा श्री जिनराज, महाभाग भविजन करें।
पावें सिद्ध समाज, तीन लोक में पूज्य हों।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(21) श्री नमिनाथ पूजन

स्थापना

नमिनाथ जजूँ जिननाथ भजूँ, मिथ्या संकल्प विकल्प तजूँ।
ये ही शिवसुख का कारण है, निजभाव सजूँ निजभाव भजूँ।।
अति पुण्योदय जागा स्वामिन्, बहुमान आपका आया है।
पूजन करते ज्ञानानन्द सागर, अन्तर में उछलाया है।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-चाल)

सम्यक् जल ले अविकारी, पूजूँ चैतन्य विहारी।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, जन्मादिक दोष नशाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

निर्वांछक चन्दन पाऊँ, प्रभु चाह दाह विनशाऊँ।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, धर्मामृत धार बहाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत्-अक्षत भेद विचारूँ, विचिकित्सा दोष विडारूँ।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, अक्षत से पूज रचाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु प्रासुक पुष्प चढ़ाऊँ, परिणति निज माँहिं लगाऊँ।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, निष्काम भावना भाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म परम-रस स्वादी, नाशो मम क्षुधा कुव्याधी।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, प्रासुक नैवेद्य चढ़ाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार नहीं भावे, ताको प्रभु ज्ञान नशावे।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, प्रभु सम केवल प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ध्यान अग्नि प्रजलाई, कर्मों की धूल उड़ाई।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, वात्सल्य भाव प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक फल विनशाया, प्रभु धर्म प्रभाव बढ़ाया।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, जिन मुक्ति महाफल पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टांग अर्घ्य ले स्वामी पूजूँ मैं अन्तर्यामी।
नमिनाथ चरण सिर नाऊँ, अविचल अनर्घ्य पद पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द-वीर)

आश्विन कृष्णा द्वितीया के दिन, शुभ गर्भ विषैं प्रभुवर आए।
अभिनन्दन मात-पिता का कर, देवों ने रत्न सु वर्षाये।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दसवीं आषाढ़ श्यामा के दिन, मंगलमय अन्तिम जन्म लिया।
नरकों में भी साता आई, देवों ने उत्सव आन किया।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो देवों ने आ नमन किया, अपराजित प्रभु वत्तान्त कहा।
तब जातिस्मरण हुआ सुखमय, कलिषाढ़ दशैं तप आप लहा।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुद्धातम रस में लीन हुए, तब चार घाति चकचूर किए।
मगसिर सित एकादशि स्वामी, केवलज्ञानी अरहंत हुए।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लेकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है टोंक मित्रधर सुखकारी, सम्मेदशिखर से सिद्ध हुए।
वैशाख कृष्ण चौदश के दिन, प्रभु आवागमन विमुक्त हुए।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुदर्श्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भाव सहित पूजा करी, गाऊँ अब जयमाल।
परिणति अन्तर में ढले, होऊँ सहज निहाल।।

(छन्द-रोला)

जयवन्तो नमिनाथ विश्व के जाननहारे।
जयवन्तो नमिनाथ दोष रागादि निवारे।।
जयवन्तो नमिनाथ मोहतम नाशन हारे।
जयवन्तो नमिनाथ भवोदधि तारण हारे।।

चरण परस से भूमि जगत में तीर्थ कहाई।
भाव विशुद्धि की निमित्त सबको सुखदाई।।
ध्यान-द्वार से मम परिणति में निवसो स्वामी।
रत्नत्रयमय भाव-तीर्थ प्रगटे जगनामी।।
परमानन्दमय नाथ भाग्य से तुमको पाया।
भव-भव का संताप सर्व ही सहज पलाया।।
भेदज्ञान की ज्योति जगी गुण चिन्तत प्रभुजी।
आत्मज्ञान की कला खिली, अन्तर में जिनजी।।
निज प्रभुता में मग्न नाथ जग प्रभुता पाई।
हुई विभूति समवशरण की मंगलदाई।।
दिव्यध्वनि से दिव्यतत्त्व प्रभुवर दर्शाया।
सम्यक् सरल सरस शिवपथ जिनवर दर्शाया।।
निर्मोही हो नाथ आपका मारग पाऊँ।
आप रहो आदर्श मुक्तिमारग मैं धाऊँ।।
राग-द्वेष मय वैभाविक परिणति मिट जावे।
रहूँ परम निर्मुक्त स्वपद प्रभु सम प्रगटावे।।
वचनातीत स्वरूप वचन में कैसे आवे।
चिन्तन भी प्रभु महिमा का कुछ पार न पावे।।
अहो! स्वानुभवगम्य नाथ को निज में ध्याऊँ।
प्रभु पूजा के निमित्त सहज पुरुषार्थ बढ़ाऊँ।।

(छन्द-धत्ता)

धनि-धनि नमिनाथा, नावें माथा, इन्द्रादिक तब चरणों में।
भव दुःख नशाऊँ, ध्यान बढ़ाऊँ, शिव सुख पाऊँ चरणों में।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करें करावें मोद धर, पूजा श्री जिनराज।
स्वर्गादिक सुख पायके, पावें शिवपद राज।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(22) श्री नेमिनाथ पूजन

(रोला)

नेमिनाथ जिनराज, दर्शकर चित हुलसाया,
ज्ञानानन्दमय देव! सहज निजपद दरशाया।
लख अनुपम वैराग्य आपका त्रिभुवननामी,
जगा सहज बहुमान विराजो हृदय स्वामी।।

(दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रभो, अद्‌भुत प्रभुतावान।
पूजें हर्ष विभोर हो, भाव सहित भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द–वीर)

ज्ञानसरोवर का सम्यक् जल, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
जन्म–जरा–मृत नाश करन को, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।
धन्य–धन्य नेमीश्वर स्वामी, बालयती हो शिवपद पाय।
आतम–निधि दातार जिनेश्वर, भाव यही निजपद प्रगटाय।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दाह निकन्दन शीतल चन्दन, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
सहज भाव शीतल नित वर्ते, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।धन्य..।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखंडित अनुपम अक्षत, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
निज अक्षय पद प्राप्त करन को, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।धन्य..।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म वृक्ष के पुष्प शीलमय, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
काम व्यथा निर्मूल करन को, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।धन्य..।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

निज रस पूरित व्यंजन सुखमय, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
नाश करन को दोष क्षुधादिक, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।
धन्य-धन्य नेमीश्वर स्वामी, बालयती हो शिवपद पाय।
आतम-निधि दातार जिनेश्वर, भाव यही निजपद प्रगटाय।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न दीप सुन्दर सुज्ञानमय, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
मोह तिमिर के नाश करन को, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।धन्य..।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अहो गंध दशधर्ममयी मैं, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
अष्ट कर्म निर्मूल करन को, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।धन्य..।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक फल मैं सहज भावमय, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
महामोक्ष फल प्राप्त करन को, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।धन्य..।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य सु अनुपम जिनभक्तिमय, लेकर श्री जिन चरण चढ़ाय।
अविनाशी अनर्घ्य पद पाऊँ, पूजूँ गुण गाऊँ हरषाय।।धन्य..।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द-भुजंगप्रयात) (तर्ज : मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक....)

कार्तिक सुदी षष्ठमि गर्भ माँही, आए प्रभो सर्व जन सुखपाँहीं।
वर्षे रतनराशि महिमा अपारी, करें देवियाँ मातु सेवा सुखारी।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदी षष्ठमि सुखकारी, जन्मे जिनेश्वर जग दुःखहारी।
इन्द्रादि ने जन्म-अभिषेक कीना, करें भावना जन्म हो ना नवीना।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

तजो ब्याह को स्वाँग दीक्षा सुधारी, अभयरूप निर्ग्रन्थ वृत्ति सँभारी।
छटी श्रावणी सित जजों नाथ चरणं, दिखे विश्व में धर्म ही सत्य शरणं।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरो ध्यान जिनवर अचल अविकारी, नशे घातिया कर्म सब दुःखकारी।
आश्विन सुदी प्रतिपदा सुखस्वरूपं, जजूँ नेमि पायो सु अर्हत् स्वरूपं।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित षाढ़ सप्तमि सु निर्वाण पायो, गिरनार पर्वत सु तीरथ कहायो।
अहो हम स्वयं सिद्ध निजपद निहारें, करें अर्चना भाव अपना सुधारें।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शंखचिह्न चरणों लसे, शोभे श्याम शरीर।
निरावरण विज्ञानमय, निश्चय से अशरीर।।

(छन्द-रोला, तर्ज-अहो जगत गुरुदेव...)

नेमिनाथ जिनराज, तिहुँ जग मंगलकारी।
अनन्त चतुष्टयरूप, देव परम अविकारी। टेक।।
प्रभु पंचमभव पूर्व, शुद्धातम पहिचाना,
धरि जिनदीक्षा आप, पायो स्वर्ग विमाना।
फिर तीजे भव माँहि, सोलहकारण भाई,
धर्मतीर्थकर्तार, प्रकृति पुण्य बँधाई।।
फेर हुए अहमिन्द्र, तहँ तैं आप पधारे,
समुद्रविजय के लाल, तुम ही शरण हमारे।

Scanned with CamScanner

दीन पशु लख आप, ब्याह तजो दुखकारी,
हो विरक्त शिवहेतु, निर्ग्रन्थ दीक्षा धारी।।
कियो काम चकचूर, निजबल से ही स्वामी,
तिहुँ जग पूज्य ललाम, हुए जितेन्द्रिय नामी।
क्षपक श्रेणि चढ़ देव, परमातम पद पायो,
धनपति ने तब आप, समवशरण सु रचायो।।
झलकें लोकालोक, युगपद् परिणति माहीं,
तदपि विकल्प न लेश, रमे सहज निज माहीं।
नशे अठारह दोष, आत्मीक गुण सोहें,
आयुध अम्बर नाहिं, सौम्य दशा मन मोहे।।
खिरी दिव्य ध्वनि देव, दिव्य तत्त्व दर्शायो,
समयसार अविकार, सारभूत प्रगटायो।
परलक्षी सब भाव, दुःखकारण बतलाये,
रत्नत्रय सुखरूप, सुखकारण दर्शाये।।
जगत विभव निस्सार, हमको भी प्रभु लागे,
मिटा मोह दुखकार, तुम चरणों के आगे।
त्यागूँ जगत प्रपंच, पुण्य-पाप दुखकारी,
भाव यही जिनराज, पाऊँ पद अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-धत्ता)

जय नेमि जिनेश्वर, साँचे ईश्वर, शील शिरोमणि जितमारं।
भव - भय - हर्तारं, धर्माधारं, जयवन्तो शिवदातारं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

(23) श्री पार्श्वनाथ पूजन

(छंद-ताटंक)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ, तुमने हमको यह बतलाया।
निज पार्श्वनाथ में थिरता से, निश्चय सुख होता सिखलाया।।
तुमको पाकर मैं तृप्त हुआ, ठुकराऊँ जग की निधि नामी।
हे रवि-सम स्व-पर प्रकाशक प्रभु, मम हृदय विराजो हे स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-वीर)

जड़ जल से प्यास न शान्त हुई, अतएव इसे मैं यहीं तजूँ।
निर्मल जल-सा प्रभु निजस्वभाव, पहिचान उसी में लीन रहूँ।।
तन-मन-धन निज से भिन्न मान, लौकिक वाँछा नहिं लेश रखूँ।
तुम जैसा वैभव पाने को, तव निर्मल चरण-कमल अर्चूं।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन से शान्ति नहीं होती, यह अन्तर्दहन जलाता है।
निज अमल भावरूपी चन्दन ही, रागाताप मिटाता है।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु उज्ज्वल अनुपम निजस्वभाव ही, एकमात्र जग में अक्षत।
जितने संयोग वियोग तथा, संयोगी भाव सभी विक्षत।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ये पुष्प काम-वर्धक ही हैं, इनसे तो शान्ति नहीं होती।
निज समयसार की सुमन माल ही, कामव्यथा सारी खोती।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ व्यञ्जन क्षुधा न नाश करें, खाने से बंध अशुभ होता।
अरु उदय में होवे भूख अतः, निज ज्ञान अशन अब मैं करता।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जड़ दीपक से तो दूर रहो, रवि से नहिं आत्म दिखाई दे।
निजसम्यक्ज्ञानमयी दीपक ही, मोहतिमिर को दूर करे।।
तन-मन-धन निज से भिन्न मान, लौकिक वाँछा नहिं लेश रखूँ।
तुम जैसा वैभव पाने को, तव निर्मल चरण-कमल अर्चूं।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब ध्यान अग्नि प्रज्ज्वलित होय, कर्मों का ईंधन जले सभी।
दशधर्ममयी अतिशय सुगंध, त्रिभुवन में फैलेगी तब ही।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जैसी करनी करता है, वह फल भी वैसा पाता है।
जो हो कर्तृत्व-प्रमाद रहित, वह महा मोक्षफल पाता है।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मस्वभाव अनुपम है, स्वाभाविक सुख भी अनुपम है।
अनुपम सुखमय शिवपद पाऊँ, अतएव यह अर्घ्य समर्पण है।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, प्राणत स्वर्ग विहाय।
वामा माता उर बसे, पूजूँ शिव सुखदाय।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, सुतिथि महा सुखकार।
अन्तिम जन्म लियो प्रभु, इन्द्र कियो जयकार।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, बारह भावन भाय।
केशलोंच करके प्रभु, धरो योग शिवदाय।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Scanned with CamScanner

शुक्लध्यान में होय थिर, जीत उपसर्ग महान।
चैत्र कृष्ण शुभ चौथ को, पायो केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, पायो पद निर्वाण।
सम्मेदाचल विदित है, तव निर्वाण सुथान।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्याम् मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(हरिगीतिका)

हे पार्श्व प्रभु मैं शरण आयो, दर्शकर अति सुख लियो।
चिन्ता सभी मिट गयी मेरी, कार्य सब पूरण भयो।।
चिन्तामणी चिन्तत मिले, तरु कल्प माँगे देत हैं।
तुम पूजते सब पाप भागैं, सहज सब सुख हेत हैं।।
हे वीतरागी नाथ! तुमको, भी सरागी मानकर।
माँगें अज्ञानी भोग वैभव, जगत में सुख जानकर।।
तव भक्त वाँछा और शंका आदि दोषों रहित हैं।
वे पुण्य को भी होम करते, भोग फिर क्यों चहत हैं।।
जब नाग और नागिन तुम्हारे, वचन उर धर सुर भये।
जो आपकी भक्ति करें, वे दास उनके भी भये।।
वे पुण्यशाली भक्तजन की, सहज बाधा को हरें।
आनन्द से पूजा करें, वाँछा न पूजा की करें।।
हे प्रभो तव नासाग्रदृष्टि, यह बताती है हमें।
सुख आत्मा में प्राप्त कर लें, व्यर्थ बाहर में भ्रमें।।
मैं आप सम निज आत्म लखकर, आत्म में थिरता धरूँ।
अरु आशा-तृष्णा से रहित, अनुपम अतीन्द्रिय सुख भरूँ।।

Scanned with CamScanner

जब तक नहीं यह दशा होती, आपकी मुद्रा लखूँ।
जिनवचन का चिन्तन करूँ, व्रत शील संयम रस चखूँ।।
सम्यक्त्व को नित दृढ़ करूँ, पापादि को नित परिहरूँ।
शुभराग को भी हेय जानूँ, लक्ष्य उसका नहिं करूँ।।
स्मरण ज्ञायक का सदा, विस्मरण पुद्गल का करूँ।
मैं निराकुल निजपद लहूँ प्रभु! अन्य कुछ भी नहिं चहूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पूज्य ज्ञान वैराग्य है, पूजक श्रद्धावान।
पूजा गुण अनुराग अरु, फल है सुख अम्लान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(24) श्री महावीर पूजन

(दोहा)

अद्भुत प्रभुता शोभती, झलके शान्ति अपार।
महावीर भगवान के, गुण गाऊँ अविकार।।
निजबल से जीता प्रभो, महाक्लेशमय काम।
पूजन करते भावना, वर्तूं नित निष्काम।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-त्रिभंगी)

भव भव भटकायो, अति दुख पायो, तृष्णाकुल तुम ढिंग आयो।
उत्तम समता जल, शुचि अति शीतल, पायो उर आनन्द छायो।।
इन्द्रादि नमन्ता, ध्यावत संता, सुगुण अनन्ता, अविकारी।
श्री वीर जिनन्दा, पाप निकन्दा, पूजों नित मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

भव ताप निकन्दन, चन्दनसम गुण, हरष-हरष गाऊँ ध्याऊँ।
नाशूँ दुर्मोहं, दुखमय क्षोभं, सहज शान्ति प्रभु सम पाऊँ।।
इन्द्रादि नमन्ता, ध्यावत संता, सुगुण अनन्ता, अविकारी।
श्री वीर जिनन्दा, पाप-निकन्दा, पूजों नित मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय गुण मण्डित, अमल अखंडित, चिदानन्द पद प्रीति धरूँ।
क्षत् विभव न चाहूँ, तोष बढ़ाऊँ, अक्षत प्रभुता प्राप्त करूँ।।इन्द्रादि.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सम आनन्दमय, नित्यानन्दमय, परम ब्रह्मचर्य चाहत हों।
नव बाढ़ लगाऊँ, काम नशाऊँ, सहज ब्रह्मपद ध्यावत हों।।इन्द्रादि.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख क्षुधा नशावन, पायो पावन, नित अनुभव रस नैवेद्यं।
नित तृप्त रहाऊँ, तुष्ट रहाऊँ, निज में ही हूँ निर्भेदं।।इन्द्रादि.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्योतस्वरूपं, शुद्धचिद्रूपं, प्रभु प्रसाद प्रत्यक्ष भयो।
अज्ञान नशायो, शमसुख पायो, जाननहार जनाय रह्यो।।इन्द्रादि.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बिच कर्ममहावन, भट्क्यो भगवन्, शिवमारग तुम ढिंग पायो।
तप अग्नि जलाऊँ, कर्म नशाऊँ, स्वर्णिम अवसर अब पायो।।इन्द्रादि.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादि विकार, दुखदातारं, त्याग सहज निजपद ध्याऊँ।
साधूँ हो निर्भय, शुद्धरत्नत्रय, अविनाशी शिवफल पाऊँ।।इन्द्रादि.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

करि अर्घ्य अनूपं, हे शिवभूपं, द्रव्य-भावमय भक्ति करूँ।
तज सर्व उपाधि-बोधि-समाधि, पाऊँ निज में केलि करूँ।।इन्द्रादि.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द-सरसी)

नगरी सजी रत्न वर्षाये, सोलह सपने देखे मात।
षष्ठमि सुदी आषाढ़ प्रभू का, गर्भ कल्याण हुआ विख्यात।।
भावसहित प्रभु करूँ अर्चना, शुद्धातम कल्याण स्वरूप।
आनन्द सहित आप-सम ध्याऊँ, पाऊँ अविचल बोध अनूप।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकों में भी कुछ क्षण को तो, साता का संचार हुआ।
चैत सुदी तेरस को प्रभुवर, जन्म जगत सुखकार हुआ।।भाव..।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीरण तृण-सम विषयभोग तज, बाल ब्रह्मचारी हो नाथ।
दशमी मगसिर कृष्णा के दिन जिनदीक्षा धारी जिननाथ।।भाव..।।

ॐ ह्रीं मगसिरकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी सित वैशाख तिथी को, आत्मलीन हो घाति विनाश।
धन्य-धन्य महावीर प्रभु को, हुआ सु केवलज्ञान प्रकाश।।भाव..।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तिम शुक्लध्यान प्रगटाया, शेष अघाति विमुक्त हुए।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, वीर जिनेश्वर सिद्ध हुए।।भाव..।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जयमाला

सोरठा- वर्द्धमान श्रीवीर, सन्मति अरु महावीर जी।
जयवन्तो अतिवीर, पंचनाम जग में प्रगट।।

(छन्द-जोगीरासा) (तर्ज-जिनवाणी जग मैया...)

चित्स्वरूप प्रगटाया प्रभुवर, चित्स्वरूप प्रगटाया।
स्वयं स्वयंभू होय जिनेश्वर, चित्स्वरूप प्रगटाया।।टेक।।
हो सबसे निरपेक्ष सिंह के, भव में सम्यक् पाया।
स्वाश्रित आत्माराधन का ही, सत्य मार्ग अपनाया।।1।।
बढ़ती गई सु भाव-विशुद्धि, दशवें भव में स्वामी।
आप हुए अन्तिम तीर्थंकर, भरतक्षेत्र में नामी।।2।।
इन्द्रादिक से पूजित जिनवर, सम्यक्ज्ञानि विरागी।
इन्द्रिय भोगों की सामग्री, दुख निमित्त लख त्यागी।।3।।
जब विवाह प्रस्ताव आपके, सन्मुख जिनवर आया।
आत्मवंचना लगी हृदय में, दृढ़ वैराग्य समाया।।4।।
अज्ञानी सम भव में फँसना, 'क्या इसमें चतुराई ?'।
भव-भव में भोगों में फँसकर, भारी विपदा पाई।।5।।
उपादेय निज शुद्धातम ही, अब तो भाऊँ ध्याऊँ।
धरूँ सहज मुनिधर्म परम साधक हो शिव पद पाऊँ।।6।।
इस विचार का अनुमोदन कर, लौकान्तिक हर्षाये।
आप हुए निर्ग्रन्थ ध्यान से, घातिकर्म भगाये।।7।।
हुए सु गौतम गणधर पहले, दिव्यध्वनि सुखकारी।
खिरी श्रावणी वदि एकम को, त्रिभुवन मंगलकारी।।8।।
धर्मतीर्थ का हुआ प्रवर्त्तन, आत्मबोध जग पाया।
प्रभो! आपका शासन पाकर, रोम-रोम हुलसाया।।9।।
वर्ष बहत्तर आयु पूर्ण कर, सिद्धालय तिष्ठाये।
तुम गुण चिन्तन मोह नशावे, भेदज्ञान प्रगटावे।।10।।

Scanned with CamScanner

सहज नमन कर पूजन का फल और न कुछ भी चाहूँ।
सहज प्रवर्ते तत्त्वभावना, आवागमन मिटाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(बसन्ततिलका)

सत्तीर्थ वीर प्रभु का जग में प्रवर्ते, निज तत्त्वबोध पाकर सब लोक हर्षे।
दुर्भावना न आवे मन में कदापि, निर्विघ्न निर्विकारी आराधना प्रवर्ते।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

समुच्चय जयमाला

दोहा- मोहादिक रिपु जीतकर, जय पाई अविकार।
जयमाला गाऊँ सुखद, गुण चिन्तन के द्वार।।

(छन्द-त्रोटक)

जय मंगलमय जय लोकोत्तम, जय अनन्य शरण जय पुरुषोत्तम।
जय महावीर जय महाधीर, अवबोध-सिन्धु अति ही गम्भीर।।
जय तेजपुंज जय दिव्यरूप, हे प्रशममूर्ति अति शान्तरूप।
जय वचन-अगोचर हे महेश, जय स्वानुभूति-गोचर जिनेश।।
जय ज्ञानमात्र परभाव-शून्य, जय गुण अनंत से सदा पूर्ण।
जय वीतमोह जय वीतक्रोध, जय वीतमान जय वीतलोभ।।
जय वीत क्षोभ जय वीत काम, निर्दोष परम प्रभुता ललाम।
दृग-ज्ञान-सुःख-वीरज-अनंत, जय गुण अनंत महिमा अनंत।।
ध्रुव धर्म-तीर्थ पाकर जिनेश, आनंद हुआ उर में विशेष।
प्रभु दूर हुए सब पाप-ताप, संतुष्ट आप में हुआ आप।।
देखत प्रभु को निज रूप दिखे, दुर्मोह मिटे दुष्कर्म नशे।
विभु धन्य अलौकिक गुण-निधान, करते भक्तों को निज समान।।
जिन आराधन की लगी लगन, मैं द्रव्य भाव से बनूँ नगन।
भाऊँ-ध्याऊँ ज्ञायक स्वरूप, देहादि दिखें अति भिन्नरूप।।

Scanned with CamScanner

उपसर्ग परीषह सहज जीत, अपनाऊँ मैं परमार्थ-नीति।
ऐसा पुरुषार्थ जगे स्वयमेव, साम्राज्य मुक्ति का लहूँ देव।।
भव-भव का दुखमय भ्रमण नाश, तिष्ठूँ सिद्धालय आप-पास।
सब जीव लहें निज तत्त्वज्ञान, पावें सम्यग्दर्शन महान।।
मैत्री-प्रमोद-कारूण्य-भाव, माध्यस्थ धार साधें स्वभाव।
विपरीत विकल्पों को सु त्याग, सब लगें लगावें मुक्तिमार्ग।।
दिन दूना धर्म प्रभाव बढ़े, दुर्व्यसन उपद्रव दूर रहे।
चित्त शान्त रहे सन्तुष्ट रहे, नित आनन्द मंगल सहज बढ़े।।
भक्ति-वश निज-हित के निमित्त, पूजन विधान कीना पवित्र।
प्रभु भूल-चूक सब क्षमा होय, मम परिणति पूर्ण पवित्र होय।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- जिस विधि से जिनवर लहा, परमानन्द अम्लान।
उस विधि से ही हे विभो! होऊँ आप समान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

ये जिनेन्द्रं न पश्यन्ति, पूजयन्ति स्तुवन्ति न।
निष्फलं जीवितं तेषां, धिक् च गृहाश्रमम्।।

(पद्मनन्दि पंचविंशति, 6/15)

जो जिनेन्द्र भगवान के दर्शन, पूजन, स्तवन आदि नहीं करते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। उनके गृहस्थाश्रम को धिक्कार है।

जिनवर पूजा मंगलकारी, गुरु उपासना आनंदकारी।
स्वाध्याय-सद्ज्ञान-प्रकाशे, संयम से सब दुःख विनाशे।।
तप सब कर्म नशावनहारा, उत्तमदान सर्व सुखकारा।
षट् आवश्यक नित पालीजे, धर्माराधन में चित्त दीजे।।

Scanned with CamScanner

भाग-5 : विविध अर्घ्यावलि व विसर्जन

श्री चौबीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

(दोहा)

आदीश्वर भगवान का, लख स्वरूप अविकार।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति से, नमहूँ त्रियोग संभार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महारिपु जीतकर, पायो पद निर्वाण
अर्घ्य चढ़ाऊँ नमनकर, अजितनाथ भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी सुख शान्ति पथ, दर्शायो सुखकार।
सम्भवनाथ जिनेश को, पूजों मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिनराज का, दर्शन शिवसुख देय।
भाव सहित पूजूँ अहो, अष्टद्रव्य शुभ लेय।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति सुमतिदायक प्रभो, कुमति ध्वान्त हर-भानु।
भाव सहित पूजूँ तुम्हें, पाऊँ ध्रुव कल्याण।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म समान अलिप्त श्री, पद्मप्रभ जिनराय।
समवशरण में राजते, पूजत सुख उपजाय।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहो सुपार्श्व जिनेन्द्र के, चरणन शीश नवाय।
अर्घ्य चढ़ाऊँ हर्ष से, सर्व क्लेश विनशाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

अमृतचन्द्र चिदात्मा, चन्द्रप्रभ भगवान।
दर्शायो आनन्दमय, पूजूँ धर उर ध्यान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदन्त या सुविधिप्रभु, शिवपद सुविधि बताय।
आप बसे शिवलोक में, पूजूँ अति हरषाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिन पूजूँ चरण, मोह-ताप-विनशाय।
शीतलता प्रभु आप-सम, सहजरूप विलसाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयरूप श्रेयांस जिन, परम श्रेय शुद्धात्म।
दर्शायो पूजूँ चरण, पाऊँ पद परमात्म।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम बालयति हो प्रभो, वासुपूज्य भगवान।
ब्रह्मचर्य का भाव धरि, पूजूँ पद अम्लान।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजत विमल जिनेश को, समलभाव नशि जाय।
यही भाव धरि पूजहूँ, तीन लोक के राय।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा अनन्त जिनेश की, शब्दों में नहीं आय।
ज्ञानमाँहिं अवलोक कर, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम धरम दर्शाइया, धर्मनाथ जिनराज।
आनन्द सो पूजूँ प्रभो, सफल होंय सब काज।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म-शान्ति का मूल है, निर्मल भेद विज्ञान।
ज्ञान करायो शान्तिप्रभु, पूजूँ नित धर ध्यान।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

प्राणी-मात्र के प्रति प्रभो, दया सिखाई आप।
पूजूँ कुन्थु जिनेश को, जीवन हो निष्पाप।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजत श्री अरनाथ को, भविजन चित्त हुलसाय।
जैसे ऊगत भानु के, सहज जलज खिल जाय।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह-मल्ल को जीतकर, आप हुए शिवनाथ।
मल्लिनाथ पद पूजते, देखूँ चैतन्यनाथ।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिव्रत धारूँ चाव सौं, अपने हित के काज।
यही भाव धरि पूजहूँ, मुनिसुव्रत जिनराज।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सविनय अर्घ्य चढ़ाय के, नमन करूँ नमिनाथ।
दर्शन पाकर आपका, भविजन होंय सनाथ।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्याह समय दीक्षा धरी, नेमीश्वर महाराज।
परम ब्रह्म पद दृष्टि धरि, पूजूँ शिवपद काज।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहो-अहो श्री पार्श्वप्रभु, किया कमठ मद चूर।
भक्ति सहित प्रभु पूजते, विपद होय सब दूर।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज बल से जीता प्रभो, महासुभट दुष्काम।
पूजूँ वीर जिनेश को, होऊँ मैं निष्काम।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

विविध अर्घ्यावलि

श्री समवशरण का अर्घ्य

अद्भुत रचना समवशरण की, प्रभु स्वरूप अविकार है।
दिव्य ध्वनि में ध्वनित हो रहा, अहो समय का सार है।।
वीतराग प्रभु के दर्शन से, खुला मुक्ति का द्वार है।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाऊँ, आनन्द अपरम्पार है।।

ॐ ह्रीं समवशरणमध्यविराजमान श्रीजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मानस्तंभ का अर्घ्य

देखत मान गले मानी का, मानस्तंभ सार्थक नाम।
चतुर्मुखी जिनबिम्ब विराजें, भक्ति सहित मैं करूँ प्रणाम।।
द्रव्य-भावमय अर्घ्य चढ़ाकर, भाऊँ भावना मंगलकार।
ज्ञानमयी निर्मान अवस्था, हे जिनवर! पाऊँ अविकार।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भेषु विराजमान श्रीजिनबिम्बेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री तीर्थक्षेत्र को अर्घ्य

तीर्थ तत्त्वमय है सदा, ज्ञायक शाश्वत तीर्थ।
अभेद ज्ञायक भावना, है व्यवहार सुतीर्थ।।
ज्ञायक भावना भावते, संत जहाँ तिष्ठाय।
ते ही क्षेत्र सु जगत में, तीर्थक्षेत्र कहलाय।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदादिसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

पूजूँ मैं श्री पञ्च परम गुरु, उनमें प्रथम श्री अरहन्त।
अविनाशी अविकारी सुखमय, दूजे पूजूँ सिद्ध महन्त।।1।।
तीजे श्री आचार्य तपस्वी, सर्व साधु नायक सुखधाम।
उपाध्याय अरु सर्व साधु प्रति, करता हूँ मैं कोटि प्रणाम।।2।।
करूँ अर्चना जिनवाणी की, वीतराग विज्ञान स्वरूप।
कृत्रिमाकृत्रिम सभी जिनालय, वन्दूँ अनुपम जिनका रूप।।3।।

Scanned with CamScanner

पंचमेरु नन्दीश्वर वन्दूँ, जहाँ मनोहर हैं जिनबिम्ब।
जिनमें झलक रहा है प्रतिपल, निज ज्ञायक का ही प्रतिबिम्ब।।4।।
भूत भविष्यत् वर्तमान की, मैं पूजूँ चौबीसी तीस।
विदेह क्षेत्र के सर्व जिनेन्द्रों, के चरणों में धरता शीष।।5।।
तीर्थंकर कल्याणक वन्दूँ, कल्याणक अरु अतिशय क्षेत्र।
कल्याणक तिथियाँ मैं चाहूँ, और धार्मिक पर्व विशेष।।6।।
सोलहकारण दशलक्षण अरु, रत्नत्रय वन्दूँ धर चाव।
दयामयी जिनधर्म अनूपम, अथवा वीतरागता भाव।।7।।
परमेष्ठी का वाचक है जो, ओंकार वन्दूँ मैं आज।
सहस्रनाम की करूँ अर्चना, जिनके वाच्य मात्र जिनराज।।8।।
जिसके आश्रय से ही प्रगटें, सभी पूज्यपद दिव्य ललाम।
ऐसे निज ज्ञायक स्वभाव की, करूँ अर्चना मैं अभिराम।।9।।
दोहा- भक्तिमयी परिणाम का, अद्भुत अर्घ्य बनाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, ज्ञायक-दृष्टि लाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो, द्वादशांगजिनवाणीभ्यो, उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय, दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो, त्रिलोकसम्बन्धि-कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो, पंचमेरौ अशीति चैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वरद्वीपस्थ द्विपंचाशज्जिनालयेभ्यो, श्री सम्मेदशिखर,-गिरनारगिरि-कैलाशगिरी-चम्पापुर-पावापुरादिसिद्धक्षेत्रेभ्यो, अतिशयक्षेत्रेभ्यो, सीमंधरादि-विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो, ऋषभादिचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो, भगवज्जिनसहस्राष्टनामेभ्यश्च अनर्घ्यपद-प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति पाठ

(हरिगीतिका)

हूँ शान्तिमय ध्रुव ज्ञानमय, ऐसी प्रतीति जब जगे।
अनुभूति हो आनन्दमय, सारी विकलता तब भगे।।1।।
निज भाव ही है एक आश्रय, शान्ति-दाता सुखमयी।
भूल स्व दर-दर भटकते, शान्ति कब किसने लही।।2।।
निज घर बिना विश्राम नाहीं, आज यह निश्चय हुआ।
मोह की चट्टान टूटी, शान्ति निर्झर बह रहा।।3।।

Scanned with CamScanner

यह शान्ति धारा हो अखण्ड, चिरकाल तक बहती रहे।
होवें निमग्न सुभव्यजन, सुख शान्ति सब पाते रहें।।4।।
पूजोपरान्त प्रभो यही, इक भावना है हो रही।
लीन निज में ही रहूँ, प्रभु और कुछ वाँछा नहीं।।5।।

दोहा- सहज परम आनन्दमय, निज ज्ञायक अविकार।
स्व में लीन परिणति विषैं, बहती समरस धार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि) (यहाँ नौ बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें)

विसर्जन पाठ

(वीरछन्द)

थी धन्य घड़ी जब निज ज्ञायक की, महिमा मैंने पहिचानी।
हे वीतराग सर्वज्ञ महा-उपकारी, तव पूजन ठानी।।1।।
सुख हेतु जगत में भ्रमता था, अन्तर में सुख सागर पाया।
प्रभु निजानन्द में लीन देख, मोहि यही भाव अब उमगाया।।2।।
पूजा का भाव विसर्जन कर, तुमसम ही निज में थिर होऊँ।
उपयोग नहीं बाहर जावे, भव क्लेश बीज अब नहीं बोऊँ।।3।।
पूजा का किया विसर्जन प्रभु, और पाप भाव में पहुँच गया।
अब तक की मूरखता भारी, तज नीम हलाहल हाय पिया।।4।।
ये तो भारी कमजोरी है, उपयोग नहीं टिक पाता है।
तत्त्वादिक चिन्तन भक्ति तज ये दूर पाप में जाता है।।5।।
हे बल अनन्त के धनी विभो! भावों में तब तक बस जाना।
निज से बाहर भटकी परिणति, निज ज्ञायक में ही पहुँचाना।।6।।
पावन पुरुषार्थ प्रकट होवे, बस निजानन्द में मग्न रहूँ।
तुम आवागमन विमुक्त हुए, मैं पास आपके जा तिष्ठूँ।।7।।

दोहा- अक्षर पद मात्रा विधि, हीनाधिक जो कोय।
प्रभु अज्ञान प्रमाद से हुई क्षमा सो होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Scanned with CamScanner

भाग-6: श्री चौबीस तीर्थंकर स्तुति

(1) श्री आदिनाथ स्तुति

आदीश्वर स्वामी, वन्दूँ मैं बारम्बार।
धन्य-घड़ी प्रभु दर्शन पाये, वन्दूँ बारम्बार।।टेक।।
कर्मभूमि की आदि में, मुक्तिमार्ग-अविकार।
दर्शायो आनन्दमय, कियो परम-उपकार।।1।।
परम-शान्तमुद्रा अहो, भेदज्ञान दर्शाय।
दिव्यध्वनि सुनि आपकी, विभ्रम सर्व पलाय।।2।।
भव्य अनेकों तिर गये, ले निज-पद-आधार।
इस अशरण संसार में, आपहि तारण हार।।3।।
मुक्ति मार्ग प्रभु आपका, हमें आज भी प्राप्त।
भेदज्ञानियों से अहो, निज में ही है आप्त।।4।।
प्रभुता प्रभुवर आप-सम, दीखे अन्तर माँहिं।
होय परम निर्ग्रन्थता, भाव सहज उमगाहिं।।5।।
नहीं प्रयोजन जगत से, चाह न रही लगार।
तृप्त स्वयं में ही रहूँ, सहजरूप सुखकार।।6।।

(2) श्री अजितनाथ स्तुति

अजित जिनेश्वर साँचे ईश्वर, नमूँ-नमूँ मैं अविकारी।
मोह-तिमिर-हर ज्ञान दिवाकर, शोभे मूरति अति प्यारी।।टेक।।
स्वाश्रय से ही मोह जीतकर, परम जितेन्द्रिय आप हुए।
ध्यान मग्न हो घाति कर्म तज, तीन लोक के नाथ हुए।।
धर्मतीर्थ का किया प्रवर्तन, सब ही को आनन्दकारी।।1।।
हे स्वामिन्! जो तुमको जाने, द्रव्य और गुण पर्यय से।
सो जाने अपना शुद्धातम, मोह दूर भगता उससे।।
प्रभु समान ही हो जावे वह, सहज मुक्ति का अधिकारी।।2।।

Scanned with CamScanner

कल्पवृक्ष अरु चिन्तामणि ये, पुण्य पदारथ इक भव में।
किंचित् कुछ सामग्री देते, नहीं सहायक शिवमग में।।
किन्तु जिनेश्वर भक्ति तेरी, निश्चय शिवसुख दातारी।।3।।

हे परमेश्वर! यही भावना, तुम-सम जाननहार रहूँ।
नहीं प्रयोजन पर से किंचित्, सहज तृप्त अविकार रहूँ।।
परम अहिंसा धर्म जगत में, जयवन्तो मंगलकारी।।4।।

(3) श्री सम्भवनाथ स्तुति

ज्ञानमात्र प्रभु हूँ यह श्रद्धा, अनुभव थिरता रत्नत्रय।
से पर्यय में प्रगटी प्रभुता, हुआ सकल कर्मों का क्षय।।1।।
तीन लोक में परमपूज्य, देवाधिदेव फिर कहलाये।
निरबाधित आनन्द सहज ही, प्रतिक्षण अनुभव में आये।।2।।
सम्यक् हुआ परिणमन प्रभुवर, वन्दनीय हे सम्भवजिन।
मुक्ति-मार्ग निज में ही सम्भव, मोह-द्वेष-रागादिक बिन।।3।।
आत्मविमुख रह कोटि उपायों, से भी शान्ति न पाई है।
मैं करूँ वन्दना सम्भवजिन, निज में ही शान्ति दिखाई है।।4।।

(4) श्री अभिनंदननाथ स्तुति

अभिनन्दन स्वामी, यही भावना सार।
पर से अति निरपेक्ष निराकुल, हो परिणति अविकार।।टेक।।
पुण्योदय की लख सम्पत्ति, हो नहिं हर्ष लगार।
पापोदय की देख विपत्ति हो न खेद दुखकार।।1।।
भेदज्ञान की धारा वर्ते, शिवस्वरूप शिवकार।
ज्ञातादृष्टा रहूँ सहज ही, निज में तृप्ति अपार।।2।।
पर का कुछ स्वामित्व न भासे, कर्तृत्व हो न लगार।
इष्ट-अनिष्ट कल्पना नाशे, हो समता सुखकार।।3।।

Scanned with CamScanner

धैर्य विघ्न बाधाओं में धर, करूँ सु तत्त्व-विचार।
दोष नहीं पर का कुछ देखूँ, द्रव्यदृष्टि अवधार।।4।।
असफलता में नहीं अकुलाऊँ, पूरव कर्म निहार।
धर्मध्यान में चित्त लगाऊँ, ध्याऊँ निजपद सार।।5।।
संयम प्रति हों प्राण निछावर, लगें नहीं अतिचार।
हो निर्ग्रन्थ समाधि सु पाऊँ, सर्व प्रपंच विडार।।6।।
महाभाग्य से प्रभु को पाया, मन में हर्ष अपार।
चरण-शरण में जीवन बीते, अभिनंदन शत बार।।7।।

(5) श्री सुमतिनाथ स्तुति

जिस मति का विषय स्व-तत्त्व अहो, वही सुमति कहलाती है।
हे सुमतिनाथ तव द्रव्यदृष्टि, अंतर में सुमति जगाती है।।
तव वीतराग सर्वज्ञ दशा, लख राग शून्य और ज्ञान पूर्ण।
निज भाव दृष्टि में आता है, आकुलता नहीं दिखाती है।।
हो नमन कोटिश: प्रभो आपको, अंतर निधि दर्शाते हो।
निधि पाने का भी अंतर में ही, सहज उपाय सुझाते हो।।
ज्यों मिश्री स्वयं मिठास पूर्ण, मैं भी स्वभावत: त्यों सुखमय।
सुख हेतु नहीं, कुछ भी करना, मंगल ध्वनि हृदय गुंजाती है।।
जितने भी करने के विकल्प, वे सब ही दुख उपजाते हैं।
निज पर स्वभाव को भूल, मूढ़ कर्तृत्व धार अकुलाते हैं।।
हे नाथ! आपका दर्शन कर, सम्यक् प्रतीति जागी उर में।
कर्त्तापन तज निज भाव लखा, आकुलता नहीं दिखाती है।।
अब यही भावना है जिनवर, उपयोग नहीं बाहर जावे।
बस परम पूज्य जिनवर तुम सम, ही निज स्वभाव में रम जावे।।
सर्वोत्कृष्ट मम परम भाव, चेतन वैभव परमाभिराम।
लखकर निरपेक्ष सहज सुखमय, आह्लाद लहर उमड़ती है।।

Scanned with CamScanner

(6) श्री पद्मप्रभनाथ स्तुति

(तर्ज-तुम्हारे दर्श बिन स्वामी....)

अहो प्रभु पद्म की मूरति, परम आनन्द दाता है।
ध्येय ध्रुवरूप शुद्धातम, सहज अनुभव में आता है।।टेक।।

नशे अविवेक दुःखकारी, भगे दुर्मोह-तम तत्क्षण।
सर्व दुर्वासना मिटती, ज्ञान सूरज उगाता है।।1।।

ज्यों दृष्टा ज्ञाता हैं जिनवर, त्यों मैं भी दृष्टा ज्ञाता हूँ।
सर्व दोषों से नित न्यारा, शुद्ध चिन्मय दिखाता है।।2।।

मिली सुख शान्ति निज में ही, अपरिमित प्रभुता निज में ही।
तृप्त निज में रहूँ स्वामिन्, न बाहर कुछ सुहाता है।।3।।

नहीं अब भय रहा कुछ भी, प्रलोभन भी न कुछ प्रभुवर।
स्वयं सिद्ध सहज परमातम पूर्ण शाश्वत सुहाता है।।4।।

सहज भाऊँ सहज ध्याऊँ, सहज रम जाऊँ निज में ही।
सहज कट जावें भव बन्धन, मुक्ति पद सहज आता है।।5।।

(7) श्री सुपार्श्वनाथ स्तुति

भगवन सुपार्श्व प्रभुता स्व पार्श्व, मुझको प्रतीति अब आई है।
है व्यर्थ भटकना बाहर में, प्रभु झूठी भ्रान्ति पलाई है।।1।।

प्रभुता आत्मा में नहिं होती, तो कैसे प्रगट हुई स्वामी।
पर, प्रगट हुई साक्षात् दिखे, तव परिणति में अन्तरयामी।।2।।

मैं भी अन्तर्बल द्वारा प्रभु, निज की महिमा प्रगटाऊँगा।
रागादि स्वयं उत्पन्न न हों, जब निज में ही रम जाऊँगा।।3।।

कर्मादिक भी खुद भग जावें, परमात्म दशा हो जायेगी।
मैं सविनय शीष झुकाता हूँ, कब धन्य घड़ी वह आयेगी।।4।।

Scanned with CamScanner

(8) श्री चन्द्रप्रभ स्तुति

अमृत झरे चन्द्र से त्यों ही, दिव्यध्वनि प्रभु बरसाई।
सुनकर भव्यजनों की जिनवर, मिथ्यादृष्टि विनसाई।।1।।
शुद्धातम अमृतचन्द्र अहो, रत्नत्रय ही परमामृत।
आधि-व्याधि-उपाधिरहित, आराध्य जगत में है निजपद।।2।।
निजस्वभाव ही एकमात्र, साधन है शिवपद पाने का।
सच पूछो तो निजपद ही, शिवपद है साध्य जमाने का।।3।।
तब दर्शन पाकर चन्द्र प्रभो, आनन्द हृदय में छाया है।
तुम सम ही निज में रम जाऊँ, प्रभु सविनय शीश नवाया है।।4।।

(9) श्री पुष्पदंत स्तुति

मुक्ति की युक्ति निज में ही, हे सुविधिनाथ दर्शायी है।
निज पूर्ण स्वभाव निरख प्रभुवर, कर्तृत्व बुद्धि विनशाई है।।1।।
सम्यक्-प्रतीति अनुभव-थिरता, निज परमभाव में हो जावे।
परभावों से निर्वृत्ति हो, अरु निज में ही थिरता आवे।।2।।
परमातम खुद ही कहलाये, अरु अनन्त चतुष्टय प्रगटावे।
तब अल्पकाल में कर्म रहित, अविनाशी शिवपद को पावे।।3।।
हे शिवस्वरूप शिवकार अहो! निजज्ञायकतत्त्व दिखाया है।
वन्दन है पुष्पदन्तस्वामी, अनुपम आनन्द सु-पाया है।।4।।

(10) श्री शीतलनाथ स्तुति

शीतलता का स्रोत आत्मा, आज दृष्टि में आया है।
मिथ्या तपन मिटी सब प्रभुवर, मुक्ति मार्ग प्रगटाया है।।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, शत-शत बार नमन हो।
अब पुरुषार्थ आप-सा प्रगटे, भव में नहीं भ्रमण हो।।
सर्व समागम मिला आज प्रभु, नहीं बहाने का कुछ काम।
तोड़ सकल जग द्वन्द फन्द, मैं निज में ही पाऊँ विश्राम।।
परम प्रतीति सु उर में जागी, हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम।
निज महिमा में मग्न होय प्रभु, पाऊँ शिवपद परम ललाम।।

Scanned with CamScanner

(11) श्री श्रेयांसनाथ स्तुति

यह श्रेय आपको ही स्वामी, मम परम श्रेय दर्शाया है।
अश्रेय रूप रागादि विकारों का, भ्रम-जाल नशाया है।।
मंगलमय मंगलकरन प्रभो, बस वीतराग-विज्ञान कहा।
जिसका आश्रय रागादि शून्य, चिन्मात्र एक शुद्धात्म अहा।।
जग में वे सभी महान हुए, जिन वीतराग-विज्ञान गहा।
अज्ञान राग-द्वेषादि विकारों से, चहुँगति में दुख लहा।।
हो गया आज निश्चय प्रभुवर, मुझमें रागादि क्लेश नहीं।
कल्याण धाम परमाभिराम, पाई मैं निर्मल दृष्टि यहीं।।
अब यावत रागादि आवें, मैं निज में नहीं मिलाऊँगा।
नव तत्त्वों से अति भिन्न एक, चिन्मात्र रूप निज ध्याऊँगा।।
मैं करूँ वन्दना यही भावना, निज में ही थिरता पाऊँ।
संकल्प-विकल्प मिटें झूठे, तुम सम ही प्रभुता प्रगटाऊँ।।

(12) श्री वासुपूज्यनाथ स्तुति

हे बाल ब्रह्मचारी इन्द्रादिक, पूजित वासुपूज्य स्वामी।
निज महिमा दर्शायी जग में, सर्वोत्कृष्ट त्रिभुवन नामी।।
जाना मैंने निज का निज से, बढ़कर जग में आराध्य नहीं।
मैं व्यर्थ भटकता मूढ़ बना, निज से बाहर सुख साध्य नहीं।।
मैं स्वयं पूर्ण हूँ अपने में, अब अन्य नहीं कुछ भी चाहूँ।
अन्तर में सुख प्रत्यक्ष लखा, निज अन्तर में ही रम जाऊँ।।
मम ज्ञान मात्र चैतन्य भाव में, शक्ति अनन्त उछलती है।
प्रभु स्वयं शीश झुक जाता है, पाई निज में ही तृप्ति है।।

Scanned with CamScanner

(13) श्री विमलनाथ स्तुति

(छन्द-लावनी)

हे विमलनाथ लख विमल स्वरूप तुम्हारा।
स्वयमेव दिखावे चित्स्वरूप अविकारा।।टेक।।

है सहज चतुष्टयमय शाश्वत परमातम।
है नित्य-निरंजन शुद्ध-बुद्ध शुद्धातम।।
ध्रुव अचल अनुपम ध्येय रूप है आतम।
मंगल स्वरूप है स्वयं सिद्ध शुद्धातम।।
अद्‌भुत महिमा मंडित है जाननहारा।।1।।

एकत्व-विभक्त सहज स्वाभाविक सोहे।
है वचनातीत अचिन्त्य सहज मन मोहे।।
पक्षातिक्रांत अनुभूति रूप सुखकारी।
बस चित्स्वरूप तो चित्स्वरूप अविकारी।।
होकर अन्तर्मुख नाथ प्रत्यक्ष निहारा।।2।।

धनि घड़ी दिवस-धनि सहज प्रभु को पाया।
जिनवर दर्शन कर, फूला नहीं समाया।।
प्रभुवर तुम ही हो साँचे मम उपकारी।
हो भाव-नमन चरणों में प्रभु बलिहारी।।
होवे तुम सम निर्मल पुरुषार्थ हमारा।।3।।

हे नाथ जगत के स्वाँग दिखें सब फीके।
अभिलाष नहीं कुछ शेष पूर्णता दीखे।।
निर्ग्रन्थ रहूँ निर्ग्रन्थ रूप निज भाऊँ।
स्वामिन्! अविरल निज में ही मग्न रहाऊँ।।
मुक्ति प्रगटे स्वयमेव स्वरूप सम्हारा।।4।।

Scanned with CamScanner

(14) श्री अनंतनाथ स्तुति

महाभाग्य से दर्शन पाया, प्रभु अनंत अम्लान।
तुम्हें देखते दीखे अपना आतम देव महान।।1।।
अमृतमय है परम अलौकिक, परमानन्द की खान।
परम पारिणामिक ध्रुव ज्ञायक, है शाश्वत भगवान।।2।।
ज्ञायक आश्रय से ही प्रगटे, रत्नत्रय अम्लान।
अकृत्रिम परमातम ज्ञायक, अक्षय प्रभुतावान।।3।।
अपने धर्मों में व्यापक विभु, अद्भुत वैभववान।
है समर्थ निज की रचना में, निज से वीरजवान।।4।।
ध्रुव मंगल है लोकोत्तम है, अनन्य शरण गुण खान।
सन्मुख आते अहो जिनेश्वर, हुआ सहज श्रद्धान।।5।।
अमृतमय है रूप आपका, अमृतमय परिणाम।
अमृतमय मुद्रा है जिनवर, वचनामृत सुखखान।।6।।
साँचे देव दिया है प्रभुवर, मुक्तिमार्ग का दान।
हम सम्यक् अनुगामी होकर, करें स्व-पर कल्याण।।7।।

(15) श्री धर्मनाथ स्तुति

हे धर्मनाथ! महिमा महान, शब्दों से कही न जाती है।
धर्मी शुद्धातम की अनुभूति में प्रत्यक्ष दिखाती है।।1।।
है स्वानुभूति ही धर्म अहो, जो कर्म-बंध विनशाता है।
दुखमय भवसागर में गिरते, जीवों को शिवसुख दाता है।।2।।
धर्म-धर्म सब कहें परन्तु, धर्म न सच्चा पहिचानें।
ज्ञायक स्वभाव के भान बिना, रागादि भाव में अटकानें।।3।।
हे जिनवर तुमने एकमात्र, वीतराग भाव को धर्म कहा।
जो परम-अहिंसामय रत्नत्रय, अरु दशलक्षण रूप अहा।।4।।
यह पावन धर्म ही मंगलमय, अरु उत्तम शरणभूत स्वामी।
धर्मी है परम पारिणामिक, ध्रुव चिन्मय ज्ञायक अभिरामी।।5।।
निज धर्मी की दृष्टि वर्ते, उपयोग स्वयं में थिर होवे।
निष्काम वन्दना धर्मनाथ, मम धर्मरूप परिणति होवे।।6।।

Scanned with CamScanner

(16) श्री शान्तिनाथ स्तुति

(तर्ज: निज आत्मा में देखो भगवान...)

प्रभु शान्त छवि तेरी, अन्तर में है समाई।
प्रत्यक्ष देख मूरति, शान्ति हृदय में छाई।।टेक।।
शुभ ज्ञानज्योति जागी, आतमस्वरूप जाना।
प्रत्यक्ष आज देखा, चैतन्य का खजाना।।
जो दृष्टि पर में भ्रमती, वह लौट निज में आई।
प्रत्यक्ष देख मूरति, शान्ति हृदय में छाई।।1।।
अक्षय निधि को पाने, चरणों में प्रभु के आया।
पर प्रभु ने मूक रहकर, मुझको भी प्रभु बताया।।
अन्तर में प्रभुता मेरे, निश्चय प्रतीति आई।
प्रत्यक्ष देख मूरति, शान्ति हृदय में छाई।।2।।
हे देव! आपको लख, खुद ही हुआ अकामी।
है आश पर की झूठी, मैं पूर्ण निधि का स्वामी।।
पर्याय हीनता से, मुझमें कमी न आई।
प्रत्यक्ष देख मूरति, शान्ति हृदय में छाई।।3।।
मम भाव-अभाव शक्ति, पामरता मेट देगी।
अभाव-भाव शक्ति, प्रभुता विकास देगी।।
निश्चिन्त होय दृष्टि, निज द्रव्य में रमाई।
प्रत्यक्ष देख मूरति, शान्ति हृदय में छाई।।4।।
सर्वोत्कृष्ट निज प्रभु, तजकर कहीं न जाऊँ।
जिन! बहुत धक्के खाये, विश्राम निज में पाऊँ।।
हो नमन कोटिशः प्रभु, शिवसुख डगर बताई।
प्रत्यक्ष देख मूरति, शान्ति हृदय में छाई।।5।।

Scanned with CamScanner

(17) श्री कुन्थुनाथ स्तुति

मात्र पूरें ही नहीं, निर्मूल वाँछाए करें।
कुछ नहीं देते तदपि, सुखधाम दर्शाते हमें।।टेक।।
सुखरूप निज को भूल करके, भ्रान्तिवश सुख मानते।
धनि कुन्थु जिन तुम बिन कहे, मम सुख स्वरूप दिखावते।।1।।
आत्मा स्वयं परमात्मा, तव दिव्य ध्वनि का सार है।
आराधना निज की करें, हो जायें भव से पार है।।2।।
प्रभु दर्श करके तुच्छता, निज रूप में नहीं भासती।
जब दृष्टि अंतर में टिकी, प्रभुता स्वयं प्रतिभासती।।3।।
छूटें सभी पर भाव प्रभुवर, भावना ये ही प्रबल।
विभु प्रगट होवे मुनिदशा, शुद्धात्म संवेदन सबल।।4।।
निज में ही होवे पूर्ण थिरता, पास बैठूँ आपके।
निष्काम सविनय भाव वंदन, शीश चरणन नायके।।5।।

(18) श्री अरनाथ स्तुति

छोड़ विभूति चक्रवर्ती की, निज वैभव प्रगटाया है।
सम्यक् चारित्र चक्र धारकर, कर्मचक्र विनशाया है।।1।।
धर्मचक्र का किया प्रवर्तन, सिद्धचक्र में जाय बसे।
वस्तुतत्त्व का ज्ञान कराता, श्री जिनवर नयचक्र लसे।।2।।
धर्मचक्र की मुख्य धुरा, सार्थक अरनाम तुम्हारा है।
निज स्वभाव साधक-आराधक, सन्त जनों को प्यारा है।।3।।
दर्शन कर प्रभु भेदज्ञान, निज पर का मैंने पाया है।
निज स्वभाव में ही रम जाऊँ, सविनय शीष नवाया है।।4।।

Scanned with CamScanner

(19) श्री मल्लिनाथ स्तुति

(छन्द-गीतिका)

हे मल्लि जिनवर हो जितेन्द्रिय, आप सहज स्वभाव से।
यौवन समय जीता मदन, निज ब्रह्मचर्य प्रभाव से।।1।।
पाकर अतीन्द्रिय परमसुख, प्रभु तृप्त निज में ही हुए।
निजभाव घातक भोग-दुःख, स्वीकार ही प्रभु नहीं किए।।2।।
हा! गर्त में गिरकर तड़पना, और पछताना अरे!
पीकर हलाहल कौन ज्ञानी, आश जीवन की करे।।3।।
निस्सार निज के शत्रु सम, लख भोग-इन्द्रिय परिहरूँ।
अरु इन्द्रियों से ज्ञान निज, बर्बाद नहीं प्रभुवर करूँ।।4।।
आनन्द भोगों में नहीं, निश्चय परमश्रद्धान है।
आनन्द का सागर स्वयं, शुद्धात्मा भगवान है।।5।।
बातों में जग की मैं न आऊँ, अब न धोखा खाऊँगा।
पावन परम पुरुषार्थ करके, शीघ्र निजपद पाऊँगा।।6।।
नवतत्त्व के भीतर निजात्मा, परम मंगल रूप है।
उपयोगरूप अमूर्त चिन्मय, त्रिजग में चिद्रूप है।।7।।
सर्वोत्कृष्ट अमल अबाधित, परमब्रह्म स्वरूप है।
निज में ही रम जाऊँ सुपाऊँ, ब्रह्मचर्य अनूप है।।8।।
आदर्श पथ दर्शक शरण विभु, एक तुम ही हो अहा।
तव दर्श करके नाथ मुझमें, शक्ति निज जागी महा।।9।।
अब न किंचित् भय अहो, आनन्द का नहिं पार है।
संकल्प एवंभूत हो, बस वन्दना अविकार है।।10।।

Scanned with CamScanner

(20) श्री मुनिसुव्रतनाथ स्तुति

हे मुनिसुव्रत प्रभु हों सुव्रत, अब यही भावना जागी है।
अविरति लगती है दुखदाई, मिथ्यामति मेरी भागी है।।1।।

परिग्रह बोझा सम लगता है, और भोग भुजंग समान लगे।
आनन्द-कन्द अभिराम परम, ज्ञायक में ही उपयोग पगे।।2।।

है धन्य-धन्य निर्ग्रन्थ दशा, आनन्दमय प्रचुर स्वसंवेदन।
विषयों की आशा भी न रही, आरम्भ परिग्रह बिन जीवन।।3।।

प्रभु सम निज में तृप्त रहूँ, रागादि भाव पर जय पाऊँ।
हे निज प्रभुता दर्शक प्रभुवर, चरणों में बलिहारी जाऊँ।।4।।

(सोरठा)

मुनिसुव्रत जिनराज, मुनिव्रत धारूँ चाव सों।
अपने हित के काज, धन्य घड़ी कब आयेगी।।5।।

(21) श्री नमिनाथ स्तुति

जय स्याद्वाद के नायक हो, जिन मुक्तिमार्ग विधायक हो।
नमिनाथ प्रभो मैं नमन करूँ, शुद्धात्म तत्त्व दर्शायक हो।।टेक।।

सकल द्रव्य के गुण अनन्त, पर्याय अनन्त सुजानत हो।
प्रभु धन्य धन्य निज में तन्मय, वहाँ इष्ट अनिष्ट न ठानत हो।।1।।

तुम सम ही निज में रम जाऊँ, बस यही भावना होती है।
समतामय शान्तिमयी जीवन प्रति, परम प्रतीति जगती है।।2।।

मैं स्वयं पूर्ण हूँ हे जिनवर, पर की न रही अब अभिलाषा।
चरणों में शत-शत वंदन है, मेरा प्रभु मुझमें ही भासा।।3।।

Scanned with CamScanner

(22) श्री नेमिनाथ स्तुति

ब्रह्ममय परिणति के हो धारक प्रभु, नेमि जिनवर नमन भाव से नित करूँ।
जग में वैराग्य अनुपम विभो आपका, आप-सा ही दयाभाव चित्त में धरूँ।।1।।
होके भोगों में अंधा भटकता फिरा, घात निज-पर का करता रहा हर्ष धर।
आपके दर्श कर दृष्टि सम्यक् मिली, मेरा चैतन्य चिद्रूप आया नजर।।2।।
हे प्रभो! भावना आपको ध्याय कर, आप ही आप-सा आत्म योगी बनूँ।
तज के किंपाक फल सम विषय भोग मैं, आत्मवैभव का स्वाधीन भोगी बनूँ।।3।।
चाहे अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता, होवे समतामयी नाथ परिणति मेरी।
भवरहित भाव चैतन्य में लीन हो, हे प्रभो! अब मिटे मेरी भव-भव फेरी।।4।।

(23) श्री पार्श्वनाथ स्तुति

पारस प्रभु की छवि सुखकारी, वीतराग मूरत मनहारी।टेक।।
पद्मासन अरु नासा दृष्टि, धर्मामृत की करती वृष्टि।
अद्भुत मुद्रा है हितकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी।।1।।
निरखत परमानन्द उपजावे, भेद ज्ञान उर में प्रगटावे।
सब संक्लेश मिटें दुखकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी।।2।।
प्रभु की महिमा कैसे गावें, इन्द्रादिक भी पार न पावें।
चरित नाथ का मंगलकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी।।3।।
मन में जिनवर यही भावना, करें आप सम आत्मसाधना।
साम्यभाव हो मंगलकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी।।4।।
चित्त मलिन नहीं होने पावे, निरतिचार संयम प्रगटावे।
प्रभु चरणों में ढोक हमारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी।।5।।
ऐसा निश्चल ध्यान लगावें, कर्म-कलंक समूल नशावें।
पंचमगति पावें अविकारी, पारस-प्रभु की छवि सुखकारी।।6।।
दिव्य शान्तिमय तीर्थ आपका, परम शांत है तत्त्व आपका।
हो प्रभावना मंगलकारी, पारस प्रभु की छवि सुखकारी।।7।।

Scanned with CamScanner

(24) श्री महावीर स्तुति

हे वीरनाथ तुम दर्शन कर निज दर्शन करने आये हैं।
हम वीर नाथ की भक्ति कर वैराग्य बढ़ाने आये हैं।।टेक।।
तुमको बिन जाने हे स्वामी, भव भव में व्यर्थ भ्रमाते थे।
सुख की आशा से विषयों में, फँसकर दुख ही दुख पाते थे।।
अब तुम साक्षी में हे जिनवर, शिवमारग पाने आये हैं।।1।।
जब ही देखा जिनरूप अहो, विश्वास सहज ही जागा है।
आतम सुखमय सुख का कारण, दुर्मोह सहज ही भागा है।।
प्रभु सहज प्राप्य की प्राप्ति का, पुरुषार्थ जगाने आये हैं।।2।।
घबराया चित्त प्रपंचों से, अब भोग-रोग-सम लगते हैं।
इनमें फँसकर मोही प्राणी, नित स्वयं-स्वयं को ठगते हैं।।
निवृत्तिमय निर्ग्रन्थ दशा, तुम सम प्रगटाने आये हैं।।3।।
निरपेक्ष रहें सब जग भर से, निर्द्वन्द्व स्वयं में लीन रहें।
निज वैभव में सन्तुष्ट रहें, निज प्रभुता में लवलीन रहें।।
प्रभु परमज्योतिमय परमानन्दमय, निजपद पाने आये हैं।।4।।
अन्तर में परमातम देखा, अन्तर में मारग पाया है।
अन्तर दृष्टि जब प्रगट हुई, आनन्द न हृदय समाया है।।
मन शान्त हुआ निष्काम भाव से, शीष झुका हर्षाये हैं।।5।।

(25) श्री वीर जिनेश्वर!

वीर जिनेश्वर अब तो मुझको, मुक्ति मार्ग बतलाओ।
निज को भूल बहुत दुःख पाये, अब मत देर लगाओ।।टेक।।
जाना नहीं आपको मैंने, पंच-पाप में लीन हुआ।
आतमहित में रहा आलसी, विषयन माहिं प्रवीन हुआ।।
छूटैं विषय-कषाय प्रभो, ऐसा पुरुषार्थ जगाओ।।1।।

Scanned with CamScanner

पर में इष्ट-अनिष्ट ठानकर, हर्ष-विषाद सु-माना।
पर निरपेक्ष सहज आनन्दमय, ज्ञायकतत्त्व न जाना।।
महिमावंत परम ज्ञायक प्रभु, अब मुझको दरशाओ।।2।।
आस्रव-बंध हैं दुख के कारण, संवर-निर्जरा सुख के।
चतुर्गति दुखरूप अवस्था, सुख मुक्ति में प्रगटे।।
अब तो स्वामी शिवपथ में, मुझको भी शीघ्र लगाओ।।3।।
ऐसी स्तुति करते-करते, इकदिन मन में आई।
कैसे अन्तस्तत्त्व 'आत्मन्', बाहर देय दिखाई।
प्रभो आपकी मुद्रा कहती अन्तर्दृष्टि लाओ।।4।।
मुक्ति की सच्ची युक्ति पा, अपनी ओर निहारा।
प्रभु-सी प्रभुता निज में लखकर, आनन्द हुआ अपारा।।
जागी यही भावना अब तो, निज में ही रम जाओ।।5।।
दुष्टों से बच पितुगृह आकर, कन्या ज्यों हरषावे।
पितु भी उसको धूमधाम से, निजघर में पहुँचावे।।
जग से त्रसित शरण त्यों आया, प्रभु शिवपुर पहुँचाओ।।6।।

(26) श्री वीर शासन दशक

वीरनाथ का मंगल शासन, जग में नित जयवंत रहे।
स्वानुभूतिमय श्री जिनशासन, जग में नित जयवंत रहे।।टेक।।
श्री जिनशासन के आधार, भव सागर से तारणहार।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, जग में नित जयवंत रहें।।1।।
वस्तु स्वरूप दिखावन हार, हेयाहेय बतावनहार।
नित्य बोधिनी माँ जिनवाणी, जग में नित जयवंत रहे।।2।।
मुक्तिमार्ग विस्तारनहार, धर्ममूर्ति जीवन अविकार।
रत्नत्रय धारक मुनिराज, जग में नित जयवंत रहें।।3।।
चैत्य-चैत्यालय मंगलकार, धर्म संस्कृति के आधार।
सहज शान्तिमय धर्मतीर्थ सब, जग में नित जयवंत रहें।।4।।

Scanned with CamScanner

देव गुरु की मंगल अर्चा, आनंदमयी धर्म की चर्चा।
स्याद्वादमय ध्वजा हमारी, जग में नित जयवंत रहे।।5।।
अष्ट अंगमय सम्यग्दर्शन, अनेकांतमय जीवन दर्शन।
सहज अहिंसामयी आचरण, जग में नित जयवंत रहे।।6।।
रहें सहज ही ज्ञातादृष्टा, हो विवेकमय निर्मल चेष्टा।
वीतराग विज्ञान परिणति, जग में नित जयवंत रहे।।7।।
तत्त्वज्ञान को सब ही पावें, मुक्तिमार्ग सब ही प्रगटावें।
सुखी रहें सब जीव भावना, जग में नित जयवंत रहे।।8।।
जिनशासन है प्राण हमारा, मंगलोत्तम शरण सहारा।
नमन सहज अविकारी सुखमय, जग में नित जयवंत रहे।।9।।
सेवें जिनशासन सुखकारी, शान बढ़ावें मंगलकारी।
सत्यपन्थ निर्ग्रन्थ दिगम्बर, जग में नित जयवंत रहे।।10।।

(27) श्री चन्द्रप्रभ स्तुति

अशरण जग में चन्द्रनाथ जिन, साँचे शरण तुम्हीं हो।
भव सागर से पार लगाओ, तारण-तरण तुम्ही हो।।टेक।।
दर्शन पाकर अहो जिनेश्वर, मन में अति उल्लास हुआ।
देहादिक से भिन्न आत्मा, अन्तर में प्रत्यक्ष हुआ।।
आराधन की लगी लगन प्रभु, परमादर्श तुम्हीं हो।
भवसागर से पार लगाओ, तारण-तरण तुम्हीं हो।।1।।
अद्भुत प्रभुता झलक रही है, निरखत हुआ निहाल मैं।
रत्नत्रय की निधियाँ बरसे, हुआ सु मालामाल मैं।।
समतामय ही जीवन होवे, प्रभु अवलम्ब तुम्हीं हो।
भवसागर से पार लगाओ, तारण-तरण तुम्हीं हो।।2।।
मोह न आवे क्षोभ न आवे, ज्ञाता मात्र रहूँ मैं।
अविरल ध्याऊँ चित्स्वरूप मैं, अक्षय सौख्य लहूँ मैं।।
हो निष्काम वन्दना स्वामी, मेरे नाथ तुम्हीं हो।
भवसागर से पार लगाओ, तारण-तरण तुम्हीं हो।।3।।

Scanned with CamScanner

(28) श्री शान्तिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ स्तुति

(लावनी)

हे शान्ति-कुंथु-अरनाथ चित्त हर्षाया।
प्रभु दर्शन कर निजदर्शन मैंने पाया।।टेक।।
इन्द्रिय विषयों की सर्व वासना छूटी।
मिट गयी स्वयं पर्यायदृष्टि प्रभु झूठी।।
अक्षय ज्ञानानन्द स्वाद जिनेश्वर आया।।1।।
चक्री इन्द्रादिक पद भी हेय सु-भासे।
शाश्वत अद्भुत प्रभुता निजमाँहि प्रकाशे।।
अविकारी चेतन पद स्वामी दर्शाया।।2।।
ऐसी प्रभुता अन्यत्र न देय दिखाई।
जिन मुद्रा ही दृष्टि में आज समाई।।
वह धन्य घड़ी जब प्रगटे भाव जगाया।।3।।
अब नहीं चाह कुछ रही नहीं कुछ चिंता।
प्रभु चरण शरण पा हुई सहज निश्चिंतता।।
निर्द्वन्द्व हुआ निष्काम भाव प्रगटाया।।4।।
हो प्रभु ऐसा पुरुषार्थ परम प्रभु ध्याऊँ।
तज सकल उपाधि बोधि समाधि पाऊँ।।
आनंदित हो चरणों में शीश नवाया।।5।।

एक आत्म-भावना

कोई सहारा है नहीं, यों सोच मत लाना।
चत्तारि शरणं पाठ पढ़, निज की शरण आना।।
निज भावना भाते हुए, वैराग्य बढ़ाओ।
सर्वत्र सुन्दर एक की ही, भावना भाओ।।

Scanned with CamScanner

(29) श्री सीमन्धर स्तुति

(लावनी)

हे सीमंधर ! भगवान शरण ली तेरी,
बस ज्ञाता-दृष्टा रहे परिणति मेरी....।।टेक।।
तुम को बिन जाने नाथ फिरा भव वन में।
सुख की आशा से झपटा उन विषयन में।।
ज्यों कफ में मक्खी बैठ पंख लिपटावे,
तब तड़फ-तड़फ दुख में ही प्राण गमावे।।
त्यों इन विषयन में मिली, दुखद भवफेरी।।1।।
मिथ्यात्व-रागवश दुखित रहा प्रतिपल ही,
अरु कर्मबन्ध भी रुक न सका पल भर भी।
सौभाग्य आज हे प्रभो तुम्हें लख पाया,
दुख से मुक्ति का मार्ग आज मैं पाया।।
हो गई प्रतीति नहीं मुक्ति में देरी।।2।।
सार्थक सीमंधर नाम आपका स्वामी।
सीमित निज में हो गये आप विश्रामी।
करते दर्शन कर भव सीमित भवि प्राणी।
फिर आवागमन विमुक्त बनें शिवगामी।।
चिरतृप्ति प्रदायक शान्ति छवि प्रभु तेरी।।3।।
आत्माश्रय का फल आज प्रभो लख पाया।
निज में रमने का भाव मुझे उमगाया।।
निज वैभव सन्मुख तुच्छ सभी कुछ भासा।
दर्शन से पलट गया परिणति का पासा।।
चैतन्य छवि अन्तर में आज उकेरी।।4।।

Scanned with CamScanner

हे ज्ञायक ! के ज्ञायक चैतन्य विहारी।
मैं भाव वन्दना करूँ परम उपकारी।।
अपनी सीमा में रहूँ यही वर पाऊँ।
प्रभु भेद भक्ति तज, निज अभेद को ध्याऊँ।।
अब अन्तर में ही दिखे मुझे सुख ढेरी।।5।।

(30) श्री बाहुबली स्तुति

प्रभु बाहुबली ऐसा बल हो ।टेक।।
जीतूँ मैं मोह महाभट को, श्रद्धान सहज ही सम्यक् हो।
निज-पर का भेद-विज्ञान रहे, अन्तर शुद्धातम अनुभव हो।।1।।
जड़रूप सदा आकुलतामय, भोगों का नहिं आकर्षण हो।
अध्रुव अशरण अरु दुःखरूप, परिग्रह प्रति नहिं समर्पण हो।।2।।
हो ज्ञान सहज वैराग्यमयी, वैराग्य ज्ञानमय जिनवर हो।
संकल्प सहित निर्ग्रन्थ मार्ग में, विचरण स्वामी सत्वर हो।।3।।
उपसर्ग परीषह चाहे हों, परिणाम सदा समतामय हो।
दशलक्षण प्रगट सदा वर्ते, आराधन नित मंगलमय हो।।4।।
हो ऐसा निश्चल आत्मध्यान, कर्मों का कर्मों में लय हो।
चैतन्य विभूति ध्रुव अनुपम, प्रगटे भक्ति का प्रभु फल हो।।5।।
प्रभु का स्वरूप मन को भाया, ऐसी ही परिणति मेरी हो।
पुरुषार्थ जगे हो सफल भावना, विभुवर सम्यक् वंदन हो।।6।।

गुरु की गुरुता, प्रभु की प्रभुता, आत्मश्रय से ही प्रगटे।
भव-भव के दुखदायी बंधन, स्वाश्रय से क्षण में विघटे।।
आत्मध्यान ही उत्तम औषधि, भव का रोग मिटाने को।
आत्मध्यान ही एक मात्र साधन है, शिवसुख पाने को।।

Scanned with CamScanner

जिनवाणी वन्दना

(31) नित जयवंत प्रभु दर्शाती ...

नित जयवंत प्रभु दर्शाती, जिनवाणी जयवंत रहे ।।टेक।।
निज अक्षय वैभव दर्शाती, निज शाश्वत प्रभुता दर्शाती।
आनन्दमय ज्ञायक दर्शाती, जिनवाणी जयवंत रहे ।।1।।
सब संसार असार दिखाती, सारभूत समयसार दिखाती।
साँचा मुक्तिमार्ग दिखाती, जिनवाणी जयवंत रहे ।।2।।
नवतत्त्वों का स्वांग दिखाती, भिन्न सहज चिद्रूप दिखाती।
ज्ञानमात्र शिवरूप दिखाती, जिनवाणी जयवंत रहे ।।3।।
अन्तर द्रव्य-दृष्टि प्रकटाती, अनेकांतमय ज्योति जगाती।
परम अहिंसा ध्वज फहराती, जिनवाणी जयवंत रहे ।।4।।
सत्य शील सन्तोष जगाती, अविनाशी सुख शांति दिखाती।
भाव नमन हो, सहज नमन हो, जिनवाणी जयवंत रहे ।।5।।

(32) परम उपकारी जिनवाणी...

परम उपकारी जिनवाणी, सहज ज्ञायक बताया है।
हुआ निर्भार अन्तर में, परम आनन्द छाया है ।।टेक।।
अहो परिपूर्ण ज्ञाता रूप, प्रभु अक्षय विभवमय हूँ।
सहज ही तृप्त निज में ही, न बाहर कुछ सुहाया है।।1।।
उलझकर दुर्विकल्पों में, बीज दुख के रहा बोता।
ज्ञान आनन्दमय अमृत, धर्म माता पिलाया है ।।2।।
नहीं अब लोक की चिन्ता, नहीं कर्मों का भय किंचित।
ध्येय निष्काम ध्रुव ज्ञायक, अहो दृष्टि में आया है।।3।।
मिटी भ्रान्ति मिली शान्ति, तत्त्व अनेकान्तमय जाना ।
सार वीतरागता पाकर, शीष सविनय नवाया है ।।4।।

Scanned with CamScanner

(33) शिवसुखदानी है जिनवाणी...

शिव सुखदानी है जिनवाणी, है जिनवाणी, है जिनवाणी।।टेक।।
स्वयं स्वयं को भूल गयो है, मोह महातम छाय रहो है।
दूर करन सूरज जानी, शिवसुखदानी है जिनवाणी।।1।।
परभावों से भिन्न स्व आतम, ज्ञानरूप शाश्वत परमातम।
द्रव्यदृष्टि से दर्शानी, शिवसुखदानी है जिनवाणी।।2।।
स्याद्वाद शैली अति प्यारी, वस्तुस्वरूप दिखावन-हारी।
अनेकान्तमय गुणखानी, शिवसुखदानी है जिनवाणी।।3।।
जिनवाणी अभ्यास करें जो, सम्यक् तत्त्व-प्रतीति धरें जो।
पावें निश्चय शिव रजधानी, शिवसुखदानी है जिनवाणी।।4।।
शीश नवावें श्रद्धा लावें, जिनवाणी नित पढ़ें पढ़ावें।
रागादिक की हो हानि, शिवसुखदानी है जिनवाणी।।5।।

(34) मंगलमय है जिनवाणी

मंगलमय है जिनवाणी, आनंदमय है जिनवाणी।
नित्य-बोधिनी जिनवाणी, जग कल्याणी जिनवाणी।।1।।
साँची माता जिनवाणी, संकट त्राता जिनवाणी।
सब सुख दाता जिनवाणी, मोक्ष प्रदाता जिनवाणी।।2।।
मोह भगावे जिनवाणी, ज्ञान जगावे जिनवाणी।
काम नशावे जिनवाणी, वैराग्य बढ़ावे जिनवाणी।।3।।
निजानंद रस बरसानी, निज निधि निज में ही जानी।
कोई नहीं जिसकी सानी, सहज नमूँ माँ जिनवाणी।।4।।

Scanned with CamScanner

(35) माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में...

माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में, होकर मुझ रूप समा जाओ।
शान्त शुद्ध ध्रुव ज्ञायक प्रभु की, महिमा प्रतिक्षण दर्शाओ।।टेक।।
चैतन्य नाथ की बात सुने से, अद्भुत शान्ति मिलती है।
मानो निज वैभव प्रकट हुआ, सब आधि-व्याधि टलती है।।1।।
ज्ञायक महिमा सुनते-सुनते, बस ज्ञायकमय जीवन् होवे।
निज ज्ञायक में ही रम जाऊँ, सुनने का भाव विलय होवे।।2।।
हे माँ तेरा उपकार यही, प्रभु सम प्रभु रूप दिखाया है।
चैतन्य रूप की बोधक माँ, मैं सविनय शीश नवाया है।।3।।

गुरु भक्ति

(36) वनवासी सन्तों को नित ....

वनवासी सन्तों को नित ही, अगणित बार नमन हो।
द्रव्य-नमन हो, भाव-नमन हो, अरु परमार्थ-नमन हो।टेक।।
गृहस्थ अवस्था से मुख मोड़ा, सब आरम्भ परिग्रह छोड़ा।
ज्ञान-ध्यान-तप लीन मुनीश्वर, अगणित बार नमन हो।।1।।
जग विषयों से रहें उदासी, तोड़ी जिनने आशा-पाशी।
ज्ञानानंद विलासी गुरुवर, अगणित बार नमन हो।।2।।
अहंकार ममकार न लावें, अंतरंग में निज पद ध्यावें।
सहज परम निर्ग्रन्थ दिगम्बर, अगणित बार नमन हो।।3।।
ख्याति लाभ की नहिं अभिलाषा, सारभूत शुद्धातम भासा।
आतम लीन विरक्त देह से, अगणित बार नमन हो।।4।।
उपसर्गों में नहिं अकुलावें, परीषहों से नहीं चिगावें।
सहज शान्त समता के धारक, अगणित बार नमन हो।।5।।
जिनशासन का मर्म बतावें, शाश्वत-सुख का मार्ग दिखावें।
अहो-अहो जिनवर से मुनिवर, अगणित बार नमन हो।।6।।
ऐसा ही पुरुषार्थ जगावें, धनि निर्ग्रन्थ दशा प्रगटावें।
समय-समय निर्ग्रन्थ रूप का, सहजपने सुमिरन हो।।7।।

Scanned with CamScanner

(37) हे कुन्दकुन्द शिवचारी गुरुवर....

हे कुन्दकुन्द शिवचारी गुरुवर लाखों प्रणाम।
हे कुन्दकुन्द अविकारी गुरुवर लाखों प्रणाम।।टेक।।
सौम्य मूर्ति निर्ग्रन्थ दिगम्बर, लेश नहीं जिनके आडम्बर।
प्रचुर स्वसंवेदनमय जीवन, लाखों प्रणाम..... ।।1।।
समयसार रचनार नमामी, शुद्धातम दातार नमामी।
मूलसंघ के नायक गुरुवर, लाखों प्रणाम.... ।।2।।
विषय कषायारम्भ नहीं है, ज्ञान-ध्यान-तप लीन सही हैं।
भव का अन्त सुझाते गुरुवर, लाखों प्रणाम.... ।।3।।
है व्यवहार का पक्ष अनादि से, नहिं स्वभाव का लक्ष अनादि से।
पक्षातिक्रान्त दिखाते प्रभुवर, लाखों प्रणाम..... ।।4।।
जैनधर्म के गौरव गुरुवर, तुमसा ही मैं होऊँ सत्वर।
भावलिंगमय संत तुम्हें हैं, लाखों प्रणाम..... ।।5।।
दृष्टि में ध्रुव शुद्ध आत्मा, ज्ञान अहो अनुभवे आत्मा।
हो रमण आतमा में ही गुरुवर, लाखों प्रणाम..... ।।6।।
तुमको अन्तर में ही निरखती, भक्ति हृदय में आज उछलती।
है सर्वस्व समर्पण तुमको, लाखों प्रणाम..... ।।7।।

(38) गुरु निर्ग्रन्थ परिग्रह त्यागी

गुरु निर्ग्रन्थ परिग्रह त्यागी, भव-तन-भोगों से वैरागी।
आशा-पाशी जिनने छेदी, आनंदमय समता रस वेदी।।1।।
ज्ञान-ध्यान-तप लीन रहावें, ऐसे गुरुवर मोकों भावें।
हरष-हरष उनके गुण गाऊँ, साक्षात् दर्शन मैं पाऊँ।।2।।
उनके चरणों शीश नवाकर, ज्ञानमयी वैराग्य बढ़ाकर।
उनके ढिंग ही दीक्षा धारूँ, अपना पंचम भाव संभारूँ।।3।।
सकल प्रपंच रहित हो निर्भय, साधूँ आतम प्रभुता अक्षय।
ध्यान अग्नि में कर्म जलाऊँ, दुखमय आवागमन नशाऊँ।।4।।

Scanned with CamScanner

(39) जंगल में मुनिराज अहो...

जंगल में मुनिराज अहो, मंगल स्वरूप निज ध्यावें।
बैठ समीप संत चरणों में, पशु भी बैर भुलावें।टेक।।
अरे सिंहनी गौ वत्सों को, स्तनपान कराती।
हो निशंक गौ सिंह सुतों पर, अपनी प्रीति दिखाती।।
न्योला अहि मयूर सब ही मिल, तहाँ आनन्द मनावें।।बैठ समीप..।।1।।
नहीं किसी से भय जिनको, जिनसे भी भय न किसी को।
निर्भय ज्ञान गुफा में रह, शिव-पथ दर्शायें सभी को।।
जो विभाव के फल में भी, ज्ञायक स्वभाव निज ध्यावें ।।बैठ समीप..।।2।।
वेदन जिन्हें असंग ज्ञान का, नहीं संग में अटकें।
कोलाहल से दूर स्वानुभव, परम सुधारस गटकें।।
भवि दर्शन उपदेश श्रवण कर, जिनसे शिवपद पावें।।बैठ समीप..।।3।।
ज्ञेयों से निरपेक्ष ज्ञानमय, अनुभव जिनका पावन।
शुद्धातम दर्शाती वाणी, प्रशम मूर्ति मन भावन।।
अहो! जितेन्द्रिय गुरु अतीन्द्रिय ज्ञायक गुरु दरशावें ।।बैठ समीप..।।4।।
निज ज्ञायक ही निश्चय गुरुवर, अहो दृष्टि में आया।
स्वयं-सिद्ध ज्ञानानन्द सागर, अन्तर में लहराया।।
नित्य निरंजन रूप सुहाया, जाननहार जनावें।।बैठ समीप..।।5।।

(40) जिनवाणी वंदना

हे देवि तेरी वन्दना, मैं कर रहा हूँ इसलिए ।
चिन्तामणि प्रभु है सभी, वरदान देने के लिए।।
परिणाम शुद्धि समाधि मुझमें, बोधि का संचार हो।
हो प्राप्ति स्वात्मा की तथा, शिव सौख्य की भव पार हो।।

Scanned with CamScanner

(41) धनि मुनिराज हमारे हैं ....

धनि मुनिराज हमारे हैं, धनि मुनिराज हमारे हैं।।टेक।।
सकल प्रपंच रहित निज में रत, परमानन्द विस्तारे हैं।
निर्मोही रागादि रहित हैं, केवल जाननहारे हैं।।1।।
घोर परीषह उपसर्गों को, सहज ही जीतन हारे हैं।
आत्मध्यान की अग्निमाँहि जो, सकल कर्म-मल जारे हैं।।2।।
साधैं सारभूत शुद्धातम, रत्नत्रय निधि धारे हैं।
तृप्त स्वयं में तुष्ट स्वयं में, काम सुभट संहारे हैं।।3।।
सहज होंय गुण मूल अट्ठाईस, नग्न रूप अविकारे हैं।
वनवासी व्यवहार कहत हैं, निज में निवसनहारे हैं।।4।।

(42) धन्य मुनिराज की समता...

धन्य मुनिराज की समता, धन्य मुनिराज का जीवन।
धन्य मुनिराज की थिरता, प्रचुर वर्ते स्वसंवेदन।।टेक।।
शुद्ध चिद्रूप अशरीरी, लखें निज को सदा निज में।
सहज समभाव की धारा, बहे मुनिवर के अंतर में।।
है पावन अन्तरंग जिनका, है बहिरंग भी सहज पावन।।1।।
कर्मफल के अवेदक वे, परम आनंद रस वेदें।
कर्म की निर्जरा करते, बढ़े जायें सु शिवमग में।।
मुक्ति पथ भव्य प्रकटावें, अहो करके सहज दर्शन।।2।।
परम ज्ञायक के आश्रय से, तृप्त निर्भय सहज वर्तें।
अवांछक निस्पृही गुरुवर, नवाऊँ शीश चरणन में।।
अन्तरंग हो सहज निर्मल, गुणों का होय जब चिन्तन।।3।।
जगत के स्वांग सब देखे, नहीं कुछ चाह है मन में।
सुहावे एक शुद्धातम, आराधूँ हौंस है मन में।
होय निर्ग्रन्थ आनन्दमय, आप-सा मुक्तिमय जीवन।।4।।
भावना सहज ही होवे, दर्श प्रत्यक्ष कब पाऊँ।
नशे रागादि की वृत्ति, अहो निज में ही रम जाऊँ।।
मिटे आवागमन होवे अचल ध्रुव सिद्ध गति पावन।।5।।

Scanned with CamScanner

(43) मेरा सहज जीवन

अहो चैतन्य आनन्दमय, सहज जीवन हमारा है।
अनादि अनंत पर निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है।।टेक।।

हमारे में न कुछ पर का, हमारा भी नहीं पर में।
द्रव्य-दृष्टि हुई सच्ची, आज प्रत्यक्ष निहारा है।।1।।

अनंतों शक्तियाँ उछलें, सहज सुख ज्ञानमय विलसें।
अहो प्रभुता परम पावन, वीर्य का भी न पारा है।।2।।

नहीं जन्मूँ, नहीं मरता, नहीं घटता, नहीं बढ़ता।
अगुरूलघु रूप ध्रुव-ज्ञायक, सहज जीवन हमारा है।।3।।

सहज ऐश्वर्य मय मुक्ति, अनंतों गुणमयी ऋद्धि।
विलसती नित्य ही सिद्धि, सहज जीवन हमारा है।।4।।

किसी से कुछ नहीं लेना, किसी को कुछ नहीं देना।
अहो निश्चिंत परमानन्दमय जीवन हमारा है।।5।।

ज्ञानमय लोक है मेरा, ज्ञान ही रूप है मेरा।
परम निर्दोष समता मय, ज्ञान जीवन हमारा है।।6।।

मुक्ति में व्यक्त है जैसा, यहाँ अव्यक्त है वैसा।
अबद्धस्पृष्ट अनन्य, नियत जीवन हमारा है।।7।।

सदा ही है न होता है, न जिसमें कुछ भी होता है।
अहो उत्पाद व्यय निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है।।8।।

विनाशी बाह्य जीवन की, आज ममता तजी झूठी।
रहे चाहे अभी जाये, सहज जीवन हमारा है।।9।।

नहीं परवाह अब जग की, नहीं है चाह शिवपद की।
अहो परिपूर्ण निष्पृह ज्ञानमय जीवन हमारा है।।10।।

Scanned with CamScanner

(44) निर्ग्रंथ भावना

निर्ग्रन्थता की भावना अब हो सफल मेरी।
बीते अहो आराधना में हर घड़ी मेरी।। टेक......।।
करके विराधन तत्त्व का, बहु दुःख उठाया।
आराधना का यह समय, अतिपुण्य से पाया।।
मिथ्या प्रपंचों में उलझ अब, क्यों करूँ देरी? निर्ग्रन्थता...।।
जब से लिया चैतन्य के, आनन्द का आस्वाद।
रमणीक भोग भी लगें, मुझको सभी निःस्वाद।।
ध्रुवधाम की ही ओर दौड़े, परिणति मेरी।। निर्ग्रन्थता...।।
पर में नहीं कर्त्तृत्व मुझको, भासता कुछ भी।
अधिकार भी दीखे नहीं, जग में अरे कुछ भी।।
निज अंतरंग में ही दिखे, प्रभुता मुझे मेरी।। निर्ग्रन्थता...।।
क्षण-क्षण कषायों के प्रसंग, ही बनें जहाँ।
मोही जनों के संग में, सुख शान्ति हो कहाँ।।
जग-संगति से तो बढ़े, दुखमय भ्रमण फेरी।। निर्ग्रन्थता...।।
अब तो रहूँ निर्जन वनों में, गुरुजनों के संग।
शुद्धात्मा के ध्यानमय हो, परिणति असंग।।
निजभाव में ही लीन हो, मेटूँ जगत-फेरी।। निर्ग्रन्थता...।।
कोई अपेक्षा हो नहीं, निर्द्वन्द्व हो जीवन।
संतुष्ट निज में ही रहूँ, नित आप सम भगवन्।।
हो आप सम निर्मुक्त, मंगलमय दशा मेरी।। निर्ग्रन्थता...।।
अब तो सहा जाता नहीं, बोझा परिग्रह का।
विग्रह का मूल लगता है, विकल्प विग्रह का।।
स्वाधीन स्वाभाविक सहज हो, परिणति मेरी।। निर्ग्रन्थता...।।

Scanned with CamScanner

(45) श्री तीर्थ वंदना

(चौपाई)

तीर्थ-वन्दना मंगलकारी, तीर्थ-वन्दना आनन्दकारी।।टेक।।

महाभाग्य से हो जिनदर्शन, महाभाग्य से चरण-स्पर्शन।
भाव-विशुद्धि हो सुखकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।1।।

प्रभु की शांतछवि को निरखें, परमतत्त्व को अब हम परखें।
शाश्वत ज्ञायक प्रभु अविकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।2।।

आत्म साधना की यह भूमि, धर्माराधन की यह भूमि।
भायें तत्त्व-भावना प्यारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।3।।

यहाँ संतों की याद सु-आये, मुक्तिमार्ग में मन ललचाये।
छूटें जग प्रपंच दुखकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।4।।

अहो! जिनेश्वर क्या कहते हैं, सदा सहज निज में रहते हैं।
हम भी होवें शिवमगचारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।5।।

हो सम्यक् श्रद्धान हमारा, हो निर्मल सद्ज्ञान हमारा।
होवें सम्यक् चारित्रधारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।6।।

नहीं कामना भोगों की हो, नहीं याचना वैभव की हो।
प्रभु सम प्रभुता होय हमारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।7।।

भक्ति भाव से प्रभु गुण गावें, प्रभु को हृदय माँहिं बसावें।
सफल वंदना होय हमारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।8।।

Scanned with CamScanner

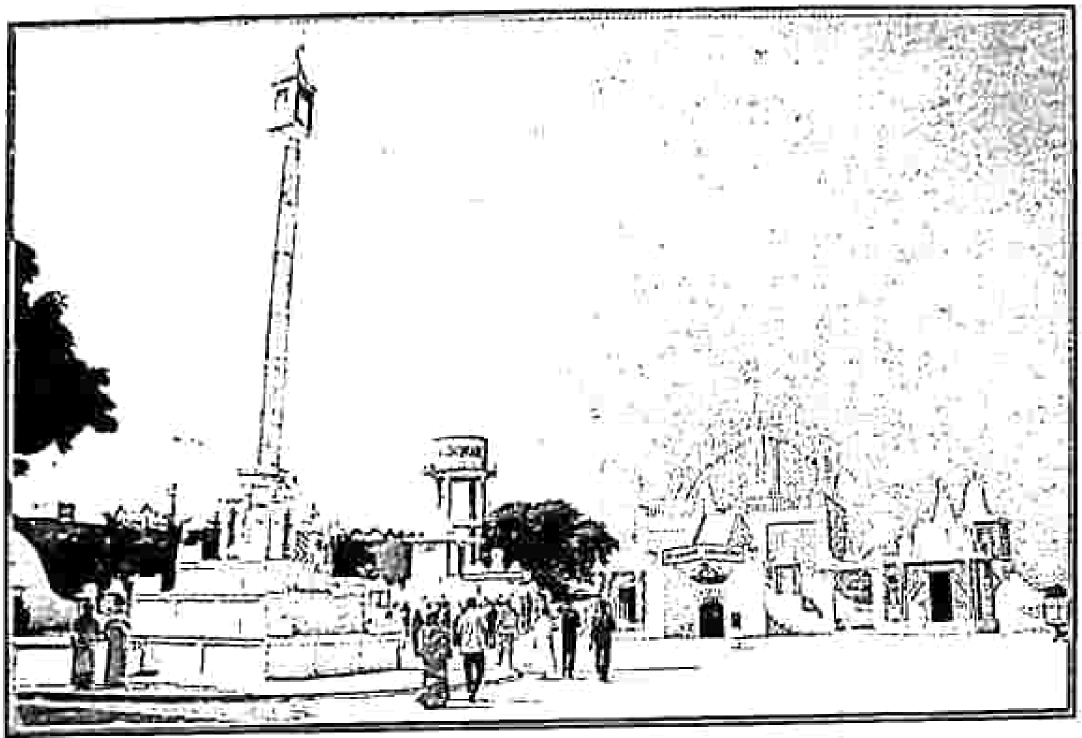

श्री कुन्दकुन्द नगर, सोनागिर में स्थित अनेकों भव्य जिनालय

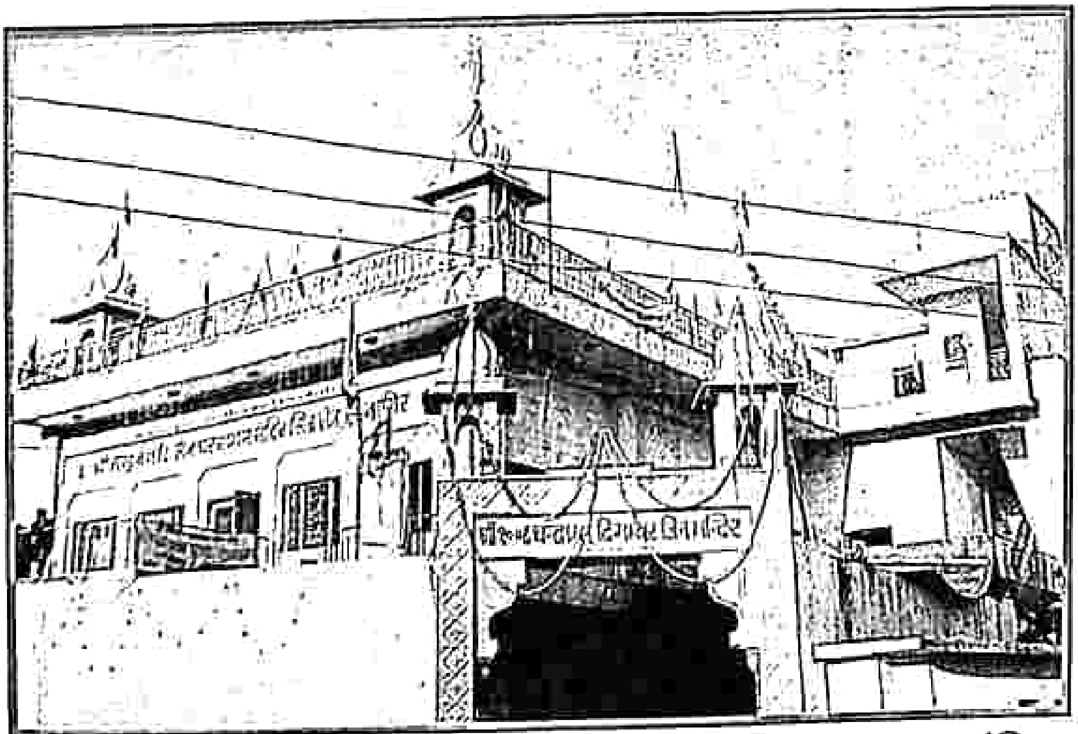

सिद्धक्षेत्र सोनागिर में स्थित श्री १००८ चन्द्रप्रभ दि. जिन परमागम मंदिर

Scanned with CamScanner